दूषण पञ्जी THE BLACK BOOK

गजेन्द्र ठाकुर GAJENDRA THAKUR

विदेह-प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (विदेह www.videha.co.in) पेटारसँ



विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम्



 भालसरिक गाछ जे सन 2000 सँ याहूसिटीजपर छल http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.html, http://www.geocities.com/ggajendra आदि लिंकपर आ अखनो 5 जुलाइ 2004 क पोस्ट http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html (किछु दिन लेल http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html लिंकपर, स्रोत wayback machine of https://web.archive.org/web/*/videha 258 capture(s) from 2004 to 2016- http://videha.com/ भालसरिक गाछ-प्रथम मैथिली ब्लॉग / मैथिली ब्लॉगक एग्रीगेटर) केर रूपमे इन्टरनेटपर मैथिलीक प्राचीनतम उपस्थितक रूपमे विद्यमान अछि। ई मैथिलीक पहिल इंटरनेट पत्रिका थिक जकर नाम बादमे 1 जनवरी 2008 सँ "विदेह" पड़लै।इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब “भालसरिक गाछ” जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि।
विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA
 विदेह-प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। Editor: Gajendra Thakur.
रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि) editorial.staff.videha@gmail.com कैँ मेल अटैचमेण्टक रूपमेँ .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकै छथि। एतऽ प्रकाशित रचना सभक कॉपीराइट लेखक/संग्रहकर्त्ता लोकनिक लगमे रहतन्हि। सम्पादक 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका ऐ ई-पत्रिकामे ई-प्रकाशित/ प्रथम प्रकाशित रचनाक प्रिंट-वेब आर्काइवक/ आर्काइवक अनुवादक आ मूल आ अनूदित आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार रखैत छथि। (The Editor, Videha holds the right for print-web archive/ right to translate those archives and/ or e-publish/ print-publish the original/ translated archive).
ऐ ई-पत्रिकामे कोनो रॊयल्टीक/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै। तेँ रॉयल्टीक/ पारिश्रमिकक इच्छुक विदेहसँ नै जुड़थि, से आग्रह। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेताह, से आशा करैत छी। रचनाक अंतमे टाइप रहय, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहल अछि। मेल प्राप्त होयबाक बाद यथासंभव शीघ्र (सात दिनक भीतर) एकर प्रकाशनक अंकक सूचना देल जायत। एहि ई पत्रिकाकेँ मासक 01 आ 15 तिथिकेँ ई प्रकाशित कएल जाइत अछि। ISSN: 2229-547X

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant.
- Robert Louis Stevenson
....
Videha: Maithili Literature Movement

दूषण पञ्जी

पञ्जी सात प्रकारक होइत आछि-मूल,शाखा,गोत्र,पत्र,दूषण उतेढ़ आ अस्वाजन्यपत्र पञ्जी।
दरभंगा नरेश माधव सिंह शाखा प्रणयन पुस्तकक आदेश देलन्हि।एहिसँ पहिने मूल पञ्जी सभक समान रूपेँ बनैत छल। आब सोति, जोग आ पञ्जीबद्धक हेतु फराक शाखा पञ्जी बनाओल जाए लागल (‘उप-टीप’(सोतिपुरा), नगराम(पछिवारि पार), गोत्र पञ्जी, पत्र पञ्जी ई सभ एहि पोथीमे मिथिलाक्षरमे अंकित अछि।)।
गोत्र पञ्जीमे सभ गोत्र आ तकर प्राचीन मूल रहैत अछि।
पत्र पञ्जी लगभग ५०० वर्ष पूर्वसँ प्रचलनमे अछि। एहिमे मूलग्रामक उल्लेख रहए लागल।
दूषण पञ्जीमे वंशमे आएल क्षरणक उल्लेख रहैत अछि। बहुत बादमे एकर चर्च संभव होइत अछि, जाहिसँ सम्बन्धित वंश एकर दुष्परिणामसँ बाँचल रहए।
उतेढ़ पञ्जीमे सपिण्डक निवृत्तिक ज्ञान होइत अछि- छह पुरखाक उल्लेख प्राप्त होइत अछि।
मात्र रसाढ़-अररियाक पञ्जीमे स्त्रीगणकक नामक उल्लेख पञ्जीमे भेटैत अछि।

<u>पञ्जीमे उपलब्ध आधुनिक सामाजिक जीवन: (दूषण पञ्जी)</u>

अंकन आ लिप्यंतरण प्राचीन पञ्जीक संग करबाक काज सन २००० ई. क चैत मास सँ प्रारंभ कएल गेल। गोत्र पञ्जी मध्य गोत्र व मूलक विवरण, पत्र पञ्जी मध्य अपत्यक ज्ञान तथा दूषण पञ्जी मध्य वंश मे आएल दोषक ज्ञान होइत अछि। प्राचीन पुस्तक मध्य ४५० ई. सँ अद्यावधि प्रचलित शैक्षणिक उपाधि सबंधक ज्ञान होइत अछि। लिप्यंतरण करबाक अवधि मे अनुभव भेल जे मिथिलाक इतिहास बोध कतैक उच्च प्रकारक रहल अछि। पञ्जिक पुस्तक मात्र अधिकारै

तकबाक लेल प्रारंभ नहि भेल, अपितु मिथिलाक लोक अभाव ग्रस्त रहितौ, तत्तकालिन शासकक वक्र दृष्टि सहितो मिथिलाक शैक्षणिक स्थिति, धर्म शास्त्रिय विवेचनाक क्षमता, साहित्यिक रचनाक योग्यता कलाकौशलक प्रवीणता कोन प्रकारक छल एहि सभ पर प्रकाश देखल। लिप्यन्तरण भेला संता वर्तमान कालिन दुनिया, जे भूमण्डलीकरणक दौर मे अछि, जानि सकत जे मिथिलांचलक सांस्कृतिक विविधता कि छल इतिहास बोध कोन प्रकारक छल- एहि सभ वस्तु केँ दुनियाक पटल पर राखल जाए। दुनियाक कोनो समाज मे एतैक विस्तृत भुभाग मे पसरल मनुष्यक वंशावली १५०० वर्ष सँ अधिके समय सँ एहि तरहें सांगोपांग नहि लिखल गेल अछि जाहि तरहें मिथिलाक लोक विपन्न रहितो परिचय संग्रह करैत रहलाह, ईमानदारी पूर्वक अपन पुरूषाक शिक्षा, तथाकथित क्षरण आ सबन्धक विवरण कलाबोध प्रवास-आप्रवासक संचित करैत रहलाह, से अद्भूते अछि।

ब्राह्मण खाहे श्रोत्रिय होथु वा तथाकथित जैवार विशेषाधिकार, विशेष बंधन किनको हेतु नहि। जे समाज तथा कथित रूपें जयवारक संज्ञा सँ विभूषित मिथिलाक लोक प्राचीन कालहिं सँ भारतक आन-आन सभ्यता ओ संस्कृतिक अपेक्षा उदार माना ओ नमनशील रहल अछि, एहि ठाम कोनो प्रकारक धार्मिक कट्टरपन स्थाई भाव नहि। सुधारक गुंजाइश सतत् बनौने रखने अछि, एहि ठाम जँ कखन कोनो काल मे खाहे कोनो प्रकारक जातिक वंडर उठल हो परंच विद्वेष स्थाई भाव नहि रखल। अपन अपन कालक पैघ सँ पैध घटना कालातीत भए विस्मृत होइत रहल अछि, तकर प्रमाण थिक मिथिलाक पञ्जी उपांग-दूषण पञ्जी। कोनो कालक दलमलित करएबला घटना (Burning Question) थोड़बहि समयक बाद समाज ओ मस्तिष्क सँ हटि जाएत।

पाली मूलक-देवशर्म्मसुत कान्हक विवाह बुधवाल मूलक गोविन्द सुत दामूक विवाह सरिसब मूलक श्रीनाथ सुत चक्रपाणिक विवाह दरिहरा मूलक भीम सुत उमापतिक विवाह सोदरपुर मूलक श्रीहरि सुत

हरिनाथक विवाह हरिअम वासदेव सुत कृष्णदेवक विवाह पनिचोभ मूलक मधुकरक विवाह- अज्ञात वंश ओ जातिमे।सरिसव मूलक भवनाथ पौत्र कमलनयन पुत्र किशाईक विवाह - वलियास चमरु सुत गंगाधरक कन्यामे। चमरूक अपन विवाह अज्ञात कन्यासँ। अर्थात किशाईक सासूक वंशक कोनो ठेकान नहि। एहि किशाईक सन्तान मिथिलाक अनेक गाम मे पसरल छथि। परंच आइ समाज ओहि तथ्य कैं उचिते रूपैं विस्मृत कए चुकल अछि। एहि रूपक अनेक घटना अछि- यथा बुधवाल मूलक माधवक पौत्री भीमक कन्याक विवाह, जाहि लागिसँ अनेक घर व्याप्त अछि। सतलखा रामनाथसुत जगन्नाथक मात्रिक घुसौत उधोरण सुत रतनूक मात्रिक, पाली होराई सुत रामक मातृक सकराढ़ी मूलक वेणी सुत राधवक मात्रिक, सोदरपुर मूलक पाँखू सुत चान्दक मात्रिक, अलय मूलक दिनकर सुत हरिकरक मात्रिक, तिलय मूलक श्रीपति सुत विदूक मात्रिक इत्यादि देवदाशी परम्पराक छलीह अस्तु अज्ञात मानल गेलीह परंच हुनका लोकनिक सन्तान आइ समाजमे समादृत छथि। एहि प्रकारक उदहारण पाँजि मे भरल पड़ल अछि जे आब कालातीत भेला पर कोनो वंश पर कुप्रभाव नहि पड़त अपितु एहिना स्थित मे की निर्णय लेबाक चाही तकरा लेल मार्गदर्शन होएत।

आर उदाहरण: टेबुलक (१-९७) क नीचाँमे एहिमेसँ किछु उदाहरणक विस्तृत व्याख्या अछि।

१.

सरिसव *१७८/१*	वलियास चमरू गंगाधरक मातृक	सरिसव	सकराढी	पनिचोभ	दरिहरा	पाली	नरवाल
भवनाथ		नाथू	गांगू	कान्ह	हेलू	होराई	चान्द
कमलनयन किशाई	*अज्ञात २३८॥०५*	विशो	गोगे	रूद	चान्द	*रामक मातृक*	देवघर

२.

वुधवाल	पबौली	सतलखा	*जगन्नाथक मातृक*	घुसौत	*रतनूक मातृक*	दरिहरा	पाली	*रामक मातृक*	नरवाल
जाटू	भीम	रामनाथ		उधोरण	*(अज्ञात)*	हेलू	होराई	*(अज्ञात)*	चान्द
माधव भीमसुता *१७८/२*	लक्ष्मी	जगन्नाथ (*अज्ञात*)		रतनू		चान्द	राम		देवधर

३.

माण्डर	सोदरपुर	अलय	माण्डर	सुरगन	पचही	पकलिया	सिम्भुनाम

रतिपति चन्द्रपति	देवे	रत्नधर	लगाई	वंशधर	कान्ह	जयपति	दूवे
गोढिसुता (निम्नकुल)७१/१	पाँखू	भवदत्त	नरसिंह			सुपे	राम

४.

सरिसव *१८६*	करमहा	सकराढी	*राघवक मातृक*	सोदरपुर	अलय	माण्डर	सुरगन	पचही	पकलिया	सिम्भुनाम
नोने	नरहरि	वेनी	*(अज्ञात)*	देवे	रत्नधर	लगाई	वंशीधर	कान्ह	जयपति	दुवे
श्रीनाथ चक्रपाणि	मति	राघव		पाँखू	भवदत्त	नरसिंह			सुपे	राम

सोदपुर *१७७/२*	वलियास	*गंगाधरक मातृक*	सरिसव	सकराढी	पनिचोभ	दरिहरा	पाली	*रामक मातृक*	नरवाल
मतिकर	भमरू	*अंतर्जातिय*	नाथू	गांगे	कान्ह	हेलू	*हेलू*		चान्द

६

पवौली भानुदत	एकहरा	जगति	सोदरपुर	*चान्दक मातृक*	अलय	माण्डर	सुरगन	पचही	पकलिया	सिम्भुनाम
सुधापति	सुरपति	नोने	पाँखू	*(अज्ञात)*	रत्नधर	लगाई	वंशीधर	कान्ह	जयपति	दुवे
केशव सुता *१९६/७*	लक्ष्मीनाथ	होरे	चान्द		भवदत्त	नरसिंह			सुपे	राम

७.

सोदरपुर	करमहा	माण्डर	अलय	*हरिकरक मातृक*	दरिहरा	नीमा टकवाल	सुईरी	गदहा पंडोली
गदाधर	रामनाथ	केशव	दिनकर	*(अज्ञात)*	नरसिंह	दामोदर	परशुराम	अरविन्द
विशो	महेश	जगतू	हरिकर		केशव	रविशर्म्म	गोरी	निधि
कुमरसुता *१८४/२*								

८.

हरिअम	उदनपुर	माण्डर	पचही	करही	राउड दरिहरा	लहण्डा
गांगू	दामू	सुरसर	स्थिति	अदितु	शुक्ल विशो	बुधाई
केशव	पागू	हरि	साहब	साठू		
दामूसुता अंतर्जातिय						

९.

कोचराज पत्नी	खण्डवला	खौआल	फनन्दह	वलियास	बहेराढी	माण्डर
सोहागो २०८/१	सुरपति	कोने	हरिनाथ	विभाकर	वराह	सागर
	दुवे	नोने	रविनाथ	गुणाकर	गुणाकर	स्थिति
	चन्द्रपति सुता कोचराज पत्नी					

१०.

पवौली	घुसौत	दरिहरा	*धारूक मातृक*	वहेराढी	माण्डर
शिवदत्त	अमरू	नन्दन	*(अज्ञात)*	आंगू	सागर
रूपदत *२०८/२*	जीवाई	धारू		रूद	स्थिति
वाशुदेवसुता					

११.

पवौली	एकहरा	जगति	सोदरपुर	पाली	सतलखा	गंगोली	डगरक माता	नदाम	*यवनी*
भानुदत्त	सुरपति	नोने	पाँखू	दुवे	दिवाकर	डगर	*यवनी दौलतिजहाँ*	धनञ्जय	*दौलतिजहाँ ४३*
सुधापति	लक्ष्मीनाथ	होरे	चान्द	हरिकर	गौरीश्वर	गंगाधर			
केशवसुता *१९६/७*						हरिहर			

१२.

कुजौली	खौआल	महिन्द्रवाड पाली	*लाखूक मातृक*	गंगोली	*डगरक माता*	नदाम	*यवनी*
गोपाल *२१६/१*	गोविन्द	लाखू यशोधर	*दौलतिजहाँ*	डगर	*दौलति जहाँ*	धनञ्ज़य	*दौलतिजहाँ*
वंशवर्द्धन	विशो			गंगाधर			
वलभद्रसुता							

१३.

खण्डवला	माण्डर	पाली	दरिहरा	बहेराढी	जमुनी	माण्डर	*धारेश्वरक माता*
चान्द/चन्द्रपति	काशी	नोने	गुणे	गुणे	राम	धारेश्वर	*(अज्ञात)*
महेश	भीम	बाटू	अनन्दू	अफेल	गोनू	माधव माने	
गोपाल							

१४.

गोढिक	सरिसव	घुसौत	गंगोर	वलहा	मधुकर
सागर	गांगू	रतिकांत	हारू	सुधाकर	संतति
तनया २१६/२	रत्नपाणि	गुणाकर	वरदत्त		
	रघुपाणिसुता (गोढिमाता)				

१५.

दरिहरा	सोदरपुर	दरिहरा	घुसौत	तेरहुता	नरवाल	*रतिक माता*
भोला	शंकर	खाटू	दामोदर	लाखू	नोनाई	*(अज्ञात)*
मनसुख	गंगाधर	नरपति	हरि		रति	
यशुसुता						

१६

सोदरपुर	खौआल	सोदरपुर	दरिहरा	पनिचोभ	चान्दो	तिलय	खौआल	सोदरपुर
राघव	पूरखू	नागू	धारू	रतन	कामेश्वर	श्रीपति	नोने	हरिदत्त
रत्नपति *२१५/१*	*हरिहरक-माता (देवदासी)*	दुवे	राम	रामकर	माधव	*विद्रूक-माता*	ढोढे	देवदास
यदुनाथ						*(अज्ञात)*		

१७. *जानिक देवदास*

वुधवाल	खौआल	जलीवाल	माण्डर	कुरहनि	तिलय श्रीपति	खौआल	सोदरपुर
चान्द *२१५/२*	गीरू	जीवे	देवादित्य	गुणेश्वर	*विद्यापतिक-माता(देवदासी)*	नोने	हरिदत्त
भानू	हरखू	थेग	नाथू			ढोढे	
सुधापति							

१८. *जानिक देवदास*

सोदरपुर	पाली	सुरगन	दरिहरा	*जीवेक- माता*	तिलय-श्रीपति	खौआल	सोदरपुर
लाखन	ज्ञान	रवि	जीवे	*देवदासी*	*लाखूक-माता*	ढोढे	हरदत्त
जनार्दन *२१४/१*	वाटू	वाचस्पति	अमरू		*देवदासी*		
चतुर्भूजसुता *१०२/०१*							

१९. *जानिक देवदास*

सोदरपुर	माण्डर	हरिअम	माण्डर	करमहा	खौआल	सोदरपुर
पशुपति	यशोधर	सोनी	नन्दन	*पहकर जागेक माता(देवदास)*	ढोढे	हरदत्त
श्रीहरि *२१४/२*	दामू	देवनाथ	रघु		*हारूक-माता*	
हरिनाथ					अज्ञात	

२०.

जानिक	पवौली	वुधवाल	वलियास	वभनियाम	मताउन	रकवाल	तिलय- श्रीपति
देवदास २१३/१	सभापति	पराण	धारू	होरे	धर्मू	कामदेव	*विद्यापतिक-माता(देवदासी)*
	गोप	नारायण	*श्रीरामक-माता(देवदासी)*	मनसुख	हरिपति	उधे	
	रतिपति						

२१.

जानिक	दरिहरा	पवौली	बुधवाल	खौआल	जलिवाल	माण्डर	कुरहनि	तिलय-श्रीपति
देवदास २१३/२	रामनाथ	विद्यानाथ	मानू	गीरू	जीवे	देवादित्य	गुणीश्वर	*विद्यापतिक-माता(देवदासी)*
	रघुनी	गुणपति	सुधापति	हरखू	थेघ	नाथू	विद्यापति	
	हरिदेव *४७/३*							

२२.

पश्चिम देश सँ	माण्डर	करमहा	खौआल	सोदरपुर	वभनियाम	सकराढी	दरिहरा	यमुगाम	पुरहदी
आगत २१२/१	लटाउँ	रघु	मित्रकर	शक्तू	गहेश्वर	टूनी	लक्ष्मीनाथ	कीर्तिवास	मतिश्वर
	होराई	शिव	जीवे	उधोरण	होरे				धृतिकर
	मधुसुदन-सुता(अज्ञातकुल)								

२३.

पश्चिम देश सँ	माण्डर	खण्डवला	दरिहरा	बहेराढी	खौआल	जालय
आगत	चन्द्रपति	दीनू	भवे	वराह	हरिहर	रतिधर
२१२/२	गोढि	गुणाकर	मेधू	नोने	रति	*मतिकर(माता अज्ञात)*
	शिव					

२४

चर्मकार	तल्हनपुर	टकवाल	दरिहरा	पञ्चोभ	मेरन्दी	ब्रह्मपुर	*बैजूक-माता*
आनन्दा २११/१	गढवय	जीवधर	पाठक	जगन्नाथ	परभू	बैजू	*आनन्दा*
	रवि	गहाय	हरि			दिवाकर	
	मितूसुता २५३/६		हरिहर				

२५

सोदरपुर	माण्डर	फनदह	नदाम
अफेल	धारू	हारू	कान्हा
दिवाकर	*विश्वनाथक-माता आनन्दाक-पुत्री*	सोन	*जयकरक-माता आनन्दाक-पुत्री*
रघु *२११/११*			

२६

सतलखा बुद्दिकर	बुधवाल मुथे	सोदरपुर	टकवाल	नदाम	सतलखा
२०९/१	*गोविन्द रघुनन्दनसुता-अज्ञात कुल*	पशुपति हरिहर	गणपति चान्द	कान्ह-विवाह वसाउन अज्ञात	बुद्धिकर
				हरखू	

२७

करमहा	सोदरपुर	माण्डर	गाउल करमहा	वलियास	मोनारी	पाली	कुरिसमा	केउटराम पण्डोलि
गोविन्द	वेणी	मेघ	लागे	गणपति	रूद	समटू	श्रीकर	गणपति
नोने *२०९/११*	जगन्नाथ	*बामन (माता) अज्ञात*	*शंकर*	दिनपति		वंशी	रवि	चान्द
देवनाथ								

२८

विधवा	सोदरपुर	माण्डर	गाउल	वलियास	मोनारी	पाली	कुरिसमा	केउटराम पण्डोली
	वेणी जगन्नाथ	*मेघ वामन-माता अज्ञात*	लागे शंकर	गणपति दिनपति	रुद	समटू वंशी	श्रीकर रवि	गणपति चान्द

२९

२०७/१	खण्डवला	बुधवाल	बुधवाल	माण्डर	टकवाल	वलियास	ब्रह्मपुरा	मेरन्दी	कोर्थुआ
रजक धरम	महेश गोपाल माधव	गणपति गोपी	*धीरू माता-रजकी भवानीनाथ*	बुद्धिकर भवनाथ	केशव रविदत्त	केशव गोपाल	माँगु गाँगु	कान्ह नरसिंह	जादू

३०

२०७/११	हरिअम	वलियास	नरवाल	सतलखा	सुरगन	त्रिलाढी	डीह दरिहरा
रजक धरम मानिकी	सोम वासुदेव ज्ञानी	*राम गोविन्दक-माता रजकी*	पराउँ उधे	कान्हा विभू-मात्रिक रजक परम्परा	भगव रघु	रत्नाकर	रुद्रानन्द विद्यानिधि

३१

१७९/१	सोदरपुर	दरिहरा	पाली	नरवाल
	रविनाथ दूवे मासे	हेलू चान्द	होराई *रामक-माता अज्ञात*	चान्द देवधर

३२

१७९/II	करमहा	सोदरपुर	दरिहरा	घुसौत	दरिहरा	पाली
	भानू हरखू राघव	विधुपति रामेश्वर	*मतिकर सभापति-माता अज्ञात*	धारू उधोरन	हेलू चान्द	होराई रामक माता

३३

१८०/I	सोदरपुर	टकवाल	यमुगाम्म	टकवाल	सुइरी	गदहा पण्डोलि
	विदू	भवदेव	गणपति	*रविशर्म*	परशुराम	अरविन्द
	ओहरि	गंगाधर-मातृक अज्ञात	जूड़ाउन-माता अज्ञात	*पराउँ-माता अज्ञात*	गौरी	निधि
	बाबू			*सूयन*		

३४

१८०/II	सोदरपुर	माण्डर	बेलउँच	खौआल	घोसियाम	गदहा पण्डोलि
	हाउँ	मेधाकर	महिधर	दामोदर	*माँगनि*	अरविन्द
	लाखन	पिताम्वर	खखनू	रुद	*वागेक-माता (अज्ञात)*	लान्हि
	जनार्दन					चान्द

३५

१८१/I	सोदरपुर	सतलखा	वभनियाम	माण्डर	यमुगाम	सकराढी	पाली	गदहापण्डोलि
	गदाधर	काशी	सुरपति	विष्णुपति	रघुपति	चाँडो	देवशर्म	*अरविन्द*
	ध्रूवानन्द	रामचन्द्र	माने	दामू	ऊँमापति	हाल्लेश्वर	कान्ह	*निधि(निषिद्धकुल)*

३६.

१८१/२	वुधवाल	दरिहरा	पचही	कोरड़ा	गदहापण्डोलि		
	रति	सीधू	रतनाकर	कान्ह	*अरविन्द-(निषिद्धकुल)*		
	गोविन्द	राम	*शीरूक-माता*	गागे	हरिकर		
	दामू						

३७.

१८२/१	सरिसव	करमहा	सकराढी	पनिचोभ	माण्डर	यमुगाम	नीमा	मुसरी	गदहापण्डोलि
	नोनी	नरहरि	वेणी	*हरिकरक-माता अज्ञात*	वागीश्वर	रघुपति	टकवाल	परशुराम	*अरविन्द निधि (निषिद्धकुल)*
	श्रीनाथ	मति	राघव	महथू	शीरू		दामोदर	गौरी	
	चक्रवाणि						रविशर्म्म		

३८.

१८२/२	सोदरपुर	माण्डर	हरिअम	माण्डर	वुधवाल	मताउन	गदहापण्डोलि	
	पशुपति	यशोधर	सोन्हि	नन्दन	राम	भीम	*अरविन्द-(निषिद्धकुल)*	
	श्रीहरि	दामू	देवनाथ	*रघुक-माता*	नाथू	उमापति	निधि	
	हरिनाथ			*(अज्ञात)*			शीरू	

३९.

१८३/१	सोदरपुर	पाली	माण्डर	पचही	माण्डर	गदहापण्डोलि	
	बसाउन	महाई	मांगु	रत्नाकर	कान्ह	अरविन्द	
	उमापति	माधव	रति	*अफेलक-माता*	*गांगे-माता*	*निधि-(निषिद्धकुल)*	
	बाँके			*(अज्ञात)*	*(अज्ञात)*	हरिकर	

४०.

१८३/२	हरिअम	दरिहरा	वुधवाल	सकराढी	पनिचोभ	माण्डर	यमुगाम	नीमा टकवाल	गदहापण्डोलि
	सोम	दामू	रघु	महाइ	मधुकर	वागीश्वर	रघुपति	दामोदर रविशर्म्म	अरविन्द
	वासुदेव कृष्णदेव	कृष्णदाश	माधव	*मणीषक मातृक(अज्ञात)*	*हरिकरक माता*	शीरू			*निधि-(निषिद्धकुल)*

४१.

१८४/१	हरिअम	उदनपुर	माण्डर	पचही	करही	राउढ़	लहन्दा	शुदी
	गांगू	दामू	सुरसर	स्थिति	अदितू	दरिहरा	दुधाई	
	केशव	पागू	हरि	साहेब	साँचू	शुक्लविशो		
	दामू					अंतर्जातिय		

४२.

१८४/२	सोदरपुर	करमहा	माण्डर	अलय	दरिहरा	नीमा	सदूरी	गदहापण्डोलि
	गदाधर	रामनाथ	केशव	दिनकर	उधोरण नरसिंह	टकवाल	परशुराम	अरविन्द
	विशो	महेश	जगतू	*हरिकरक-माता*	केशव	दामोदर	रवि	*निधि-(निषिद्धकुल)*
	कुमर			*(अज्ञात)*		रविशर्म		

४३

१८६/१	पवौली	एकहरा	जगति	सोदरपुर	अलय	माण्डर	सुरगन	पचही	पकलिया	सिम्भुनाम
	भानूदत्त	सुरपति	नोने	पाँखू	रत्नधर	लगाई	वंशीधर	कान्ह	जयपति	दूवे
	सुधापति	लक्ष्मीनाथ	होरे	*चान्दक-माता*	भवदत्त	नरसिंह			सूपे	राम
	केशव			*(अज्ञात)*						

४४.

१८६/२	सरिसव	करमहा	सकराढी	सोदरपुर	अलय	माण्डर	सुरगन	पचही	पकलिया	सिम्भुनाम-करमहा
	नोने	नहरि	वेणी	देवे	रत्नधर	लगाई	वंशीधर	कान्ह	जयपति	दूवे
	श्रीनाथ	मति	*राघवक-माता*	पाँखू	भवदत्त	नरसिंह			सूपे	राम
	चक्रपाणि									

४५.

१८७/१	सोदरपुर	पाली	सोदरपुर	खौआल	पवौली	वलियाम	गंगोली	*नवरंगा(अंतर्जातिय)*
	वसाउन	रघुपति	बाबू	रघुपति	सुपन	दूवे	वरदत्त	कोउयार
	पशुपति	जशाई	*शिवक-माता*	दूवे	देवदत्त	शक्ति	सोमदत्त	श्रीपति
	नरहरि		*(अज्ञात)*					दहिमत वाशुदेव

४६.

१८७/२	सोदरपुर	हरिअम	माण्डर	खण्डवला	वलियास	गंगोली	*नवरंगा*	दहिभत
	शंकर	वेणी	माचो	श्रीहरि	दूवे	वरदत्त	*कोइयार*	वाशुदेव
	गोविन्द	जूडाउन	*जोरक-माता*	*गुदहरिक-माता*	शक्ति	सोमदत	*श्रीपति*	
	रघुनन्दन		*(अज्ञात)*				*(अज्ञात)*	

४७.

१७७/१	सोदरपुर	वलियास	सरिसव	सकराढी	पनचोभ	दरिहरा	सुण्डिपार पाली	
	मतिकर	भमरू	नाथू	गोगे	कान्ह	हेलू	हेलू	
	भीम	*गंगाधरक-माता*	विशो	गागे	रूद	चान्द	*रामक-माता*	
	नाथ	*(अज्ञात)*					*(अज्ञात)*	

४८.

१८८/१	ताँतनी	सोदरपुर	सकराढी	जालय	खण्डवला	भराठी	जालय	खण्डवला	भदुआल पागू
	आझो	हलधर	गोविन्द	गिरपति	लान्हि	सकराढी	जयशर्म	नरदेव	कोइयार राम
		धारू	*कल्याणक-माता* (*अज्ञात*)	मन्नु	*विभाकरक-माता*	नरसिंह	विष्णुशर्म		
		श्रीनाथसुता ताँती जाति मे विवाह			*(अज्ञात)*	भाष्कर			

४९.

१८८/२	चर्मकारिणी	माण्डर	वभनियाम	छादन	
तत्त्वचिंतामणि कारकगंगेश	छादनगंगेशक	नाँई	*रत्नाकरक-मातृक(अज्ञात)*	गंगेश	
	वल्लभा	भवाइ	माहेश्वर		
			जीवे		

५०.

चर्मकारिणी	सोदरपुर	अलय	माण्डर	नरउन	पनिचोभ	खण्डवला	डीह दरिहरा	ब्रह्मपुर	कोरई
मेधा	शंकर	गादू	अफेल	मुशे	विद्यापति	रत्नाकर	मतिकर	मांगु	माण्डर
१८९/१	गोविन्द	श्रीनाथ	वासुदेव	जादू	रमापति	*सुरपतिक-माता (चर्मकारिणी)*			गांगू-मेधा
	परशुराम								

५१.

१८९/११	सोदरपुर	पाली	माण्डर	सकौना	सकराढी	खण्डवला	डीह दरिहरा	ब्रह्मपुरा
	बसाउन पशुपति वाचस्पति भवानी-माता चर्मकारिणी	महाई माधव	माँगू रति	बाढन दूबे	नारायणकर रामकर	*रत्नाकर सुरपति-माता अज्ञात*	मतिकर	मांगू मेधा

५२

१९०/१ हड़िणी रुद्रमति	सोदरपुर	माण्डर	कुजौली	तिसूरी	खण्डवला	पाली	घोसियाम	
	डालू गादू विशो	गिरी गागे	कान्ह सुरपति	*खोजो गूदी-माता अज्ञात हाड़ी*	शिवदत्त शुभदत्त-माता अज्ञात	मतिश्वर	जगन्नाथ- रुद्रमति विवाह गोंग	

५३

१९०/II	नरउन	माण्डर	जमूनी	तिसूरी	डीह खण्डवला	नवहथ पाली	धोसियाम
	मधुकर रुचिकर टूने	गहाइ दिनकर	वीर	खाँजो	*शिवदत्त* *शुभदत्त-माता* *अज्ञात*	मतिश्वर	जगन्नाथ- रुद्रमति गोंग

५४

१९१/I	खौआल	वहेराढ़ी	माण्डर	सकौना	दिघोइ	पाली
पाली रजेश्वर सुता रजक	साधुकर श्रीकर विभाकरसुता	गोंगू ढोढ़े	विभू भानूकर	गोपाल गौरीपति	माधव जगाई	*रतेश्वर विवाह अन्तर्जातीय*

५५

१९१/II	खौआल	वहोराढ़ी	माण्डर	दिघोइ		
	साधुकर श्रीकर विभाकर	गांगू ढोढे	विभू-माता भानुकर	*सुरेश्वर-रजकक कन्या*	रजकक विवाह हड़िनी रुद्रमतिक पुत्रीसँ	

५६

१९२/I	सोदरपुर	करमहा	एकहरा	खौआल	बेलउँच	माण्डर	कुरहनि	पकलिया
लगारी गोपाई	मणिधर राम वामदेव	रघुनाथ	राम गणपति	जाटू परान	दीनू थेघ	देवादित्य पाँखू	गुणीश्वर दीनू	श्रीकर
	गोपपुत्री विवाह	हरिनाथ						

नरउन	गढ़ अलय	नरउन	गोरोहिनी
सोन कान्ह	रुद सुधाकर	सूज जगन्नाथ	कुलपति रातू

५७

१९२/II	सोदरपुर	बेलउँच	पाली	गंगोली	अलय	माण्डर	गोरहनी
	काशी गुणी शंकर	*देवनाथ* *कृष्णा-माता अज्ञात*	गोविन्द होरे	राम महाई	यशाई नारायण	हरिशर्म्म देशू	कुलपति रातू

५८

१९३/I	हरिअम	दरिहरा	बुधवाल	सकराढ़ी	वहेराढ़ी	दरिहरा	वुधवाल	माण्डर	गोरहिनी
	सोम वासुदेव कृष्णदेव	दामू कृष्णदाश	रघु माधव	महाई भनेश	दिनू रघु	भीम डाकू	रामादित्य जोर	*देशू* *लान्हि-माता अज्ञात*	परिसरा कुलपति रातू

५९

१९३/II	सोदरपुर	घुसौत	माण्डर	जालय	भरेहा	पवौली	माण्डर	गोरहिनी
	मणिधर राम कृष्णदेव	रतनू भवाई	जीबधर कल्याण	जीवे राम	वंशीधर शीरू	जीवे सुरसर	आँगनि हरदत्त	परिसरा कुलपति रातू

६०

१९४/I चर्मकार हिरुआ	सोदरपुर	माण्डर	फनन्दह	पकलिया	अलई	बेलमोहन	
	अफेल दिवाकर रघुसुता	*धारू* *विद्यानाथ (माता) अज्ञात*	हारु सोने-(माता) अज्ञात	निधि	*सुता-अन्तर्जातीय*	परान गिरु-चर्मकार हिरुआक पुत्रीसँ	

६१

१९४/II तैलिक देवाई	खण्डवला	तिसौंत	पण्डोल	खजूरी	सकराढ़ी		
	महिपति कान्ह विष्णुपति	जीवेश्वर-माता अज्ञात नन्द	वासुदेव सुपन	पनिचोभ धनपति	चान्द	तैलिक देवाई अन्तर्जातीय	

६२

१९५/I	करमौलि	हरिअम्ब	दरिहरा	फनन्दह	करमौली गंगोली	पाण्डे	पाली	चान्दो	फनन्दह	पाण्डोलि गांगोली
	गंगोली पाण्डेकर्म	*माँदू* *गाँगु* *केशवसुता महापात्रसँ विवाह*	भवशर्म वर्द्धमान	भीम नरसिंह	करम साधुकर	करम	पमकर दुर्गादित्य धरादित्य पाण्डेकरम	सूर्यकर हरादित्य	भीम नरसिंह	

६३

१९५/II चर्मकार हिरुआ	वुधवाल	सकराढ़ी	पाली	माण्डर	पुनन्दह	पकलिया	अलय	बेलमोहन	
	शिरू मानू नारायण	रतिपति जसाउन	हरपति अमरु	दिनकर सुधे	शंकर	निधि	एसुता	परान गीरू-चर्मकार हिरुआ	
					हारु				

६४

१९६/I हड़िनी रुद्रमति रजक परम्परा	दरिहरा	करमहा	पवौली	वुधवाल	माण्डर	दिघोय	
	शक्तू जीवे रामदेवसुता	जोर भवनाथ	रुचिदत्त गादू	होरे उधे-माता	विभू-माता-भाष्कर रामकर	सुरेश्वर-रजकक कन्या-विवाह हड़िनी रुद्रमतिक कला अन्तर्जातीय	

६५

१९६/II रजक परम्परा	दरिहरा	पाली	माण्डर	दिघोइ			
अन्तर्जातीय	सोमेश्वर सिद्धेश्वर सुपन	*श्रीधर* *रामदत्त-माता अज्ञात*	दूबे सुपे	सुरेश्वर-रजकक कन्या-रजकक विवाह रुद्रमति कन्या			

६६

१९७/I चाम्पो यवनी	माण्डर	पचही	पवौली	पकलिया	तिरलाठी	करनैठा	कोइयार	
	कृष्णपति सूर्यपति	शंकर गणपति	मुरारी बागे	चारुदत्त गांगू	हरिकर दिवाकर	चक्रेश्वर राम	*शक्ति-पत्नी चाम्पो यवनी*	

	भैरव							

६७

१९७/II रजकक परम्परा	सोदरपुर	हरिअम	उदनपुर	झंझारपुर पकलिया	
	भवे रघुपति रतिपति	विभू बसाउन	*खाँतू* *पाँखू-माता रजकक परम्परा*	*माने-माता* लक्ष्मीधर	

६८

१९८/I	वुधवाल	पवौली	सतलखा	घुसौत	तेरहोत	कोइयार	भदुआल
	जाटू माधव भीम	भवदेव लक्ष्मी	रामनाथ *जगन्नाथक माता*	धोरण रतनू	श्रीकर *सूपे-माता*	लक्ष्मेश्वर जगन्नाथ	अदित्य भवानी

६९

१९८/II	सोदरपुर	करमहा	माण्डर	पंचोभ	महुआ	भदुआल
	गदाधर विशो कुमर	रामनाथ महेश	केशव जगतू-माता अज्ञात	रतिनाथ त्रिपुरे	गिरिपाणि रामपाणि	सूज

७०

१९९/I	सोदरपुर	सतलखा	वभनियाम	माण्डर	यमुगाम	सकराढ़ी	वहेराढ़ी	भदुआल
	गदाधर ध्रुवानन्द हरिकेश	काशी रामचन्द्र	सुरपति माने	विष्णुकान्त दामू	रघुपति उमापति	चाँड़ो-माता अज्ञात हल्लेश्वर	सोम होरे	हरिकेश

७१

१९९/II	वलियास	गंगोली	विठुआल	खौआल	तिरलाठी	भदवाल
	रघु रामनाथ नरहरि	रघु रामदेव	*चान्द* *दशरथ-माता अज्ञात*	दामोदर वासु	धनेश्वर बोध	अदित्य मानू

७२

२००/I	सोदरपुर	वुधवाल	जगति	नरउन	भदवाल
	गदाधर विशो भानू	धीरू रामनाथ	नोने मिसरू	*डालू* *रुचि-माता अज्ञात*	आदित्य मानू

७३

२००/II	सोदरपुर	बहेराढ़ी	सोदरपुर	चकलिया	दरिहरा	पाली	पवौली

	श्रीकर रघुनाथ कृष्णदेव	उमापति परमानन्द	खेदू लाखू	रत्नधर हरिनाथ	रतीश्वर रघुनाथ-माता अज्ञात	गणपति रति-माता अज्ञात	नरसिंह चान्द-माता अज्ञात

७४

नरबंगा शाखा २०१/I यादव जयसिंह	माण्डर	पाली	खौआल	पवौलि	वलियास	गंगोली	नरबंगा	दहिभत
	शिवपति यज्ञपति अफेल	मुरारी पाँखू	रघुपति दूबे	सुपन देवदत्त	दूबे शक्ति	वरदत्त सोमदत्त	नोहरि श्रीपति-अज्ञात कुल	वासुदेव

७५

२०१/II यादव रहमू	खण्डवला	दरिहरा	वुधवाल	सोदरपुर	दरिहरा	फनन्दह	कुजौली	पकलिया	अलय	पंचोभ
	म.म.दामोदर म.म.विश्वम्भर हृषिकेश पत्नी यादव	जीवे रामदेव	मोनि गणपति	भैरव ठकरु-माता अज्ञात	सूपे रातू	महनू कान्ह	विभू गुणे	भासे मानू	हीरे	हारू

७६

२०२/I	पण्डुआ	हरिअम	माण्डर	वहेराढ़ी	सतलखा	पचही	निचिता अलय	माण्डर	जालय	सिंहाश्रम
	जानू गोपाल यदुनाथ	नन्दन बूटन-माता अज्ञात	महेश रघु	बराह दीनू	भासे नोने	यज्ञपाणि रतिपाणि	गणेश्वर माधव	साहेब मुरारी	कीर्तिधर मूलधर	पाण्डे सरवे

७७

२०२/II	सोदरपुर	करमहा	माण्डर	अलय	माण्डर	जालय	सिंहाश्रम
	गदाधर बीसो कुमर	रामनाथ महेश	केशव जगतु	दिनकर हरिकर	*सुरारी* *चान्द-माता अज्ञात*	कीर्तिधर मूलधर	पाण्डे सरवे

७८

२०३/११	सोदरपुर	सकराढ़ी	पाली	माण्डर	फनन्दह	पकलिया	अलय	बेलमोहन
	पाँखू पुरखू भवानन्द	माधव-माता यदुनाथ	हरपति अमरू	दिनकर सुधे	सोरे हारू	निधि	एसुता	परान गीरु-विवाह हिरुआ चर्मकारिन

७९

२०३/१ परम ब्राह्मण-(महापात्र)	घुसौथ	खौआल	कुजौली	मताउन दरिहरा	गढ़ अलय	डीह दरिहरा
	केशव रुचि भवदेव	गौरी माधव	रामधर कृष्ण-माता अज्ञात	नारू बाटू-माता अज्ञात	जसाई	लक्षेश्वर होरे-परमब्राह्मण

८०

२०४/१	सोदरपुर	वहेराढ़ी	सोदरपुर	चकलिया	विहरा दरिहरा	पाली	अलय	डीह दरिहरा
	श्रीकर रघुनाथ कृष्णदेव	उमापति परमानन्द	छेदू लाखू	रूपधर हरिनाथ	रूपधर रघुनाथ-माता-अज्ञात	गणपति रति-माता अज्ञात	महेश्वर जसाई	लक्षेश्वर होरे-परमब्राह्मण

८१

२०५/II	वुधवाल	खौआल	बेलौंच	विस्फी	अलय	डीह दरिहरे	डीह दरिहरा
	परान मुरारी अनन्त	बाटू रतन	रघु अनन्त	रूपे धीरू-माता अज्ञात	जसाई रघु-माता अज्ञात गौरी	लक्षेश्वर होरे	लक्षेश्वर होरे-परमब्राह्मण

२०४/II	वुधवाल	माण्डर	जालय	कुजौली	मताउन दरिहरा	लय	डीह दरिहरा
	रति गोविन्द वांगु	श्रीमणि टेकी-माता अज्ञात	पागु सुधापति	गांगु रामधर	नारू बाटू-माता अज्ञात	जसाई	लक्षेश्वर होरे-परमब्राह्मण

८२

२०५/I गुरुपत्नी	खण्डवला	करमहा	नरउन	तेरहोता	कुजौली	मराड़
	ज्ञानपति सुरपति दूवे	गंगेश्वर श्रीधर	गौरीश्वर मुरारी	भवादित्य राजू	शिव	भट्टभूषण-गुरुपत्नीसँ विवाह

८३

८४

२०६/I गंगोली परमब्राह्मण	सोदरपुर	सकराढ़ी	जालय	कुजौली	मताउन दरिहरा	अलय	दरिहरा
	पाँखू पुरखू भवानन्द	माधव-माता यदुनाथ	सुन्दर यशोधर	गांगू रामधर	नारू बाटू-माता अज्ञात	महेश्वर जसाई	लक्षेश्वर-विवाह गंगोली परमब्राह्मण

८५

२०६/II	सोदरपुर	बेलौंच	पाली	गंगोली	अलय	दरिहरा
	काशी गुणी शंकर	देवनाथ कृष्ण-माता अज्ञात	गोविन्द होरे	राम महाय	जसाई नारायण-माता अज्ञात	लक्षेश्वर होरे-विवाह पथ पतिता कन्या

८६

२१६/I यवनी दौलत जहाँ पुत्री	सोदरपुर	खौआल	महिन्द्रवार पाली	गंगोली	खण्डवला	माण्डर	पाली	दरिहरा	बहेराढ़ी
	रघुपति रतिपति बलभद्र	गोविन्द बीसो	नाथू यशोधर	डगरू-माता अज्ञात गंगाधर	चन्द्रपति महेश गोपाल	काशी भीम	नोने बाटू	गुणे आनन्दु	गुणे अफेल-यवनीपुत्रीसँ विवाह

८७

जमूनी	माण्डर	चकरहद	हरीनी दिघोय	त्रिपुरे	गोण्डि
राम गोढ़ि	धारेश्वर-माता अज्ञात माधव	माने हरिकण्ठ	धनन्जय	गोढ़ाई	गोण्डि- गाउँ पुरन्दर पुत्री

	माने				

८८

२२७	महिषी वुधवाल	सोदरपुर	वलियास	करमहा	सकराढ़ी	पंचोभ	पवौली	पाली
	चान्द रामचन्द्र गरुड़ रमणी बालगोपाल मही	रुचि जयदत्त	रुद हरिनाथ रुचिनाथ	दुखन सतार	हरीश्वर धाने गोनू रामकृष्ण	वाचस्पति महेश	जानू धरमू हरि	कृष्णदेव मुकुन्द

८९

२२६/II	नरौन	पाली	पाली	दरिहरा	करमहा	एकहरा	माण्डर	सोदरपुर
	टून् गोनू हरिपाणि हरिनाथ प्राणपति	दामू गोपी	धीरू श्रीनाथ चीकू	गोपाल रतिदेव	पशुपति दशरथ रामचन्द्र परमानन्द	हरखू गोपी	नरहरि लक्ष्मीनाथ अभिमन्यु	हरखू जयराम

९०

२१८/I पश्चिम देशसँ आगत चाँरो	करमहा	सरिसव	वभनियाम	यमुगाम	पुरहदी
	गंगेश्वर राम हरिकर	गांगू रत्नपाणि	गोविन्द ऐंठो	कीर्तिवास नितिकर-माता अज्ञात	मतीश्वर धृतिकर

९१

२१८/II	सोदरपुर	पाली	सोदरपुर	दरिहरा	खण्डवला	वुधवाल	खौआल	ब्रह्मपुरा	पुरहद्दी
	नाथू वासुदेव श्रीपति	नरपति रुचि	थेघ यशोधर	धीरू लाखन	कुसुम धाने	वासू वागू	सूभे पाँथू	रघुनाथ माँगू	रातू

९२

२१९/I केरवाल शाखा	महिन्द्रवार पाली	गंगोली	दरिहरा	केरवाल पाली	मोरसण्ड करमहा
	भादू नाथूक माता-अज्ञात यशोधर	गंगाधर गदाधर	गोविन्द सिरू	जयदत्त गोपाल	ब्रह्मेश्वर स्थिति

९३

२१९/II	सोदरपुर	दरिहरा	पवौली	सुसैला	दरिहरा
	गोपीनाथ हाउँ जीवे	सुरसर वीर कुजौली मुरारी जागे	हरिहर शशिधर	सूरे माधव	लक्षेश्वर होरे-विवाह गंगोली पथ पतिता कन्या

९४

२२०/I वार्तिनी विधवा	पाली	पवौली	माण्डर	पाली	पुरिसमा	पंडौली
	हरि गोनि सुधाकर	बागे दूवन-माता अज्ञात	सर्वाय श्रीकर	समरू वंशी	श्रीकर रवि	गणपति चान्द-विध्वाक सन्तान

९५

२२०/II	हरिअम	सोदरपुर	करमहा	खौआल	जमुनी	खौआल	घोसियाम	सुरगण	होइयार
	नरहरि भवे मुरारि	राम भीम	हरिकर मीतू	सुधाकर बुद्धिकर	देवे महेश्वर	दास शशिकर	वशिष्ठ	देवशर्म्म नोने	शिवसिंह धाम

९६

२२१/I	कुजौली	माण्डर	नरउन	माण्डर	सुरगण	निखुती

धीवर दासी						
	जीवे महाय गोपीनाथ	प्रीतिकर शशि	शशि जीवे	भवादित्य गणपति	नारायण डालू	मंडन-पत्नी धीवरदासी

९७

२२१/II	माण्डर	करमहा	खौआल	बेलौंच	पाली	पचही	बलहा
	लटाउँ होराय मधुसूदन	रघु शिव	मीतू जीवे-माता अज्ञात	मित्रादित्य केशू	माधव गोप-विवाह दासी	इन्द्र भव	खाँजो दामू

टेबुल (१-९७)क उदाहरण १ क व्याख्या: गुणवति हिमशा जे आन जातिक रहथि, हिनकर विवाह वलियासमूलक चमरूसँ भेलन्हि, जाहिमे बालक गंगाधर भेलाह। एहिमे हुनकर संतति सरिसव मूलक नाथूसँ पुत्रीक विवाह- पुत्र विशो, फेर विशोक कन्याक विवाह सकराढ़ी मूलक गांगूसँ- ओहिमे बालक गोगे, गोगेक पुत्रीक विवाह पनिचोभ मूलक कान्हसँ ओहिमे पुत्र रुद, रुदक बेटीक विवाह दरिहरा मूलक हेलूसँ ओहिमे पुत्र चान्द, चान्दक पुत्रीक विवाह पाली मूलक होराईसँ जाहिमे पुत्र राम-रामक मातृक अज्ञात। रामक सन्तान (पुत्री)क विवाह नरवाल मूलक चान्दसँ। तिनकर बालक देवधर जे पूर्णतः शुद्ध भेलाह (छठम पीढ़ीमे)।
एहिना-

बहेराढ़ी सँ वराहसुत नोनेक विवाह खौआल हरिहर सुत रतिक विवाह माण्डर मूलक गोंढि सुत शिवक विवाह खण्डबलासँ दिनू सुत गुणाकरक विवाह दरिहरासँ मने सुत मेघक विवाह	पश्चिम दिशासँ आगत अज्ञात कुलशीलक कन्याक लागिमे भेलन्हि
तल्हनपुर मूलक रविसुत मिलूक विवाह टंकबालसँ जीवधर सुत गहाईक विवाह दरिहरा पा. हरिसुत हरिहरक विवाह पनिचोभ जगन्नाथक विवाह सोदरपुर दिवाकर सुत रघुक विवाह	चर्मकारिणी आनन्दाक सन्तानक लागि मे छलन्हि
नदामसँ कान्हक विवाह सोदरपुरसँ रतिपति सुत बलभद्रक विवाहक लागि खौआल गोविन्द सुत विशोक विवाहक लागि खण्डबला महेश सुत गोपालक विवाहक लागि	यवनी दौलति जहाँक सन्तानमे
खण्डबला सुरपति सुत दूवेक विवाहक लागि करमहा गंगेश्वर सुत श्रीधर नरउन गौरीश्वर सुत मुराठी सकराढ़ी भवादित्य सुत रामू	माण्डर मराड़ मूलक भट्ट भूषण जे गुरू पत्नीसँ विवाह कएल तनिक सन्तानक लागिमे रहन्हि

कुजौली शिवक विवाह	
वुधवालसँ परान पौत्र मुरारी सुत अनन्तक विवाह खौआलसँ वादू सुत रतनक विवाह बेलउँच रघु सुत अनन्तक विवाह विस्फीसँ रूपेक विवाह अलयसँ जसाईक विवाह	परम ब्राह्मण (महापात्रक) पुत्रीक संतानक लागि मे रहन्हि
सोदरपुर जीवेक विवाह दरिहरा सुरसर सुत वीरक विवाह माण्डरसँ सवाई सुत सुरसर क विवाह पालीसँ समरु सुत सुरसरक विवाह कुरिसमा सकराढ़ीसँ श्रीकर सुत रविक विवाह	वार्तिनी विधवा परम पथ पतिताक सन्तानक लागि मे छलन्हि
खण्डवला विश्वम्भर सुत हृषिकेशक विवाह दरिदरा जीवे सुत रामदेवक विवाह बुधवालसँ मणि सुत गणपतिक विवाह दरिहरासँ सुपे सुत रातूक विवाह फनन्दहसँ महनू सुत कान्हक विवाह	यादव रहमूक पुत्रीक सन्तानक लागि मे छलन्हि
सोदरपुर सँ पुरखू सुत भवानन्दक विवाह सकराढ़ी सँ माधवक विवाह माण्डरसँ दिनकर सुत सुधेक विवाह फनन्दह सँ सोरे सुत हारूक विवाह	चर्मकार हिरुआक पुत्रीक सन्तानक लागिमे छलन्हि
सोदरपुर मणिधर पौत्र रामसुत वासुदेवक विवाह करमहा रघुनाथ सुत हरिनाथक विवाह एकहरा रामसुत गणपतिक विवाह खौआल जादूसुत परानक विवाह बेलउँचसँ दिनूसुत थेघक विवाह बेलउँचसँ दिनूसुत	गोप पुत्रीक सन्तानक लागिसँ छल

खौआल श्रीकर सुत दिवाकर विवाह	रजकक कन्या हड़िनी रूद्रमतिक पुत्रीक सन्तानक लागिमे छलन्हि
बहेराढ़ी गांगु सुत दोक विवाह	
सकौना गोपाल सुत गौरी पतिक विवाह	
दिधोय माधव सुत जगाईक विवाह	
छादनसँ तत्व चिन्तामणि कारक	
गंगेशक वल्लभा चर्मकारिणी पितृ परोक्षे पञ्च वर्ष व्यतीते तत्व चिन्तामणि कारक गंगेशोत्पत्ति	
	चर्मकारिणी मेधाक सन्तानक लागिमे छलन्हि
सोदरपुर गोविन्द सुत परशुरामक विवाह	
अलयसँ गादू सुत श्रीनाथक विवाह	
माण्डरसँ अफेल सुत गादूक विवाह	
पनिचोभ सँ विद्यापतिसुत रमापतिक विवाह	
	आसामक कोच राजवंशी राजा सँ छलन्हि पुत्रीक नाम सोहागो
खण्डबलासँ सुरपतिसुत दूवे सुत चन्द्रपतिक पुत्रीक विवाह	

[मूल दूषण पंजीक स्कैन कॉपी ऐ पोथीक अंतमे देल गेल अछि। पंजीक हमर पोथीमे ओना तँ ११००० तालपत्रक जे.पी.जी.इमेज क डी.वी.डी. सेहो अलगसँ किनबाक व्यवस्था रहै आ ओइ डी.वी.डी.केँ कबिलपुरक सगर राति दीप जरएमे हम बाँटनहियो रही, मुदा ओइमे जे दूषण पंजी रहै तकर कारण कतेक पंचैती भेल, कतेक गोटे सोझाँ आ फोनपर गारि पढ़लन्हि। अखनो बहुत गोटे पंजीमे ओकर चर्चासँ भितरे-भितरे गुम्हरैत रहैत छथि आ गपमे तामसे हाँफऽ लगै छथि जेना खून पीबि जेता। ऐ दूषण पंजीमे ब्राह्मणक आन जाति खास कऽ दलित आ मुस्लिमक संग विवाह, वा पतिक मृत्युक बाद विवाहक लिखित दस्तावेज छल। ओकरामे हेर-फेर केनाइ हमरासँ सम्भव नै छल। पंजीक पोथीमे शब्दशः एकर मिथिलाक्षरसँ देवनागरीमे लिप्यंतरण भेल अछि। एतए हम मूल ताड़पत्र आ बसहा पत्रपर लिखल पंजीक लिंक दऽ रहल छी। संगमे पंजीक लिंक सेहो। कियो नै कहि सकैत अछि जे ऐ मे एक्को रत्ती अशुद्धि अछि। गंगेशक जन्म पिताक मृत्युक ५ बर्ख बाद आ फेर हुनकर चर्मकारिणीसँ विवाह एतए वर्णित भेटत। ई वएह नव्य-न्यायक जनक गंगेश छथि। आनन्दा चर्मकारिणीसँ विवाह एतए सेहो भेटत जे हमरा द्वारा लिखित प्रेमकथा "शब्दशास्त्रम्"क आधार बनल।

दूषण पंजी- मूल मिथिलाक्षर लेख- ताड़पत्र सिंगल पी.डी.एफ.
https://docs.google.com/a/videha.com/viewer?a=v&pid=sites&srcid=dmlkZWhhLmNvbXx2aWRlaGEtcG90aGl8Z3g6ZjFiNTA5NGI2YTVlNGEx

मोदानन्द झा शाखा पंजी-
http://videha123.files.wordpress.com/2011/09/modanand_jha_shakha_panji.pdf

मंडार- मरड़े कश्यप-प्राचीन-
http://videha123.files.wordpress.com/2011/09/mandar_marare_kashyap_prachin_complete.pdf

प्राचीन पंजी (लेमीनेट कएल)-
http://videha123.files.wordpress.com/2011/09/laminatedpanji.pdf

उतेढ़ पंजी-
http://videha123.files.wordpress.com/2011/09/panji_7_uterh_panji.pdf

पनिचोभे बीरपुर- https://sites.google.com/a/videha.com/videha-

pothi/Home/Panichobhe_Birpur.pdf?attredirects=0
दरभंगा राज आदेश उतेढ आदि https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/Home/DARBHANGA_RAJ_ORDER_PANJI_PACHHBARI_ORDER_UTEDH.pdf?attredirects=0
छोटी झा पुस्तक निर्देशिका-
http://videha123.files.wordpress.com/2011/09/panji_directory_chotijha_shakha_pustak.pdf
पत्र पंजी http://videha123.files.wordpress.com/2011/09/patra_panji.pdf
मूलग्राम पंजी
http://videha123.files.wordpress.com/2011/09/panji_8_moolgram_panji.pdf
मूलग्राम परगना हिसाबे पंजी
http://videha123.files.wordpress.com/2011/09/panji_9_moolgram_parganawise_panji.pdf
मूल पंजी-2 http://videha123.files.wordpress.com/2011/09/moolpanji_2.pdf
मूल पंजी-३- http://videha123.files.wordpress.com/2011/09/mool_panji_3.pdf
मूल पंजी-४ http://videha123.files.wordpress.com/2011/09/mool_panji_4.pdf
मूल पंजी-५ http://videha123.files.wordpress.com/2011/09/mool_panji_5.pdf
मूल पंजी-६ http://videha123.files.wordpress.com/2011/09/moolpanji_6.pdf
मूल पंजी-७-
http://videha123.files.wordpress.com/2011/09/prachin_panji_last.pdf

पंजी-पोथी- http://www.box.net/shared/yx4b9r4kab
]

अनुलग्नक

जीनोम मैपिंग (४५० ए.डी. सँ २००९ ए.डी.) – मिथिलाक पञ्जी प्रबन्ध

खण्ड - १ : प्राचीन पञ्जी

खण्ड - २ : उपटीप

खण्ड - ३ : नगराम

महाराज हरसिंहदेव

मिथिलाक कर्णाट वंशक। ज्योतिरीश्वर ठाकुरक वर्ण-रत्नाकरमे हरसिंहदेव नायक आकि राजा छलाह। 1294 ई. मे जन्म आ 1307 ई. मे राजसिंहासन। घियासुद्दीन तुगलकसँ 1324-25 ई. मे हारिक बाद नेपाल पलायन। मिथिलाक पञ्जी-प्रबन्धक ब्राह्मण, कायस्थ आ क्षत्रिय मध्य आधिकारिक स्थापक, मैथिल ब्राह्मणक हेतु गुणाकर झा, कर्ण कायस्थक लेल शंकरदत्त, आ क्षत्रियक हेतु विजयदत्त एहि हेतु प्रथमतया नियुक्त भेलाह। हरसिंहदेवक प्रेरणासँ- आ ई हरसिंहदेव नान्यदेवक वंशज छलाह, जे नान्यदेव कार्णाट वंशक १००९ शाकेमे स्थापना केने रहथि- नन्दैद शुन्यं शशि शाक वर्षे (१०१९ शाके)... मिथिलाक पण्डित लोकनि शाके १२४८ तदनुसार १३२६ ई. मे पञ्जी-प्रबन्धक वर्तमान स्वरूपक प्रारम्भक निर्णय कएलन्हि। पुनः वर्तमान स्वरूपमे थोडे बुद्धि विलासी लोकनि मिथिलेश महाराज माधव सिंहसँ १७६० ई. मे आदेश करबाए पञ्जीकारसँ शाखा पुस्तकक प्रणयन करबओलन्हि। ओकर बाद पाँजिमे (कखनो काल वर्णित १६०० शाके माने १६७८ ई. वास्तवमे माधव सिंहक बादमे १८०० ई.क आसपास) श्रोत्रिय नामक एकटा नव

ब्राह्मण उपजातिक मिथिलामे उत्पत्ति भेल।

मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (ज्योतिरीश्वर पूर्व)

मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (विद्यापतिक चित्र: विदेह चित्रकला सम्मानसँ पुरस्कृत पनकलाल मण्डल द्वारा)



कवीश्वर ज्योतिरीश्वर(लगभग १२७५-१३५०)सँ पूर्व (कारण ज्योतिरीश्वरक ग्रन्थमे हिनक चर्च अछि), मैथिलीक आदि कवि। संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापति ठक्कुर:सँ भिन्न। सम्भवतः बिस्फी गामक बार्बर कास्टक श्री महेश ठाकुरक पुत्र। समानान्तर परम्पराक बिदापत नाचमे विद्यापति पदावलीक (ज्योतिरीश्वरसँ पूर्वसँ) नृत्य-अभिनय होइत अछि।ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापति:- कश्मीरक अभिनव

गुप्त (दशम शताब्दीक अन्त आ एगारहम शताब्दीक प्रारम्भ)- ग्रन्थ “ईश्वर प्रत्याभिज्ञा- विभर्षिणी” मे विद्यापतिक उल्लेख करै छथि। श्रीधर दासक सदुक्तिकर्णामृत, (रचना ११ फरबरी १२०६, मध्यकालीन मिथिला, वि.कु. ठाकुर)- श्रीधर दास विद्यापतिक पाँच टा पद उद्धृत केने छथि जे विद्यापतिक पदावलीक भाषा छी।

“जाव न मालतो कर परगास

तावे न ताहि मधुकर विलास।“ आ

“मुन्दला मुकुल कतय मकरन्द”

ज्योतिरीश्वर (१२७५-१३५०) षष्ठः कल्लोल- ॥अथ विद्यावन्त वर्णना॥ अष्टमः कल्लोलः- ॥अथ राज्य वर्णना॥ मे उल्लेख।

महाकवि विद्यापति ठाकुर 1350-1435 (मैथिलीक आदि कवि ज्योतिरीश्वर-पूर्व विद्यापतिसँ भिन्न, संस्कृत आ अवहट्ठमे लेखन)

महाकवि विद्यापति ठाकुर 1350-1435

विद्यापति ठक्कुरः 1350-1435 विषएवार बिस्फी-काश्यप (राजा शिवसिंहक दरबारी) आ संस्कृत आ अवहट्ठ लेखक। कीर्तिलता, कीर्तिपताका, पुरुष परीक्षा, गोरक्षविजय, लिखनावली आदि ग्रंथ समेत विपुल संख्यामे कालजयी रचना। ई मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (ज्योतिरीश्वर पूर्व)सँ भिन्न छथि।



(चित्रक आधार मिथिला सांस्कृतिक परिषद, कोलकाता द्वारा कोनो कलाकारसँ बनबाओल , कलाकारक नाम ६०-७० सालसँ अज्ञात कारणसँ गुप्त राखल गेल अछि।)

जीनोम मैपिंग
(४५० ए.डी.सँ २००९ ए.डी.) - मिथिलाक पञ्जी प्रबन्ध

पञ्जी प्रबन्ध पूर्व मध्य कालमे ब्राह्मण, कायस्थ आ क्षत्रिय वर्गक जाति शुद्धताक हेतु निर्मित कएल गेल । कोनो ब्राह्मणक जाति शुद्धताक हेतु उतेढ़ जानब आवश्यक छल।उतेढ़ छल सात पुरुषक परिचय, जाहि हेतु एहि बत्तीस कुलक परिचय आवश्यक छल- पिता एवं माताक पितामह एवं पितामही आ मातामह एवं मातामही केर पितामह एवं पितामही आ माता एवं मातामही केर पिता। आ एहि बत्तीस पूर्वजसँ विवाहयोग्य व्यक्ति सातम पड़बाक चाही।एहि क्रममे श्रोत्रिय,योग्य आ पञ्जीबद्ध श्रेणीक विभाजन गेल। जे पञ्जीबद्ध नहि छलाह से जएबार भेलाह। उतेढ़मे श्रोत्रिय मातृपक्षमे पाँच पीढ़ी आ पितृपक्षमे सात पीढ़ी त्यागि विवाह करैत छलाह।पञ्जीबद्ध लोकनि जिनका वंशज सेहो कहल जाइत अछि,मातृ पक्षमे पाँच आ पितृ-पक्षमे छः पीढ़ी त्यागि कय विवाह करैत छलाह। सम्प्रति धर्मशास्त्रसँ श्रोत्रिय-योग्य-पञ्जीबद्ध आ तथाकथित जएवार सभहिक हेतु एकहि व्यवस्था अछि, भिन्न किछु नहि।२० प्रकारक गोत्र १६७ प्रकारक मूल आ अनेक प्रकारक मूलग्राममे ई सभ विभक्त छल। पुनः कर्मकाण्डक आधार पर सामवेदी आ शुक्ल यजुर्वेदी ब्राह्मणक दू गोट उर्ध्वाधर विभाजन क्रमशः छन्दोग्य आ वाजसनेय ब्राह्मणक रूपमे बनले रहल।२० गोट गोत्र आ १६७ मूल ग्राममे मुख्य मूल ३४ टा निर्धारित कएल गेल। एहि १६७ मूलसँ सेहो ई सभ विभिन्न क्षेत्र आ ग्राममे पसरलाह। *परवर्ती कालमे फनन्दह मूलक खनाम शाखा ३५म मूलक रूपमे तथाकथित उच्च वंशक मध्य परिगणित भेल।*

२० गोट गोत्र निम्न प्रकारे अछि: १. शाण्डिल्य २. वत्स ३. सावर्ण ४. काश्यप ५. पराशर ६. भारद्वाज ७. कात्यायन ८. गर्ग ९. कौशिक १०. अलाम्बुकाक्ष ११. कृष्णात्रेय १२. गौतम १३. मौदगल्य १४. वशिष्ठ १५. कौण्डिन्य १६. उपमन्यु १७. कपिल १८. विष्णुवृद्धि १९. तण्डी आ जातुकर्ण।

मुख्य ३५ (३४+ *फनन्दह मूलक खनाम शाखा)* मूल सेहो तीन श्रेणीमे विभक्त अछि।

अयान्त श्रेष्ठ- प्रथम श्रेणीमे १. खड़ौरय, २. खौआड़य, ३. बुधबाड़य, ४. मड़रय, ५. दरिहरय, ६. घुसौतय, ७. तिसौतय, ८. करमहय, ९. नरौनय, १०. वभनियामय, ११. हरिअम्मय, १२. सरिसवय, १३. सोदरपुरिये।

द्वितीय श्रेणीमे १. गंगोलिवार, २. पवौलिवार, ३. कुजौलिवार, ४. अलेवार, ५. वहिड़वार, ६. सकड़िवार, ७. पलिवार, ८. विसेवार, ९. फनेवार, १०. उचितवार, ११. पंडुलवार, १२. कटैवार, १३. तिलैवार।

मध्यम मूल- १. दिघवे, २. बेलौंचै, ३. एकहरे, ४. पंचोभे, ५. वलियासे, ६. जजिवाल, ७. टकवाल, ८. पण्डुए।

प्रवर:मैथिल ब्राह्मणक मध्य २ वर्गक प्रवर परिवार होइत अछि- त्रिप्रवर आ पाँच प्रवर। जाहि गोत्रक तीन गोट पूर्वज ऋगवेदक सूक्तिक रचना कएल से त्रिप्रवर आ जाहि गोत्रक पाँच गोट पूर्वज लोकनि ऋगवेदक सूक्तक रचना कएल से पाँच प्रवर कहबैत छथि।

एहि प्रकारेँ गोत्रानुसारे प्रवर निम्न प्रकार भेल:-

त्रिप्रवर- १.शाण्डिल्य, २.काश्यप,३. पराशर, ४. भारद्वाज, ५. कात्यायन, ६. कौशिक, ७. अलाम्बुकाक्ष, ८. कृष्णात्रेय, ९. गौतम, १०. मौदगल्य, ११. वशिष्ठ, १२. कौण्डिन्य, १३. उपमन्यु, १४. कपिल, १५. विष्णुवृद्धि, १६. तण्डी।

पंचप्रवर- १. वत्स, २. सावर्ण, ३. गर्ग।

प्रवरक विस्तृत विवरण निम्न प्रकारेँ अछि-

१. शाण्डिल्य- शाण्डिल्य, असित आ देवल। २. वत्स-ओर्व, च्यवन,भार्गव,जामदगन्य आ आप्लवान। ३. सावर्ण- ओर्व, च्यवन, भार्गव, जामदगन्य आ आप्लवान। ४. काश्यप-काश्यप, अवत्सार आ नैघ्रूव। ५. पराशर-शक्ति, वशिष्ठ आ पराशर। ६. भारद्वाज-भारद्वाज, आंगिरस आ बार्हस्पत्य। ७. कात्यायन-कात्यायन, विष्णु आ आंगिरस। ८. गर्ग-गार्ग्य, घृत, वैशम्पायन, कौशिक आ माण्डव्याथर्वन। ९.

कौशिक- कौशिक, अत्रि आ जमदग्नि. १०. अलाम्बुकाक्ष-गर्ग, गौतम आ वशिष्ठ. ११. कृष्णात्रेय-कृष्णात्रेय, आप्लवान आ सारस्वत. १२. गौतम-अंगिरा, वशिष्ठ आ बार्हस्पत. १३. मौदगल्य-मौदगल्य, आंगिरस आ बार्हस्पत्य. १४. वशिष्ठ-वशिष्ठ,अत्रि आ सांकृति. १५. कौण्डिन्य-आस्तिक,कौशिक आ कौण्डिन्य. १६. उपमन्यु-उपमन्यु, आंगिरस आ बार्हस्पत्य। १७. कपिल-शातातप, कौण्डिल्य आ कपिल. १८. विष्णुवृद्धि-विष्णुवृद्धि, कौरपुच्छ आ त्रसदस्य १९. तण्डी-तण्डी, सांख्य आ अंगीरस २०. जातुकर्ण- जातुकर्ण, आंगीरस आ भारद्वाज।

एहिमे सावर्ण आ वत्सक पूर्वज एके छथि ताहि हेतु दू गोत्र होइतो हिनका बीच विवाह नहि होइत छन्हि। छानदोग्य आ वाजसनेयक वैदिक युगीन उर्ध्वाधर विभाजन एकर संग रहबे कएल आ यज्ञोपवीत मंत्र/ विवाह विधि दुनूक भिन्न-भिन्न अछि। फेर यज्ञोपवीतमे तीन प्रवर आकि पाँच प्रवर देल जाय ताहि हेतु उपरका सूचीक प्रयोग कएल जाइछ।

भारतीय इतिहासक वेत्ता ओ जातीय व्यवस्थाक मर्मज्ञ लोकनि जनैत छथि, जे भारतवर्षक ब्राह्मण लोकनि सर्वप्रथम वेदक आधार पर विभिन्न वर्गमे विभाजित रहथि। जेना- सामवेदी, यजुर्वेदी, आदि कहाबथि। मुदा समयक प्रभावमे भिन्न क्षेत्र-प्रक्षेत्रमे रहनिहार ब्राह्मण लोकनि भिन्न-भिन्न संस्कृतिसँ प्रभावित भए गेलाह। क्षेत्रीय संस्कृतिसँ प्रभावित होएबाक मुख्य कारण छल विशिष्ट क्षेत्रक विशिष्ट जलवायु, क्षेत्र विशेषक भाषा-विशेष, भिन्न-भिन्न क्षेत्रक भिन्न-भिन्न आहार एवम भेष-भूषा आ एक क्षेत्र सँ दोसर क्षेत्र जयबाक हेतु आवागमनक असुविधा आदि। फलतः क्षेत्र-विशेषक ब्राह्मण समुदाय, क्षेत्र विशेषक आचार-विचार, खान-पान, वेश-भूषा, भाव-भाषा ओ सभ्यता संस्कृतिसँ प्रभावित भय गेलाह।

उपरोक्त कारणे पुरानक युग अबैत-अबैत भारत वर्षक ब्राह्मण समाज भिन्न-भिन्न क्षेत्रक आधार पर विभिन्न वर्गमे विभाजित भए गेलाह। पुरानक सम्मतिये भारत-वर्षक समस्त ब्राह्मण समाजकेँ दस(१०) वर्गमे

विभाजित कएल गेल। ब्राह्मणक ई दसो वर्ग थीक- उत्कल,कान्यकुब्ज,गौड़,मैथिल,सारस्वत, कार्णाट,गुर्जर, तैलंग,द्रविड़ ओ महाराष्ट्रीय। स्थूल रूपेँ पूर्वोक्त पाँच केँ पञ्च गौड़ आ अपर पाँचकेँ पञ्च द्रविड़ कहल जाइत अछि। एकर सीमांकन भेल विन्ध्याचल पर्वतक उत्तर पञ्च गौड़ ओ विन्ध्याचल पर्वतक दक्षिण पञ्च द्रविड़।

मैथिल ब्राह्मण: पञ्च गौड़ वर्गक मैथिल ब्राहमण लोकनि पुस्ति-दर-पुस्त सँ मिथिलामे रहबाक कारणेँ मिथिलाक विशिष्ट संस्कृतिसँ प्रभावित भए गेलाह, तँय अहि कारणेँ पुराणक युगमे मैथिल ब्राह्मण कहाए सुप्रसिद्ध भेलाह। मिथिला वस्तुतः प्राचीन विदेह राजवंशक राजधानी रहए। मुदा पश्चातक युगमे विदेह राजवंशक समस्त प्रशासित क्षेत्र अथवा जनपद मिथिला कहाए सुप्रसिद्ध भेल आ एहि जनपदक रहनिहार ब्राह्मण लोकनि मैथिल ब्राह्मण कहओलन्हि। ई मिथिला आइ नेपाल ओ बंगलादेशक सीमा सँ सटैत अनुवर्त्तमान अछि, जे राजनीतिक एवं सांस्कृतिक दृष्टिसँ अपन एक विशिष्ट स्थान रखैत अछि।

मैथिल ब्राह्मण लोकनि मूलतः दुइए गोट वेदक अनुयायी थिकाह। एक वर्ग यजुर्वेदक माध्यान्दिन शाखाक अनुयायी थिकाह तँ दोसर सामवेदक कौथुम शाखाक अनुगमन करैत छथि। यजुर्वेदक माध्यन्दिन शाखाक अनुयायी “वाजसनेयी” कहबैत छथि, एहिना सामवेदक कौथुम शाखाक अनुयायी छन्दोग कहबैत छथि।दुहुक संस्कारमे किछु स्थूल अन्तरो अछि। छन्दोगक उपनयनमे चारि गोट संस्कार-नामकरण, चूड़ाकरण, उपनयन ओ समावर्त्तन, मुदा वाजसनेयीक ई चारू संस्कार थिक, चूड़ाकरण, उपनयन, वेदारम्भ ओ समावर्त्तन। एहिना छन्दोग विवाह मुख्यतः दू खण्डमे सम्पन्न होइत अछि, पूर्व विवाह आओर उत्तर विवाह। उत्तर विवाह सूर्यास्तक बाद तारा (अरुन्धती) देखि कए होइत अछि। मुदा वाजसनेयी विवाहमे एहन कोनो विभाजन नहि अछि। एकहि क्रममे दिन अथवा रातिमे कखनहुँ भए सकैत अछि। वाजसनेयी ओ छन्दोगक धार्मिक संस्कारमे तँ सूक्ष्म अंतर कतौक अछि।

पुनश्च सप्तसिन्धु सँ प्राच्याभिमुखी यायावर ऋषि लोकनि गंगा ओ हिमालयक मध्यक सुभूमि मिथिलामे जाहि आर्यसंस्कृतिक बीज-वपन कएल, तकर मूल छल धर्म, धर्मक मूल छल जाति, ई जाति होयत एहि जन्मक विशुद्धिसँ, जन्मसँ विशुद्ध संतान होइत अछि!!

तखन जखन विवाहक अधिकार जाहि कन्यासँ हो तकरहिसँ विवाह कएला उत्तर प्राप्त संतान आर्य जातिक विवाहक नियम सभ सर्वप्रथम निबंधित भेल विभिन्न स्मृति सभमे। स्मृतिकार मनु ओ याज्ञवल्क्यक अनुसार ओहि कन्यासँ विवाहक अधिकार हो जे- १. समान गोत्रक नहि होथि, २. समान प्रवरक नहि होथि, ३. माइक सपिण्ड नहि होथि, ४. पिताक सपिण्ड नहि होथि, ५. पितामह अथवा मातामहक संतान नहि होथि, ६. कठमामक संतान नहि होथि।

एहि वैवाहिक अधिकारक निष्पादनार्थ कमसँ कम मनु ओ याज्ञवल्क्यक समयसँ तँ निश्चये लोक अपन 'यावतो परिचय' स्वयं अपनहि रखैत आबि रहल छल, मुदा पश्चातक युगमे ई प्रवृत्ति समाप्तप्राय भऽ गेल। विवाहक हेतु वर ओ कन्याक सम्पूर्ण परिचय तँ आवश्यके छल, जे आनहु धार्मिक संस्कारक हेतु सपिण्डत्वक विचार विवाहक अतिरिक्त श्राद्ध ओ अशौच प्रभृतिअहुमे आवश्यक होइत छल, एहि कारणेँ प्रागैतिहासिक कालहिसँ लोक अपन सांगोपांग परिचय रखैत छल। ओ ओकरहि अनुसार अपन धार्मिक क्रियाक निष्पादन करैत रहए। ई नियम सभ हमरा लोकनिक प्राचीनतम धर्मग्रंथ सभमे उपलब्ध अछि। स्मृति सभमे कहल गेल अछि, जे जनिकासँ विवाहक अधिकार नहि हो से स्वजना भेलीह। स्वजनासँ विवाहोपरांत प्राप्त संतान चाण्डाल बूझल जाइत छल। ओ आर्यत्वक मर्यादासँ बहिष्कृत मानल जाइत छल!! (एकर सए सँ बेशी अपवाद नीचाँ देल गेल अछि-आर बहुत रास भीतर पोथीमे भेटत।) अतः विवाहक पहिल चरण अधिकारक निर्णय रहल होयत। वर पक्ष ओ कन्या पक्षक लोक परस्पर बैसि अपन-अपन परिचयक आधार पर निर्णय करैत छल होएताह, जे 'अमुक' कन्यासँ 'अमुक' वरक विवाह हो वा नहि। मुदा

परिचय रखबाक प्रवृत्तिक ह्रासक कारणेँ अधिकार-निर्णयक हेतु प्रत्येक परिवारक सुयोग्य ओ आस्थावान व्यक्ति अपन यावतो परिचय(३२ मूलक उल्लेख) लिखि कए राखय लगलाह। सातम शताब्दीसँ पूर्वहि एहि लिखित कौलिक परिचय 'समूह लेख्य' क उल्लेख सर्वप्रथम विद्वद्वरैण्य कुमारिल भट्ट रचित 'तंत्र वार्त्तिक'मे भेल अछि, जे मीमांसा दर्शनक जैमिनी सूत्रक शबर द्वारा कएल भाष्यक गद्यात्मक 'वार्त्तिक' थीक। तंत्रवार्त्तिक दर्शनक ग्रंथ थीक जाहिमे यथार्थ वस्तुस्थितिक वर्णनसँ जातिक विशुद्धि सिद्ध कएल गेल अछि, जाहि आधार पर धर्मक निरूपण भए सकैत। कुमारिल भट्टक कहब छलन्हि जे "बड़का कुलीन लोक बड़ विशेष प्रयत्नसँ अपन जातिक रक्षा करैत छथि। तँहि तऽ क्षत्रिय ओ ब्राह्मण अपन पिता-पितामहादिक परम्परा बिसरि नहि जाए तेँ समूह-लेख्य चलौलन्हि। ओ प्रत्येक कुलमे गुण आ दोष देखि ओहि अनुरूप सम्बंध करबामे प्रवृत्त होइत छथि"।

"विशिष्टेनैव हि प्रयत्नेन महाकुलीनाः परिक्षन्ति आत्मानम् अनेनैव हि हेतुना राजाभिर्व्राह्मणैश्च स्व पितृ-पितामहादि पारम्पर्‌या-विस्मर्णार्थं समूहलेख्यानिप्रवर्तितानि तथा च प्रतिकुलं गुण-दोष स्मर्णांतदनुरूपाः प्रभृति-निवृतयो दृश्यते"।(तंत्रवार्त्तिक, अध्याय १, पाद-२, सूत्र-२क वार्त्तिक)

मुदा तेरहम शताब्दीक उत्तरार्ध होइत-होइत साधारण लोकक कोन कथा पण्डित लोकनि सेहो समूह लेख्य राखब छोड़ि देलन्हि। एकर परिणाम ई भेल जे पं हरिनाथ उपाध्याय (धर्म-शास्त्रक महान ज्ञाता) "स्मृतिसार" सन धर्मशास्त्रक विषयक ग्रंथकर्त्ता ओ महापंडितक परिचयक अभावमे विवाह कए लेल, स्वजनमे अनधिकारमे अपन साक्षात पितयौत भाइक दौहित्रीमे। फलतः चौदहम शताब्दीक तृतीय दशक होइत-होइत एहि कौलिक परिचयकेँ विशिष्ट पण्डितक अधीन कए देबाक आवश्यकताक अनुभव कएल जे विवाहक समय अधिकारक निर्णय कए सकथि। मिथिलाक तत्कालीन शासक राजा हरिसिंहदेवक प्रेरणासँ मिथिलाक पण्डित लोकनि शाके १२४८ तदनुसार १३२६ ई. मे निर्णय कएलन्हि, जे "परिचय राखब लोककेँ

अपना पर नहि छोड़ल जाय, प्रत्युत ओकरा संगृहित कए विशिष्ट पण्डितजनक जिम्मा कए देल जाए, ओ ई राजकीय एक गोट विभाग बना देल जाए, जाहिसँ पण्डित राजाज्ञासँ नियुक्त होथि, सैह संगृहित परिचय राखथि। प्रत्येक विवाह तखनहि स्थिर हो जखन नियुक्त पंडित (पञ्जीकार) अधिकार जाँचि कए लिखिकऽ देथि, जे अमुक कन्या ओ अमुक वर 'स्वजना' नहि छथि। अर्थात् शास्त्रीयनियमानुसार कन्याक संग वरकेँ वैवाहिक अधिकार छन्हि। इयैह पत्र 'अस्वजन पत्र' वा 'सिद्धांत पत्र' कहौलक। आइयो कन्या वरक विवाह पूर्व अधिकार जँचाए सिद्धांत पत्र लेब आवश्यक बूझल जाइत अछि। पञ्जी-प्रबंधमे इएह सभसँ प्रधान नियम भेल जे बिनु सिद्धांत भेने विवाह अशास्त्रीय मानल जायत। 'अस्वजन पत्र' देनिहार राजाज्ञासँ नियुक्त इएह पण्डित पञ्जीकार कहओलाह। संगृहित परिचय जाहिमे प्रत्येक नव जन्म ओ विवाह जोड़ल जाय लागल से भेल पञ्जी। जिनकर पञ्जीमे नाम आएल से भेलाह पञ्जीबद्ध।

महाराज हरिसिंहदेव ओ तत्कालीन पण्डितक संयुक्त निर्णय अनुसार परिचेता लोकनिक नियुक्ति कए समस्त मैथिल ब्राह्मणक सम्पूर्ण परिचय संगृहित कएल गेल। परिचेता लोकनि घुमि-घुमि प्रत्येक परिवारक मुख्य व्यक्तिसँ हुनक परिचय पुछि लिखि लेल करथि। सामान्य रूँपे छओ पुरुषक परिचय सभ जनैत रहथि। किछु गोटा एहिसँ बहुतो अधिक परिचय जनैत रहथि। एहिना किछु गोटए मात्र दू वा तीन पुरुषाक ज्ञान रखैत छलाह। जे जतबा जनैत रहथि हुनकासँ ओतबहि संग्रह कए हुनकर पूर्वजक वास-स्थान, गोत्र, प्रवर तथा हुनक वेद ओ शाखाक सूचना लिखि लेल जाइत रहए। एहि संग्रहसँ एकहि कुलक अनेक शाखा जे विभिन्न ग्राममे बसैत छलाह, तकर परिचय एकत्र भए गेल। एहि रूपेँ गोत्रक अनुसार भिन्न-भिन्न कुलक सम्पूर्ण परिचय प्राप्त भए गेल। एहि परिचय संकलनक समय सभसँ प्रमुख मानल गेल बीजी पुरुष ओ मूल ग्रामकेँ। कारण कौलिक परिचयक हेतु सर्वाधिक उपयोगी इयैह सूत्र भेल। विभिन्न गाममे बसैत एकहि कुलक विभिन्न व्यक्तिक कौलिक परिचय एहि मूल ग्रामक आधार पर संगृहित

कएल गेल रहए। एहि कारणे पञ्जीमे अनिवार्य रूपसँ मूल ग्रामक उल्लेख भेल अछि। पञ्जी-प्रबंधक समय जे व्यक्ति जतए बसैत रहथि से हुनक भावी संतानक ग्राम कहाओल ओ परिचय लिखौनिहार अपन पूर्वजक प्राचीनतम वास स्थानक जे नाम कहल से ओहि व्यक्तिक मूल भेल। एहिना प्रत्येक कुलक प्राचीनतम ज्ञात पूर्वज ओहि कुलक बीजी पुरुष कहाओल। एकर प्रमाणमे एक गोट उदाहरण देखल जाए सकैत अछि। काश्यप गोत्रीय एक महाकुल जकर चौहत्तरि शाखा मिथिलामे अनुवर्त्तमान अछि, संगृहित परिचयक आधार पर मूलतः माण्डर ग्रामक वासी सिद्ध भेलाह। मुदा पञ्जी-प्रबंधसँ बहुत पहिनहि, एकर दू गोट शाखा स्पष्टतः प्रमाणित भए गेल। एक मँगरौनी गामक आ दोसर गढ़-गामक। अतः पञ्जीमे आदिअहिसँ माण्डरक संग-संग गढ़ ओ मँगरौनी विशेषण जोड़ल जाए लागल। मुदा उपलब्ध परिचयक आधार पर दुनू एकहि कुलक दू शाखा सिद्ध भेल। तँय दुनू कुलक मूल एकहि भेल ओ बीजी पुरुष सेहो एकहि भेलाह।

गोत्र एना कहल जाइत अछि जे सकल गोत्रक समस्त जन समुदाय एकहि प्राचीनतम ज्ञात महापुरुषक वंशज थिकाह। ईएह प्राचीनतम ज्ञात महापुरुष गोत्र कहाए सुविख्यात छथि। श्री एम.पी. चिंतालाल राव महोदय चारि हजार गोत्रक सूची तैयार कएने छथि। “अमरकोष”मे गोत्रक हेतु तीन अर्थ देल गेल अछि- पर्वत, वंश आ नाम। “वाचस्पत्य” कोषमे गोत्रक एगारह अर्थ देल गेल अछि- पर्वत, नाम ,ज्ञान, जंगल,खेत,क्षत्र,संघ,धन, मार्ग, वृद्धि आ मुनि लोकनिक वंश। प्राचीन संस्कृत साहित्यमे गोत्र शब्दक प्रयोग प्रायः वंश वा पिताक नामक लेल भेल अछि। छान्दोग्य उपनिषद (४/४) मे जीवन गुरु सत्यकामसँ गोत्र पुछैत छथि तँ हुनक अभिप्राय सत्यकामक कुल अथवा पिताक नामसँ छन्हि। मुदा ऋगवेदमे गोत्रक उल्लेख चारि ठाम मेघ अथवा पहाड़क लेल आ दू ठाम पशु समूह अथवा जनसमुदाय अथवा पशु रक्षक रूपमे भेल अछि। अंततः वंश अथवा परिवारक अर्थमे गोत्र शब्दक प्रयोग पश्चातक प्रयोग थिक। वंश अथवा परिवारक अर्थमे गोत्रक प्रयोग सर्वप्रथम छान्दोग्य उपनिषदमे भेल अछि।

मैथिल ब्राह्मण समाजमे गोत्र वंश-बोधक थीक। मैथिल ब्राह्मणक समस्त गोत्र पितृ प्रधान थीक- अर्थात् प्रत्येक गोत्र अपन-अपन वंशक प्राचीनतम ज्ञात महापुरुषक नाम थीक। मैथिल ब्राह्मणमे सभ मिलाए २० गोट गोत्र अछि। मैथिल ब्राह्मणमे सात गोट गोत्रक कुल व्यवस्थित, सुपरिचित ओ बहुसंख्यक अछि। ई सात गोट गोत्र थीक- १. शाण्डिल्य २. वत्स ३. काश्यप ४. सावर्ण ५. पराशर ६. भारद्वाज ७. कात्यायन। शेष १३ गोट गोत्र थीक- १. गर्ग २. कौशिक ३. अलाम्बुकाक्ष ४. कृष्णात्रेय ५. गौतम ६. मौदगल्य ७. वशिष्ठ ८. कौण्डिन्य ९. उपमन्यु १०. कपिल ११. विष्णुवृद्धि १२. तण्डि १३. जातुकर्ण।

प्रत्येक गोत्रमे कतौक मूल अछि। मिथिलामे १६७ मूलक ब्राह्मणक परिचय प्राप्त होइत अछि।कतैक मूल एहन अछि, जे एकसँ अधिक गोत्रमे पाओल जाइत अछि।'ब्रह्मपुरा' एकटा एहने मूल थिक। एहि मूलक ब्राह्मण- शाण्डिल्य,वत्स,काश्यप,अलाम्बुकाक्ष,गौतम ओ गर्ग गोत्रमे पाओल जाइत छथि।

प्रवर- प्रवरक उल्लेख वैदिक युगमे दर्श ओ पौर्णमास नामक इष्टिमे भेटैत अछि। ई इष्टि सभ आन सभ प्रकारक यज्ञक आधार थीक। अतः एहिमे प्रवरक पाठ होइत अछि। एहि पाठक प्रयोजन तखनहि होइत अछि जाहि क्षण यज्ञाग्नि उद्दिप्त करएबाली (सामधेनी) ऋचाक पाठक अनंतर अध्वर्यु ओहि अग्नि पर आज्य(घृत) दैत छन्हि। एकर निहितार्थ अछि जे प्रवर, यज्ञमे अग्निकेँ बजएबाक प्रार्थना थीक। प्रवरकेँ बादमे 'आर्षेय' सेहो कहल गेल अछि- जकर अर्थ थिक ऋषिसँ संबंध राखए बला (ऋग्वेद-०९/९७/५१)। शोनक ऋषिक सुविख्यात पूर्वज लोकनि मैथिल ब्राह्मण मध्य प्रवर कहबैत छथि, अर्थात् ऋगवेदक ऋचाक प्रणेता लोकनि प्रवर थिकाह।मैथिल ब्राह्मणक मध्य २ वर्गक प्रवर परिवार होइत अछि- त्रिप्रवर आ पाँच प्रवर। जाहि गोत्रक तीन गोट पूर्वज ऋगवेदक सूक्तिक रचना कएल से त्रिप्रवर आ जाहि गोत्रक पाँच गोट पूर्वज लोकनि ऋगवेदक सूक्तक रचना कएल से पाँच प्रवर कहबैत छथि।

गोत्र आ मूल:-

१. शाण्डिल्य- दिर्धोष(दिघवे), सरिसब, महुआ, पर्वपल्ली (पवौली), खण्डबला, गंगोली, यमुशाम, करिअन, मोहरी, सझुआल, मड़ार, पण्डोली, जजिवाल, दहिभत, तिलय, माहब, सिम्मुआल, सिंहाश्रम, सोदरपुर, कड़रिया, अल्लारि, होइयार, तल्हनपुर, परिसरा, परसड़ा, वीरनाम, उत्तमपुर, कोदरिया, छतिमन, वरेवा, मछेआल, गंगौर, भटोर, बुधौरा, ब्रह्मपुरा, कोइआर, केरहिवार, गंगुआल, घोषियाम, छतौनी, भिगुआल, ननौती, तपनपुर।

२. वत्स- पल्ली(पाली), हरिअम्ब, तिसुरी, राउढ़, टकवाल, घुसौत, जजिवाल, पहद्दी, जल्लकी(जालय), भन्दवाल, कोइयार, केरहिवार, ननौर, डढ़ार, करमहा, बुधवाल, मड़ार, लाही, सौनी, सकौना, फनन्दह, मोहरी, वंठवाल, तिसउँत, बरुआली, पण्डौली, बहेराढ़ी, बरैवा, अलय, भण्डारिसमय, बभनियाम, उचति, तपनपुर, विठुआल, नरवाल, चित्रपल्ली, जरहटिया,रतवाल, ब्रह्मपुरा, सरौनी।

३. काश्यप- ओइनि, खौआल, संकराढ़ी, जगति, दरिहरा, माण्डर, वलियास, पचाउट, कटाइ, सतलखा, पण्डुआ, मालिछ, मेरन्दी, भदुआल, पकलिया, बुधवाल, पिभूया, मौरी, भूतहरी, छादन, विस्फी, थरिया, दोस्ती, भरेहा, कुसुम्बाल, नरवाल, लगुरदह।

४. सावर्ण- सोन्दपुर, पनिचोभ, बरेबा, नन्दोर, मेरन्दी।

५. पराशर- नरौन, सुरगन, सकुरी, सुइरी, सम्मूआल, पिहवाल, नदाम, महेशारि, सकरहोन, सोइनि, तिलय, बरेबा।

६. भारद्वाज- एकहरा, विल्वपञ्चक (बेलोँच), देयाम, कलिगाम, भूतहरी, गोढ़ार, गोधूलि।

७. कात्यायन- कुजौली, ननौती, जल्लकी, वतिगाम।

८. अलाम्बुकाक्ष- बसाम,कटाइ, ब्रह्मपुरा।

९. गर्ग- बसहा, बसाम, ब्रह्मपुरा, सुरौर, वुधौर, उरौर।

१०. कौशिक- निखूति

११. कृष्नात्रेय- लोहना, बुसवन, पोदौनी।

१२. मौद्गल्य- रतवाल, मालिछ, दिर्घौष, कपिञ्जल, जल्लकी।

१३. गौतम- ब्रह्मपुरा, उंतिमपुर, कोइयार।

१४. वशिष्ठ- कोथुआ।

१५. कौंडिल्य- एकहरा, परौन।

१६. जातुकर्ण- देवहार।

१७. तण्डि- कटाई।

१८. विष्णुवृद्धि- वुसवन।

१९. उपमन्यु।

२०. कपिल।

मिथिलाधीश कार्णाट वंशीय क्षत्रिय महाराज हरिसिंहदेव जी सभामे उपस्थित सभ्य लोकनिक समक्ष महिन्द्रपुर पण्डुआ मूलक सदुपाध्याय गुणाकर झार्कँ मैथिल ब्राह्मणक पञ्जी प्रबन्धक भार देलन्हि।

नन्दैद शुन्यं शशि शाक वर्षे (१०१९ शाके) तच्छ्रावणस्य धवले मुनितिथ्यधस्तात। स्वाती शनैश्चर दिने सुपूजित लग्ने श्री नान्यदेव नृपतिर्ढ़धीत वास्तं॥१॥ शास्तानान्द पतिर्व्वभूव नृपतिः श्री गंगदेवो नृपस्तत् सूनू(पुत्र) नरसिंहदेव विजयी श्री शक्ति सिंह सुतः तत् सूनू खलू राम सिंह विजयी भूपालवंत सुतो जातः श्री हरिसिंह देव नृपतिः कार्णाट चूड़ामणि ॥२॥ श्रीमंतं गुणवन्त मुत्तम कुलस्नाया विशुद्धाशयँ सञ्जातानु गवेषणोत्सुक यातः सर्वानुव्यक्तिक्षमां चातुर्यश्चतुराननः प्रतिनिधिंकृत्वा च्च्तुर्द्धामिमां पंचादित्यकुलांबिता विवजया दित्यै ददौ पञ्जिकाम्॥३॥भूपालवनि मौलि रत्न मुकुटोलंकार हिरांकुर

ज्योत्सोज्वाल यटाल भाल शशिनिः लीलञ्च चञ्चलस्तवः शोभा भाजि गुणाकरे गुणवतां मानन्द कन्दोदरे दृष्ट्वात्मा हरिसिंह देव नृपतिः पाणौ ददौ पञ्जिकाम॥४॥ दृष्ट्वा सभां श्री हरिसिंहदेव विचार्य चिंते गुणिणी सहिष्णौ॥ गुणाकरे मैथिल वंश जाते पञ्जी ददौ धर्म विवेचणार्थम॥

श्रोत्रिय ब्राह्मण आठ श्रेणीमे क्रमबद्ध छथि आ योग्य एवम् वंशज पन्द्रह श्रेणीमे। पाँजिकक संख्या १८५ अछि, जाहिमे ३२ पाँजि श्रोत्रिय आ १५३ पाँजि योग्य आ वंशजक अछि।

पञ्जी-प्रबन्धक वर्तमान स्वरूपक प्रारम्भ राजा हरसिंहदेवक कालमे शुरू भेल। ज्योतिरीश्वर ठाकुरक वर्ण-रत्नाकरमे हरसिंहदेव नायक आकि राजा छलाह।

आइ काल्हि पञ्जी-प्रबंध मात्र मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण-कायस्थक मध्य विद्यमान अछि। मुदा प्रारम्भमे ई क्षत्रिय (गंधवरिया राजपूत) केर मध्य सेहो छल।

वर्णरत्नाकरमे ७२ राजपूत कुलक मध्य ६४ केर वर्णन अछि, जाहिमे बएस आ पमार दोहराओल अछि। दोसर ठाम ३६ राजपूत कुलक वर्णन अछि। २० टा नामक पूर्वहुमे चर्च अछि। विद्यापतिक लिखनावलीमे, जे प्रायः हुनकर नेपाल प्रवासक क्रममे लिखल गेल छल, चन्देल आ चौहानक वर्णन अछि। गाहनवार वा मिथिलाक गंधवरिया राजपूतक दू टा शखा मिथिलामे छल, भीठ भगवानपुर आ पंचमहला(सहर्सा, पूर्णियाँ)। गंधवरिया,पमार,विशेवार,कंचिवाल, चौहान आदि मिथिलाक महत्त्वपूर्ण राजपूत मे। मुदा गंधवरिया मिथिलामे महत्त्वपूर्ण मे आ एखनहु मधुबनीसँ सहरसा-पूर्णियाँ धरि छथि।

वर्णरत्नाकरक राजपूत कुलवर्णनक निम्न लगभग ६२ टा कुल अछि। सोमवंश,सूर्यवंश, डोडा, चौसी, चोला, सेन, पाल, यादव, पामार, नन्द, निकुम्भ, पुष्पभूति, श्रिंगार, अरहान, गुपझरझार, सुरुकि, शिखर, बायेकवार, गान्हवार,सुरवार, मेदा, महार, वात, कूल, कछवाह, वायेश, करम्बा, हेयाना, छेवारक, छुरियिज, भोन्ड, भीम, विन्हा, पुन्डीरयन,

चौहान, छिन्द, छिकोर, चन्देल, चनुकी, कंचिवाल, रान्चकान्ट, मुंडौट, बिकौत, गुलहौत, चांगल, छहेला, भाटी, मनदत्ता, सिंहवीरभाह्मा, खाती,रघुवंश, पनिहार, सुरभांच, गुमात, गांधार, वर्धन, वह्होम, विशिश्ठ, गुटिया, भाद्र, खुरसाम, वहत्तरी आदि। एखनो गंगा दियाराराजपूत आ यादव दुनूक मध्य 'बनौत' होइत छथि आ दुनूमे बहुत घनिष्ठता अछि। आइ काल्हि राजपूत मध्य पञ्जी विलुप्त अछि, मुदा तकर निवारण ओ सभ गामकेँ बारि (विवाहक लेल) करैत छथि, जेना दादाक मातृकक गाम छोड़ि कऽ विवाह करब।

पर्वतमे रहनिहार आ वनमे रहनिहारक वर्णन सेहो अछि वर्ण रत्नाकरमे। जनक राजाक विरुद जन (कबीला) सँ बनल प्रतीत होइत अछि।

पहिने सभ क्यो अपन-अपन पुरखाक आ वैवाहिक संबंधक लेखा स्वयं रखैत रहथि। हरसिंहदेवजी एहि हेतु एक गोट संस्थाक प्रारम्भ कलन्हि। मैथिल ब्राह्मणक हेतु गुणाकर झा, कर्ण कायस्थक लेल शंकरदत्त, आ क्षत्रियक हेतु विजयदत्त एहि हेतु प्रथमतया नियुक्त भेलाह। हरसिंहदेवक पञ्जी वैज्ञानिक आधार बला छल आ शुद्ध रूपेँ वंशावली परिचय छल। सभ ब्राह्मण, कायस्थ आ क्षत्रिय अपन-अपन जातिक पञ्जीमे बराबर छलाह। मुदा महाराज माधव सिंहक समयमे शाखा पञ्जीक प्रारम्भ भेल आ श्रोत्रिय आदि विभाजन आ क्रमानुसारे छोट-पैघक आ ओहिसँ उपजल सामाजिक कुरीतिक प्रारम्भ भेल।

कर्ण कायस्थमे एकेटा गोत्र काश्यप अछि। मात्र मूलक अनुसारेँ उतेढ़ होइत अछि, मध्यम दर्जाक गृहस्थ कहल जाइत अछि।

मूलसँ गोत्रक सामान्यतः पता चलि जाइत अछि। किछु अपवादो छैक। जेना: ब्रह्मपुरा मूल, काश्यप/गौतम/वत्स/वशिष्ठ।(७टा)

करमहा- शाण्डिल्य (गाउल शाखा)/ बाकी सभ वत्स गोत्री।दुनू करमहामे विवाह संभव।

श्रोत्रिय लोकनिकेँ पुबारिपार आ शेषकेँ पछबारिपार सेहो कहल जाइत अछि।श्रोत्रियक पाँजि चौगाला(श्रेणी) मे विभक्त अछि। श्रोत्रिय पाँजिकेँ लौकित कहल जाइत अछि। कुल ८ टा चौगोल श्रेणी अछि।३२ टा पाँजि अछि। पाँजि आ पानि अधोगामी होइत अछि। निम्न कुलमे विवाह संबंधक कारणे समय बीतला पर उच्चादि श्रेणी समाप्त होइत जाइत अछि। प्रथम श्रेणी आ द्वितीय श्रेणी ताहि कारणसँ समाप्त भऽ गेल अछि।

शेष ब्राह्मण पछबारिपार कहबैत छथि। एहि मे १५ गोट श्रेणी अछि।१५३ टा पञ्जी अछि। एकरा नामसँ जेना नरपति झा पाँजि इत्यादि संबोधित कएल जाइत अछि।पछबारिपारहुमे सम्प्रति महादेव झा सँ उपरका पाँजि अनुपलब्ध जकाँ भए गेल अछि।

कालक प्रभावे क्षत्रिय लोकनिमे पञ्जी समाप्त भए गेल आ ताहि द्वारे हुनका लोकनिमे पूरा गामेकेँ छोड़ि देल जाइत अछि, जाहिसँ सिद्धांतमे भाङठ नहि होए।

पञ्जी-पुस्तकक रक्षणक हेतु एकटा श्लोक अछि- जलात् रक्ष तैलात् रक्ष रक्ष स्थूल बन्धनात् माने पुस्तककेँ जलसँ तेलसँ आ स्थूल बन्धनसँ बचाऊ।संगहि सूर्य जखन सिंह राशिमे (मोटा-मोटी १६ अगस्त सँ १५ सितम्बर धरि) रहए तखन एकरा सुखाऊ- एहि समयमे सभसँ बेशी कड़गर रौद रहैत अछि।

उतेढ- सिद्धांत लिखबासँ पहिने वर ओ कन्या पक्षक अधिकार ताकल जाइत अछि।कन्याक विवाहक ५-१० वर्ष पूर्व कन्याक पिता पञ्जीकारसँ अधिकार माला बनबैत छथि, जाहिमे संभावित आ उपलब्ध वरक सूची रहैत छैक। पञ्जीकार एहि हेतु उतेढ बनबैत छथि।वर कन्या दुनू पक्षक पितृ कुलक ६ पुस्त आ मातृकुलक ५ पुरखाक यावतो परिचय देल जाइत अछि। यावतो परिचयक अर्थ भेल ३२ मूलक उतेढ़ जे अधिकार तकबामे प्रयोजनीय थीक। कोनो कन्या वा वर मातृ वा पितृ पुरखा कुलमे १६ व्यक्तिसँ छठम स्थानमे रहैत छथि। एहि १६ मे सँ १६ वा एको व्यक्ति वरक पितृपक्षमे छठम

स्थानक अभ्यन्ता अओथिन्ह तँ ओहि कन्या वरक मध्य वैवाहिक अधिकार नहि होएत।ज्यौँ ओ १६ व्यक्ति वा एको व्यक्ति मातृ पक्ष (वरक) मे अओथिन्ह तँ अधिकार भए जायत।

मुदा एहिमे ई सेहो देखबाक थीक जे वर कन्या समान गोत्र आ समान प्रवरक नहि होथि। ई सेहो देखए पड़त जे कन्या वरक विमाताक भाइक सन्तान नहि होए।

पञ्जी सात प्रकारक होइत आछि-मूल,शाखा,गोत्र,पत्र,दूषण उतेढ़ आ अस्वाजन्यपत्र पञ्जी।

दरभंगा नरेश माधव सिंह शाखा प्रणयन पुस्तकक आदेश देलन्हि।एहिसँ पहिने मूल पञ्जी सभक समान रूपेँ बनैत छल। आब सोति, जोग आ पञ्जीबद्धक हेतु फराक शाखा पञ्जी बनाओल जाए लागल।

गोत्र पञ्जीमे सभ गोत्र आ तकर प्राचीन मूल रहैत अछि।

पत्र पञ्जी लगभग ५०० वर्ष पूर्वसँ प्रचलनमे अछि। एहिमे मूलग्रामक उल्लेख रहए लागल।

दूषण पञ्जीमे वंशमे आएल क्षरणक उल्लेख रहैत अछि। बहुत बादमे एकर चर्च संभव होइत अछि, जाहिसँ सम्बन्धित वंश एकर दुष्परिणामसँ बाँचल रहए।

उतेढ़ पञ्जीमे सपिण्डक निवृत्तिक ज्ञान होइत अछि- छह पुरखाक उल्लेख प्राप्त होइत अछि। मात्र रसाढ़-अररियाक पञ्जीमे स्त्रीगणकक नामक उल्लेख पञ्जीमे भेटैत अछि।

वैवाहिक अधिकार निर्णय:-

नियम १. कोनो कन्या वा वर अपन १६ पुरुषा (पितृकुल आ मातृकुल मिलाकेँ) सँ छठम स्थानमे रहैत छथि- जिनका छठि कहल जाइत छन्हि।

एहि छठिक निर्धारण निम्न प्रकारसँ होइत अछि।

१. कन्याक (वृद्ध प्रपितामह) प्रपितामहक पितामह प्रथम छठि

२. कन्याक (वृद्ध पितामहक स्वसुर) प्रपितामहक मातामह द्वितीय छठि

३. कन्याक पितामहक मातामहक पिता तृतीय छठि

४. कन्याक पितामहक मातामहक स्वसुर चतुर्थ छठि

५. कन्याक पितामहीक प्रपितामह पञ्चम छठि

६. कन्याक पिताक मातामहक मातामह छठम छठि

७. कन्याक पितामहीक प्रमातामह सातम छठि

८. कन्याक पितामहीक मातृमातामह आठम छठि

९. कन्याक मातामहक प्रपितामह नवम छठि

१०. कन्याक प्रमातामहक मातामह दसम छठि

११. कन्याक मातामहक प्रमातामह एगारहम छठि

१२. कन्याक मातामहक मातृमातामह बारहम छठि

१३. कन्याक मातामहीक प्रपितामह तेरहम छठि

१४. कन्याक मातामहीक पितृ मातामह चौदहम छठि

१५. कन्याक मातामहीक प्रमातामह पन्द्रहम छठि

१६. कन्याक मातामहीक मातृ मातामह सोलहम छठि

उपरोक्त समस्त छठिक समान महत्व अछि। एहिमे सँ कोनो छठि वरक पितृ पक्षमे अएला पर उक्त वर कन्याक मध्य वैवाहिक अधिकार नहि होएत। ओ छठि यदि वरक मातृकुलमे अबैत छथि तँ अधिकार

होएत।उपरोक्त नियम समान रूपेँ वर ओ कन्यापर लागू होइत अछि। जहिना वरक लेल कहल गेल जे मातृतः पंचमी त्यक्त्वा पितृतः सप्तमी भजेत तहिना कन्या लेल कहल गेल जे असपिण्डा च या मातु – असपिण्डा च या पितुः सा प्रशस्ता द्विजातीनां दार कर्मणि मैथुने।

नियम२. वर कन्याक गोत्र एक नहि होए।

नियम ३. वर कन्याक प्रवर एक नहि होए।

नियम ४. वरक विमाताक भायक सन्तान कन्या नहि होए।

मातृतः पञ्चमीं त्यक्तवा पितृतः सप्तमीं भजेत्- मनुस्मृति

असपिण्डाच या मातुः असपिण्डा च या पितुः सा प्रशस्ता द्विजातीनां दार कर्मणि मैथुने।

पञ्चमात् सप्तमात् उर्ध्वं मातृतः पितृस्तथा।

सपिण्डा निवर्तेत कर्तुम् व्यतितिक्षम्।

संस्कृत श्लोकक अर्थ एहि प्रकारे अछि-

*वरक मातृकुलक पुरुषसँ कन्या पाँचम पीढ़ी धरिक सन्तान नहि होथि।वरक पितृकुलक सातम पीढ़ी (संशोधित रूपेँ छः पीढ़ी) धरिक सन्तान नहि होथि।

*जे कन्या वरक मातृ कुल ओ पितृकुलक सपिण्ड नहि होथि से द्विजाति वरक हेतु उद्वाह कर्मक लेल प्रशस्त।

*मातृकुलमे पाँच आ पितृकुलमे सात पीढ़ी धरि सपिण्ड रहैछ।परञ्च म.म.महाराज महेश ठाकुर पितृपक्षमे सातम पुस्तकेँ विवाहक हेतुएँ ग्राह्य मानलन्हि आ हुनक देल व्यवस्था समाजकेँ मान्य भेल।

कोनो कन्याक छठिक अन्वेषण हेतु ३२ मूलक उतेढ बनाबए पड़ैत छैक। ताहिमे सर्वप्रथम उतेढ़क वाम भागमे कन्याक ग्राम, मूल ग्राम लिखल जाइत छैक। तहिसँ अव्यवहित दहिन भागमे मूल आ तकर

नीचाँ कन्याक अति वृद्ध प्रपितामह, वृद्ध प्रपितामह, वृद्ध पितामह, प्रपितामह, पितामह आ तखन पिताक नामोल्लेख अवरोही क्रमसँ लिखल जाइत छैक। एहि मध्य वृद्ध प्रपितामह पहिल छठि कहओताह, जनिकासँ कन्या छठम स्थानमे पड़ैत छैक। प्रस्तुत उदाहरणमे करमहा मूलक बेहट मूलग्रामक विट्ठो ग्रामवासी (दरभंगा) पीताम्बर झाक पौत्री श्री शशिनाथ झाक पुत्री भौर ग्रामवासी खण्डबला मूलक भौर मूलग्रामक नारायणदत्त ठाकुरक दौहित्री- धरमपुर दरभंगा- क अधिकार दरिहरा मूलक रतौली मूलग्रामक लोहनावासी गोपीनन्द झाक पौत्र श्री कृष्णानन्द झाक बालक करमहा मूलक बेहट मूल ग्रामक बिट्ठो निवासी कन्हैय्या झाक दौहित्रसँ जँचबाक अछि।

प्रथम छठि- करमहा बेहट मूलक शंकरदत्त सुत विश्वनाथ भेलाह- १.हुनक पुत्र राधानाथ, २.तनिक पुत्र कन्टिर प्र. रेवतीनाथ, ३.हुनक बालक-पीताम्बर, ४.तनिक पुत्र शशिनाथ, ५.आ हुनक पुत्री कन्या ६.अस्तु, विश्वनाथ झा पहिल छठि।

द्वितीय छठि-वृद्ध पितामह राधानाथ झाक श्वसुर माड़रि वलियास मूलक इन्द्रपति झाक बालक धनपति झा होएताह से एहि प्रकारे गणना – धनपति-=१, जमाय = राधानाथ = २, तनिक बालक कंटीर=३ पीताम्बर = ४, शशिनाथ-५, कन्या = ६

तृतीय छठि-कन्याक प्रपितामहक श्वसुरक – जेना माण्डर मूलक सिहौली मूलग्रामक १.रघुबर झा पुत्र २.फेकू झा तनिक जमाए ३.कंटीर झा, तनिक पुत्र ४.पीताम्बर झा तनिक पुत्र ५.शशिनाथ झा ६.कन्या। एहि मध्य माण्डर सिहौली रघुवर झासँ कन्या छठि छथि।

चारिम छठि- फेकू झाक श्वसुर- पाली महिषी मूलक हर्षी झा, यथा (१) हर्षी झा- (२)जामाता-फेकू झा (३) जामाता कंटीर झा (४)पुत्र-पीताम्बर (५) शशिनाथ (६) कन्या। एहि तरहेँ कन्या हर्षी झासँ छठम स्थानमे छथि तँय हेतु ई चारिम छठि भेल।

पाँचम छठि- कन्याक पितामहक श्वसुरक पितामहसँ कन्या छठम स्थान-जेना सकराढ़ी मूलक परहट मूलग्रामवाला (१) ब्रजनाथ झा (२)

हुनक बालक हर्षनाथ झा (३) हिनक बालक सिद्धिनाथ झा (४) हिनक जमाय पीताम्बर झा (५) तनिक बालक शशिनाथ झा (६) हिनक कन्या- अस्तु, सकराढ़ी परहट ब्रजनाथ झा पाँचम छठि कहौताह।

६म छठि:- परहट सकराढ़ी मूलक हर्षनाथ झाक श्वसुर खण्डबला भौर मूलक श्यामनाथ ठाकुरक बालक महेश्वर ठाकुरसँ कन्या छठम स्थानमे छथि- तँ (१) महेश्वर ठाकुर (२) हर्षनाथ झा (३) सिद्धिनाथ झा (४) पीताम्बर झा (५) शशिनाथ झा (६) कन्या- एहि तरहेँ खण्डबला भौर मूलक महेश्वर ठाकुर छठम छठि कहौताह।

७म छठि- कन्याक पिताक मातामहीक पितामह- यथा हरिअम मूलक बलिराजपुर मूल ग्रामक सेवानाथ मिश्रक पौत्री, बालमुकुन्द मिश्रक पुत्री कन्याक पिता शशिनाथ झाक मातामही छथि, तँय (१) सेवानाथ मिश्र-पुत्र(२)बालमुकुन्द मिश्र (३)जामाता-सिद्धिनाथ झा (४) जामाता-पीताम्बर झा (५) पुत्र शशिनाथ झा (६) पुत्री-कन्या, अस्तु, हरिअम बलिराजपुर सेवानाथ मिश्र ७म छठि भेलाह।

८म छठि- कन्याक पितामहीक मातृ मातामह-यथा- सोदरपुर मूलक सरिसब मूल ग्राम वाला (१) गदाधर मिश्र-जामाता (२) बालमुकुन्द मिश्र-जामाता (३)सिद्धिनाथ झा(४)जामाता पीताम्बर झा- पुत्र(५) शशिनाथ झा (६) कन्या। ताहि हेतु सोदरपुर सरिसव गदाधर मिश्र आठम छठि छथि।

९म छठि- कन्याक मातामहक प्रपितामह- खण्डबला मूलक भौर मूलग्राम (१)धर्मनाथ ठाकुर-पुत्र (२) योगनाथ ठाकुर-पुत्र (३)दुर्गानाथ ठाकुर-पुत्र (४) नारायणदत्त ठाकुर-जामाता (५) शशिनाथ झा-तनिक (६) कन्या- अर्थात् धर्मनाथ ठाकुरसँ कन्या- ६म स्थानमे छथि। तँय धर्मनाथ ठाकुर नवम् छठि भेलाह।

१०म छठि- कन्याक प्रमातामह (दुर्गानाथ ठाकुरक) मातामह-बभनियाम मूलक कड़राइन मूलग्रामक सन्तलाल झासँ कन्या छठम स्थानमे छथि- यथा (१) सन्तलाल झा- हिनक जमाय, (२)योगनाथ

ठाकुर (३)पुत्र दुर्गानाथ ठाकुर पुत्र(४) नारायणदत्त (५) जमाय- शशिनाथ झा तनिक पुत्री (६) कन्या। एहि हेतुए बभनियाम मूलक सन्तलाल झा १०म छठि।

११म छठि करमहा मूलक नड़ुआर मूलग्रामक बछरण झासँ कन्या- छठम् स्थानमे छथि- यथा

(१) बछरण- पुत्र (२) खेली- जमाय-(३) दुर्गानाथ ठाकुर (४) तनिक पुत्र- नारायणदत्त ठाकुर- जमाय (५) शशिनाथ (६) पुत्री-कन्या- अस्तु बछरण झा ११म छठि।

१२म छठि- कन्याक मातामहक मातृमातामह खण्डवला मूलक भौर मूलग्रामक जीख्खन ठाकुर-सँ कन्या छठम स्थानपर, क्रम- (१)जीख्खन ठाकुर (२) खेली झा जमाय (३) दुर्गानाथ ठाकुर (४) पुत्र- नारायणदत्त- जमाय (५) शशिनाथ-पुत्री (६) कन्या।

१३म छठि- कन्याक मातामहीक प्रपितामह हरिअम मूलक बलिराजपुर मूलग्रामक योगीलाल मिश्र। यथा- (१)योगीलाल –पुत्र (२) कमलनाथ मिश्र (३) पुत्र- शक्तिनाथ मिश्र (४) जमाय- नारायणदत्त ठाकुर- जमाय (५) शशिनाथ-पुत्रे (६)कन्या।

१४म छठि- कन्याक मातामहीक पितृमातामह अर्थात् सोदापुर मूलक दिगउन्ध मूलग्रामक कौशिल्यानन्द मिश्र- यथा- (१) कौशिल्यानन्द मिश्र- तनिक जमाय (२) कमलनाथ मिश्र तनिक (३)पुत्र शक्तिनाथ मिश्र, तनिक जमाय (४) नारायण दत्त ठाकुर तनिक (५) जमाय शशिनाथ झा- तनिक पुत्री (६) कन्या।

१५म छठि- कन्याक मातामहीक प्रमातामह अर्थात् खण्डवला मूलक भौर मूलग्रामक महाराज कुमार बाबू गुणेश्वर सिंह यथा- (१) बाबू गुणेश्वर सिंह- पुत्र (२) बाबू ललितेश्वर सिंह (३) जमाय- शक्तिनाथ मिश्र- तनिक जमाय (४) नारायणदत्त ठाकुर (५) तनिक जमाय- शशिनाथ झा- तनिक पुत्री (६) कन्या।

१६म छठि- कन्याक मातामहीक मातृमहीक मातृमातामह अर्थात् खौआल मूलक सिमरवाड़ मूलग्रामक- पद्मनाथ झासँ कन्या छठम् स्थानमे छथि- यथा- (१) पद्मनाथ-जमाय (२) बाबू ललितेश्वर सिंह (३) जमाय शक्तिनाथ (४) जमाय-नारायणदत्त (५) जमाय-शशिनाथ, (६) पुत्री-कन्या।

उपरोक्त प्रकारे कन्याक सोलह छठि प्राप्त भेल।

बेहटसँ विठ्ठो	बेहट करमहा शंकरदत्त	वलियास	माण्डर	पाली	परहट सकराढ़ी	खण्डबला	हरिअम
पीताम्बरसुत शशिनाथसुता खण्डवलासँ नारायणदत्त दौ	(१) विश्वनाथ राधानाथ रेवतीनाथ (कन्टिर) पीताम्बर शशिनाथ (कन्या)	इन्द्रपति धनपति (२)	हृदयदत्त रघुवर (३) फेकू	लक्ष्मीदत्त हर्षी (४)	वैद्यनाथ (५) हर्षनाथ सिद्धिनाथ	श्यामनाथ महेश्वर (६)	महिनाथ सेवानाथ (७) बालमुकुन्द

सोदरपुर	खण्डवला	वभनियाम	करमहा	खण्डवला	वलिराजपुर हरिअम	दिगउँन्ध सोदरपुर
वेदधर गदाधर(८)	धर्मनाथ(९) योगनाथ दुर्गानाथ नारायणदत्त	रूदी सन्तलाल(१०)	हेमनारायण बछरण(११) खेली	थोथी जीरक्खन(१२)	हर्षमणि योगीलाल(१३) कमलानाथ शक्तिनाथ	कारी कौशिल्यानन्द(१४)

खण्डवला	खौआम
रुद्र सिंह गुणेश्वर सिंह(१५) ललितेश्वर सिंह	भवनाथ पद्मनाथ(१६)

समान रूपेँ वरक उतेढ़ बनाओल जाएत- एहि पोथीक तीनू खण्ड देखि कए। निर्णय देबाक हेतु धर्मशास्त्रक सूत्र देखू।

वरपक्ष: कन्यहिँ सदृश वरहुकेँ उत्तेढ़ (बत्तीस) मूलक बनाओल जाइत छैक। एहि मध्य दू-प्रकारक परिचय रहैत छैक- (१)वरक पिता-पितामहादि तथा हुनका लोकनिक मातृकुलक जे वरक हेतु पितृकुल भेल, दोसर दिस वरक मायक पितृकुलक जाहि मध्य वरक मातामहादि तथा हुनका लोकनिक मातृकुलक परिचय।

वरक पितृपक्ष

रतौलीसँ लोहना	१ दरिहरा	२ हरिअम	३ वुधवाल	४ खण्डवला	५ नरउन
कृष्णानन्द सुत(वाचा) बेहट करमहेसँ (चंचल) मुकुन्द सुत कन्हैया दौ	वै.नित्यानन्द गरीबानन्द लीलानन्द जीवानन्द गोपीनन्द कृष्णानन्द	सचल	जयनाथ मोहन	बाबू कीर्ति सिंह	गंगादत्त एकनाथ जगन्नाथ

६ पाली	७ खण्डवला	८ माण्डर	९ करमहा	१० पवौलि	११ खण्डवला
लक्ष्मीदत्त	श्यामनाथ महेश्वर	श्यामू	केशव लान्हि दिगम्बर वैदनाथ	धर्मानन्द	धर्मपति सिंह मार्कण्डेय सिंह

१२ नरउन	१३ वलियास	१४ घुसौत	१५ सोदरपुर	१६ करमहा
	धर्मपति उमापति	हर्षमणि	कारी कोशिल्यानन्द	गोपीनाथ

	जनार्दन			

वरक मातृपक्ष

१७ बेहट करमहा	१८ सरिसव	१९ पवौलि	२० दरिहरा	२१ खण्डवला	२२ कुजौली
नन्दलाल कन्हैयालाल गणेशदत्त मुकुन्द कन्हैया	धरापति	धर्मानन्द जनार्दन	घनानन्द	म. रुद्रसिंह म. रुद्रेश्वर सिंह म. रामेश्वर सिंह	टीकानाथ

२३ करमहा	२४ सोदरपुर	२५ खण्डबला	२६ तिसउँत	२७ दरिहरा	२८ कुजौली
हलधर गोवर्द्धन	बाबूलाल	जगत सिंह दामोदर गोपीनाथ सिंह रुचिनाथ सिंह	गिरधारी	-- पुष्पनाथ	हरिनन्दन

२९ करमहा	३० माण्डर	३१ नरउन	३२ सोदरपुर
कृष्णदत्त हेमदत्त विचू	बच्ची	मनमोहन	भूवन्धर

एहि प्रकारसँ हम सभ देखैत छी जे कन्याक जे १४म छठि दिगउन्ध सोदरपुर मूलक कारी सुत कौशिल्यानन्द मिश्र छथि से वरक पितृकुलमे अबैत छथिन्ह। जतऽ धर्मशास्त्र कहैत अछि जे ६(७) तक त्याग करबाक अछि। परञ्च कन्या छठमे स्थानमे छथि। अस्तु एहि चर्चित वर-कन्याक मध्य वैवाहिक अधिकार नहि होएत।

कोनहु कथा जँचबाक हेतु पञ्जीकार सभसँ पहिने कन्याक छठिक निर्धारण कए लैत छथि। ततःपर वरक उतेढ बनबैत छथि। तखन देखबाक रहैत छन्हि जे कन्या जिनकासँ छठि छथि से तऽ वरक परिचयमे नहि पवैत छथि। जँ से कोनो छठि भेट गेलाह, तँ देखबाक रहैछ जे वरक कोन पक्ष (पितृ-मातृ)केँ अएलाह। मातृ-पक्ष रहने अधिकार हो आओर पितृ-पक्षमे रहने नहि हो, से वचन पूर्वमे कहि आएल छी। वरक पक्षक पितृकुलमे ६ तक त्याज्य ओ सातमकेँ ग्राह्य आओर मातृकुलमे पाँचम तक त्याज्य आ छठम ग्राह्य।

एतए ईहो देखबामे अबैत अछि जे ई सभ वैज्ञानिक दृष्टिकोण तखन ताखपर राखल रहि जाइत अछि जखन बाल विवाह आ बहु-विवाहक कुरीति एहि मध्य पैसैत अछि। से कतोक गोटे एक दिससँ ससुर जमाए भए जाइत छथि तँ दोसर दिससँ साढ़ू। आ एतए पञ्जीकार विवश भए जाइत छथि कारण नियमतः एहन अनर्गल विवाह शास्त्र विहित भए जाइत अछि।

शाखा पञ्जीक विशेषता :शाखा पञ्जी एक अभूतपूर्व पुस्तक छी। एहि तरहक पुस्तक संसारक कोनो देश कोनो सम्प्रदाय वा कोनो वर्गमे नहि पाओल गेल अछि। यद्यपि ई वर्ग विशेषक पुस्तक थिक, परञ्च एहि प्रकारक पुस्तक कोनो सम्प्रदाय वा कोनो वर्गक लेल शुरू कएल जा सकैत छैक। मिथिलाक ई अद्वितीय अछि जाहिमे १००० वर्षसँ परिचयक जाल जकाँ निर्मित कएल गेल अछि। जेना कवि कोकिल विद्यापति ठाकुरक परिचय हुनक पुरुषाक उल्लेख ७ पीढ़ी पहिनेसँ लऽकेँ विद्यापतिक वंशधर वर्तमान धरि, सभक साङ्गोपाङ्ग (विद्या, उपाधि, विशिष्टता, कार्य परिवर्तन, मातृकुलक परिचय) परिचय भेटत। एहन परिचय मात्र विद्यापतिये नहि समस्त मैथिल ब्राह्मणक भेटत, एहि प्रकारक आधारपर विभिन्न विद्वान ब्राह्मणक काल निर्धारण सेहो कएल जा सकैछ।

पञ्जीशास्त्र मार्त्तण्ड धौत परीक्षामे प्रथम श्रेणीमे प्रथम स्थान पाबि महाराजाधिराज कामेश्वर सिंहक हाथें दोशाला पओनिहार स्वनाम धन्य

पञ्जीकार मोदानन्द झा आ हुनक मौखिक परीक्षाक मुख्य परीक्षक छलाह महामहोपाध्याय डॉ सर गङ्गानाथ झा। पञ्जी प्रबन्धक जे इतिहास अछि ताहिमे वर्णित अछि जे पञ्जी प्रबंधक वर्तमान स्वरूपक प्रणेता छलाह सदुपाध्याय गुणाकर झा, जनिक अठारहम पीढ़ीमे मोदानन्द झा आ उन्नैसम पीढ़ीमे विद्यानन्द झा मोहनजी अबैत छथि। आइसँ उन्नैस पुस्त पहिने जे मैथिलक वंशावलीक संकलन संवर्द्धन ओ संरक्षणक व्रत दृढ़ निष्ठासँ सदुपाध्याय गुणाकर झा लेलन्हि वा तत्कालीन विद्वत वर्ग द्वारा विश्वासपूर्वक देल गेलन्हि, से अद्यावधि निष्ठापूर्वक सुरक्षित ओ संवर्द्धित अछि।

पञ्जीक समस्त पुस्तक मिथिलाक लिपि तिरहुतामे लिखित अछि/ लिखल जा रहल अछि। आ बुझू तँ तिरहुता लिपिक प्राणाधार थिक पञ्जी प्रबन्ध।

पञ्जी-शास्त्रसँ सम्बद्ध पक्ष एहि लिपिक ज्ञानक अभावमे सामने बैसियौकऽ विषय वस्तुसँ अनभिज्ञ रहि जाइत छथि। फलस्वरूप एकर संरक्षणक प्रति सहयोग घटल जा रहल छैक।

एहिना स्थितिमे तालपत्र/ बसहापत्रपर लिखल पञ्जीक मिथिलाक्षरमे संगणकपर अंकन आ ओकर देवनागरी लिप्यंतरण आवश्यक छल जाहिसँ एकर विनाशसँ पूर्व संरक्षण भऽ सकए।

वैवाहिक अधिकार तकएवा हेतु वा सिद्धांत (अस्वजनपत्र) लिखएवा हेतु जे क्यो अभ्यागत अबैत छथि ताहि मे अधिकांशक माँग होएत छन्हि जे सिद्धांत पत्रक एक प्रति देवनागरी मे सेहों लिख दिअ।
कि विचार अछि तिरहुता लिपि नष्ट भऽ जाए। विज्ञानक चमत्कार सँ मनुष्य गण चन्द्रमा धरिक यात्रा कएलक परञ्च सामर्थ्य छैक जे एकटा लिपिक आविष्कार करत आ ओ लिपि सर्वजन संवैद्य ओ ग्राहि होएत। अपन धरोहर कें नष्ट करबाक लेल कियैक तुलायल छी? परंतु कालांतर मे विचार आयल जे समाजक विचार कियैक नहि स्वीकार कएल जाए। पाञ्जिक समस्त पोथी तिरहुता लिपि मे निबद्ध अछि। तिरहुता लिपिक

ज्ञानक आभाव मे समाज पोथिक विवरण सँ अनभिज्ञ रहैत अछि। तँय निरपेक्ष सेहो। तखन समाजक भावना कैँ देखैत जे कोनो कथ्य तँ अनैक लिपि मे लिखल जाए सकैत अछि आ पढि सकबाक कारणें समाजक जिज्ञासा शांत भऽ सकैत अछि।

पाँ रघुदेव झा (आइसँ नौ पीढ़ी ऊपर) आ हुनक लिखल माण्डर मुलक पुस्तक(१६९०-१७१०ई.) जे तालपत्र पर अंकित अछि, सर्वकालीन सर्वश्रेष्ठ पञ्जीकार पाँ 'देवानन्द प्रसिद्ध छोटी झाक' लिखल शाखा पुस्तक (१७७० ई.सँ १७८० ई.) जे तालपत्र पर लिखल अछि, अद्यावधि उपलब्ध अछि। तकर अतिरिक्त हर्षानन्द झाक शाखा पुस्तक, भिखिया झाक शाखा पुस्तक, झुलानन्द झाक शाखा पुस्तक, मोदानन्द झा 'पञ्जिशास्त्र मार्तण्ड'(मैथिली अकादमी, बिहार सरकार द्वारा प्रदत्त उपाधि), 'लब्ध धौत' (मिथिलेश महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह सँ प्राप्त उपाधि), वाला शाखा पुस्तक, 'उप-टीप'(सोतिपुरा), नगराम(पछिवारि पार), गोत्र पञ्जी, पत्र पञ्जी ई सभ एहि पोथीमे मिथिलाक्षरमे अंकित अछि। ताहि सभक अंकन आ लिप्यंतरण प्राचीन पञ्जीक संग करबाक काज सन २००० ई. क चैत मास सँ प्रारंभ कएल गेल। गोत्र पञ्जी मध्य गोत्र व मूलक विवरण, पत्र पञ्जी मध्य अपत्यक ज्ञान तथा दूषण पञ्जी मध्य वंश मे आएल दोषक ज्ञान होइत अछि। प्राचीन पुस्तक मध्य ४५० ई. सँ अद्यावधि प्रचलित शैक्षणिक उपाधि सबंधक ज्ञान होइत अछि। लिप्यंतरण करबाक अवधि मे अनुभव भेल जे मिथिलाक इतिहास बोध कतैक उच्च प्रकारक रहल अछि। पञ्जिक पुस्तक मात्र अधिकारै तकबाक लेल प्रारंभ नहि भेल, अपितु मिथिलाक लोक अभाव ग्रस्त रहितौ, तत्तकालिन शासकक वक्र दृष्टि सहितो मिथिलाक शैक्षणिक स्थिति, धर्म शास्त्रिय विवेचनाक क्षमता, साहित्यिक रचनाक योग्यता कलाकौशलक प्रवीणता कोन प्रकारक छल एहि सभ पर प्रकाश देखल। लिप्यन्तरण भेला संता वर्तमान कालिन दुनिया, जे भूमण्डलीकरणक दौर मे अछि, जानि सकत जे मिथिलांचलक सांस्कृतिक विविधता कि छल इतिहास बोध

कोन प्रकारक छल- एहि सभ वस्तु कैँ दुनियाक पटल पर राखल जाए। दुनियाक कोनो समाज मे एतैक विस्तृत भुभाग मे पसरल मनुष्यक वंशावली १५०० वर्ष सँ अधिके समय सँ एहि तरहें सांगोपांग नहि लिखल गेल अछि जाहि तरहें मिथिलाक लोक विपन्न रहितो परिचय संग्रह करैत रहलाह, ईमानदारी पूर्वक अपन पुरूषाक शिक्षा, तथाकथित क्षरण आ सबन्धक विवरण कलाबोध प्रवास-आप्रवासक संचित करैत रहलाह, से अद्भूते अछि।

आब पञ्जीक पुस्तकमे कएक पीढी सँ यावतो परिचय संगृहित भए गेल अछि तँ फेर श्रोत्रियादित्रय लोकनिक शाखा वाचन हो आ तथा कथित जयवार लोकनिक नहि (परिचय उपलब्ध रहितौ) तकर की अर्थ? वंश परिचय संगृहित करबाक स्वरूप मे अनेक पड़ाव आएल अछि, पूर्व मे स्मृति सँ - बाद मे (कुमारिल भट्टक समय मे समूह लेख्य)। पुनः वर्तमान स्वरूप मे (पञ्जीकार लोकनि द्वारा) मिथिलेश महाराज माधव सिंहक (१७६० ई.) समयमे थोडे बुद्धि विलासी लोकनि अपन चाटुकारितासँ शाखा पुस्तकक प्रणयन महाराजक आदेशसँ पञ्जीकारसँ करबओलन्हि। आचारण वृत्ति हेतु तोता-रटंत प्रारंभ भेल। पहिने तऽ मूलहि टाक पुस्तक छल जे वैवाहिक अधिकार निरूपण हेतु यथेष्ट छल- अछि- रहत। उत्तेढक प्रारूप एहि तथ्य कें सिद्ध कए रहल अछि, धर्म शास्त्रक वचन तकरा पुष्ट करैत अछि। जखन पञ्जीकारक अवधारणा नहि छल धर्मशास्त्रज्ञ लोकनि प्रयोजन वाला व्यक्ति सँ हुनक देल वंश परिचय पर अधिकार हो वा नहि तकर निरूपण करैत छलाह तखन ओ उत्तेढक प्रारूप सँ इतर कोन तरहें विचार करैत छलाह, की ओ लोकनि धर्म विरूद्ध आचरण करैत छलाह?

अस्तु, पञ्जीकार अपन अज्ञानताक भार सँ समाज कैँ दलमलित करबाक विचारक परित्याग करूथु ओ आर्ष वचनक निर्वाह प्राण-प्रण सँ करूथु अपन गढल सूत्रक नहि।प्रत्येक कन्या वा वर जाहि-जाहि व्यक्ति सँ छठम स्थान मे रहैत छथि ओ समस्त छठि समान अधिकारक

(सत्ताक) होइछ , मात्र पक्ष देखबाक निर्देश अछि- पितृ कुल वा- मातृ कुल। कोनो छठिकेँ विशेषाधिकार शास्त्रक वचन सँ नहि अछि। तखन ई कहबाक की अभिप्राय जे कन्या जाहि मूल-ग्रामक होथि – वरक मातामहक मूल ओ मूल ग्राम सैह हो तँ मातृ सापिण्ड्य आठम पीढी मे (सातम पुस्तक बाद) निवृत होएत, सर्वथा भ्रान्त धारणा। एकर समर्थनमे धर्मशास्त्रक कोनहुँटा वचन नहि अछि। जँ अछि तँ लिखित विचारक सप्रमाण खण्डन करू (गल्पसँ नहि)। प्रातः स्मरणिय म.म. प. महेश ठाकुरक देल व्यवस्था संप्रमी त्यजेत सँ ...भजैत.. समाज सहर्ष स्वीकार कएलक तँ मान्य। अंततः एकटा विषय इहो अछि जे पञ्जीकर्म सँ जुड़ल व्यक्ति, समाजक धर्मक रक्षा लेल नियुक्त छथि, जे किछु विदाई वा पारिश्रमिक भेटैत छन्हि से प्रसाद स्वरूप ग्रहण करूथु नहि कि एकै तरहक पाँच टा कार्य लेल एक ठाम सँ दोसर ठाम जएबा हेतु पाँचो व्यक्तिसँ मार्ग व्यय लेल जाय, पाइ बिनु अग्रिम भेटने अधिकार नहि ताकी, ई तँ घोर अनैतिकता थीक। पञ्जीकार संस्कृतिक रक्षकक होथि, गरकट व्यापारी नहि। भावी पीढीक हेतु समय पर शिष्य तैयार करब पञ्जीकारक दायित्व थिकन्हि- पाइये टा कमायब अभिष्ट नहि होयबाक चाही। नहि सम्हरैत छन्हि तँ समय पर समाजकें एतत रूपक सूचना करथु , जे समाज- नव नव व्यक्तिकें दायित्व निर्वहण करैक हेतु तैयार करथि। सम्बद्ध व्यक्तिक अनुपस्थित होएबाक प्रातहि नव पञ्जीकारक प्रयोजन होएत, ताहि हेतु के विचार करताह?

अस्तु, से जँ अधिसंख्य लोकक मध्य प्रचलित लिपि मे ई नहि होएत तँ मिथिलाक विशिष्टता सँ दुनियाँ परिचित कोना होएत। ख्रीष्टाब्दक दशम शताब्दी सँ लऽ कें देशक स्वतंत्रता प्राप्तिक काल धरि मिथिला मे कोनो प्रकारक गमना-गमनक सुविधा नहि छल, लेखन कला सँ विज्ञ रहितौ लेखन सामग्रीक अभाव मे कागजक स्थान पर तालपत्रक व्यवहार होएत छल जे सुविधा सँ नहि प्राप्त छल तखनहुँ मैथिल समाज अपन वाङ्मयक रक्षाक हेतु येन-केन प्रकारेण ताल-पत्र उपलब्ध करथि, छाहरिमे सुखाबथि, १४ नाम औ १.५ सै २ चाकर ताल पत्र काटि-छटि

कऽ तैयार करथि। पातक वाम भाग मे १.५ भीतर गोलाकार छीद्र कए सुतरी वा कपासक मोट धागासँ पैसाकऽ गाँठ देथि। ई पुस्तक- ५००-६०० पातक बनैत छल जकर दूनु दिस काष्ठक गत्ता देल जाए आओर डोरी मे गाँठ दए पुस्तक बान्हथि। बान्ह सक्कत पड़ैत छल। पुस्तक ब्रह्मपत्री शैली मे बनाओल जाइत छल। प्रत्येक गुरू अपन शिष्य कें बतावथि जँ- पुस्तकी वदति, स्याहीक हेतु जंगली जडी-बूटी ओ लेखनीक हेतु खद्धहीक व्यवहार करैत छलाह। जलात् रक्ष तैलात् रक्ष, रक्ष स्थूल बन्धनात्- इयैह-सूत्र पाञ्जिक विद्यार्थीकँ सेहो सिखाओल जाइन्ह। अभावग्रस्त समाज एतैक कठिनताक सामना करितहुँ पञ्जीकर्म सँ जुड़ल लोक अपन आश्रितक बिनु चिंता कएने, सैद-पानि बसात सहैत- गामहि-गाम भ्रमण करैत इच्छित विवरण एकत्र करैत छलाह। पुनः समय-समय पर गाम आबि तकर सम्पादन करथि- एहि तरहेँ कार्य शत-शत वर्ष चलल। – समाज सँ सहयोग ओ सम्मान भेटन्हि परञ्च कोनो प्रकारक राजकीय संरक्षण हुनका लोकनि कैँ कहियो नहि रहलन्हि। सम्पादन कार्य त्रुटि रहित करैत छलाह। अजुका सरकारी कर्मचारी जकाँ, जे घरहि बैसल वेतन ओ सुविधा भोगैत नागरिकता प्रमाण पत्र मे परिचयक स्थान मँ किछु सँ किछु भरैत जाइत छथि, नहि वरन् , पञ्जीकार लोकनि द्वारा संगृहित सूचनासँ समाजक बहुआयामी प्रयोजनक पूर्ति होइत रहल अछि- यथा सपिण्डताक निर्धारण- अशोंचदिक हेतु, वैवाहिक स्वीकृति हेतु, पिण्डदानक हेतु पुरूषाक नामक ज्ञान, विवाहक हेतु अधिकार तकौनाई, वंशक शैक्षणिक, भौगोलिक ज्ञान, आदि-आदि। उपरोक्त सभ पुस्तक कें प्रत्यक्ष राखि ७ वर्ष धरि निरंतर लिप्यंतरण (Transliteration) क कार्य सम्पन्न भेल। पाञ्जिक पुस्तक मे अंक निर्धारणक बड्ड महत्व होइत छैक अंकहि पर आधारित होइत अछि- शाखा पुस्तक। ई कार्य जँ गड़बड़ा गेल तँ बुझु जे धारमे भसिया जएबावाला स्थिति भए जाएत।प्राचीन पञ्जीसँ एकर सूत्र टूटि जाएत। अस्तु अंकन अशुद्ध नहि हो ताहि लेल एकाग्र भए लेखन कार्य कएल गेल।

किछु शब्द पञ्जिकार लोकनिसँ- पञ्जीकार लोकनि सँ विनम्र निवेदन जे मिथिलाक संस्कृतिकेँ अक्षुण्ण रखवाक हेतु अपन अल्पज्ञता ओ संकुचित प्रवृतिकेँ दूर करथु। मात्र किरानीगिरी करब- अधिकार ताकब ओ सिद्धांत कराएब आ ताहि सँ द्रव्य कमा लेब, एतबे धरि पञ्जीकारक सोच नहि होएबाक चाही। पञ्जीकर्मसँ जुड़ल व्यक्ति समाजक हेतु बड़ पैघ दायित्व ग्रहण करैत छथि। समान पुरूषा(Common Person) सँ जँ वैवाहिक स्वस्ति हेतु कन्याक सापिण्डय निवृति अनिवार्य तँ ओहि तरहेँ जँ वर ओहि पुरूषा सँ सपिण्डताक परिधि पार कए लेने छथि परञ्च कन्या समान पुरूषा सँ सपिण्डताक परिधि मे छथि तथापि वैवाहिक सम्बन्धक स्वस्ति देलहिटा जाए। एकर विरूद्ध जे पञ्जीकार निर्णय दैत छथि ई विचारि कए जे कन्या तँ 'छठि मे पडैत छथि वर खाहे ओहि पुरूषा सँ सातम वा ताहि सँ अधिके दूरि पर रहथु- एकर की अर्थ भेल? अधिकार तकवाक प्रारूप (उत्तेढ-Format) आदि अदौ काल सँ पञ्जीकार लोकनिकें प्राप्त छन्हि, वैयाकरण लोकनि अर्थ स्पष्ट करथु। धर्मक रक्षा वा आर्ष वचनक प्रति श्रद्धा राखब एक अनिवार्य तथ्य थिक ओ तोता रटंतु जकाँ शाखा पुस्तक कण्ठस्थ करब दोसर गैर जरूरी बात। धर्म सूत्रक प्रणयन समस्त ब्राह्मण लेल अछि जाहि मे आवश्यक अछि ३२(बत्तीस) मूलक उत्तेढ बनायब (वर-पक्ष ओ कन्या-पक्ष दूनुक हेतु समान रूपें) जाहि मध्य १६टा छठिक निर्धारण- उद्देश्य सापिण्डय निवृतिक ज्ञान, अधिकार तकबा काल पञ्जीकारक समक्ष विषय (Subject) होइत अछि वर- ओ कन्या नहि की ओ समान पुरूषा(Common-Person)। जँ पहिल दोसरक सपिण्डता सँ वहिर्भूत भेल तँ दोसर कोन रूप मे वहिमूलक सपिण्डय निवृति प्राप्त कएलक तँ अधिकारक स्वस्ति परमावश्यक। वर्त्तमान विज्ञानक युग मे गुण सूत्रक (Chromosomes) निर्धारण एहि रूपक अछि आ हमरा लोकनिक पुरूषा (ऋषि लोकनि) तकरहि शास्त्रिय ढंगे पूर्वहि राखि गेलाह।

महाराजाक हेतु निहुछल कन्यासँ अपन पाँजिक रक्षार्थ कन्या चोराकेँ बियाह केलापर राजा द्वारा पञ्जीकार लोकनिकेँ बजाए हुनकर नाममे

तस्कर उपाधि जोड़ब, नैय्यायिक गंगेश उपाध्यायक जन्म पिताक मृत्युक ५ सालक बाद होएब, महेशठाकुरक बहिनक विवाह कूच-बिहारक राजकुमारसँ होएब, कविशेखर ज्योतिरीश्वरक उपाधिक संग उल्लेख (हुनकर पाण्डुलिपि नेपालक पुस्तकालयसँ प्राप्त होएबासँ पूर्व), ओकर अतिरिक्त ढेर रास ढाकाकवि आ कवि शेखर लोकनिक विवरण, मुस्लिम आ चर्मकारसँ विवाहक विवरण आ समाजमे ओहिसँ भेल सन्ततिक प्रति कोनो दुराग्रहक अभाव, ई सभ पञ्जीमे वर्णित अछि।आर्यभट्टक विवरण- (२७) (३४/०८) महिपतिय: मंगरौनी माण्डैर सै पीताम्ब र सुत दामू दौ माण्ड्र सै वीजी *त्रिनयनभट्ट: ए सुतो आर्यभट्ट:* ए सुतो उदयभट्ट: ए सुतो विजयभट्ट ए सुतो सुलोचनभट (सुनयनभट्ट) ए सुतो भट्ट ए सुतो धर्मजटीमिश्र ए सुतो धाराजटी मिश्र ए सुतोब्रह्मजरी मिश्र ए सुतो त्रिपुरजटी मिश्र ए सुत विघुजटी मिश्र ए सुतो अजयसिंह: ए सुतो विजयसिंह: ए सुतो ए सुतो आदिवराह: ए सुतो महोवराह: ए सुतो दुर्योधन सिंह: ए सुतो सोढ़र जयसिंहर्काचार्यास्त्रस महास्त्र विद्या पारङगत महामहोपाध्या य: नरसिंह:।।

५८४(A)। *चैतन्य महाप्रभु:* रमापति उपाध्याय करमहे तरौनी मूलक छलाह। ओ बंगाल चलि गेलाह, हुकर शिष्य रहथि चैतन्य महाप्रभु।गंगेश उपाध्याय-छादन छादन, उदयनाचार्य-ननौतीवार ननौती (करियन, समस्तीपुर), महेश ठाकुरक मातृक काश्यप गोत्री सकराढ़ी मूलमे रुद झा। रमापति उपाध्याय प्रसिद्ध विष्णुपुरी, परमानन्दपुरी वत्सगोत्री करमहा मूलक तरौनी गामक चैतन्यक गुरु।बल्लाल सेनक समयमे हलायुध आ लक्ष्मणसेन-उद्योतकर। सिंहाश्रम मूलक म.म.हलायुधसँ १२ पुस्त पूर्व माण्डर मूलक बीजी म.म.त्रिनैन भट्ट (४०० ए.डी.लगभग) एहि पोथीक प्रस्थान बिन्दु अछि(पृष्ठ १८)। हलायुध आ नरसिंह समकालीन छलाह। नरसिंह (माण्डर मूल)सँ १२ पुस्त पूर्व त्रिनैन भट्ट मे।

जीनियोलोजिकल मैपिंग
(४५० ए.डी.सँ २००९ ए.डी.) - मिथिलाक पञ्जी प्रबन्ध
भाग-२

पहिल भागक जइमे तीन खण्ड रहै ओकर नाम जीनोम मैपिंग रहए। वास्तवमे ओ आधुनिक जीनोम मैपिंग नै रहए, वर्न ओकर पहिल स्टेज, फैमिली हिस्ट्री रहए। वास्तवमे फैमिली हिस्ट्री भेल जीनियोलोगिकल मैपिंग। से ऐ दोसर खण्डक नाम सएह राखल गेल अछि।

किछु बिन्दुवार विवरण:

आर्यभट्ट वैज्ञानिक 476-550 आर्यभट्ट वैज्ञानिक 476-550

आर्यभट्ट (आदिभट्ट) माण्डर-काश्यप। पञ्जीमे आर्यभट्टक विवरण-(२७) (३४/०८) महिपतिय: मंगरौनी माण्डैर सै पीताम्ब र सुत दामू दौ माण्ड्र सै वीजी त्रिनयनभट्ट: ए सुतो आर्यभट्ट: (आदिभट्ट:) ए सुतो उदयभट्ट: ए सुतो विजयभट्ट ए सुतो सुलोचनभट (सुनयनभट्ट) ए सुतो भट्ट ए सुतो धर्मजटीमिश्र ए सुतो धाराजटी मिश्र ए सुतोब्रह्मजरी मिश्र ए सुतो त्रिपुरजटी मिश्र ए सुत विघुजटी मिश्र ए सुतो अजयसिंह: ए सुतो विजयसिंह: ए सुतो ए सुतो आदिवराह: ए सुतो महोवराह: ए सुतो दुर्योधन सिंह: ए सुतो सोढ़र जयसिंहर्काचार्यास्त्रस महास्त्र विद्या

पारङ्गत महामहोपाध्या य: नरसिंह:।।

म.म.गोनू झा 1050-1150

करमहे सोनकरियाम गोनू झाक वर्णन पञ्जीमे अछि- महामहोपाध्याय धूर्तराज गोनू। पञ्जीक अनुसार पीढ़ीक गणना कएलासँ गोनूक जन्म (गोनूक सोनकरियाम करमहे-वत्समे २४म पीढ़ी चलि रहल अछि) आर्यभट्ट (आदिभट्ट)क बाद (आर्यभट्टक माण्डर-काश्यपमे ३९ म पीढ़ी चलि रहल अछि) आ विद्यापति ठक्कुरक पहिने (विद्यापतिक विषएवार बिस्फी-काश्यपमे १४म पीढ़ी चलि रहल अछि) लगभग १०५० ई.मे सिद्ध होइत अछि। कारण एहि तरहेँ एक पीढ़ीकेँ ४० सँ गुणा केला सँ आर्यभट्टक जन्म लगभग ४७६ ई. आ विद्यापतिक जन्म लगभग १३५० ई. अबैत अछि जे इतिहाससम्मत अछि।

महाराज हरसिंहदेव

मिथिलाक कर्णाट वंशक। ज्योतिरीश्वर ठाकुरक वर्ण-रत्नाकरमे हरसिंहदेव नायक आकि राजा छलाह। 1294 ई.मे जन्म आ 1307 ई. मे राजसिंहासन। घियासुद्दीन तुगलकसँ 1324-25 ई. मे हारिक बाद नेपाल पलायन। मिथिलाक पञ्जी-प्रबन्धक ब्राह्मण, कायस्थ आ क्षत्रिय मध्य आधिकारिक स्थापक, मैथिल ब्राह्मणक हेतु गुणाकर झा, कर्ण कायस्थक लेल शंकरदत्त,आ क्षत्रियक हेतु विजयदत्त एहि हेतु प्रथमतया नियुक्त भेलाह। हरसिंहदेवक प्रेरणासँ- आ ई हरसिंहदेव नान्यदेवक वंशज छलाह, जे नान्यदेव कार्णाट वंशक १००९ शाकेमे स्थापना केने रहथि- नन्दैद शुन्यं शशि शाक वर्षे (१०१९ शाके)...मिथिलाक पण्डित लोकनि शाके १२४८ तदनुसार १३२६ ई. मे पञ्जी-प्रबन्धक वर्तमान स्वरूपक प्रारम्भक निर्णय कएलन्हि। पुनः वर्तमान स्वरूपमे थोडे बुद्धि विलासी लोकनि मिथिलेश महाराज माधव सिंहसँ १७६० ई. मे आदेश करबाए पञ्जीकारसँ शाखा पुस्तकक प्रणयन करबओलन्हि। ओकर बाद पाँजिमे (कखनो काल वर्णित १६०० शाके माने १६७८ ई. वास्तवमे माधव सिंहक बादमे १८०० ई.क आसपास) *श्रोत्रिय*नामक एकटा नव ब्राह्मणउपजातिक

मिथिलामेउत्पत्ति भेल।

मैथिलीक आदिकविविद्यापति

कवीश्वरज्योतिरीश्वर (लगभग१२७५-१३५०) सँ पूर्व (कारण ज्योतिरीश्वरक ग्रन्थमे हिनक चर्च अछि), मैथिलीक आदिकवि। संस्कृत आ अवहट्टक विद्यापति ठक्कुरःसँ भिन्न। सम्भवतः बिस्फी गामकबार्बर कास्टक श्री महेश ठाकुरक पुत्र। समानान्तर परम्पराक बिदापत नाचमे विद्यापति पदावलीक (ज्योतिरीश्वरसँ पूर्वसँ) नृत्य-अभिनय होइत अछि।

महाकवि विद्यापति ठाकुर1350-1435

विद्यापति ठक्कुरः 1350-1435 विषएवार बिस्फी-काश्यप (राजा शिवसिंहक दरबारी) आ संस्कृत आ अवहट्ठ लेखक। कीर्तिलता, कीर्तिपताका, पुरुष परीक्षा, गोरक्षविजय, लिखनावली आदि ग्रंथ समेत विपुल संख्यामे कालजयी रचना। ई मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (ज्योतिरीश्वर पूर्व)सँ भिन्न छथि।

पञ्जी-प्रबन्धमे उपलब्ध किछु आधिकारिक आ सामाजिक शब्दावली

पञ्जी-प्रबन्धमे उपलब्ध किछु आधिकारिक आ सामाजिक शब्दावलीक विवरण 11000 पंजी तालपत्रक जे.पी.जी. इमेजक अंवेषणक बाद संकलित कएल गेल अछि जे नीचाँ वर्णित अछि।

सांधिविग्रहिक, धर्माध्यक्षक, चतुर्वेदाध्यायी, याज्ञिक, पार्णागारिक, वार्तिक, महामत्तक, भाण्डागारिक, स्थानान्तरिक, राजवल्लभराजवल्लभ, स्थानान्तरिक, राउल, खनतरी, कापनि, फूलहर,सन्धि बिग्रहिक, पुरोहित, कुल छेत्रोपार्यक, आवस्थिक, कन्टकोद्धार्कारक, ज्योतिविर्वद, पदांकित, पण्डित राज पदांकित,उपाय कारक, एकान्तरिक, माण्डर सँ वैदिक विश्वम्भर, सिहौली माण्डरसँ पुरन्दर सुत वैदिक गोनू झा, नर वलि. सँ घनश्याम सुत वैदिक गणपति

मिश्र, खौआलसँ कमल सुत म. गुणाकर वैदिक पिताम्बर, सिंहौलि माण्डरसँ वैदिक विश्वम्भर सुत म. कुलपति म.चतुर्भुज, दरिहरासँ रघुनाथ सुत म. माधव वैदिक विरेश्वर, दरिहरासँ म. माधव सुत वैदिक भगीरथ, दरिहरासँ कीर्तिनाथ सुत वैदिक धननाथ, दरिहरासँ रामसुत वैदिक भगीरथ, सकराढ़ीसँ नकटू सुत वैदिक चन्दरक्त, माण्डर सँ वै. अच्छपति सुत वैदिक जीवपति, सोदरपुरसँ वैदिक होरी, दरिहरा सँ राम द्दौ० विभाकर सुतौ वैदिक विश्वम्भर, सकराढ़ीसकराढ़ी सँ हरिश्वर द्दौ० वैदिक:विश्वम्भर, माण्डर सँ वैदिक विश्वम्भर, कमल सुतो कृष्णदेव महो गुणाकरौ (१०९//०४) वैदिक (१०९/०४) पीताम्बरा:, माण्डरसँ माण्डरसँ भैरव द्दौ० वैदिक विधूप्र०, वैदिक युदनाथ:, वैदिकवैदिक विरेश्वर, वैदिकवैदिक भगीरथ, वैदिक विश्नाथ, वैदिक घननाथ, वैदिक चन्द्रदत्त, दरिहरा सँ वैदिक जीवनाथ, वैदिक अच्छपति, वैदिकवैदिक बलदेव, दरिहरा सँ वैदिक जीवनाथ दौहित्र दौ, वैदिकवैदिक कलाघर, दरिहरा सँ राम सुत वैदिक भगीरथ दौ, वैदिक राजा महो गोशाई, वैदिक मुकुन्द, बेचू सुतो वैयाकरण धरनीघर वैदिक वनखण्डीकौ, वैदिक नित्यानन्द, वैदिक सोनी, वैदिक बद्रीनाथ, वैदिकवैदिक विधु, हरिअम सँ मुक्तिनाथ द्दौ**o**वैदिक तुलानन्द, वैदिक चन्द्रदत्त प्रेमदत्त, सोदरपुरसोदरपुर सँ चित्रधर द्दौ**o** वैदिक धननाथ, वैदिकवैदिक अमोदयानाथ, वैदिक हेमागंद, वैदिक गणपति वैदिक कुलपतिको, बैदिक गुणपति सुता आँखी वैदिक कलाघर, अपरा वैदिक कुलमणि, वैदिकवैदिक आदिनाथ, वैदिक कुलपति , ज्यो., वैयाकरणवैयाकरण भैरवदत्तौ, वैयाकरण अमृतनाथ बुद्धिनाथ देवनाथ, वैयाकरण राम:, वैयाकरणवैयाकरण राधनाथ, वैयाकरण परमेश्वर, सरिसबसरिसब सँ झोटह द्दौ**o**वैयाकरण नन्दीपति, वैयाकरण गौरीशंकर, वैयाकरणवैयाकरण रज्जे, खण्डबला सँ भगीरथ द्दौ. महा वैयाकरण दिनबन्धु सुता वैया. जीवनाथ, वैयाकरणवैयाकरण मतिनाथ, सकुरीपाली सँ वैयाकरण श्रीदत्त सुत वै. मनभरन दौ, वैयाकरण रूपनाथ, वैयाकरणवैयाकरण मतिनाथा:, कविकवि हेमनाथ सुता वैयाकरण महिनाथ, वैयाकरण रामनाथ उँमानाथ:, वैयाकरणवैयाकरण

खुशिहाल, वैयाकरण भवानीदत्त देवीदत्ता, वैयाकरण हेमनाथ दौ, वैयाकरण हरिनाथा:, वैयाकरणवैयाकरण ऋद्धि, छक्कनछक्कन वैयाकरण, महो चण्डेश्वर सुतो वैयाकरण (२७६//०७) शिवेश्वर:, खौआल सँ वैयाकरण मोदनाथ दौ, वैयाकरण (२०१/०४) मोदनाथ, वैयाकरण गोपाला:, वैयाकरणवैयाकरण मेघनादौ, वैयाकरण चंलल:, वैयाकरण ईश्वरीदत्त सुतो, वैयाकरणवैयाकरण हर्षनाथ दौ, वैयाकरण (०४/०६) ब्रजगोपाल जयगोपाल वैयाकरण प्राध्यापक (Calcutta university Maithily Deptt.) खूद्दीका महिषी पाली सँ दिनानाथ सुत शक्तिनाथ दौ, वैयाकरणवैयाकरण महावीर, वैयाकरण हरिनारायणा, वैयाकरण नन्दीपति, वैयाकरण एकनाथ, कुजौली सँ गंगादत दौ वैयाकरण रघुनाथ, हरिअम सँ तुलसीदत्त द्दौ वैयाकरण खुद्दी, अपरावैयाकरण सुता वैयाकरण भैये सुग्गे, वैयाकरण चिन्तामनि, देयाम सँ वैयाकरण मधुकर, पिताम्बर सुतो वैयाकरण पद्मनाम:, वैयाकरणवैयाकरण रवूदीका, हरिअम सँ हिंगु द्दौ वैदिक सोनी सुता वैदिक कुलमणि वैदिक वंशमणि कमलमणि परशमणि (२८०/०१) हर्षमणिका: दरिहरा सँ वैदिक जीवनाथ दौ, पाली सँ श्रीनाथ द्दौ पुरन्दर सुतो वैदिक गोनू वैदिक हेमाङ्गदो, वैदिक घनश्याम, खौआलसँ काशीपति द्दौ वैदिक घनश्ययाम (१६०/०५) सुतो वैदिक गणपति वैदिक ब., वैदिक गणपति सुता आँखी वैदिक कलाधर (२६८/०९) रकनी कविभानु वैदिक, वैदिक केशव, वैदिक गोशाइका:, वैदिकवैदिक गोशाँई, सरिसब सँ चतुर्भूज द्दौ० वैदिक गिरधारी, आदिनाथा: ब., माण्डरसँवैदिकविश्वम्मर, आगमाचार्यक म० म० उपा० (९६//०४) देवनाथ, आगमाचार्यक देवनाथ, एकहरा सँ आगमाचार्यक महो मुकुन्द, कन्टकोद्धार्कारक म०म० मधुसूदन, तर्क पत्र्चानन म० म० उपा० गोपीनाथ, विरेश्वर कविशेखर इति प्रसिद्ध, कटाइ सँ कवि केशरी म०म० भीम, माण्डर सँ कविराज शुभंकर, वलियास सँ कविशेखर पदांकित चन्द्रनाथ, सोदरपुरसोदरपुर सँ ढाका कवि महामहो गणपति, कुजौली सँ महो कृष्ण दाशसुत कवि गंगादाश, करमहा सँ कविन्द्र पदांकित रति देव, दरिहरा सँ कविराज विसव,

करमहा सँ कविन्द्र पदांकित रतिदेव, टकवाल सँ कविराज लक्ष्मीपाणि, पाली सँ कविशेखर पदांकित यदुनाथ, विस्फी सँ कवि भूपति पदांकित सोमेश्वर, माण्डर सँ कविशेखर पदांकित महो यशोधर, जगति सँ महामहोकवि रत्न पदां. होरे, पाली सँ घौघे सुत कविराज कृष्णपति, वलियास सँ कविशेखर पदांकित चन्द्रनाथ, वलियास सँ कवि मणि पदांकित पशुपति, गंगोली सँ कविराज गयन, ए सुतो महामहो विद्यापति गंगोली सँ मानकुढ़ वासी कविराज गणेश्वर, सोदरपुरसँ कविराज महो भानुदत्त, सोदरपुरसोदरपुर सँ कवि जयराम, तपोवन सँ कवि धनेश्वर, अलय सँ शान्तिकरणीक रूद, नरवाल सँ शान्तिकरणीक मधुकर, कलिगाम सँ शान्तिकरणीक भोगीश्वर, माण्डरसँ शान्तिकरणीक पाँखू, दानाधिकारी मोदी हल्लेश्वर, जगतिसँ मिमांशक म.म. मिरुस, (मिमांशक) हरि देवधरापत्य-सिंघिया, मिश्रा (मिमांशक) सुधाधरपत्य उसरौली, मिश्र (मिमांशक) लाखू भूड़ी गणेश्वर-परमगढ़, मिमांशक विभू, मिमांशक माधव, भवेश्वर सुता मिमांशक रूद, नोने सुता मिमांशक मिसरू, राम सुतो मिमांशक योगदत्त:, मिमांशक मेघानाथ, मिमांशक मणि, मिमांशक जयदेव, मिमांशक धरनी, मिमांशक योगदत्त:, करमहा सँ मिमांशक योगदत्त, जगतिसँ मिमांशक म.म. मिरुस, जनार्दन सुत नैयायिक दुर्गाघर, नैयायिक महौ दुर्गाधर, षट्शास्त्री नैयायिक दर्शनशास्त्रज्ञ उदयकान्तो, दिघो सँ देवागारिक बाटे, दिघो सँ देवागारिक बटेश्वर, पार्णागारिक विरेश्वर, दिघोयसँ पार्णागारिक जानू दत्त, पार्णा गारिक स्थितिदत्त, धर्माधिकरणिक जानुदत्त, पबौली सँ धर्माधिकरणिक रूद, गंगोली सँ धर्माधिकरणिक जान्हव, धर्माधिकरणिक महामहो नरहरि, धर्माधिकरणिक गदाधर, सुरगन सँ धर्माधिकरणिक भास्कर, करिअमसँ म.म. धर्माधिकरणिक मरथ, खौआलसँ शर्म्मा धर्माधिकरणिक म.म. उ.हरिशर्म्मा, दिघोयसँ जयदत्त सुत धर्माधिकरणिक भट्टजीवे, धर्माधिकरणिक म.म. (२३/०१०) नरसिंह, धर्माधिकरणिक महोमहोपाध्याय गदाघर, धर्माधिकरणिक वाटू, **नैवंधिक-** नैवंधिक वीरेश्वर, नैवंधिकधीरेश्वर, मुद्राहस्तक गुणीश्वर, सुत म.म. आभो एसुत, मुद्राहस्तक कुल

छेत्रोपार्यक राउल, गढ़बेलउँच सँ मुद्राहस्तक गुणीश्वर, मुद्राहस्तक लक्षपति, मुद्राहस्तक लक्ष्मीदत्त

मंत्री गणेश्वर: मिथिलाक कर्णाट वंशक नरेश हरसिंहदेवक मंत्री। *सुगतिसोपान*मे मिथिलाक सांवैधानिक इतिहासक वर्णन

महाराज नान्यदेवमिथिलाक कर्णाट वंशक 1097 ई. मे स्थापना। 1147 ई. मे मृत्यु। मल्लदेव मिथिलाक कर्णाट वंशक संस्थापक नान्यदेवक पुत्र। मिथिलाक गंधवरिया राजपूत मल्लदेवकेँ अपन बीजीपुरुष मानैत छथि।

मालद्वार – पंचप्रवर- करमहे नरुआर वत्सगोत्री, राजा रामलोचन चौधरी-मालद्वार- २५०० वर्ष पूर्व- राजा दुर्गा प्रसाद चौधरी-

-राजा बुद्धिनाथ चौधरी(मालद्वार)-कुमार वैद्यनाथ चौधरी

- छत्रनाथ चौधरी (दुर्गागंज)-टंकनाअथ चौधरी-कर्मनाथ/ शेषनाथ/ रुद्रनाथ

एक छलि महारानी- डॉ. मदनेश्वर मिश्र

सुरगणे लौआम- गोत्र पराशर

लौआम गाम मूलतः बसैठीसँ पूर्णियाँक बीचमे- आब नहि छैक।

तिलैबार मूलक शाण्डिल्य गोत्री

बनैली गाम- अगरू राय- हिनकर जमाए सुरगणे लौआम मूलक प्राणपति- हिनक बालक समर झा

१५७५-१६२५ (लगभग १६म शताब्दी), दिल्ली सल्तनतसँ जमीन्दारी किनलन्हि आ समर चौधरी भऽ गेलाह, महाराज भऽ गेलाह।

लौआमक दू शाखा

-महाराज कृष्णदेव (पहसरा बसैटी)

-महाराज भगीरथ- सौरिया (कटिहार-सोनालीक बीचमे)- एकटा स्थान दण्डखोड़- एतए अपराधीकेँ सजा देल जाइत छल (सौरिया शाखा द्वारा)।

पाँच वंश बाद पहसरा बसैटी- कृष्णदेव-देवनारायण-वीरनारायण-रामचन्द्र नारायण (जॉन बुकानन पूर्णियाँ गजेटियरमे हुनकर वर्णन किंग ऑफ पूर्णियाँक रूपमे कएने छथि)- इन्द्रनारायण (बिना सन्तान) रानी इन्द्रावती(सासुरक नाम- असल नाम लीलावती) हिनकर मृत्युतिथि १५-११-१८०३ मृत्युस्थान पूर्णियाँ, समए- मध्याह्न काल, श्राद्ध खर्चक हेतु पूर्णियाँ जजसँ प्राप्ति- रु.५०००/- माँग रु.१५,६७०/-(बोर्ड ऑफ रेवेन्यु, फोर्ट विलियममे २९.११.१८०३ ई. केँ कार्यवाही)। इन्द्रनारायणक समकालीन सौरिया दिश राजा राजेन्द्रनारायण आ राजा महेन्द्रनारायण। महाराज इन्द्रनारायणक मृत्यु १७७६ ई. मे, तकर बाद २७ बर्ख धरि रानी इन्द्रावती राज कएलन्हि।

राज बनैली- रामनगर/ श्रीनगर/ गढ़बनैली/ सुल्तानगंज/ चंपानगर।

श्यामा मन्दिर बनारसमे संस्कृत पढ़बाक वृत्ति- रानी चन्द्रावती-कोइलख (राजा पद्मानन्द सिंह, पुतोहु-कुमार चन्द्रानन्द सिंहक पत्नी)-रामनगर।

विशेश्वर झा बैगनी नवादासँ पहसरा नोकरी करबा लेल अएलाह। हिनकर बेटा दीवान देवानन्द फेर चातुर्धरिक मनसबदार परमानन्द-संध्यागायत्रीसँ लोप बनैली समर सिंहकेँ मानि लेलन्हि। दुलार चौधरी/ फेर सिंह (बनैली राज), बुकानन हिनका चौधरी कहि सम्बोधित करैत छथि, मात्र एक बेर सिंह कहै छथि।

१६८०-१७०० ई.-दरभंगा राज, कन्दर्पीघाटक लड़ाई, राजा नरेन्द्र सिंह-

दिल्ली सल्तनत आ जनताक बीचमे, बागमती तटपर समस्तीपुर ब्रह्महत्याक आरोपी नरेन्द्र सिंहकेँ बारि ब्राह्मण सभ पूर्णियाँ सुरगणे लौआम महाराज समर सिंह सन्तति महाराज नरनारायण, पहसरा बसैटी (कोशीक पूर्व)- फारबिसगंजसँ दण्डखोड़ा कटिहार तक बसाओल गेलाह। फेर माधव सिंहक समएमे दरभंगा आपस भेलाह।

खुद्दी झा/ परमेश्वर झाकेँ आशुतोष मुखर्जीक समए दरमाहा राज बनैली देलकैक।

पञ्जीमे दरभंगा राजक विरुद्- विविध विरुदावली विराजमान् मानोन्नतमान् प्रतिज्ञापदर्योधिक परशुराम समस्त प्रक्रिया विराजमान् नृपराज महोग्रप्रताप मिथिलाङ्कार महाराजाधिराज माधव सिंह बहादुर कामेश्वर सिंह।

धकजरीक नवलक्षाधिपति लक्ष्मीपति मिश्र कोदरिये मूल शाण्डिल्य पाञ्जि भेटि गेलन्हि, रमेश्वर सिंहकेँ १ १/२ लाख टाकाक चन्दा देलन्हि, पिण्डारुछक चौधरी सभकेँ सेहो पाँजि भेटलन्हि (नित्यानन्द चौधरी)।

गुणाकर झा –हरसिंहदेवक समकालीन ई.१३२६ ततैल ग्राम- १० खाढ़ी पाछाँ ककरौड़ गाम-जिला मधुबनी रघुदेव झा- आनन्द झा- देवानन्द प्रसिद्ध छोटी झा दरभंगा नरेश माधव सिंहक (शाखा पुस्तकक प्रणयन आदेश) समकालीन १६५० ई.क आसपास- मित्रानन्द प्रसिद्ध झोंटी झा- गोपीनाथ झा प्रसिद्ध होरिल झा- हरखानन्द प्रसिद्ध हरखी झा- एखसँ १५९ वर्ख पूर्क दिनकर टिपणी (जन्म) रसाढ़ पूर्णियाँ बनमनखी लग- श्री भोलानाथ प्रसिद्ध भिखिया झा- श्री मोदानन्द झा- पञ्जीकार विद्यानन्द झा प्रसिद्ध मोहनजी- मूल पडुआ(पण्डुआ) महिन्द्रपुर, गोत्र काश्यप त्रिप्रवर।

खाँ- कुजिलवार उल्लू- कात्यायन गोत्र

उतेढ़- सिद्धांत लिखबाक पहिने वर ओ कन्या पक्षक अधिकार ताकल जाइत छैक आ ई मात्र मूलक आधारपर बनाओल जाइत अछि आ समगोत्री विवाह नहि होअए ताहि लेल गोत्र आ प्रवर सेहो देखल जाइत अछि। मूलसँ गोत्र सामान्यतः पता चलि जाइत अछि, किछु अपवादो छैक। जेना ब्रह्मपुरा मूल- काश्यप/ गौतम/ वत्स/ वशिष्ठ (सात टा), करमहा- शाण्डिल्य (गौल शाखा)/ बाकी सभ वत्सगोत्री, दुनु करमहामे विवाह संभव।

चन्दा झा- माण्डर रजौरा

रामोऽवेत्ति नलोऽवेत्ति वेत्ति राजा पुरुरवा।

अलर्कस्य धनं प्राप्य नान्यदेवोनृप भविष्यति॥

नान्यदेव घोड़ापर चढ़ल हकासल-पियासल अएलाह, गाछतरमे घोड़ा बान्हलन्हि, घोड़ा लेल खाद्य छीलए लगलाह तँ फन काढ़ि साँप नाग आएल, किछु लिखल जे नान्यदेव मिथिलाक भाषा नहि पढ़ि सकलाह। कामेश्वर ठाकुर जे गाममे रहथि पढ़ि बतओलन्हि जे अहाँ मिथिला राजा नान्यदेव छी।

कामेश्वर ठाकुर संतति चण्डेश्वरकेँ हरसिंहदेव राज लिखितमे सौंपि पलाएन कएल। चण्डेश्वरक पाछाँ सिपाही आएल। एकरापर जल फेंकि ठाढ़ भऽ गेल, दोसर खेहारलक, ओकरापर जल फेकलन्हि ओ आन्हर भऽ गेल (अन्हरा ठाढ़ी)।

वर्षकृत्य- अयलीह बिहुला देलन्हि पसारि,

गेलीह सामा लेलन्हि ओसारि।

पञ्जी- अधिकारक नियमावली- पञ्जी अयाची मिश्रक पौत्र ढाका कवि- ढाकामे जागीर भेटलन्हि। हल्ली झा तांत्रिक आ शिव कुमार शास्त्रीक बीच शास्त्रार्थ- प्रत्याहार वाक तंत्र द्वारा हल्ली शिवकुमार

शास्त्रीक वाक् बन्न कए देलन्हि।

तस्कर केशव, मंगरौनी नरौने सुल्हनी- पराशर गोत्र माण्डर सिहौल मूलक काश्यप गोत्री खगनाथ झा- गाम जमसम। महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह लेल लड़की निहुछल गेल, गाममे पोखरि खुनाओल, मन्दिर बनल जे राजा दोसराक मन्दिरमे कोना पूजा करताह। केशव झा लड़कीकेँ लए गाम आबि गेलाह। धोती रंगाइत छल। पता केनिहार जे आएल तकरा पकड़ि कन्यादान करबाओल। तकर बाद राजा की करताह, पञ्जीकारकेँ बजा कऽ ओकर नाममे तस्कर उपाधि लगबाओल। खगनाथ झा- श्रीकान्त झा पाँजि, तस्कर केशव श्रोत्रिय ओहिठाम विवाह कएलापर श्रोत्रिय श्रेणी विराजमान रहितन्हि। पाञ्जि आ पानि अधोगामी, पछबारि पारक प्रथम श्रेणी आब नहि अछि।

शाण्डिल्य- ४३ मूल, वत्स-४० मूल, काश्यप-२७ मूल, सावर्ण- ७ मूल, कात्यायन- ५ मूल, पराशर- ७ मूल, भारद्वाज- ५ मूल, गर्ग- ३ मूल

सूर्य- सिंह राशिमे (१६ अगस्त सँ १६ सितम्बर), किछु सुखेबाक होअए तँ सभसँ कड़ा रौद।

पाँ रघुदेव झाक लिखल माण्डर मूलक पोथी- अंकित तिथि- १७म शताब्दीक अन्तिम दशक आ १८म शताब्दीक पहिल दशक, हुनकर पौत्र पाँ छोटी प्रसिद्ध देवानन्द झाक लिखल शाखा पुस्तक १७६०-१७७६ई.। ताल पत्रपर।

पाँ भिखिया झा शाखा पुस्तक क्वैलख वासी हरिअम्ब मूलक पाँ डोमाई मिश्रक लिखल । पाँ हर्षानन्द झा बला शाखा पुस्तक जे पाँ झोंटी झा प्रसिद्ध मित्रानन्द झाक लिखल अछि। पाँ. झूलानन्द झा (पाँ भिखिया झाक भ्राता) बला शाखा पुस्तक, पाँ मोदानन्द झाक शाखा पुस्तक जे हुनकर मौसा पाँ लूटन झा आ मसियौत पाँ निरसू झा बला शाखा पुस्तक जे १९२५ ई.सँ १९३५ ई. धरि सौराठमे लिखल गेल। एहि सभ शाखा पुस्तकक, गोत्र पञ्जी जाहि मध्य गोत्र ओ मूलक विवरण, पत्र

पञ्जी जाहि मध्य अपत्यक ज्ञान ओ मूलग्रामक विवरण भेटैत अछि, जाहिसँ वासस्थान परिवर्तनक ज्ञान होइत अछि, दूषण पञ्जी जाहिसँ वंशमे आएल कथित दोषक- कट्टरताक विरुद्ध प्रमाण सेहो- ज्ञान होइत अछि। तत्तत पुस्तकमे वर्णित तत्कालीन प्रचलित उपाधिक ज्ञान होइत अछि।

पारिभाषिक शब्दावली:- कोनो वंशक उल्लेखसँ पूर्व ओहि वंशक मूलक उल्लेख जाहि शब्दक बादसँ लागल हो ओ भेल मूल- तकर बाद व्यक्तिक नाम तखन ओहि व्यक्तिक पुंपत्यक उल्लेख- से सुतः वा सुतौ वा सुताः लिखल गेल भऽ सकैए। ओहि व्यक्तिक एकोटा पुत्र नहि परञ्च पुत्री तँ सुता वा सुताश्च लिखल भेटत- सुतः सुतौ सुताक बाद पुत्रक नाम तखन ओहि व्यक्तिक श्वसुरक मूल ग्रामक संगे मूलक उल्लेख। कतहु-कतहु मूलग्राम नहियो लिखल भेटत, पुस्तकमे आगाँ बढ़लापर मूलक संकेताक्षर बिन्दु सहित जकर आगाँ “सँ” नहि भेटत परञ्च पढ़ैत-पढ़ैत पाठक मूलसँ परिचित भऽ गेल रहताह। सँ=सं=सम्भूत। श्वसुरक नामक पहिने विशेष ठाम श्वसुरक पिताक नाम, कत्तहु-कत्तहु पितामहक नाम सेहो, श्वसुरक नामक बाद दौ लिखल भेटत अर्थात् अर्थ भेल जनिक नामक आगाँ दौ. लिखल अछि ताहि व्यक्तिक दौहित्र भेलाह सुतः सुतौ सुताक उल्लेखक बाद लिखल नाम अर्थात् सुतादिक मातामह भेलाह दौ. लिखलसँ पूर्व नाम- तदुपरान्त श्वसुरक उल्लेख मूल सहित भेटत आ नामक बाद शब्द भेटत दौहित्र दौहित्र जे संकेताक्षरमे द्दौ. रहत, परञ्च ई बुझब आवश्यक जे शाखा पुस्तकक कोनो पृथक विषय सूची नहि रहि विषय-अनुक्रमणिका संगे रहै छै।

पाँ देवानन्द प्रसिद्ध छोटी झा पँञ्जी सँ मूल क्रमे

बीजी पुरूषक नाम ओ पत्रांक

गंगोली सँ बीजी गंगाधर १/१ (१-१)

खण्डबला सँ बीजी संकर्षण १/४ (१-४)

एकमा वलियास सँ बीजी धरनीधर २-१

बरूआनी मड़ार सँ बीजी दिवाकर २-१

धनोज सँ जनार्दन २-२

माण्डर सँ बीजी त्रिनयनभट्ट- २-२

बाढ़ अलय सँ बीजी गंगाधर २=५

मतौना दरिहरासँ बीजी श्रीकर ३-२

सोनकरिआम करमहा सँ बी जी म०म० बंशधर ३-५

आल सँ बीजी म०म० प्रजापति ३ = ३

घुतहरा सँ गांगु ४-२

महथौर अलय सँ बीजी बाढ़न ४-२

शक्रिराय पुर नरउन सँ बीजी-मुरारि ४-३

करूआनी सकराढ़ी सँ बीजी हरदत्त ४-५

सरिसब सँ बीजी रत्नपाणि ४ = २

टकबाल सँ वीजी हरिपाणि ४=५

डोम टेकारी ग्रामतत्र चतुर्वैदाध्यायी बीजी कामदेव ५-४

तेसहोता सकुराढ़ी सँ बीजी-गंगादित्य ५=३

कुजोली सँ बीजी दाँतीय ५=४

रेकौरा गंगौलीसँ पण्डीत केशव ६-२

मौनीसँ शंकरदाश ६-२

रेकौरा सकराढ़ी सँ बीजी कपिलानन्द ६-३

अथ पल्ली सँ बीजी कपिल देव ६=१

अवहिखण्ड भण्डरिसम सँ बीजी कुसुमादित्य ७=१

उचति भण्डरि सम सँ बीजी महिपाणि ८-४

बभनियाम सँ बीजी हरिशर्म्म ८=३

महवाल सँ बीजी माहब- ९-१

गढ़ विस्फी सँ बीजी विष्णुशर्मा ९-४

पबौली ग्रामो पार्यक वाचस्पति १०-१

जलक्याँपट्ट सवारीवासी वीजी दामोदर १०-२

गढ़ निखुति सँ बीजी दामोदर १०-४

तल्हनपुर सँ बीजी त्रिपाठी रूद्र १०=२

गढ़ यमुगाम सँ बीजी श्रीकर ११-१

अथरी दरिहरा सँ बीजी कमलपाणि ११-२

नरउन सँ बीजी मōम! महिधर ११=२

जजिवाल सँ बीजी दण्डपाणि ११ = ५

तिसउँत सँ बीजी विश्वम्भर १२-१

मेरन्दी सै बीजी जनार्दन १२=४

धनरवोरी वासी मड़ार सँ वीजी थाने १३-१

करहिया पनिचोम सँ बीजी चण्डेश्वर १३-३

हड़ेहत पनिचोम सँ बीजी महुमहल १३-५

मालिछ सँ बीजी वत्सेश्वर १३=५

टकबाल से बीजी हरिकंठ १४-१

जगति विस्फी सँ बीजी जयकर १४-४

केउटी राडढ़ सँ बीजी मसुवास बासू १४=१

चान्दो वलियास सँ बीजी पुरूषोतम १५=२

घोसियाम सँ बीजी आवस्थिक सुपानन्द १६-१

बुधवाल सँ वीजी वासुदेव १६ = २

त्रिलाठी धुसौत सँ बीजी नरउन १६ = ५

यशानन्द टकवाल सँ बीजी पाँखू १७-४

नदाम सँ बीजी हरिकर १७=४

पद्मपुर पकलिया सँ वीजी बासुदेव १८-२

उदनपुर जजिवाल सँ बीजी आवस्थिक माने १८-४

हरिअम सँ वीजी दिक्षीत झाउँ १८ = २

सुइरी सँ बीजी शेखर १८ = ३

गोविन्द वन सँ नन्दन सुत गुणीश्वर १९-२

रहुआ सँ वर्द्धमान १९ = २

डोढ़वाल सँ नरदेव १९ = ६

अलय सँ बीजी धरनीधर २०- १

गाउल करमहा सँ वीजी मुरारि २०= १

उपमन्यु गोत्रे गढ़ एकहरीसँ हरिकर क्वचित

जगतगुरु भदेश्वर २१-१

सरौनीसँ बीजी मल्लिकराज २१-४

बड़कोरी सँ अतिरूप दौ इति प्राचीन लिखनं २१ –५

सिंहाश्रम सँ बीजी म०म० हलायुध २३-२

हल्लैश्वर सुरेश्वर जीवेश्वरा म०म०प. सोदरपुर पार्यका: २३-४

बरेबा सँ बीजी कृष्ण २३-५

चोढ़वाल सकाराढ़ी सँ बीजी सिद्धेश्वर २४-३

शाण्डिल्य गोत्रे करमहा सँ बीजी सुरेश्वर २५-१

कटाई सँ बीजी वाचस्पति २५-३

दिनारी सरिसब सँ वीजी जनार्दन २५-७

राढ़ी कोइयार सँ बीजी शूलपाणि २५=५

चाउटी टकवालसँ बीजी रत्नेश्वर २५=७

थरियासँ बीजी त्रिलोचन २६-३

सकुरी सँ बीजी मoमo देयी २७-३

करमौली गंगोली सँ बीजी मधुकर २७-५

हरसिंहपुर निखूतिसँ बीजी धारेश्वर २७=३

गंगुआलसँ बीजी लोम २७=४

नरघोध टकबाल सँ बीजीउहरि २७ = ६

कञ्जग्राम सकराढ़ी सँ बीजी धनञ्जय २९ -४

धुसौत सँ बीजी बासुदेव ३० = ६

वलहा वलियास सँ बीजी वर्द्धमान ३२- ६

सुरगन सँ बीजी मoमo उँमापति ३३ – ४

यमुगाम सँ बीजी उदयकंठ ३९-६

भरेहा सँ बीजी लक्ष्मीधर ४० – १

सतलखा सँ वीजी चक्रपाणि ४२ = ३

यमुगाम सँ बीजी हरदत्त ४३-४

यमुगाम सँ बीजी ओहरि ४४-३

पिहवाल सँ बीजी अर्थपति ४४=१

चनुआल करमहा सँ बीजी मनोधर ४६= १

उल्लू कुजौली सँ बीजी दिनकर ४८-४

हिराउत सुरगनसँ बीजी हल्लेश्वर ४८=२

कोइयार सँ बीजी वेद ४९-२

सुसैना अलय सँ बीजी बलभद्र ५१-५

यमुगाम सँ बीजी देवधर ५४-२

पण्डुआ सँ बीजी म०म० पाठक गोविन्द ५७= २

वगड़ा सँ सिद्धेश्वर दौ ६२-५

विठुआल सँ बीजी मनोधर ६५=२

सरौनी सँ बीजी डल्लन ६६-३

यमुगाम सँ वीजी उदयकर ६६=१

गौतम गोत्रे पण्डुआ सँ धीरेश्वर सुत द्युतिकर ६९-३

कुरिसमा सकराढ़ी सँ बीजी श्यामकंठ ७२=४

पनिहारी दरिहरा सँ आशाधर ७३-४

जलकौर गंगोली सँ बीजी सिद्धेश्वर ८६–५

चन्दई दिधोय सँ बीजी श्री हर्ष एसुता

सान्धि विग्रहिक शिवदत्त सर्वदत्त भाण्डागारीक भवदत्त ९५-१

खौआल मूल अन्तर्गत ओइनि ग्रामो पार्यक उयनाह देव ९५–६

निकाठी माण्डर सँ बीजी ओहरि १०६=२

दोर्दन्त अलय सँ बीजी दन्तीश्वर एसुत ११२-१ गंगादित्य

एते मेघापत्य अन्तर्गत बीजी पुरूषा ११५

ब्रह्ममपुरा दिधोय सँ बीजी देल्हन ए सुत आवस्थिक

राम १२८-१

जरहटिया सँ बीजी सेवकेर १२९-३

फूहनानि जालय सँ बीजी सेवकर १२९–६

फूहनानि जालयसँ बीजी सुरेश्वर १२९-६

डीह सिम्मुनाम वासी करमहा सँ बीजी रत्नपाणि १३०=२

गोविन्द वन पनिचोभ सँ बीजी दामोदर १३४=३

भरवाल परिसरा सँ बीजी शंखपाणि १३८-१

गढ़अलय सँ बीजी क्षुद्रहरि १४०-२

कोइयार सँ बीजी शिवशर्म्म १४०=२

वसुआल अलय सँ बीजी नरसिंह १४२=५

दहिभत सँ म०म० धर्माध्यक्षक भाष्कर   १४४-२

उघांत जालय सँ बीजी शंखधर   १५८-६

रतन पुर तिलयसँ बीजी ए सुत तारापति गंगोरसँ म.म. पा. हरिनाथ सुत रामनाथ मटिहानीसँ १५९-५

पाण्डवी सम्प्रदाय   १५९–१

नेहरा वासी जल्लकी सँ खड्गधर सोदर चक्रधर   १६१-६

सुइरी से पाठक हरि   १६२=३

कोथुआ सँ बीजी विशो   १६४-४

महुआ सँ बीजी अभिनन्द ए सुता सुरानन्द

देवानन्द वासुदेव १६४=१

दहिभत सँ रतिधर ए सुत किर्तिधर १६४-३

करनैठा सकराढ़ी सँ बासुदेव रज्जेश्वरा परनामा   १६५-४

कोथुआ सँ वीजी विशेश्वर १६५-७

नरौछ वासी गढ़ बेलउँच सँ वास्तु ए सुत लाखू   १६७-३

कलहिया वासी यमुगाम सँ बीजी मुक्तिधर सुतो

जीवधर कीर्तिधरो १६९=१

फेनसउ गंगोली सँ मिश्र धूर्ज्जटी   १७३=५

लाहन सिंहाश्रम सँ जयदेव ए सुत महादेव   १७४-२

सम्भुआल सकुरी सँ बीजी राम   १८७=१

खोरी सिंहाश्रम सँ बीजी पण्डित श्री निवास १८७=५

कलिगामसँ बीजी विभाकर ए सुता सावेचक्रेश्वर   १९८-६

ओझोलि वासी कुसमाल सँ बीजी कमलपाणि   २०५-४

नवहथ गंगोली सँ बीजी गुणपति   २०५=६

डीह सरिसब सँ बीजी सुत रामचन्द्र सुत मधुकर   २१०-२

दोलमान पुर वासी कोवारी पनिचोभ सँ बीजी चण्डेश्वर   २११-५

परसण्डा सँ बीजी शुचिकर   २१४-२

काश्यप गोत्रे बुधवाल सँ बीजी पीताम्बर सुत कान्ह   २१५=१

हड़हत पनिचोभ सँ अठहरवासी जीवेश्वर   २१५=३

दूबासकराढ़ी सँ मतिकर ए सुत नय देव   २१८-४

तिलय सँ रतनपुर वासी गंगाधरो बीजी   २१८-६

डीह सिम्भुनाम सँ मनोधर ए सुत जीवेश्वर २१०=१

भिगुआ सँ बीजी सोम ए सुत भीम २२३-६

माहब जल्लकी सँ विन्घ्येश्वर सुत कामेश्वर   २२४-५

सोना गोआड़ी दहिभत सँ देवपाणि २२४=६

भूतहरी कलिगाम सँ वीजी महेश्वर सुत आदिनाथ   २२७-३

सकराढ़ी सँ मतिदेव ए सुत नयदेव २३२-४

धनाठी वासी गोरा जजिवाल सँ याज्ञी कपिल २३५-२

निचिता कुढ़ वासी अलय सँ देवपति सुत सोमेश्वर २३६-६

कन्होली घुसौत सँ वीजी पृथ्वीधर सुत याज्ञिक फूहन २५३=४

मानेकुढ़ वासी सीधब गंगोली सँ बीजी प्रितिकर २५३=६

होइया सँ बीजी त्रिपाठी केशव २५४=३

मेरन्दी सँ बीजी कमलपाणि ए सुत मिश्र शिव २५४=५

बांगटी सुरगनसँ राउल थाने ए सुत सर्वज्ञ आदू

गुलदी खण्डबला सँ हलधर सुत गिरीश्वर ए सुत

वीरेश्वर गुणीश्वरौ

वीरेश्वरसुत नारायण २७५-३

बेला सँ वामनो बीजी तत्र सन्तति राज निकटवर्त्ती

ज्ञानकर २७५=६

माण्डव्य गोत्रे कोथुवासँ दिवाकर २७६-१

जगन्नाथ पुर वासी कोइयार सँ मधुकर जसधर प्रसिद्धः २८०=२

पंचप्रस्थ केउँटराम सँ देवानन्द २८०=५ १-२

जरैलवासी कोइयार सँ सिधु सुत गंगेश्वर २८० = ३

अवरझटी पाली सँ मधुमनए सुत होरे ए सुत योगीश्वर सुत

भोगीश्वर सुत कामेश्वर सुत ज्योतिष

विरेश्वर कविशेखर इति प्रसिद्ध   २८४-३

ग्राम द्वयो पार्यक एसुत ठō चण्डेश्वर

चहुय वासी कोदरिया दिघोय सँ वीजी नरसिंह   २८४-३

जजुआल वासी सुसैला अलई सँ मनोधरबीजी   २९०=२

खण्डबला ग्राम समाप्त

अथ सरिसब ग्राम

करड़ियावासी खोपा सँ बीजी जीवेश्वर   २९२=५

वारीसुरौर सँ बीजी श्रीधर सुत शंखपाणि   २९७=६

महिषी मालती वासी जल्लकी सँ दामोदर सुत बान्धव   २९९-४

भरवला सँ बीजी चण्डेश्वर मैलामवासी भण्डारिसम सँ देवदत्त सुत वंशधर ३११=२

सुहारी दिधोय सँ बीजी धीरेश्वर सुत देहरि ३१२-६

कोइयार सँ विनायक ए सुत गोविन्द   ३१४-१

भराठी सकराढ़ी सँ बीजी हरदत्त सुत दशरथ सुत राम   ३१५-४

कुरिसमा सकराढ़ी सँ बीजी मनोरथ सुत संकर्षण   ३१६-४

चणौर कुसमाल सँ बीजी दिवाक सुत विश्वरूप ३१६-५

गण्डबाल वासी वुसवन सँ बीजी महत्तम

हल्लेश्वर सुत त्रियम्बक ३१८-७

ननौर वासी जालय सँ पद्यनाम सुत देवनाम ३१८=२

गढ़ परिसरा सँ बीजी हलायुत सुत भद्रेश्वर ३२६-४

कोइयार सँ मिश्र माधव सुत गोविन्द सुत विशो ३३९-४

टिटिहा अलय सँ बीजी राम सुत शुभंकर ३४१-३

हावीवासी जल्लकी सँ बीजी खड्गधर सुत शशिनाथ ३४१-५

लहण्डा गंगोली सँ अष्ट ग्रामी पुरूषोत्तम सुत शुभंकर ३४४=६

कोइली वासी जालय सँ बीजी शिवदत्त सुत सूर्यकर ३४५-२

लहोला सँ देवदत्त ए सुत शिवदत्त ३४५=३

बाढ़ वासी चोठवाल सकराढ़ी सँ श्री हर्ष सुत बासुदेव३४६=४

वाखरि वासी तपोवन सँ बीजी नारायण ३४६=५

महतराम वासी सुरौर सँ वीजी शिव सुत हरिगंग ३५३=६

महुखण्ड वलियास सँ बीजी सर्वानन्द सुत ज्ञान ३५४=२

उत्तिम पुर दिघोय सँ नरसिंह सुत पुरूषोत्तम ३५५=५

देशुआल वासी त्रिलाठी घुसौत सँ शिवशर्म्मा ३५९=१

कोइयार सँ सान्हन सुत श्रीधर ३६३-५

जजुआल सँ हल्लेश्वर सुत विरेश्वर ३७४=७

डीह भण्डारिसम सँ श्रीकर सुत गणपति-गौरी पति ३७५-३

सहश्रामवासी पिण्डोखरि सुरगन सँ विरेश्वरसन्तति ३७५-५

खांगुड़ सरिसब ग्राम समाप्त

जौंकी ग्राम

तपनपुर दिघोय सँ बीजी योगीश्वर सुत ध्यानेश्वर ३७८-२

सकरहोन सँ बीजी हल्लेश्वर ए सुत कान्ह३७९-५

सुइरी सँ अमोघ सुत दिवाकर   ३७९=५

सिमरीवासी बुसवन सँ नन्दीश्वर सुत योगे ३८०-४

हराउत वासी भदुआल दरिहरासँ बीजी नोनदेव

ए सुत नर देव   ३८२=५

सकुरी ग्राम

नगरयौंक वासी सवास कुसमाल सँ बीजी रैधर

सुत रतिधर   ३९२=४

फेनसउ गंगोली सँ नारायण सुत शूलपाणि सुत देवधर   ३९४-१

खांगुड़ वासी परिसरा सँ बीजी हलायुध सुत उँमापति

सोहास वासी सहुली परिसरासँ बीजी

भद्रेश्वर सुत गोविन्द सुत दामोदर४१४-३

मासवासी अलाम्बुकाक्ष गोत्रे कटाई सँ बीजी यटाधर

सुत बलभद्रादय ४१७=३

कात्यायन गोत्रे जालय सँ शुभंकर ४१७=४

सोनदह वासी कलिगाम सँ बीजी गणेश्वर सुत

जोन मुर्तिधर ४१८=४

नरौंछ वासी गढ़ बेलउँच सँ रत्नेश्वर सुत वुद्धिकर ४१९=२

दहुला वासी त्रिलाढी घुसौंत सँ नरसिंह सन्तति ए सुत शोरे ४१९=५

सान्हा वासी जल्लकी सँ वीजीदामोदर सुत माघव ४२०-५

हसौली सोदर पुर ग्राम समाप्ताः

कुसौली सोदरपुर ग्रामारम्भः

कौण्डिल्यगोत्रे गदहा पण्डोलि सँ बीजी लक्ष्मी शर्मा

ए सुत मण्डनादित्य ४२४-६

ननौती सँ बीजी देल्हन सुतो कान्ह आवस्थिकराम ४३९-६

बगड़ा पनिचोभ सँ बीजी उँमापति सुत पीताम्बर ४४०-५

दशउथ वासी सुसैला अलय सँ बीजी ब्रहमेश्वर

ए सुत बलभद्र ४४४=६

पाली सुइरी सँ बीजी मयाधर ए सुत सर्वेश्वर पालीवासी ४४१-४

करहना वासी नरवाल सँ बीजी मधुकर सुत नन्दीश्वर ४४३=३

करनैठा सकरीढ़ी सँ नारायण बीजी सुत शंखपाणि ४४५=३

केउँटराम पण्डोली सँ ज्ञानकर सुत भादू ४६१-३

करहिया पनिचोम सँ गढ़ वासी शिवेश्वर खण्डबला हलायुध दौ ४७२-५

नाधावासी सुरगन सँ हल्लेश्वर ४७२=५

जगन्नाथ पुर वासी दिघोयसँ राम सुत सुरेश्वर ४८६-३

थरिया सँ श्री हर्ष सुत घृतिकर ४८६-६

गौतम गोत्रे ब्रहमपुरा सँ नदियाम वासी वापट सुत राम ४९१-१

डीह राउढ़ सँ राउत धान्धु सुतजयादित्य सुतभीम

पाणिदय: ५१८-५

वालि ग्राम

दिगउन्ध ग्राम ५२५-४

रैयाम ग्राम ५२९=५

मानी ग्राम ५३६-६

जगौर ग्राम ५३९-६

महिया ग्राम ५४०-१

खोरि ग्राम ५५३-३

एते सोदर पुर विभक्तानु कुल शाखा समाप्त : शाके १६४४ (सोलह सौ चौवालिस) ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशयां कुजे ककरौड़ ग्राम पण्डुआ सँ देवानन्द प्र० छोटी शर्म्मण करपल्लवैर रचिता-५४६-२

बढ़ियाम, पवौलि शाखा ५४९

डीह सरिसब सँ अनदहोम वासी यशच्चन्द्र सुत

मधुकर उ. टी. ५५२-१

कटिहार वासी सरौनी सँ बीजी महेश्वर ए सुत

हरादित्य उ.टी. ५५२-१

नवनगर घोसोत सँ बीजी जीवधर सुत गंगाधर ५५९-१

बरहैता वासी गौतम गोत्रे खण्डबला सँ होरेश्वर सुत हरदत्त ५६४=३

पबौली (पर्वपल्ली) वदियाम शाखा समाप्ता:

शाके १६४४(सोलह सए चौवालिस) श्रावण

प्रथम कृष्ण नवम्यां बुधे ककरौड़

ग्राम पण्डुआ सँ पञ्जी पंचानन्द देवानन्द

प्र० छोटी शर्म्मण: कर पल्लवैर रचिता- ५६९-३

अथ दरिहरासँ रतौली शाखा- ५७१=१

देवानन्द पञजी सँ उपाधि युक्त नाम

माण्डर सँ बीजी त्रिनयन भट्ट —२-२

माण्डर सँ सोढ़र जय सिंह तर्काचार्यास्त्र

महास्त्र विद्या पारग महामहोपाध्याय नरसिंह२-४

माण्डर सँ महामहो नारायण २=२

अलय सँ म०म० पाघ्याय रामेश्वर ३-२

करमहा सँ महामहो हरिब्रह्म महामहो. हरिकेश

महामहो धूर्त्तराज गोनू ३-५

खौआल सँ धर्माधिरणीक महामहो हरिशर्मा ३=४

नरउन सँ पनाइत भद्रेश्वर४-४

सकराढ़ी सँ महामहो कारू ४=१

टकबाल सँ म०म० वत्सेश्वर म०म० रामेश्वर ५-१

खौआल सँ धर्माघ्यक्ष होरिल — ५-३

अथ डोम टेकारी तत्रचतुर्वेदाध्यायी कामदेव

सुत याज्ञिक परशुराम त्रिपाठी कृष्ण दिक्षित सोम ५-४

महामहो राम महामहो शिवदाश ५-४

खण्डबला ग्रामो पार्यक साँइ प्र० संकर्षण भौर

खण्डबला सँ म०म० पा० चन्द्रपति ए सुता म०म०पा०

थेध म०म० मेध भ० म० पा० दामोदर मिथिला राज्योपार्यक६-३

पालीसँ आचार्य लक्ष्मीकर ६=३

लहुण्डा सँ गांगु ७-१

गंगोली सै म०म० सुपट ८-३

विस्फी सँ सांधिविग्रहिक देवादित्य राजवल्लभ भवादित्य ९-४

पार्णागारिक वीरेश्वर वार्तिक नैवन्धिक धीरेश्वर ९-४

सप्रक्रय महासामन्त५आधिपति महामत्तक गणेश्वर भाण्डागारिक यटेश्वर स्थानान्तरिक हरदत्त मुद्राहस्तक लक्ष्मीदत्त राजवल्लभ शुभदत्ताः

बहेराढ़ी सँ स्थानान्तरिक रति १०-१

गढ़निखूति सँ त्रिपाठी रूद्र सुत महत्तक सुरेश्वर १०-४

ए सुत सान्धिविग्रहिक हरिहर ए सुत महत्तक विद्याधर ए सुत महत्तक जगद्धर माण्डर सँ शन्तिकरणिक पाँखू १४=४

सुरगन सँ राउल हरिकेश १६-२

बुधवाल सँ सदुपाध्याय भानु १६=४

टकबाल सँ एकान्तरिक गोपाल १७-४

हरिअम्बसँ दिक्षित झाँउँ सुत याज्ञिक त्रिलोचन १८=२

जालय सँ म०म० रामेश्वर सुत महत्तक गणपति १९-६

महत्तक रतिधर सदुपाघ्याय महिधराः

एकहरा सँ खनतरी दिवाकर १९=३

खौआल सँ मō साधुकर सुत मōमō सुधाकर ए सुत

महामहो वुद्धिकर २१-५

सकराढ़ी सँ मōमō हरिहर सुता सदु. नादू

सदु. भादू सदु. सुपे सुदु.चाँड़ो २१=१

दरिहरा सँ मōमō हरिहर २२-४

वलियास सँ मōमō रामशर्म्म २२=३

सोदरपुर सँ मōमō हल्लेश्वर मōमō सुरेश्वर मōमō

जीवेश्वर २३-३

सरौनी सँ धर्माध्यक्षक लड़ाउँ २४-६

खौआलसँ धर्माध्यक्षक मōमō भवशर्म्म २४-६

कटाइ सँ कवि केशरी मōमō भीम २५-४

सकराढ़ी सँ धर्माध्यक्षक सर्वानन्द २५-५

माण्डर सँ कापनि माघव २५=२

निखूतिसँ फूलहर गौंढ़ि २५=५

जाजेवाल सँ आवस्थिक सिद्धेश्वर २६-१

विनती सँ पराक अच्युत २६-५

दूवा सँ शिवशर्म्म २६-६

माण्डर सँ म०म० वटेश   २६=१

सोदरपुर सँ म०म०पा० विश्वनाथ २६=५

अलयसँ महो ग्रहेश्वर सुतो धर्माधिकरणिक म०म०

गदाधर म०म० सुधाकरौ २७-१

सकुरी सँ म०म० देई   २७-३

खण्डबला सँ म०म० रामभद्र   २७-६

सकराढ़ी सँ म०म० मिश्र गयन   २७-२

निखुति सँ महामत्तक गणेश्वर ए सुतो महत्तक

रत्नेश्वर सन्धि विग्राहिक हिमू ए सुत मुद्रा हस्तक २७=३

जीवेश्वर ए सुत पुष्प भट्ट गोढ़ि   २७=

माण्डर सँ कविराज शुभंकर   २९=१

छादन सँ उपाय कारक म०म० वर्द्धमान सुता च खण्डबला सँ शिवनाथ पत्नी   ३०=५

वलियास सँ आवस्थिक मधुकर   ३१-४

बेलउँच सँ राजवल्लभ लक्ष्मी सुत खांड़ साठू   ३१=४

सुरगन सँ म०म० उँमापति सुत म०म० उग्रपति सुत म०म० प्राणपति सुत म०म० तारापति सुत म.म. विश्वपति सुत म.म. आभो एसुत

मुद्राहस्तक कुल छेत्रोपार्यक राउल ३३-४

खण्डबला सँ म०म० मधुसूदन सुत म०म० भवदेव ३४=१

खौआल सँ ज्योӧ डींगर ३४=५

छादन सँ तत्व चिन्तामणि कारक मӧमӧ गंगेश

सुताच बभनियाम सँ जयादित्य सुत साधुकरपत्नी ३९-२

भरेहा सँ धर्माध्यक्षक गढ़ाउँ   ४०-१

सोदरपुर सँ मӧमӧ रविनाथ मӧमӧ रधुनाथ म.म.लक्ष्मीनाथ ४०-४

महमहो रविनाथ सुता मӧमӧ जीवनाथ मӧमӧ

भवनाथ प्रӧ अयाची दूबे मӧमӧ देवनाथा: मӧमӧपाӧ शंकर मӧ महादेव मӧ भासे मӧ दाशे

मӧमӧ गोविन्द महो गदाधर माण्डर सँ महामहत्तक जोर   ४७=२

सुरगन सँ पुरोहित धनेश्वर पुरोहितगुणीश्वर   ४८=३

माण्डर सँ प्रसाद शुभंकर ५१=४

वलियास सँ पनिघोघ मटिघोघ   ५२-६

एकहरा सँ महामहो हरिनाथ सुत मӧमӧ भवेश्वर   ५३-१

ए सुतो धर्माधिकराणिक वाढ़ू राज पण्डित गढ़कू   ५४

घुसौत सँ महो बुद्धिकर सुतौ महो हलधर   ५६-४

महो केशवो सुत मӧमӧपाӧ गोविन्द सुता महो लक्ष्मीनाथ म.म. विद्यापति म.म. दामोदर म. रामनाथ आगमाचार्यक देवनाथ महो गोपीनाथ कन्टकोद्धार्कारिक मӧमӧ मधुसूदन महो जनार्दन

वलियास सँ मӧमӧ माधू ५९-४

अलय सँ म०म० सुधाकर सुतो म०म०गोढ़ि म० माणि ५९=२

खण्डबला सँ म०म० रामचन्द्र म०म० गोपाल म०म०

अच्युत म०म० पा० राजर्षि परमानन्द ५९=४

बहेराढ़ी सँ म०म० विशो सुत महो वागीश्वर ६०=३

बुधवाल सँ महो हरि सुत सदु० कुलपति ६१-६

माण्डर सँ म०म० यज्ञपति सुत म०म० नरहरि ६२-६

खण्डबला सँ अग्निहोत्रिक म०म० विश्वम्भर ६३-२

सकराढ़ी सँ पुरोहित गोपाल ६४-१

विढुआल सँ म०म० यटाधर ६५=३

जगति सँ म०म० होरिल ६७=५

नरउन सँ ज्योतिविर्वद रामनाथ ७०-४

पालीसँ म०म० परमगुरू वाचस्पति ७१-३

घुसौत सँ म०म० कृष्णानन्द जगतगुरू सदानन्द ७५=५

माण्डर सँ म० शिव सुत म०म० अनिरूद्ध ७८=१

वलियास सँ कविशेखर पदांकित चन्द्रनाथ ७९-१

सोदरपुर सँ ढाका कवि महामहो गणपति ८१-४

सरिसब सँ सदु० होरील सुत पाँ भवदेव ८२-४

नरउन सँ म० हरि सुत अविलम्ब सरस्वती

पदांकित बटेश ए सुत म०म० सरस्वती राम ८३=३

सोदरपुर सँ म०म० रामेश्वर ८४=

नरउन सँ राय नाथू प्रचण्ड पाँथू सदु. गोपी ८६=४

वलियास सँ श्रोत्र पल्लव धीरू ८७-२

वलियास सँ पण्डित राज पदांकित राय रधुनन्दन सुतअभिनव राज पण्डित म०म० शंकर ८७=

वलियास सँ चतुर्भज (म०म०) सुतो महो शुभंकर ८७=

करमहा सँ केशव सुत म०म०रामभद्र ९१=४

सकराढ़ी सँ रामशर्म्म सुत म०म० लान्हि ९४-५

भूतहरी सँ महत्तक आनन्द कर ९४

दिघोयसँ सन्धि बिग्रहिक शिवदत्त

भाण्डागारिक भवदत्त ९५-१

भवदत्त पौत्र म०म० भट्ट जीवे ए सुत पार्णा गारिक स्थितिदत्त धर्माधिकरणिक जानुदत्त जानुदत्त सुत देवागारिक बटेश्वर ओइनि सँ राज पण्डित कामेश्वर ९५=

पाली सँ परमगुरू म०म० वाचस्पति सुता महामहो

रधुनाथ म०म० नरहरि ९६=२

पबौली सँ धर्माधिकरणिक रूद सुत खांडेगोपाल ९६=

दोस्ती सँ शानकरणिक जीवेश्वर ९६

पालीसँ म०म० नरहरि सुता म०म० माधव म०म०

केशव म० नारायण म० विष्णु महो श्री राम९६

अलय सँ महो लक्ष्मीधर सुतो म०म० हलधर ९७-३

महामहो रूद्रधर

पालीसँ म०म० केशव सुत म० म० अर्जुन ९७-६

खण्डबला सँ म० लक्ष्मण सदु. भरत ९९-५

बुधवाल सँ अग्निहोत्रिक म.म. रधुनाथ १००-५

ढ़रिया सँ नयनाथ१०२-२

खौआल सँ सविशेष भानुकर १०३-२

करमहा सँ धूर्तराज गोनू पौत्र कान्ह सुत भिखू १११=२

कुजौली सँ म.म. शुचिकर ११७-४

सरिसब सँ म.म. वामदेव १२१-५

खण्डबला सँ म.म. परशुराम १२१=३

माण्डर सँ म.म. महादेव म.म. रामचन्द्र १२२-४

कुजौली सँ महो कृष्ण दाशसुत कवि गंगादाश १२३-१

महोगोविन्ददाश महोहरिदाश म० रामदाशाः

करमहा सँ कविन्द्र पदांकित रति देव १२४=३

खण्डबला सँ सन्यासी शुचिकर सुत\\][\

सन्यासी मनोरथ १२५-३ पालीसँ वैष्णव जगन्नाथ पल्लवकर (मō भवनाथ) १२२=१

सँ सदु. बुढ़व सुत महामहो गौरीपति १२६=४

सुरगन सँ धर्मधिकरणिक जगद्धर १२६=७

दिघोय सँ आवस्थिक राम १२८-१

सोदरपुर सँ म.म. परशुराम म. कृष्णानन्द १३१-५

दरिहरा सँ कविराज विसव १३१=३

माण्डर सँ वैदिक विश्वम्भर १३२=४

करमहा सँ कविन्द्र पदांकित रतिदेव १३५=३

सकौना सँ राज पण्डित शशिधर १३६=५

सोदरपुर सँ म.म. बासुदेव म.म.देहरि म. अर्जून १३७-३

टकवाल सँ कविराज लक्ष्मीपाणि १३७=४

बहेराढ़ी सँ सुपकार होरेश्वर १३९-३

सम्भुआल सँ धर्माध्यक्षक सोम १४०-४

सोदरपुर सँ महामहो माधव १४१=३

वलहा सँ राजपण्डित शूलपाणि १४२=६

गार्ग गोत्रे निखूतिसँ महत्तक होराई १४३=१

पबौली सँ शान्ति बालक लखाई १४३=१

दहिभत सँ महामहो धर्माध्यक्षक भास्कर

ए सन्तति सदुपाध्याय विजवतिया केशव १४४-६

पाली सँ कविशेखर पदांकित यदुनाथ १४६-४

टकबाल सँ एकान्तरिक गोपाल १४६=३

नदाम सँ ग्रन्थकारक धनञ्जय १४५-४

भन्दवाल सँ सर्वज्ञान रातू सुत जोइस गोविन्द १४७=१

अलय सँ वेदज्ञ चिन्तामणि १४९=४

सोदरपुर सँ स्वयंपाकी यदुनाथ १५२-६

खौआल सँ राजवल्लभ कोने १५३-२

सँ धनश्याम सुत अपस्मारी नीलकंठ १५४=३

दिघोसँ गुणे सुता वनमान अधिकारी त्रिपुरारी

कार्य्यी मुरारी उपाध्याय दामोदर ओझा विद्याधर १५८=५

खण्डबाला सँ सन्यासी यशु १५९-७

सकराढ़ी सँ पञ्जी विधुमूलकारक सदु. रामधर १६०-६

तीसूरी सँ राजपण्डित लाखे १६१=१

विस्फी सँ कवि भूपति पदांकित सोमेश्वर १६१=५

बेलउँच सँ खञ्ज मुकुन्द १६२=१

सन्यासी शिरू १६२=६

अपस्मारी चतुर्भूज १६३=२

माण्डर सँ कविशेखर पदांकित महो यशोधर १६४=५

पनि0.खनतरि विठू भ्रातृ पनहरि गुदी १६५-६

करमहा सँ सन्योसी इबन प्र0 रतिदत्त १६६=६

जालय सँ एकान्तरिक वीर१६७-७

सोदरपुर सँ माधव महामहो १६७=४

जगति सँ महामहोकवि रत्न पदां. होरे १७२-२

गंगोली सँ धर्माधिकरणिक जान्हव १७३=५

माण्डर सँ वेदज्ञ लक्ष्मीनाथ १७८=४

हरिअम सँ महामहो श्याम १८३-१

बुधवाल सँ खञ्जज वावू १८३=४

महाराज श्री राघव सिंह १८४=६

पाली सँ घौघे सुत कविराज कृष्णपति १८५-२

गंगोर सँ भगवतिया सुत सदु. राजू १८८=४

कलिगाम सँ चक्रेश्वर सुत सान्धि विग्रहिक मतीश्वर १९८-६

बेलउँच सँ सदु. मुकुन्द २००-१

पाली सँ ज्यो0 श्रीनाथ सुता ज्यो. उँमानाथ २०२-६

ज्यो. रूपनाथ ज्यो0 श्री कृष्ण ज्यो0 नील २०३-६

कंठ ज्यो0 भवेश २०४-१

बेलउँच सँ मुद्राहस्तक गुणीश्वर २०४=१

अलय सँ शान्तिकरणीक रूद २०४=५

गंगोली सँ सन्दगहि परमेश्वर २०५-

होइयार सँ शामन्त घाम २१२-३

सुइनिहार सँ ठ. सुन्दर २१४-३

ऐसानिय हाउँ २१५-३

मल्लिक माघव खान बनमाली २१६=४

ब्रह्मपुरा सँ गोष्ठार जागू २२०=३

तपनपुर पाली सँ सुण्डियावर राम २२१=५

अलइ सँ कार्य्यि आनन्द कर सुत पुष्पभट्ट रविकर २२४=१

दिघो सँ देवागारिक बाटे २२७=३

पुनन्दह सँ भानसी सुधाकर २३४-३

शोराढ़ सँ नायक प्राणधर २३४-५

गांगो बेहट सँ सान्दगहि साहेब २३४=

बसहा सँ राजपण्डित शूलपाणि २३४=

सिंहाश्रम सँ उत्तर वाहिनी गंगा २३६=१

गोवाठिनी सँ रातू २३९-१

पाली सँ महो लाखू सुत धर्माधिकरणिक महामहो नरहरि २३९=४

लहौला सँ देवदत्त२४४-३

पाली सँ उपेन्द्रा श्रम सन्यासी गौरीपति २४५-२

भरथूआ सँ गौरीश्वर सुत गंगेश्वर २४५=५

वलियास सँ कविशेखर पदांकित चन्द्रनाथ २४६-२

अलय सँ महामहो रूद्रधर २४८=५

दिघो सँ पुरोहित मंगनी २५०=३

विस्फी सँ राजवल्लभ महादेव २५०=६

वलियास सँ कवि मणि पदांकित पशुपति २५१=१

दिघो सँ पुरोहित हिंगनी २५२-२

कन्होली घुसौत सँ याज्ञिक फूहन २५३=४

गंगोली सँ कविराज गयन २५३=६

होइयार सँ त्रिपाठी केशव सामन्त अर्जून २५४=३

सिंहाश्रम सँ महानिधि-दिशि जयपाल २५५-४

नरउन सँ सन्यासी दिनकर २५६=४

गंगोली सँ ललजोही गोपाल २५७=२

सुइरी सँ धर्माध्यक्षक देवे २६३=४

सँ धर्माधिकरणीक महामहो बावू २६५-४

ए सुतो महामहो विद्यापति गंगोली सँ मानकुढ़ वासी कविराज गणेश्वर २६८-३

सरिसब सँ भट्टाचार्य महो वागीश्वर २७०-१

वेला सँ राज निकटवर्ती ज्ञानकर सुता माण्डव्य गोत्रे२७६-१ कठुण्डा सँ दिवाकर दौ

सँ उन्मादी महो जगन्नाथ २७६-१

करमहा सँ पौराणिकमहो बहोरण २७६=३

सँ सिकदार भिखारी २८०=३

दिघो सँ सान्धिविग्रहिक रघुदत्त २८६=३

फनन्दह सँ सन्यासी श्रीपति २८७-२

खौआल सँ ब्रह्मचारी लक्ष्मन २९१-१

सोदरपुरसँ कविराज महो भानुदत्त २९१-५

पाली सँ महामहत्तक महो प्राणधर २९९=१

बनौर सँ हरिवंश ३०१=३

भरबला सँ इशर सरबय ३०३-५

सोदरपुर सँ कवि जयराम ३१५-१

लोरिकपुर सँ नारायण ३१५=१

कात्यायन गोत्रे जालय ३१५=४

बेलसाम बूधवाल सँ माधव सुत अध्यापक शिवाई ३१६-१

वत्स गोत्रे द्रोण वंश माण्डर सँ सान्हरि सँ सागर

सरिसबसँ नोनी सुतो ३१६=२

मधुकर बासुदेवो-मधुकर मृते श्री मती नाम्नी पत्नी द्वादशानान्तरं प्रतिगत: गृहे

वहिष्कृतां तत: श्री मत्यां बासुदेवा सुतो जाता बुधवाल सँ माधव पत्नी ए सुत अध्यापक शिवाई इतिप्राप्तं कुत्रापि माण्डर सँ

महामहत्तक महार्णव ३१६=२

गंगोर सँ चन्द्रकर सुत सन्यासी विदू ३२३-२

सिन्दुरिया सँ चाको ३२५-३

सँ विश्वास धर्मकर प्रभृति पुरूषोत्तम ३२५=२

शाखायाँ

बाढ़अलय सँ धर्माधिकरणिक गदाधर ३२६-२

भूतहरी सँ सान्धि विग्रहिक महामहत्तक आनन्द कर

सुत गणेश्वर ३२६-

परिसरासँ महामहत्तक महाई सुत पार्णागारिक विरेश्वर ३२६=१

फनन्दह सँ म०म० गोंदि सुत वामनेन्द्राश्रम सन्यासी

रूचि गोपी ३२७

मराढ़ सँ भट्ट ग्रहेश्वर ३२८=४

बलहा सँ श्रीकर सुत हरिकर ३२५=१

गढ़ विस्फी सँ राजपण्डित भोगीश्वर ३३८-२

दिघो सँ भाण्डागारिक जयदत्त	३३८

दरिहरा सँ बधिर घनश्याम	३३८-४

भरथुआ सँ विभाकर	३३८=४

दरिहरा सँ गोशाँइ लखाई	३३८

जजिवाल सँ सन्दगहि भवेश्वर छादन सँ तत्त्व चिन्तामणि कारक गंगेश सुत सुपन दौ जल्लकी सँ सादा महिधर	३४१-

वत्स गोत्रे द्रोण सँ खञ्ज ओराज सुत समुद्रकर	३४३-२

गौतम गोत्रे पण्डुआ सँ जूड़ी पौत्र लाखू सुत हरिहर ३४३=४

विसौनी सकराढ़ी सँ खान केदार दिशि पशुपति	३४३=४

सुत नयपति प्र० मेधू केरवाल सँ शिवादित्य भरवला

सँ रौतपरात विर सिंह खौ किरताई भानसी उदय	३४५-३

करमौली गंगोली सँ विश्वास कान्ह विश्वास धाम	३४५

लहौला सँ महेश्वर	३४५=३

दिघो सँ देवागारिक बटेश्वर	३४५=५

कपिलेश्वर (कुजौली)	३४५=६

तपोवन सँ कवि धनेश्वर	३४९-६

माण्डर सँ रूचिपति सुत दशावधान पदांकित नरपति	३५०=३

गढ़ माण्डर सँ कविराज शुभंकर	३५१-५

विसौनी सकराढ़ी सँ सन्धि विग्रहिक विभाकर ३५२-२

धनौज सँ शान्तिकरणिक विशो ३५२-६

परड़ी सँ आदित्य ३५४-१

अलय सँ वेदज्ञ चिन्तामणि ३५८-४

भन्दवाल सँ सर्वज्ञान रातू ३५८=४

भदुआल दरिहरा सँ लैगमिक भानु ३६१-५

सरिसब सँ विराई सुत सन्यासी पाँखू ३६२=४

सँ मल्लिक सूज प्रतिहस्तक प्रज्ञाकर ३६२

सुरगन सँ धर्माधिकरणिक भास्कर ३६४-३

गौतम गोत्रे गंगोली ३६४

माड़रि बलियास सँ श्रोत्र पल्लव पदांकित धीरू ३६५-६

जजिवाल सँ आवस्थिक वीर ३६८-४

लखनौर सकराढ़ी सँ सन्यासी सुरसर ३६८=५

नरवाल सँ शान्तिकरणीक मधुकर ३७५=४

सोदरपुर सँ म०म० पक्षधर ३७६-४

सकराढ़ी सँ पुरूषोत्तम शाखा पञ्जी उल्लेखनीय ३७९-५

सकरहोन सँ धर्माध्यक्षक नरसिंह ३७९

सविशेष सुज ३७९=१

कन्धई सँ सविशेष त्रिपाठी जीवेश्वर ३७९=२

पुरूषोत्तम शाखा पञ्जी ३७९=३

दानाधिकारी मोदी हल्लेश्वर ३७९=६

श्री कृष्ण शाखायाँ विपरीत पुरूषोत्तम शाखायाँ ३७९=

तद भिन्न लेखक पितृवरनां पुस्तकैर ३८०-

पुरूषोत्तम शाखा एवं लेखक पितामह रधुदेव शाखा तल्लनपुर सँ खञ्ज गोनू ३८१-५

वलियास सँ आवस्थिक मधुकर ३८१=१

तेलिगामा सँ नारायण ३८१=३

सोदरपुर सँ कन्या माधव ३८४=२

फनन्दह सँ त्रिदण्डी सन्यासीकारक म०म० रतीश ३८४

कौशिक गोत्रे पण्डोली ३८५=६

एकहरा सँ आगमाचार्यक महो मुकुन्द ३९३-४

सकराढी सँ पञ्जी पँचनान्द सदुपा० कुलपति ३९६-५

कुरिसमा सकराढ़ी सँ मोकदक रातू३९८

सनहा वासी श्यामजान दिशि भास्कर ४०१=१

करउना सँ लाखे ४०१=३

पीलखी सँ जान ४०१=

लम्वीदाढ़ी मित्रकर ४०५-३

देयाम सँ वैयाकरण मधुकर ४०८=२

अलटौरा सँ धीर सुत माने ४०९=५

यवनीया राता ४१०-४

दौनी सँ राम ४१२=४

कोदरिया सँ इश्वर मुरारि ४१३-२

कोथूआ सँ कार्य्यि गयन ४१३

नरवाल सँ कार्य्यि थामू ४१४-६

माण्डर सँ चक्रेश्वर सुत अग्निहोत्रिक शिवपाणि ४१९-२

हरिअम सँ कार्य्यि नरसिंह ४१९

चन्दौत पाली सँ मधुर कवि पंदाकितमाधव ४२४=२

वशिष्ठ गोत्रे पण्डोली सँ महेश्वर ४२८=५

त्रिपुरौली नरउन सँ सरस्वती लक्षमन सुत महो दण्डी

कृष्णदाश ४२९-४

उल्लूदिग्वर्त्ति परण्डा सँ नरसिंह ४२९

बेहट करमहा सँ ज्यो. नीलकंठ सुत ज्यो. रूचिपति ४३०-

कुसुमाकरस्य दत्तकः पुत्रः सुर्यकरः मधुकरस्योरस पुत्र ४३१

टकबाल सँ खञ्ज भवदेव ४३१=५

खौआल सँ वेद गर्भ नोने ४३८=४

चन्दौत पाली सँ शिवादित्य सुत कवि पुरादित्य ४४२=४

हरिअम सँ गौग रघुपति ४४६-४

पाली सँ रधुनाथ सुत जगन्नाथ उपहत ४४७-१

गाउल करमहा सँ सविशेष माधव ४४७

घुसौत सँ भवाई सुतमनिसार कर्त्ता महो गोपीनाथ ४४८=६

घुसौत सँ मōमō विश्वम्भर सुत खञ्जहाड़ी ४४९-३

सकौना सँ राज पण्डित शशिधर ४४९

बलियास सँ परमानन्द सुत कवि भूषण ४५०-२

सुरगन सँ लस्कर गोढ़ाई ४५३-४

होइयार सँ इश्वर भानु ४५६-५

पिपरौन सँ हरिकर ४६१-४

पतओना खौआल सँ मांगु कुष्ठ रोगातुर जाता ४६५-१

बगड़ा सँ चाण ४६७=२

विजनपुर दरिहरा सँ कवि भूपति ४६७=४

खोपा सँ कार्य्यि गुणाई ४६८-४

दिघौ सँ पाण्डे पाँखू ४७०-५

बड़कौर सँ देवपति ४७२-३

कलिगाम सँ शान्तिकरणीक भोगीश्वर ४७२=४

कुई सँ चन्द्रकर ४७३=१

हरिअम सँ सुकवि गोपीनाथ ४८१-३

वलियास सँ गोदाह बासुदेव ४८३

अलय सँ निवोष्ण महो श्रीराम ४८४-३

जालय सँ सममदार रातू ४८६-५

बेला सँ पाण्डे लोचन ४८६

खनुग्राम सँ प्राणधर ४८६

खण्डबला सँ सोम याज्ञिक महो दशरथ ४८६=४

भनवाल सँ जोइस रातू ५००=१

नरउन सँ फलाहारी रधुनाथ ४८८=३

करमहा सँ भाषा कवि भवेश ४९४=

सोदरपुर सँ विद्यानन्द सुत महो लक्ष्मीनाथ ५०२-३

सोदरपुर सँ विष्णुपति सुत महो भोरानाथ ५०२-५

माण्डर सँ महो रविनाथ सुत महो रूचि ५०२=१

गढ़ माण्डर सँ दशावधान नरपति ५०२=३

सकराढ़ी सँ पाँ गोनू ५०३-४

गढ़ बेलउँच सँ मुद्राहस्तक गुणीश्वर ५०३-५

सँ महोमिश्र रतिधर सुत महोगणपति ५०४-२

ततैल पण्डुआ सँ सदुō छीतू सुत पाँ हरिकेश ५०४=१

हरिअम सँ पशुपति सुत महो भवानी नाथ ५०४=५

सँ संगीतीवीर ५१४=६

माण्डर सँ महो जनार्दन ५१७=३

सँ मōमō वसन्त सुत योगी ५१९-३

सँ मōमō माधव ५२२-३

पाली सँ राजमतीश्वर सुत कुमर रतन सिंह सुत

कुमर उदय ५२२-४

अनलपुर करमहा सँ महो रमानन्द सुत सर्वज्ञान

बालकृष्ण ५४०=३ सर्वज्ञ सरस्वती पदांकित रूचिपति पण्डितराज

पदां रतियति महामहोपाध्याय:

सुरगन सँ महाराजाधिराज रामचन्द्र नारायण ५४७-

पबौली सँ सर्वज्ञान गरीब ५५८-४

पनिचोभ सँ कविशेखर पदां. शतञ्जीव ५६०=५

बरहैता वाठी गौतम गोत्रे खण्डबला ५६४=३

पण्डुआ सँ देवानदस्य ककरौड़ ग्रामे लिखिता

१६४४ शाके ५६९-३

कविन्द्र पदांकित रधुनाथ गड़ूरध्वज गोपीनाथ ५७५=४

मातृ सपिण्डा

(महाभारत षष्ठ खण्ड) ४४ म अध्यायक अठारहम शलोक

असपिण्डाच या मातुरस गोत्रा च या पितु:॥

इत्येता मनु गच्छेत तं धर्मम् मनुरब्रवीत्॥ वध्वा वरस्य वा तात: कुटस्थाद यदि सप्तमः। पंचमी चेत्तयोर्माता तत् सापिण्डयं निवर्तते॥

अर्थात वर ओ कन्याक पिता बीजी पुरूष सँ सातम पुस्त मे उत्पन्न भेल हो ओ माता पाँचम पुरूष मे हो तँ एहि मे कन्या-वरक हेतु सापिण्ड्य निवृति भए जाय। पिताक पक्ष मे सात पुस्त तक मानल गेल । सात पुस्त मे एक पिण्ड देनिहार ३ पिण्ड भागी, तीन लेप भागी होइत छैक। महाभारत षष्ठ खण्ड अ. १०४ श्लोक-१३० वर्जयेद व्यक्तिनीँ नारीं तथा कन्या नरोत्तम सभार्यां व्यक्तितां चैव मातु: सुकुलजां तथा

काष्ठ मातुल निर्णय: सर्वा: पितृ पत्न्यौ मातर भ्रातरौ मातुलस्त दुहितरौ भगिन्यः तद्पत्यानि भागिने यानि। ताः परिणीताभ शंकर कारिन्यो भवन्ति

वैयाकरण मन मोहनस्य उक्ति गौतम: असमानप्रवरैर्विवाह उर्ध्वं सप्रभात्

पितृ बन्धुभ्यो विजीनश्च मातृबन्धुभ्य : पंचमात् पितृ बान्धवा : पितामह सुसु: पुत्रा पितु: मार्तुः शुशुः सुता । पितु मातुल पुत्राश्च विज्ञेया मातृ बान्धवाः

मातृ बान्धवा: मातुर्मातु: सुर्सुपुत्राः मातुः पितु सुसु: सुता:।। मातुर्मातुल पुत्राश्च विज्ञेया मातृ बान्धवा:।।

काष्ठ मातुल: सर्वा: पितृ पत्न्यो मातरस्तुभ्रातरौ मातुल स्तद्भहितरौ

भगिनस्तद पत्यानि भागि नेयो निता: परिणीता: शंकरात्मे धर्म्म कारित्यो भवन्ति।। तथाध्याय दितुरेत देव उत्कंच मत्स्ये सुक्ते समान प्रवरारापि शिष्य संतति रेवा ब्रहमदातुर्गुरोश्चैव संतति: प्रति सिद्द्यते ।। मनु शातातपो

असपिण्डाच यामातु, रस पिण्डाच या पितु: सा प्रशस्ता द्विजातीना दार कर्मणि मैथुने

स्मृति शारादौ पंचमात् सप्रभात् उर्घ्वं मातृतः पितृतस्तथा सपिण्डता निवर्तनं सर्ववर्ते क्षयं विधि:

पञ्जीकार रघुदेवाकृत

ब्राह्मणानां समुत्पर्ति सदबीजी कथनमतथा। करोमि रघुदेवाख्य: पाण्डु : पञ्जी विनिश्चयम् ।। घुसौतौ गंगोली हरिअम्ब खौआलौ दरिहरा

तिसौंतौ वै पाली सरिसब सिंहासौ करमहा बभनियाम शर्म्मा द्विजवर पटुर्म्माण्डर पुरे बलेवाड़ौ नूनं कुलपति मते विजी पुरूषा बभन्यामं बिना केचित् संकराढ़ी पुरै सह: त्रयोदशे तैविख्याता पञ्जयां वै विजी पुरूषा सिंहाश्रमं विना केचित् कुजौली सहितं पुरा त्रयोदशै ते विख्याता विश्वचक्रे व्यवस्थिता जजिवालस्टँकबाल पनिचोभ श्चविलोंचक: पाण्डुर: सुरगनश्चैव सतलखा ग्राम एव च

बलियासौ विसपी चैव जलैवारस्तथैव च

माण्डरश्च तथा विश्वचक्रे वै बीजी पुरूषा

खड़ौरश्च खौवालश्च बुधवालस्तथैवच

माण्डरादरिहरश्चैव सोदरादिपुर पुरः स्तथा अयन्ता श्रोत्रि संयुक्ता ब्राह्मणा वेद पारगा: त्रयोदशैते विख्याता वारान्तश्चापि कथ्यऽते गंगोली च कुजौली च पबौली त्रलयी तथा

बहेराढ़ी संकराढ़ी पाली प्रज्यान्त श्रोत्रिया

दीर्ध घोषो बेलउँच: पनिचोभे एकहरौ तथा वलियासौ जजिवालश्च टंकबालश्च पांण्डवा: अष्टावैते समाख्याता मघ्यमा पञ्जीकोद्भवा एतेषां वंश वीजी वै पञ्ज्यां सर्वे निवेशिता

तथाचोक्तं मंगलधर पञ्ज्यां

अयन्तास्त्रयोदश: श्रेष्ठा वारान्ता सप्त तत्रत: दीर्घधोघोडदय: श्चाष्टो मघ्यमा षरिकिर्तिताः सकुना सुरगनश्च सतलखा ग्राम एवच उचति विसफी चैव जल्लकी चैव मध्यम: क्षुद्रश्चाल्लारिकौ कोन वुसवन श्चाय कथ्यते भ्रष्टा: लदभदा श्चान्य भ्रष्टातिभ्रष्ट मैथिलाः (लगुरदह – दहिभत)

रधुदेव कृत

अयन्त वारान्त मध्यमा

खड़ौरय गंगोलिवार दिधवय खौवालय पवौलिवार
बेलउँचय बुधवालय कुजौलीवार एकहरय मड़रय
अलयीवार पनिचोभ दरिहरय बहेड़वार
वलियासय धुसौतय सकड़िवार जजिवालय
तिसँउँतय पलिवाड़टंकवालय नरउनय - पण्डुअय
करम्महय सकुनय

बभनियामय अधमाऽधमा सुरगनय हरिअम्बइ नगुड़दय सतलखय सरिसवेई दहिभतवार उचितवार सोदरपुरये फन्दहवार विसैवार

अधमा दसौतिवार जलयवार अलरिये

कोदरिये

कोथुये

महुए

वुसवनय

शास्त्र कथने कारणमाह गंगौरौ नयनाथकरय दुहिता तस्यास्तु तारापते।। श्चोद्वाहो महिहानी संज्ञक द्विजस्तकन्यका वैपुन:।। गंगोरो हरिनाथकस्य गृहिणी कन्या तु सा पंचमी ।। विदुतो गउना वसाउ स्वजना सम्बध चाण्डलिनी।। रघुदेव कृत वरवा पुरवा तौ द्वौ गिद्धौर गढ़ रक्षकौ बस्बा सन्तति स्तिनु पूरथू जय सिंहक: १. कायस्थ कुल सम्भूतो मनसी शीत संज्ञक: निधू दिवाकरश्चैव मानि छौन हरिश्च वै

कुलनौ झुलन श्चैव तौ द्वौ २. मेरू मद्धू मथनो तौ द्वौ कलन्दर कुलद् भवो मौनी शंकर दाशश्च गंगादाशस्तथैव च

३. सोदरः स्वर्णकारश्च सुन्दर स्तत्र कथ्यते तपोबनेउ तापसी वने गोविन्द कन्तजा रेकौर कुग्राम वासी येतेऽपि मद्यपाजना वाटू कार्टिय धनौजिके च त्रिपुरौ गोविन्दकस्ताञ्जती लाङ्गुलोपिच वीरावश्च तपसी चण्डाले चन्द्रस्तथा सन्यासी गिरी चेतनश्च वगड़ा कारूस्तथा केउँटी राउदश्च विलोक्य वर्ण विविधान पञ्जी प्रबन्धकृत: इति पञ्जी शास्त्र कथने कारण मुक्तम

रघुदेवाकृत

पञ्जी प्रबन्ध

ओइनिवार जगतपुर मूल घोड़ाघाट ग्राम 965

माण्डर सिहौली मूल घरूवारी ग्राम 977

बुधवाल डुमरा मूल सुलतानपुर जमूआ टेक ग्राम 985

निखुतिवार निखूति मूल बेलवाड़ी 991

माण्डर रजौरा मूल बेलवाड़ी ग्राम 997

माण्डर (मड़रै) कटौना मूल पोठिया ग्राम 1002

सोदरपुर कटका मूल पोठिया ग्राम 1005

गंगोली (गंगुलवार) सकुरी मूल सुलतानपुर ढ़ंगरी ग्राम 1007

टकवाल नीमा मूल सुलतानपुर पटेगना ग्राम 1013

दरिहरा रतौली रामपुर सुलतानपुर 1027

माण्डर डीह मूल सुलतानपुर कुरसाकाँटा ग्राम 1044

करमहा तरौनी मूल तीरा ग्राम 1046

बेलउँच सकुरी मूल खारिदह ग्राम 1051

बेलउँच गढ़ मूल सतवेढ़ ग्राम 1059

ओइनिवार जगतपुर मूल 1062

बुधवाल (वुधवाड़ें) गंगोरा मूल 1063

खण्डवला (खड़ौरे) एकमा लसकरी 1065

करमहा नरूआड़ मूल भटोत्तर शेषांश 1068

कुजौली मलंगिया रूपसपुर 1071

अलयवार अलय मूल पूर्व तिरहुत अपर रामपुर नशिरा वासी 1073

माण्डर कनसम मूल सुखसेना ग्राम 1077

टकवाल श्रीखण्ड श्रीपुर देशे अन्धासूर अपर नशिरा देशे गुणमती 1080

सोदरपुर मानी मूल धर्मपुर देशे कुकरौन 1081

सोदरपुर गौर मूल1082

बलियास नरसाम मूल तिरहुत प्रान्त 1088

जजिवाल भड़गाम मूल तिरहुत देशे शिवनगर 1091

सोदरपुर सरिसव डोड़रा लछमिनियां 1092

सोदरपुर सरिसव डोड़रा लछमिनियां 1092

गंगोली सुपटानी 1094

सम्भुआल मूल पूर्व मरंगी अपर पोठिया 1104

"जीनोम मैपिंग: मिथिलाक पंजी प्रबन्ध- ४५० ए.डी.सँ २००९ ए.डी.), २००९ (गजेन्द्र ठाकुर, नागेन्द्र कुमार झा पंजीकार विद्यानन्द झा)"पंजी-पोथी-http://videha.co.in/pothi.htm

आ पंजीक पात सब http://videha.co.in/pothi.htmपर।

अथ सदबीजी कथनम्

गंगोलीर्द्विज वीर कोऽपि त्वलयी गंगाधरः पण्डित: शाँई खण्डबला तिसउँत नगरे विश्वम्भरो अभूत पूरा खौवालोपि प्रजापति करम्महा शास्त्रज्ञ वंशीधरो दान्ती सिद्धिजन कुजौली नगरे बाभन्ति शर्म्मा शिव: नरसिंह माण्डरो महा महोस्त्र शास्त्र सँ विदो घोसोत बासुदेवकौ महि धरौ नरउन के

हरिअम्ब झाँउँ दिक्षीतो महामहो विशारद: सिंहाश्रमो हलायुधो महामहो त्रयोदश:

दौहराछौ तदनुच भण्डुरा पाठकौ वै गोविन्द: श्री पल्ली ----- दये प्रविदित हरि कपिलानन्दयोगीचवै टंकग्राम हरिवर विदित हरिपाणिस्तथान्ते विशु पंचकरा समो सुविदित येषानु धरनीधर: सतलखा चक्रपाणिश्च दण्ड पाणिर्ज्जजीपुरे कमलपाणि दरिहरा पनिचोभश्च महेश्वर: ग्रामाद् ग्रामान्तरं वक्ष्ये गोत्राद गोत्रान्तरं तथा विप्रादं विप्रान्तरंचापि पञ्ज्यां वंश प्रवर्द्धनम सप्तः गोत्राश्च उस्त्रिशत ब्राह्मणा पञ्जिकोद्भवाः तेषां सम्बन्धत: सर्वे वर्णाश्चवानु वर्त्तते गंगोली तौ विकश्चापि पबौली र्क्ततेऽधुना घुसौतौ बुधवालाख्या विभाकर प्रभाकरौ विशुपंच कलस्तेकहरा देवे तथा मवे भण्डारि समत: पश्चा स्लेखाई फनन्दह पुरे तथैव चौरती ग्राम सँ बीजी पुरूषोत्तम: श्री पल्ली कपिलानन्दो संकराढ़ी पुरेपिच जल्लकी भन्दवालश्च माधवः कथ्यते पुरा

जयशर्म्म हरिशर्म्माणो करमहा वंशधरस्तथा

कुमारी मातुलं तानौ वत्सवाल नरउनके

करमहा वंश तश्चापि महिधरः करमहा बनुभालश्च तस्य पुत्रो मनोधर: केशव सुत: सुर्यस्तस्य पुत्रो महिधर: रतिधर महिधरौ पञ्ज्यां मुरारेर्दौ कथं भवेत् श्रीधरस्तत्र वंश वृद्धिः प्रयोजनम पुत्रो कुमारिका

यत्र नरउनश्च दृश्यते श्री करश्च तथा पञ्ज्यां करमहा हपुरे तथा गौरीश्वरो शक्तिपुरे निवासी नरउन केतस्य सुतो मुरारी: अभूत पुरे गाउल करमहाख्यो बीजी मुरारीश्च नरउन कोपि

हल्लेश्वरश्चापि सुरेश्वरश्च जीवेश्वर तत्र त्रयोपि सोदरा: सिंहाश्रमात् सोदर ग्राम वासिना महामहो तत्र त्रयोपि संतिति

हरिम्वतौँ हरि हरो वासी वै सकुना पुरे श्री पल्ली तौ मुरारी वै बहेराढ़ी पुरे तथा तिसौंता तिसुरी वासी तथा लक्ष्मीपतिश्च वै श्री पल्ली तश्चादि देवे मौचनाख्य पुरे तथा

कुश्चिद् विशेष

।। साम्य गोत्रे सम्बन्ध :।।

सरिसव सँ करूणाकरस्य विवाहस्तयाच कन्यायाम्

खण्डबलासँ ठ. विश्वेश्वरस्य सुत: साम्भ गोत्रेपि

सरिसब सँ रत्नाकरस्य विवाह स्तथा च कन्यायाम्

बाढ़ पबौली संज्ञक हरदत्तश्चापि साम्ये पि

वाचस्पति र्विवाहो बाढ़ पवौली द्विजस्य साम्येपि

प्राणस्य वै सुतायां सोदरपुर द्विजस्य साम्य गोत्रे

दरिहरा द्विज कृष्ण पतेश्च परशुराम द्विजकस्य खौआल

कन्यका सुनधिकार विवाहो विश्वचक्र लिखने समगोत्रापि

गीरू शीरू सन्यासी गीरपूरखूतस्य वै पुत्र। काशीकस्य विवाहः

करमहा संज्ञक कन्यायाम्।। काशीकस्य सुतायां करमहा संज्ञकस्य

स्तथा मुकुन्दस्य विशुपंचक विप्रस्तस्य विवाहो लिपि

॥पञ्जीकाम् ॥

पाँ रघुदेव

अथ समीचीनसप्त गोत्रे कथ्यन्ते।।

॥गंगोलीच पवौलीच खण्डबलास्तथैवच ।। ॥सोदरो जजिवालश्च दिर्घोषो सरिसवस्तथा।। शाण्डिल्य गोत्रस्य सम्भूताब्राह्मणास्ते व्यवस्थिता॥

गोत्र: पराशरश्चापि नरउन सुरगनश्चवै॥

घुसौतश्च तिसउँतश्च टंकवाल स्तथैव च

करमहा बुधवालश्च फनन्दहश्चैवती च वै बहैराढ़ी अलैवारौ पलिवारश्च जल्लकी वाभन्यश्च हरिअम्वच वत्स गोत्रे व्यवस्थिता

दरिहरा माण्डरश्चैव पाण्डुर: सतलखाचवै संकुराढ़ी च वल्यास्तै विशेवार श्च तत्रवै खौवालौ चोयनी चैव काश्यपं सकलं जगत्

गोत्रे कात्यायनश्चैव कुजौली मेव सँ मही भारद्वाजस्थितौ गोत्रे बेलउँचैक हरौच वै सावर्णागोत्र: पनिचोभश्चान्ये गौत्रान् निश्चिता

शाण्डिल्य काश्यपश्चैव भारद्वाजस्तथैवच वत्स कात्यायनोताँम पराशर मुनिस्तथा सावर्णश्च मुनि पञ्ज्यां सप्तेवैते व्यवस्थिता: अन्येन्ये नव गोत्राणि शाखायोते प्रकिर्तिताः इतिसप्त गोत्रे व्यवस्थित पञ्जी

महाराज हरिसिंह देव जीक सभामे उपस्थित सभ्य लोकनि द्वारा सदुपाध्याय गुणाकर झाकें मैथिल पञ्जीक भार देल गेलन्हि:- नन्देन्दु

शुन्यं शशि शाक वर्षे (१०१९) तच्छ्रावणस्य धवले। मुनि तिथ्यधस्तात। स्वाती शनैश्चर दिने सुपुजित लग्ने श्री नान्यदेव नृपति: र्व्यधीत वास्तं।।१।। शास्तानान्य पतिर्व्वभूव नृपति: श्री गंगदेवो नृपस्तत् सूनू नरसिंह देव विजयी श्री शक्ति सिंह सुत: तत् सुनू खलू राम सिंह विजयी भूपालवन्त सुतो जात: श्री हरिसिंह देव नृपति: कार्णाट चूड़ामणि।।२।। श्रीमन्तं गुणवन्त मुत्तम कुलस्नाया विशुद्धाशयं सञ्जातानु गवेषनोत्सुक तयात् सर्वानुव्यक्तिक्षमं। चातुर्यश्च चतुराननः प्रतिनिधिं कृत्वा च्चतुर्द्धामिमां पंचादित्य कुलान्विता विवजया दित्यै ददौ पञ्जिकाम ।।३।। भूपाला वनि मौलि रत्न मुकुटोलंकार हिरांकुर।

ज्योत्सोज्वाल यटाल भाल शशिभिः लीलञ्च चंचल मुख: शोभाभाजि गुणाकरे गुणवतां मानन्द कन्दोदरे दृष्टात्मा हरिसिंह देवनृपति: पाणोददौ पञ्जिकाम् ।।४।। ॥अपिच।।

दृष्ट्वा सभांश्री हरिसिंह देव विचार्यचित्ते गुणिणी सहिष्णो गुणाकरे मैथिलवंशजाते पञ्जी ददो धर्म्म विवेचणार्थम ।।५।। वालाद्धि युग्म शशि सम्मित शाकवर्षे पौषष्यशुक्ल नवमी रवि सुनूवारे त्यक्त्वा सुपट्टन पुरी हरिसिंह देवो दुर्द्दैव देव सित पथोऽय गिरी विवेश:।।

श्रोत्रिय लोकनिक गोत्र, मूल ओ मूल ग्रामक निर्णय :-

गोत्र मूल मूलग्राम

शाण्डिल्य (i) सरिसब खांगुड़, सकुरी, जोंकी

(ii) पर्वपल्ली वढ़ियाम (पवौली)

(iii) खण्डबला भौर (iv) सोदरपुर सरिसव, मानी, दिगउन्ध, तेतरिहार, कन्होली कटका, हाटी,

वत्स (i) पाली महिषी (ii) हरिअम्ब
बलिराजपुर (iii) घुसौत नगवाड़ (iv) करमहा रूचौलि, नरूआड़, बेहट, तरौनी, झंझारपुर, अनलपुर (v) बुधवाल
गंगोरा, डुमरा, परियाम्ब

कश्यप (i) खौआल सिम्वरवाड़, मुराजपुर, महुआ (ii) सकराढ़ी
परहट, लोहना (iii) दरिहरा रतौली (iv) माण्डर
सिहौलि रजौरा, कनसम, पतनुका (v) वलियास
माड़रि

पराशर (i) नरउन सुल्हनी, पुड़े, त्रिपुरौली (ii) सुरगन
लोआम

भारद्वाज (i) एकहरा रूचौलि, कन्हौली

कात्यायन (i) कुजौली भखरौली

सरिसब- खांगुड़, सकुरी, जोंकी

पवौली- वढ़ियाम

खण्डवला- भौर

सोदरपुर- सरिसब, दिगउन्ध, कन्हौली, मानी, हाटी, तेतरीहार, कटका

हरिअम्ब- बलिराजपुर

घुसौत- नगवाड़

करमहा- रुचौली, नरुआड़, बेहट, तरौनी, झंझारपुर, अनाथपुर

वुधवाल- परियाम, गंगोरा, डुमरा

पाली- महिषी, मंगरौनी, जमदौली

खौआल- महुआ, मुराजपुर, सिमरवाड़

सकराढ़ी- परहट, लोहना

दरिहरा- रतौली

माण्डर- रजौरा, सिहौली, पतनुका, कनसम

वलियास- माड़रि

नरउन- त्रिपुरौली, सुल्हनी, पुड़े

सुरगन- लोआम

कुजौली- भखरौली

एकहरा- कन्हौली, रुचौली

(प्राचीन पञ्जी) लौकित) श्रोत्रिय लोकनिक चौगोला श्रेणी युक्त

प्रथम द्वितीय तृतीय चतुर्थ पंचम

भरथीया भदाईझा बाभनझा पीताम्बरझा दशरथमिश्र

रघुनीझा नारायणझा देवाईझा गंगाधरझा रूद्रपतिझा

वाबूमिश्रबलभद्रठाकुर तिसउँत रामदेवमिश्र शंकरराय

गोढ़ाईझा विश्वेश्वरमिश्र जटेशझादामूझा शिवमिश्र

षष्ठम सप्तम अष्टम वीरठाकुर मोतीझा रोहाड़माधवमिश्र सदाईमिश्र भोलनझा नरपति झा

भीखारीझा माधवझा हेमाङ्गद राय सुरगन रघुनन्दन पाठक

१६०० शाके मे श्रोत्रिय लोकनिजे पौजि सँ सम्बन्धित भेलाह।

मूल ग्राम नाम लौकित सरिसब खांगुड़ बवूनी झा गंगाधर झा सरिसब खांगुड़ धीरनाथझा गंगाधर झा सरिसब खांगुड़ जीवनाथझा दशरथ मिश्र

सरिसब खांगुड़ गणेश झा जगदीश मिश्र सरिसव जोंकी शंकर मिश्र शिव मिश्र सरिसव सकुरी देवीदत्तझा सुबन्धुझा पवौली वढ़ियाम मनसुख झा हेमाङ्गदराय पवौली वढ़ियाम रूद्रदत्तझा गोढ़ाईझा पवौली वढ़ियाम सदानन्दझा पीताम्बरझा खण्डबला भौर श्यामनाथ ठाकुरतिसउँत एकनाथ ठाकुर भरथीझा महाराजा प्रताप सिंह तिसउँत महाराजा माधव सिंह तिसउँत

लौकित

मूल मूलग्राम नाम लोकित

खण्डबला भौर गणेश ठाकुर तिसउँत '' '' दुर्गादत्तठाकुर तिसउँत

'' '' रूचिपति ठाकुर बलभद्रठाकुर '' '' गोपालठाकुर पीताम्बरझा '' '' सोन ठाकुर भदाईझा '' '' प्रान्नाथ ठाकुर विश्वेश्वर मिश्र '' '' मणिनाथ ठाकुर विश्वेश्वर मिश्र '' ''

रतिधर ठाकुर भरथीझा '' '' सोनी ठाकुर
भरथीझा '' '' गौरीनाथ ठाकुर गोढ़ाई झा ''
'' उग्रसिहं ठाकुर तिसउँत '' '' जगत
सिहं ठाकुर लक्षू पाठक '' '' कमल सिहं ठाकुर
अमौन '' '' इशान्नाथ ठाकुर रघुनीझा सोदरपुर
सरिसउ हृदयनाथ मिश्र भदाईझा '' '' जानकीनाथ मिश्र
विश्वेश्वर मिश्र '' '' शिवानन्द मिश्र भरथीझा
'' '' छबनू मिश्र भरथीझा

'' '' चित्रधर मिश्र विश्वेश्वर मिश्र '' ''
आँखी मिश्र तिसउँत '' '' पखिया मिश्र
गोढाईझा '' दिगउन्ध भवनाथ मिश्र भदाईझा
" रमाकान्त मिश्र रघुनीझा

" भवानीदत्त मिश्र रघुनीझा '' '' बछरू
मिश्र रघुनीझा

'' '' हृदयनाथ मिश्र बाभन झा '' मधुपति
मिश्र रघुनीझा

" घनानन्द मिश्र भरथीझा '' ''
चिन्तामणि मिश्र रामदेव मिश्र '' '' यारी मिश्र
तिसउँत '' '' शिवानन्द मिश्र तिसउँत ''
कन्हौली लक्ष्मीदत्तझा माधवमिश्र '' ''
रामभद्र झा गंगाधर झा '' '' विष्णुदत्तझा
शंकरराय '' मानी मंचितमिश्र रघुनीझा ''
'' रघुनाथ मिश्र दशरथ मिश्र '' '' रूचिपति
मिश्र भदाई झा '' '' घनानन्द मिश्र दामूझा ''
हारी सोनी मिश्र विश्वेश्वर मिश्र '' तेतरिहार
सदानन्दझा तिसउँत '' '' महेशझा
रामदेवमिश्र '' कटका कुलपतिमिश्र बाभनझा ''

'' कृष्णपति मिश्र रामदेवमिश्र पाली महिषी
रामझा भानू मिश्र '' '' छोटकनि झा रामदेव
मिश्र '' '' रतिदेवझा पीताम्बर झा '' ''
लक्ष्मीदत्त झा वीर ठाकुर '' '' लक्ष्मीकांत झा
रघुनीझा '' '' गोकुलनाथ झा ''

'' '' वंशीधर झा भदाई झा '' ''
विश्वेश्वर झा शंकरराय '' '' दुल्लह झा
''

'' '' अमृतनाथ झा भदाई झा '' '' मतिनाथ
झा बाभन झा '' '' धरानाथ झा रामदेव मिश्र ''
'' मनभरन झा तिसउँत

'' मंगरौनी रामकृष्णझा पाणिझा '' '' धनेश झा
तिसउँत '' जमदौली परशमणिझा गोनू मिश्र

घोसोत नगवाड़ कलानाथ ठाकुर भानू मिश्र '' '' नमू
ठाकुर भिखारी झा

हरिअम्ब वलिराजपुर म.म.सचल मिश्र भदाई झा ''
'' मानीक मिश्र रघुनी झा ''
'' मेघनाथ मिश्र गोढ़ाई झा '' ''
दुल्लह मिश्र तिसउँत '' ''
प्रभूनाथ मिश्र जटेश झा

करमहा रूचौलि नरोत्तमझा दामू झा '' ''
रामेश्वर झा दशरथ मिश्र

'' नडुआर दुखभंजनझा पाणिझा ''
'' मुरलीधरझा वीर ठाकुर ''
'' साहेबझा दशरथ मिश्र

'' बेहट जगन्नाथ झा तिसउँत ''
नारायणदत्तझाप्रभृति ''

करमहा तरौनी वेणीझा वीरठाकुर '' महिधर
झा शिव मिश्र
पद्मापति झा मोती झा

झंझारपुर योगानन्द झा शंकरएण

करमहा अनलपुर टेकनाथझा भदाई झा
जाल्पादत्त झा दशरथ मिश्र
राधानाथ झा रूद्रपतिझा बुधवाल वरियाम
दुल्लीझा विश्वेश्वर मिश्र परशमणि
झा वीर ठाकुर

बुधवाल गंगौरा परशमणि झा देवाई झा ''
'' भोरानाथ झा भानु मिश्र ''
'' रघुनाथ झा तिसउँत खौआल महुआ
देवकृष्णझा शंकरराय '' मुराजपुर
रत्नपाणि झा सुरगन बड़का ''
सिमरवाड़ हेमनाथ झा रोहाड़ ''

'' पीताम्बर झा रघुनी झा ''
'' गोकुल झा रामदेव मिश्र ''
'' बालहझा तिसउँत ''
'' रमापति झा विश्वेश्वर मिश्र

' '' जानकी नाथ झा ''

'' '' बनी झा ''

सकराढ़ी परहट रंगनाथ झा विश्वेश्वर मिश्र

'' '' विष्णुदत्त झा दशरथ मिश्र ''
'' चन्द्रदत्त झा शंकर राय ''
'' वासुदेवझा विश्वेश्वर मिश्र ''
'' गरीब झा गंगाधर झा ''
'' दुल्लह झा रघुनी झा "
लोहना कृष्णदाश झा हाड़ी झा

दरिहरा रतौली भवनाथ झा गोदाई झा

'' '' भूपनारायण झा तिसउँत ''
'' विद्यानाथ झा तिसउँत
देवनारायण झा दशरथ मिश्र '' ''
भगीरथआनन्दझा तिसउँत ''
'' केशव झा यटेश झा ''
'' कन्हाई झा ''

'' '' खगनाथ झा ''

“ रैया झा भदाई झा

'' '' किर्तिनाथ झा भदाई झा

माण्डर रजौरा धनानन्द झा पीताम्बर झा

'' सिहौलि खगपति झा शंकर राय ''
'' वाचा झा भोलन झा ''
'' हेमकरझा दामू झा ''
'' विष्णुपति झा तिसउँत ''
'' बेचन झा रामदेव मिश्र ''
'' धीरनाथसिहं झा सुरगन बड़का ''
'' कुमर सिंह झा भंजन झा ''
'' गनी झा तिसउँत '' ''
मेधापति झा रघुनी

'' पतनुका खुशिहाल झा पीताम्बर झा

'' कनसम दुर्गानाथ झा शिव मिश्र

वलियास माड़रि इन्द्रपतिझा रूद्रपतिझा
मणि झा ''

नरउन पुड़े भवेश झा भरथी झा

'' '' छत्रपति झा गोढ़ाई झा ''
'' कलानाथ झा ''

'' '' दामोदर झा भानु मिश्र ''
'' विश्वेश्वर झा रघुनी झा ''
'' गंगादत्त झा ''

" हरदत्त झा माधव मिश्र

'' '' मेघनाथ झा दामू झा

नरउन त्रिपुरौली गुणानन्द सरस्वती '' ''
सुल्हनी तीर्थदन्तझा भरथी झा
'' लक्ष्मीदत्त झा तिसउँत ''
काशीनाथ झा शंकर राय ''
जहलीझा कुलपतिझा रघुनी झा ''
दुखिया झा विश्वेश्वर

नरउन सुल्हनी गोविन्द झा जीवनाथ झा नरउन
सुल्हनी लक्ष्मी नाथ झा भदाई झा ,, ''
दयानाथ झा ''

सुरगन लोआम उत्तिमनारायण राय सुरगन बड़का ''
'' म. नर नारायण राय ''
" चन्द्रनारायण राय सुरगन छोटका

" रामनारायण राय सुरगन छोटका

कुजौली भखंरौली मेधाकर झा भरथी झा ''
'' शोभाकर झा रघुनी झा '' ''
धूर्छीझा बाभन झा '' '' गोशाँईझा

दामू झा ''   ''   वूचा झा ''

''   ''   धरानाथ झा   रामदेवमिश्र   ''
          ''   हेमकर झा   देवाई झा

एकहरा कन्होली   वाचा झा   विश्वेश्वर   मिश्र   ''
          ''   भवदत्त झा   यटेश झा एकहरा
          रूचौलि नन्दन मिश्र   नरपतिझा

प्राचीन पाँजि   मोदानन्द झा शाखापञ्जी

मो. न. शाखा   प्रथम चौगोला   वि. न. शा. पत्रांक ५२//०२
वढ़ियाम पबौलीसँ रामदेव सुत भरथी झा ६१//०७ रतौली दरिहरासँ रामनाथ सुत रघुनी झा १९०//०५   शि. हरि बसुदेव सुत बाबू मिश्र ११३//०१ अनल कर. कृष्णदेव सुतगोदाई झा

द्वितीय चौगोला ११०//०५   रजौरा माण्डरसँ महादेव सुत भदाई झा १४६//०२ डूमरा   बूधवालसँ   सदानन्द सुतनारायण झा २१८//०१   भौर खण्डबला सँ रघुरामसुत बलभद्र ठाकुर १२१//०६ मंगरौना हरि. चिकू सुत विश्वेवर मिश्र

तृतीय चौगोला ११२//०४ महिषी पालीसँ बाटू सुत बाभन झा

सँ सुत देवाई झा कुआ तिसउँतसँ चिन्तामणि सुत श्रीकान्त झा मलि. नरउनसँ भवेश सुत यटेश झा

चतुर्थ चौगोला

७०//०६   कटैया माण्डर सँ पीताम्बर सुत दामू झा
१२८/०४   बिठौली वलि. सँ भमरू सुत गंगाधर झा
९१//०३   रैयाम सोदरपुरसँ हरखू सुत रामदेव मिश्र

१११//०४ महिषी पालीसँ शिवसुत रामू झा

पंचम चौगोला ५७/०२ रूचौलि एकहरा सँ श्रीपतिसुत दशरथ मिश्र १५९/०२ माड़रि बलियाससँ हरपतिसुत रूद्रपतिझा १६४//०४ '' '' रघुनन्दन सुत शंकर राय ८२//०५ जोंकी सरिसबसँ पद्मनाभ सुत शिव मिश्र

षष्ठम

४१६/०४ भौर खण्डबला सँ लक्ष्मीकांत सुतवीर ठाकुर सँ सुत सदाई मिश्र २१९/०६ महिषी पालीसँ लक्ष्मीनारायण सुत भिखारी झा १०१//०५ लोआम सुरगन सँ प्राणपति सुत समर सिहं '' '' उत्तिम नारायण राय छोटका सुरगन

सप्तम १५७/०६ मंगरौनी पालीसँ पाँ धर्माङ्गद सुत मोतीझा १४३//०६ वहि. पबौली सँ चाण सुत कवि भोलन झा २४१ क //०२ " गिरधर सुत माधव झा १४५//०३ बलियास सं छीतू सुत रघुनन्दन पाठक

अष्टक १३५//०५ रोहाड़ सोदरपुर सँ जानू सुत माधव मिश्र १६६/०४ हरड़ी सकराढ़ी सँ पाँ रामभद्र सुत पाँ नरपति झा २३९/०१ माड़रि वलियास सँ नयन सुत हेमाङ्गदराय

महाराजाधिराज ५ मान् मिथिलेशक आज्ञानुसार पछबारिपारक लौकिक आ श्रेणिक व्यवस्था पञ्जीकार लोकनि जे स्थिर कएलन्हि से प्रकाशित भेल छल आ ईहो प्रार्थना छल जे ताहि मध्य जनिका किछु वक्तव्य होइन्ह से प्रार्थना पत्र द्वारा श्री ५ मान् मध्य निवेदन करथि, ततः निदान विशिष्ट सभा मध्य एकर परामर्श कए पुनः प्रकाशित कएल जायत।एतएसँ १ सँ १५ धरि श्रेणी बना देल गेल। ढेर विवाद उठल जे पाइ लए कतैक तथाकथित निम्नकुलमे पाँजिक मान्यता देल गेल।

पछबारिपारक लौकित नाममे कतहु लौकित व्यक्तिक नामपर आ कतैक ठाम गामक नामपर लौकितक निर्धारण भेल।

किछु उदाहरण अछि-

१. सिंहवाड़-मथुरेश ठाकुर

२. मनियारी- मधुपति मिश्र

३. अमौन-बालकराम पाठक

४. भराम- छीतरी

५. बसन्तपुर- माधव मिश्र

६. कोकडीही- रामेश्वर मिश्र

७. नित्यानन्द चौधरी- पिण्डारुछ

८. एहु- भैय्यो मिश्र

९. खुटौनियाँ- भवानीदत्त झा

१०. लक्षमीपति मिश्र- धगजरी

११. कन्त झा- चानपुरा

१२. टङ्कवाल महिधर झा-पेकपाड़

१३. विष्णुदत्तपुरचिकनौट (मुजफ्फरपुर)

१४. चान पाठक- गजहरा

१५. लालठाकुर- धमदाहा

१६. ज्ञानी ध्यानी- रंगपुरा(पूर्णियाँ)

महाराजाधिराज श्री (५) मान मिथिलेश रमेश्वर सिंहक आज्ञानुसार पछवारिपारक पाँजिक श्रेणी न्यूनाधिक स्थिर भेल। श्री मोदानन्द शाखा एवं नगराम पञ्जीसँ सम्बन्धित पत्रांक देल अछि। राज प्रेस दड़िभंगा-१९२९

प्रथम श्रेणी

सकराढ़ी हरड़ी सँ पाँ रामभद्र सुत पाँ नरपति झा १६६-४

रोहाड़ सोदरपुरसँ जानू सुत माधव मिश्र १३५=५

कटका सोदरपुरसँ मनहर सुत गोनू मिश्र ९५=४

डूमरा बूधवालसँ शतन्जीव सुत भैयन झा २६२=६

बधवास सरिसब सँ धरनीधरसुत भंजन झा १३१=१

नरसाम वलियाससँ घनश्याम सुत नीलाम्बर मिश्र ३०३=९

खांगुड सरिसबसँ लक्षमन सुत नन्दन झा १९८=३

नगराम साखा खांगुड़ सरिसबसँ विश्राम सुत करिये झा २१=७

सन्दहपूर दिघोसँ भैरव दत्त सुत मथुरेश ठाकुर (सिंहवाड़) २७०=७

कटमा बभनियामसँ सथाउन सुत कन्त झा २३८=५

द्वितीय श्रेणी सतौली सतलखासँ हरिसुत पदूम झा १७१=५ भखरौली सकराढ़ी सँ गादू सुत श्री कान्त झा १६८=४ गौर सोदरपुरसँ बछाई सुत मधुपति मिश्र (मनियारी) ३१०=१ कटका सोदरपुरसँ सँ महिनाथ सुत बन्धु मिश्र १७५=६ महिषी बूधवालसँ परशुराम सुत बालकराम पाठक (अमौन) २३८-१ नरसाम बलियास सँ धराधर सुत वैया. खुशिहाल मिश्र १८४-३ सिहौली माण्डरसँ पुरन्दर सुत वैदिक गोनू झा १९९-२ बैगनी अलयसँ देवनानन्द सुत परमानन्द चौधरी २२४-२ महिषी बूधवालसँ बाउन सुत कमलनयन पाठक ३०१=२

बिठौली वलियाससँ अनन्त सुत महादेव झा१७९-४

तृतीय श्रेणी

डूमरा बूधवालसँ ब्रह्मपति सुत घनानन्द झा ३०१=५ नर वलि. सँ घनश्याम सुत वैदिक गणपति मिश्र २०२=८

समौली पालीसँ भवेश सुतजीव कर्ण मिश्र ३३४=४ हरड़ी सकराढ़ी सँ पाँ गोपाल सुत पाँ धारे झा४०३-०१ जमुनी जजिवालसँ शिवनी सुत मुरारि मिश्र ३०१-६ बलहा बलियाससँ गोविन्द सुत देवानन्द झा २३३=१ रूचौली एकहरासँ बल्ली सुत पनाई मिश्र २३३-३

चतुर्थ श्रेणी ततैल सकराढ़ीसँ कृष्णाराम सुत छीतरीझा (भराम) २९७=३ हरिपुर पालीसँ रामकृष्ण सुत शूलपाणि झा ३५०=७ कटउना माण्डर सँ रामकृष्ण सुत माधव मिश्र (वसन्तपुर) १९४-२

जमदौली पालीसँ हरिहर सुत जयकृष्ण

ज्यो. खड़गपाणिझा – सखुआ २९०-४

(इतिद्विधा–जयकृष्ण सन्तति द्वितीय खड़गपाणि सन्तति प्रथम)

काको बेलउँच सँ खगेश सुत प्रभाकर चौधरी नगराम ४९७-२ महिन्द्रपुर
पण्डुआसँ पाँ आनन्द सुत पाँ प्र. छोटी झा प्र देवानन्द झा २९७=२
दिगौन्ध सौदरपुरसँ हरिजीव सुत रामेश्वर मिश्र कोकडीह ३०२-५
पचही जजिवालसँ हरदत्त सुत पीताम्बर झा (पकड़ी) १४६=५
नाहस खौआलसँ बासुदेव सुत मधुसूदन (प्रतिहस्त) ३२०=१ सतौलि
सतलखासँ मनहर सुत प्रान्नाथ झा (नरहा) ३४२=५

कड़राइनि बभनियामसँ धनपति सुत पाठक महथू ३४८-३ गौतम
गौत्र बूधैरासँ रामदेव सुत हरिकेश (पूजारी शिलानाथ) ३२२-२

पंचम श्रेणी

बेहट खण्डबलासँ मणिकृष्ण सुत हरिनारायण ठाकुर १८६=५

बढियाम पबौलिसँ टेङरि सुत सुखाई झा ३०१=२

विस्फी तत्रैवसँ दिनमनि सुत तुला ठाकुर ३३९-७

परमगढ़ अलयसँ नरोत्तम सुते नित्यानन्द चौधरी (पिण्डारूछ) ३३८=४ सकुरी माण्डरसँ जगदीश सुत बटाउँ मिश्र ४०४=२
परहट बहेराढ़ी सँ रघुनाथ सुत महेरभान ठाकुर ४१३=२

यमुनी जजिबालसँ हरिहर सुत भैयो मिश्र (ऐहु) १७-६

संग्राम एकहरासँ भमरसुत खगेश झा २४-२

सकुरी सरिसवसँ शूलपाणिसुतभवानी दत्तझा (खूटौनियाँ) ६२//

षष्ठ श्रैणी

हड़री सकराढ़ीसँ पाँ योगी सुत पाँ तारापति झा ब.३२-७

सुखैत सोदरपुरसँ श्री कृष्ण सुत गोइ मिश्र ४०३=७

वत्सवाल नरउनसँ अनन्तसुत वल्ली चौधरी २१३=१

मलंगिया कुजौली सँ सदानन्द सुत मुरली झा ४३७-६

रखवारी हरिअम्ब सँ नयन सुत मदन मिश्र २३२=४

कोदरियासँ परमानन्द सुत नवलक्षाधिपति लक्ष्मीपति मिश्र (धगजरी) ४०१// संग्राम एकहरासँ खगेश सुत विश्वनाथ झा व..५०/७ धनौजी गंगोलीसँ विश्वम्भर सुत नीलमिश्र व.५९=७

सप्तम श्रेणी तरौनी करमहासँ घनश्याम सुत वदनी झा व.७१-४
हारी पालीसँ गोनू सुत हिरदी झा व.५०=४

परमगढ़ अलयसँ बाबू प्र. सदानन्द सुत विश्वेश्वर चौधरी ३१९=२
परमगढ़ अलयसँ बाबू प्र सदानन्द सुत वंशी चौधरी ४२१-६

सकुरी माण्डरसँ जगदीश सुत हरिनन्दन मिश्र (बरौनी) २९६-४

रखवारी हरिअमसँ आनन्दी सुत छावनि मिश्र जड़सैनि ४२३-६
ततैलसकराढ़ीसँ कमलापतिसुत सुधाकर झा ४२२-८

खांगुड़ सरिसब सँ परानसुत यदुनीझा ३५७=२ लोहनासकराढ़ीसँ कृष्णसुत मटरू झा २०८=७

अष्टम श्रेणी अकुसी टंकवाल सँ गंगाधर सुत बोधकृष्ण झा ३८८-६

नगराम ततैल सकराढ़ी सँ हरिकेश सुत वीर झा ३७६=१ डीह दरिहरासँ मित्रकर सुत मोदी मिश्र (मालापूर) उ.प्र. २०५=७ हरिपुर पालीसँ भिखि सुत नरेश झा व.३५-८ कनसम माण्डर सँ नेनू सुत कन्त झा व.४३=५ रोहाड़ सोदरपुरसँ सँ जयि सुत पति मिश्र ३२९=८ उड़ा एकहरासँ दशरथ सुत छोटकू झा (भोगलाहा) ४१४=६ कनसम माण्डरसँ मोहनसुत गतिराम झा व. ५६-६ जगतपुर ओइनि सँ राजा राम चन्द्रसुत राजा प्रताप

नारायण राय झा व. १३=५

नवम श्रेणी रजौरा माण्डरसँ गिरीश सुत रतिकर झा ९-०४=०१
छामूसकराढ़ी सँ बन्धु सुत वेदी झा (झंझारपुर) व-७२-७ परहर सकराढ़ी सँ भोरा सुत जयकृष्णझा (खडगपुर) व-४६-६ काको बेलउँचसँ कालासुत कौस्कीस्त झा व-७९-२ अंकुसी टंकबाल सँ जयकृष्ण सुत महिधर झा व-६०=३ भखरौली सकराढ़ीसँ महिपाणि सुत गुणी झा व-८१-४ रतिपाड़ बेलउँच सँ केशव सुत मांगु झा (महेशपुर) ३३१=५ सतलखा बेलउँचसँ हरिशंकरसुत पुरूषोत्तम झा (हालो)

सुत महिधर झा ४१९=

काको वेलउँच सँ पुरूषोत्तम सुत नारो झा ९-४१-६

हरिपुर पालीसँ सुखड़ि सुत बेचू झा ९-६६-३

दशम श्रेणी

छामू सकराढ़ीसँ नित्यानन्द सुत दामोदर झा (कन्हौली) २५८=१
शक्तिरायपुर नरउनसँ भैरवदत्तसुत मचली मिश्र (रहिका) ४२८=६
नगराम जगति पबौली सँ बलदेव सुत मातू झारविष्णुदत्तपुर ५१=६ सँ सुत धराधर चौधरी जमुनी जजिवालसँ हिरासुत चीरा मिश्र-नगराम ७६=६ जगतपुर उइनिसँ किर्ति नारायण सुत रूद्रनारायणा १६२=८ सकुरीपालीसँ भवानन्द सुत प्रद्यूम्न झा (मड़गाम-पाली) ९-०७-०३ सकुरीपालीसँ भवानन्द सुत भूवन झा व.३६=१ कुजौलीसँ नित्यानन्द झा

आहिलखौआल सँ दयाराम सुत कौस्कीदत्त गोढम (नेपाल) नगराम ३२४-४

सुत चक्रपाणि चौधरी आहिल खौआलसँ मोहनसुत महादेव झा (कथित

विन्धी) नेपाल व.२९-३

एकादश: श्रेणी नगरामजगतपुर उइनिसँ ऐ निपाल नारायण सुत रशीक नारायण ३१३=२

वारी माण्डर सँ रामेश्वर सुत भूषण झा ४४२-१० ओझोलि नरउनसँ ह्रदयराम सुत मणिझा (सागरपुर) ४३१=५ सरावय सकराढ़ी सँ वैद्यनाथ सुत चाण पाठक व. ८५=८ बहेड़ा बेलउँच सँ देवीदाश सुत विरसिंह राय बहेड़ी ६१-५ ओड़ा एकहरा सँ कामदेव सुत पुरन्दर झा खजूरी ३०५-४ सकुरी वलिया सँ नरपति सुत गोविन्द झा खजूरी तरौनी ४१४=५ पुरोही पालीसँ लक्ष्मीनाथ सुत गतिराम झा हरिनगर ४१७=८ द्योरी खण्डबलासँ महिनाथ सुत लाल ठाकुर धमदाहा वसुवाड़ी वलियाससँ सुतअन्दी मिश्र

सारा मोहनपुर सुत गुणानन्द झा व-१०५ मलिछाम वहेराढ़ी सँ यवदू सुत चोटाई ठाकुर-भच्छी व.७=०५

छामू सकराढ़ीसँ दामोदर सुत जगन्नाथ झा मोहना ३७८-४ मुराजपुर खौआलसँ सुन्दर सुज्यो. भूवन झा मुंगारी व-३६-७

नरसाम वलियास सँ बाला सुत कल्याण मिश्र सप्ता ४१७=२
खडकाएकहरासँ घनश्यामसुत गोकुल नाथ झा बेला ३०७=४

द्वादश: श्रेणी

अलय अलयसँ कमल सुत नकट झा ४२४-६

सॅ सुत यशी भूवनझा रखवारी हरिअमसँ भगीरथ सुत निधि मिश्र ३९९=६ सुत हरदत्त ठाकुर ज. म. पालीसँ ज्यो. विष्णुपति सुत ज्यो. लाल बिहारी झा व.३९-७

रोहाड़ सोदरपुरसँ लालासुत भैयाराम चौधरी भवानीपुर ४०८=३
गौर सोदरपुरसँ सागरसुत पशुपति मिश्र कछुवा ३२४-७

गंगोली जालयसँ घमंडी सुत नेहाल चौधरी सुत उँमाई मिश्र (दशरथ) ३५४-७

अलय-२ सँ रतिपति सुत आभीझा दामोदरपुर व.८६-५

मलंगिया कटाई सँ प्रद्यूम्न सुत कमलापति झा फेंटकटाई व.०६-०६

कन्हौली बेलउँच सँ सागर सुत अरिविन्द झा व-१०४=३

उचतिसँ सुत प्रभुनाथ झा व-४१-२ नगराम काको बेलउँचसँ अन्ही सुत गोशाँइ प्रितम ४९३-२ धरौरा वलियाससँ वेणी पति सुत मदन सिंह लदौरक वलियास व-६२-३

त्रयोदश: श्रेणी

ओझोलि नरउनसँ भवेश सुत घनश्याम झा पण्डोलीक नरउन व.४९-६ सुत रंकझा कोलहट्टा पाली गौर सोदरपुरसँ धानासुतडीहा मिश्र जाँता व-६७-७ नागदह मन्नूराम झा सवास कुसमालसँ सुत रघुपति झा मउआहा नेपाल काको बेलउँच सँ अन्दी सुत धाना गरबन ४९९=

पालीसँ सुत रमानाथ

चतुर्दश श्रेणी

कुसमाल सँ सुत घासीराम चौधरी फनन्दहसँ वदन सुत अन्दीझा व.१२=२ समौली पालीसँ बवनू देवान नगराम १७८-६ सनहा, धारू ठाकुर रखवारी हरिअम्वसँ अपूछ सुत कृष्णदत्त मिश्र ४०-८ जनाढ़ ज्ञानी-ध्यानी

पति ठाकुर

पंचदश श्रेणी १५ नगर दिघो सँ मणि सुत चतुर ठाकुर करमौली ३१०=८

वलियाससँ सुत नीलाम्बर नीलाम्बर चौधरी कारू ठाकुर, सबौर, हरदत्तझा लौकिक संख्या-१५३

श्रेणी-१५

उपस्थित पन्जीकारक हस्ताक्षर

श्री विश्वनाथ प्र. नीरसू झा पञ्जीकार- सौराठ श्री गोपीनाथ प्र. सूचाई झा- यमसम श्री गंगाधर ठाकुर- ककरौड़ श्री लूटन झा- सौराठ श्री विष्णुदत्त मिश्र- सौराठ श्री वेदानन्द मिश्र रानीटोल- रानी टोल श्री उँमापति झा- ककरौड़ श्री लक्ष्मीदत्त मिश्र- सौराठ श्री कुमर झा- सौराठ श्री चिरञ्जीव झा- मंगरौनी श्री रघुनन्दन झा- ककरौड़ श्री बबुए मिश्र क्वेलख श्री लक्ष्मीकांत मिश्र क्वेलख

श्री शिवानन्द झाककरौड़ राज झा प्रेस दरभंगा – १९२९

गोत्र प्रवर युक्त मैथिल शाण्डिल्य-शाण्डिल्यासित देवालस्रय:३ वत्स-और्व्वच्यवन भार्गवजामदग्न्यआप्लवाना:५

सावर्ण-५ -

काश्यप-काश्या वत्सारनैकध्रुवा-३ पराशर-शक्ति वशिष्ठ पराशरा-३ कात्यायन-कात्यायन विष्णु आङ्गिरस-३ भारद्वाज-भारद्वाजाआङ्गिरस वार्हस्यत्या-३ गौतम-वशिष्ठाङ्गिरो वार्हस्पत्या-३ कौशिक-कौशिकात्रि जमदग्निय:-३ गार्ग-गार्ग घृत कौशिक माण्डव्यार्थव वैशम्पायना-५ कृष्णात्रय-कृष्णामया प्लवान सारस्वता-३ विष्णुवृद्धि-विष्णुवृद्धि कौर पुञ्ध्च त्रिसदस्या-३ वशिष्ठ-वशिष्ठात्रि सांकृत्य-३ कौण्डिल्य-

आस्तिक कौशिक कौण्डिल्या-३ जातुकर्ण-जातुकर्ण आङ्गिरस भारद्वाजा-३ मौद्गल्य-मोदगलाङ्गिरस वार्हस्पत्या-३ अनाम्मकाक्ष- -

परसातण्डी-

''तत्व चिन्तामणि कारक म. म. पा. गंगेशक विषयक लेख प्राचीन पञ्जीसँ उपलब्ध"।।

पितृ परोक्षे पंच वर्ष व्यतीते गंगेशोत्पत्तिः इति प्राचीन लेखनीय: कुत्रापि

देवानन्द पञ्जी ३९-२ छादनसँ जगदगुरू गुंरू गंगेश सुताय वभनियामसँ जयादित्य सुत साधुकर पत्नी

देवानन्द पञ्जी ३३९-३ जगदगुरू गंगेश सुत सुपन दौ भण्डारिसमसँ हरादित्य दौ.।। पुत्र सुताच गोरा जजिवाल सँ जीवे पत्नी ए सुत सन्दगहि भवेश्वर। अत्रस्थाने सुपनभ्रातृ हरिशर्म्म दारिति क्वचित् जजिवाल ग्राम

देवानन्द पञ्जी ३०=५ छादनसँ उपायकारक म.म. पा. वर्द्धमान सुताच खण्डवलासँ विश्वनाथ सुत शिवनाथ पत्नी गंगेश- म.म. वर्द्धमान/ सुपन/ हरिशर्म्म

स्वाजन्यक्षत पाणि विड़न वसार्द्देवा पराधब्विना

हाक.ष्ट हरिनाथकेन गृहिणीत्यक्त्वा विशुद्धाऽपिच दृष्टवा दूव मनराएव मिथिला भूदेव वंशावली

व्याख्या पल्लव कोमलेन विद्धत तत् भञ्जिकां पञ्जिकां।। शाके श्री हरिसिंह देव नृपति भूपार्क तुल्येजनि तस्माद्दन्त मितेव्दिके द्विजगने पञ्जी प्रबन्ध कृत: तस्मात द्वैरिज वंश कलिंग सद्विश्व चक्रं पुरा तद्

विप्राय समर्पितं सुकृतिनं शान्ताय सर्वार्थिवो।।

षरयंत्री विद्वानक नामावली गुरू शिष्यक क्रमानुसार

१. महामहोपाध्याय गोढ़ि शर्म्मा २. महामहोपाध्याय माधव शर्म्मा ३. महामहोपाध्याय अड़िया माधव शर्म्मा ४. महामहोपाध्याय शंकर शर्म्मा ५. महामहोपाध्याय यज्ञपति शर्म्मा ६. महामहोपाध्याय परशुराम शर्म्मा ७. महामहोपाध्याय वामदेव शर्म्मा ८. महामहोपाध्याय पीताम्बर शर्म्मा विद्यानिधि ९. महामहोपाध्याय गोखूलनाथ शर्म्मा फनन्दह १०. महामहोपाध्याय जगन्नाथ शर्म्मा फनन्दह ११. महामहोपाध्याय वंशधर शर्म्मा राजनपुरा दरिहरा १२. महामहोपाध्याय रघुनाथ शर्म्मा फनन्दह विनिर्जित कर्ण

१३. महोपाध्याय दत्त प्र. विष्णुदत्त शर्मा परमानन्द पुरी

।।वशैटी (अररिया) मन्दिरक शिलालेख।। (महारानी-इन्द्रवती-सुरगन लोआम-राजवंशक महारानी)

वंशे सभा समाने सुरगन विदिते भूसुरास्या वतीर्णो राजा भूत कृष्ण देवो नृपति समर सिंहा मिधिस्यात्मजात: यस्मिन राज्याभिषेकं फलयितु मिवतद् भक्ति तुष्टो महेश: कैलासाद् भूगतोद्यावृयधिन सतितरां बैद्यनाथेन नाम्ना: ।।१।।

तस्य तनुज: सुकृति नृपवरो विश्वनाथ राजोभूत

विरनारायण राजास्तस्या व्याशी स्वेतस्तस्य नरनारायण राजो नरपति कुल मौलि भूषणभुम्युन्नः अर्थिन कल्पद्रूम इव सुरगन वंशा वतंसोत्सभूत ।।२।।

तस्यापि वैरि कुलसूदन रामचन्द्र नारायणो नरपतिस्तनयो वभूव संमोदिता दश दिशो निज किर्तिचन्द्र ज्योत्समेहाभिरर्दि निवह सुखितश्चयेन ॥३॥

यद्वान वारि परिवर्द्धित वारि राशि सक्रान्त किर्तिविमलेन्दु मरिचिकाभि: प्रोद्योतिता दशदिश: सतनुज इन्द्रनारायनोस्य कुलभूषण राज राज: ॥४॥

तेन् च सत्कुलोजाता तनया मनबोध शर्म्मण: कृतिन: परिणीता बहुयत्नेन स्त्रिलोचन नाद्रि पुत्रीव ॥५॥

यस्या प्रताप तरना वूदितेऽपि चित्ते चिन्तारविन्द वनमालभते विकासम्

सौहृद्य हृद्य मकरन्द च योदयेन तत्रैव यद्गुण गणा मधुपन्ति तोषाद् ॥६॥

यज्ञेर्देव गनो द्विजाति निरह: सस्तापनत्यादवे: द्र्वाने: पूर्ण मनोरथोऽर्क पटन सन्नतिभि: सज्जना: ॥७॥

गर्ज्जद वैरि मदान्ध वारण चय शतञ्च प्रता पाङ्कुरो व्र्वास्या: सर्व्वजामे कृता गुणचये यश्यास्चभूमितने ॥८॥

श्री श्री इन्दुमति सती मतिमती देवी महाराज्ञिका जाता मैथिल

माण्डराऽविधकुला म्मोधौसरौजानया: दाने कल्प लता मध: कृतवती श्री विष्णु सेवापरा पातिव्रत्य परायणाच सततं गंगेवसम्पाविनी ।।९।।

शाकाद्वेनवचन्द्र शैल धरनी सेलक्षिते फाल्गुने मासि श्रेष्ठ तरे सिता हनि सिते पक्षे द्वितीयायां तिथौ

भूदेवेर्वर वैदिके र्म्मठनपं निर्माथ सच्चिन्तिभि: स्त्रात्रे सेन्हुमती श्वरस्य विधिना प्राणप्रतिष्ठा व्यधात् ॥१०॥

सोदरपुर सम्भव राजानु कम्पालपजिविनी कृतिन: श्री शुभनाथस्य कृतिर्म्मोदं विज्ञेक्षं सन्तन्ताम ।।११।।

बीजी पुरुष (विभिन्न मूलक)

गंगौलीसँ वीजी गंगाधर ०१/०३

खण्डबला ग्रामोपार्जक साँई प्र. संकर्षण ०१/०४

एकमा वलियास वीजी धरणीधर ०१//०२

वरुआल मराढ़सँ वीजी दिवाकर ०१//०४

मंगरौनी माण्डरसँ वीजी त्रिनयनभट्ट ०१//०७

वाढ़ अलयसँ वीजी पंडित गंगाधर ०२/०७

मताओन दरिहरा सँ वीजी श्रीकर ०२//०१

सोनकरिआम करमहासँ वीजी वंशधर ०२//०५

पताउना खुआलसँ वीजी प्रजापति ०२//०९

महथौर अलयसँ वीजी वादन ०३/०७

शक्तिपालपुर नरउनसँ वीजी मनोधर ०३/०८

करुआरि सकराढ़ीसँ वीजी हरदत्त ०३/०९

सरिसवसँ वीजी रत्नपाणि ०३//०३

टकवालसँ वीजी हरिपाणि ०३//०७

अथ डोभेकरणीग्रामाय कामदेव बीजी (एकहरा वेलउँच) ०४/०३

विल्वपंचक (वेलउँच वीजी) राम ०४/०४

तेरहोत सकराढ़ीसँ वीजी गंगादित्य ०४/०८

कुजौलीसँ वीजी दान्तिय ०४//०१

रेकोरा सकराढ़ीसँ वीजी कपिलानन्द ०४//०७

पालीसँ वीजी कपिलदेव ०४//०९

अवहिवा मण्डारमसँ वीजी कुसुमादित्य ०५/०८

कुसुमादित्य सुत गंगाधर फनन्दहवासी ०५//०१

सुपरानी गंगोली वीजी म.म.सुपट ०५//०७

उचति भण्डारिसम सँ वीजी महिपाणि ०६/०१

वभनियाम सँ वीजी हरिशर्म्म ०६/०४

मेहवाल सँ वीजी माधव ०६/०७

गढ़ विस्फीसँ वीजी विष्णुशर्म्मा ०६//०२

पवौलीसँ वीजी वाचस्पति ०७/०२

जलक्योपट्टराज वासर वीजी दामोदर (जालय) ०७/०४

मन्दवाल वीजी माधव ०७/०४

गढ़निखूतिसँ वीजी त्रिपाठीरूद्र ०७/०८ तल्हनपुरसँ वीजी विष्णुशर्म्मा ०७/०८

राढ यमुगाम सँ वीजी श्रीकर ०७//०३

दरिहरा सँ वीजी कमलपाणि ०७/०४ गंगोर सँ वीजी शाश्वत ०७//०६ नरउनसँ वीजी महिधर ०७//०९ जजिवालसँ वीजी पण्डपाणि ०८/०२ मेरन्दी सँ वीजी जनार्दन ०८/०५ तिसउँत सँ वीजी विश्वम्भर ०८/०९ करहिया पनिचोभ सँ वीजी चण्डेश्वर ०८//०४ पनिचोभसँ वीजी मधुमन ०८//०७ तलिस्मा पनिचोभ घूर्जटि ०८//०८ मानिछसँ वीजी वरसेश्वर ९९/०२ टकबालसँ वीजी हरिकंठ ०९/०४ जगतिसँ वीजी जयकर ०९/०९ केउँटी राउढ़ सँ वीजी मसवास वासू ०९//०१ म्चान्दो वलियाससँ वीजी पुरूषोत्तम १०/०६ बुधवालसँ वीजी वासुदेव १०//०९ त्रिलाढ़ी घुसौत सँ वीजी नरसिंह ११/०४ रामानन्द टकवाली वीजी पाँखू ११//०१ पद्मपुर पकलिया वीजी वासुदेव १२/०५

जेजिवाल सँ वीजी अखुरी-थकमाने १२/०५ हरिअम्वसँ वीजी झाऊँ १२/०९

सुइरीसँ वीजी शेखर १२//०१ जल्लधी जालयसँ वीज वान्धव १२//०८

गाउल करमहा सँ वीजी मुरारी १३//०३ सिंहाश्रमसँ वीजी म.म.उ. हलायुध १५/०७ चोरवालसँ कराढ़ी वीजी सिद्धेश्वर १६/०२ घुसौतसँ वीजी वासुदेव १९//१० दिनाही सरिसवसं वीजी जनार्दन १७/०३ कोइयार सँ वीजी शूलपाणि १७/०८ चउँटी टकवालसँ वीजी रत्नेश्वर १७//०१

थरियासँ वीजी त्रिलोचन १७//०६ कटाईसँ वीजी वाचस्पति १८/०४ सकुरीसँ वीजी देयी १८//०४

मरद्योध टकवालसँ वीजी सुचिकर २३//०३ सतलखासँ वीजी मतिकर २४/०६ धीरपुर पनिचोभ वीजी महेश्वर २६/०५
पण्डुआसँ वीजी पाठक गोविन्द २९/०४ सुरगनसँ वीजी म.म.३. उँमापति ७२/०३ ओइमि सँ ओयनाह वीजी १२७/०६

वलियास शुक्ल हरिवंश ०१//०२ मराढ़सँ आवस्थक चन्द्रकर ०१//०५ मंगरौनी माण्डरसँ वीजी त्रिनयनभट्ट ०१//०७

माण्डरसँ अजयसिंह ०१//०९ माण्डरसँ महो वराह ०१//०९

माण्डरसँ सोढर जयसिंह ०१//१०

माण्डरसँ तक्कचिर्योय महास्त्र विद्या पारङ्गत नरसिंह ०१//०१० माण्डरसँ म.म. निधि ०२/०२ माण्डर सँ म. विभाकर०२/०२ करिअमसँ म.म. धर्माधिकरणिक मरथ ०२/०३ माण्डरसँ म.म.उ. नारायण ०२/०३ माण्डरसँ म.म. नरदेव ०२/०३ माण्डरसँ सँ म.म. उ. देवशर्मा सुता म.म.

जगन्नाथ म.म. देवनाथ ०२/०३ मिश्रनामी मिश्रगुणे मिश्र स्थितकर सदुचा. अमतू सदु. विशो म.म. उ. वटेशर ०२/०५

गढ़निखूति सँ म.म. उ. विद्याधर ०२/०६ वादअलय सँ पंडित गंगाधर ०२/०७ अलयसँ म.म. रामेश्वर ०२/०९ ततैल पण्डुआ सँ म.म. दिवाकर ०२/०९ अलयसँ म. ग्रहेश्वर म. लक्ष्मीधर म. गंगाधर ०२//०१ मताओन दरिहरासँ म. रति ०२//०३ भैयामिश्र ठकुराइन लखिमा ०२//०३ कान्हा म.म. वंशीपर, म. म. हरिवहम ०२//०५ म.म. हरिकेश म.म. धूर्त्तराज गोनू सकुराढ़ीसँ म.म. देयी खौआल म.म. उ. प्रजापति ०२//०९ खौआलसँ शर्म्मा धर्माधिकरणिक म.म. उ.हरिशर्म्मा ०३/०१ खौआलसँ गदाधर सुतौ म.म. नयपाणि महीपाणि ०३/०२ खौआलसँ म.म. रत्नपाणि दत्ता म. हरदित्य म.म. भवादित्य म.म.नयादित्य म.म. धरादित्य ०३/०४

खौआलसँ आचार्यउदयवर०३/०५ नाउन पनाइत भद्रेश्वर ०३/०८ सकराढ़ीसँ म.म. उ.कारु सुता म. गोविन्द म. स्थितिकर ०३//०२ म. जगद्धर म. हरिहर सरिसवसँ म. देवादित्य जयादित्य म. हरादित्य ०३//०४ वेलासकराढ़ी राउन मासो ०३//०९ टकवालसँ शुक्ल भिखारी०३//०९ खौआलसँ धर्मा म.म. उ. होरील ०४/०१ सुइरीसँ धर्माध्यक्षक देवे १६/०६ ०४/०२ चतुर्वेदाध्यायी कामदेव एसुता याज्ञिक परशुराम दिक्षितसोम त्रिपाठी कृष्ण महाआसँ अग्निहोनिक धनञ्जय ०४/०४ बेलउँच म.म. उ. राम ०४/०४ खण्डवलासँ म.म. थेध, म.म. मेध, म.म.

दामोदर म.म. महेश ०४//०६ मिथिलापाराज्योपार्यक

गंगोली सँ पण्डित केशव ०४//०६ पालीसँ म. दितिकर म.म. शुचिधर आचार्य लक्ष्मीकर ०५/०३ म. गुणाधर म.म. शुचिकर म. म. गंगाधर सुता म. हलधर ०५/०४ धर्माधिपरिणिक म.म. नरसिंह म.म. वाछे सुरगनसँ सर्वज्ञ आँगू ०५//०१ फनन्दहसँ गंगाधर सुत म. लखाई ०५//०२ सकुरीसँ म. नयपाणि ०५//०३ विस्फीसँ शान्ति विग्राहिक देवादित्य राजवेल्लभ भवादित्य ०६//०२ पाणीगारिक विरेश्वर वार्तिक नैवधिक धीरेश्वर सप्रवण महा

सामन्ताधिपति महामहत्तक गणेश्वर भाण्डागारिक यटेश्वर ०६//०३ स्थानान्तरिक हारुत मुद्राहस्तक लक्षपति (वामरू शुभदत्त) भाण्डागारिक जनेश्वर ०६//०४ यमुगामसँ कार्य्यी माने ०६//०५ स्थानान्तरिक हादत सुतौ महत्तक छोटाई ०६//०३ गढ़ निखूति सँ महामहत्तक सुरेश्वर ०७/०५

बहेराढ़ीसँ स्थानान्तरिक रति ०७/०५ निखूतिसँ शान्तिविग्रहिक हरिहर ०७/०६ निखूतिसँ महामत्तक जगद्धर ०७/०६ तल्हनपुर सँ शुक्ल ज्ञान ०७/०८

नरउनसँ म.म.उ. महिधर ०७//०९ जजिवालसँ शुक्ल कान्ह ०८/०३ खण्डवलासँ म.म.उ. ठाकुर रामभद्र ०८//०२ करढिया पनिचोभ राउल मासो ०८//०६ पुरोहित गोपाल ०८//०७ खण्डवलासँ महोदधि ०९/०१ खाडवलासँ कापनि माधव ०९/०३ सिंहाश्रमसँ म. दधि ०९/०७ माण्डरसँ शान्तिकरणीक पाँखू ०९/०७ पाली म. हलधर १०/०४ तिसउँतसँ पण्डित सुपाई १०/०५ वलियास म. हरादित्य १०/१० वेलउँच म. धर्मादित्य म. जयादित्य म. गयादित्य म. महादित्य म. जीवादित्य १०//०३ म. रूद्रादित्य म. मित्रादित्य म. प्राणादित्य सुइरि सँ प्रतिहस्त प्रज्ञाकर १०//०११ बुधवाल सँ भानुकर ११/०१ बुधवाल सँ गंगेश्वर ११/०३ उदनपुर जजिवाल आवस्पिक माने ११//०१ टकवालसँ एकार्तिक गोपाल ११//०२ दरिहरासँ म. म. रतिपति म. रामपति म. ज्ञानपति ११//०४ दरिहरासँ म.म. सुरपति म.म. इन्द्रपति म.म. घृतिपति ११//५

दरिहरासँ म. कीर्तिशर्म्म म. प्रतिशर्म्मा म. हरिशर्म्म ११//०६

उदनपुर जटिवाल आवस्थिक माने १२/०६ बेलमोहन नरउन कार्य्यि गंगाधर १२/०८ हरिअमसँ दिक्षित झाउँ याज्ञिक त्रिलोचन १२/०१०

वरूआली माण्डर म.म. उ. शंकर १२//०१० जालय म.म.उ. रामेश्वर

सुता महामहत्तक

गणपति महामत्तक रतिधर सदु. उपा. महिधर १२/११ एकहरासँ स्थानान्तरिक सुधाकर १३/०३ दरिहरा कविराज सिरूर १३//०४ राजगुरू भद्रेश्वर १३//०९ खौआलसँ म. साधुकर सुत म. सुधाकर १४/०५ सकराढ़ीसँ म.म. उ. हरिहर सुता स. नादू म. भादू स. चाड़ोका १४/०७ सरिसवसँ म.म. जयादित्य १४/०७ पवौली म. गंगापर १४//०३ पालीसँ प्र गौंढ़े १४//०४ खौआलसँ म.म. उ. बुद्धिकर १४//०५ दरिहरासँ म.म. हरिदेव १४//०९ दरिहरा लौरिक विश्वम्भर १५/०१ सिंहाश्रम सँ म.म. हलायुध म. दधि म. जाई म. महिधर १५/०७ सोदरपुर म.म. हल्लेश्वर, म.म. सुरेश्वर म.म.जीवेश्वर १५/०७ सोदरपुरसँ म.म. उ. योगीश्वर १५//०२ म.म. ग्रहेश्वर १५//०३ सोइमि धर्माध्यक्षक गढ़ाउन १६/०३

खौआलसँ धर्माध्यक्षक लभशर्म्म १६/०६ खौआल सँ पनिहाते नोने १६/०७ शाण्डिल्य गोभे करमहा वीजी सुरेश्वर अहपुर १६//०६ महार्णव कारक म.म. उ. नारायण १६//०६ खनौरी सकराढ़ी सँ धर्माध्यक्षक सर्वानन्द १६//०९ घुसौत सँ म.म. उ. वासुदेव १९//०१० खण्डवलासँ म.म. उ. मधुसूदन म.म. उ. भवदेव

म.म. उ. कामदेव २०//०८

गढ़विस्फीसँ महत्तक होराई १७/०७ पनिचोभ म. सुपे १७//०३ जजिवालसँ आवस्थिक सिद्धेश्वर १७/०३ विनतीसँ पराक अच्युत १७/०९ माण्डरसँ म. पशुपति म. रघुपति म. रतिपति १८/०३ कराईसँ कवि केशरी म. म. उ. भीम १८/०७ गदनिखूतिसँ महाम्महन्तक सुरेवश्वर ७/०७-१८/०७ माण्डरसँ म. गुणपति म. शिवपति म. इन्द्रपति १८/०९ सोदरपुरसँ म.म. सरवए म. म. विश्वनाथ १८/०९ अलयसँ म. ग्रहेश्वर १८//०१

कर्माधिकरणिक म.म. उ. गदाधर १८/०४ सकुरीसँ म.म. उ देयी १८/०४ खण्डवलासँ म.म. ठ. रामदेव म.म.३-६ रतिदेव म.म. ठ. कृष्णदेव म.म. लक्ष्मीदेव १८/०८ खौआलसँ ज्यो. डी उ.र २१/०१ पाली सदुपाध्याय गोदे २१//०२ खौआलसँ कवि कीठो प्र. कृष्णपति २१//०५ नड़ुआर करमहा म. हरिपति उँमापति म. ज्ञानपति २१//१० छादनसँ तत्व चिन्तामणि कारक जगद्गुरु गंगेश २२/०१ सोदरपुरसँ म.म. रविनाथ म.म. रघुनाथ म.म. लक्ष्मीनाथ २२//१० सोदरपुर सरिसव म.म. जीवनाथ म.म. भवनाथ

(अयाची) म.म. देवनाथ २२/११ सोदरपुर सरिसव म.म. शंकर म.महादेव, म.

भासे. म. द. से २३/०१ सोदरपुर सरिसव म. गदाधर, म. गोविन्द म. हरखू२३/०२ खौआलसँ म.म. देवादित्य २३//०४ पबौली सँ सदुपाध्याय शिवदत्त २४//०१ पुड़ेनरउन सदु. जीवनाथ २५/०१ हरिअम्वसँ मीमांशक विभू २५//०९ माण्डरसँ म. सागर सुता सदु. जीवे महामहत्तक जोर २६/०३ माण्डरसँ सदुपाध्याय विशो २७//०३ सरिसवसँ दौ होरिल २७//०५

बेहट करमहासँ सदु. राघव २७//०६ पनिचोभसँ फलाहारी दिनकर २७//०८ रैयाम सोदरपुर मीमांसक माधव २७//०८ वलियाससँ पनिधोध सुधाकर महिधोध युमंध २८/०३ एकहरासँ मीमांसक रुद्र धर्माधिकारणिक वादू

राज पण्डित गढकू २८//०६ घोसोतसँ म.म. प्र. केशव सुता म. भा गोविन्द २९/०५ घोसोतसँ म.म. गोविन्द सुता म. लक्ष्मीधर म.म. विद्यापति म.म. दामोदर म.म. रामनाथ. आगमाचार्य देवनाथ तर्काचार्य गोपीनाथ कन्टकोकारकारक म.म. मधुसुदन म.म. जनार्दन २९/०७ एकहरा सन्यासी काशी २९//०१ पण्डुआसँ म.म. पाठक गोविन्द २९//०४ पण्डुआ सदु. हरि सदु. विष्णु सदु.डालू

सदु.धीतू २९//०९ पण्डुआ म. मनोधर २९/०९ पण्डुआ पाँ गुणाकर (१३२६ ई.) २९//०९ पण्डुआ पाँ प्राणधर ३०/०१ पाँ आनन्दकर पाँ कान्ह पाँ माधव पाँ केशव पाँ नारायण ३०/०१ पाँ रामधर पाँ रत्नधर पाँ शुभंकर ३०/०१ पाँ सूर्यकर पाँ विभाकर ३०/०१ सकराढ़ी सदु. सुपे ३०/०२ फाहा बुधवाल म.म. रामदेव ३०/०८ करमहा म.म. रतिधर सुता म. कुलपति सदु.

पशुपति विष्णुपुरी ख्यात ३०//०२ म. रमापति म.म. मिथिला राज्योपार्जक उदयपुर राजस्थान महाराजक राजगुरु म.म.महेश, म.म.रामचन्द्र म.म. ठ. गोपाल राजर्षि ज्योतिर्विद धर्मशास्त्रवेत्ता ३०/०६ खण्डवलासँ अग्निहोत्रिक म.म. विश्वम्भर ३२/०७ जगतिसँ मिमांशक म.म. मिरुस ३५/०६ बुधवाल सदुपाध्याय मणि ३६/०७ पुड़ेनरउन ज्यो. रामनाथ ३६//०५ माण्डर सँ वैदिक विश्वम्भर ३८//०९

घुसौतसँ जगदगुरू म.म. सदानन्द ३९/०४ फनन्दहसँ महोगोढ़ि ४१/०३ फनन्दहसँ सन्यासी रुचि सदु.पा मुकुन्द म.

काशी अहोतिकार ४१/०४

फनन्दहसँ म.म. रामभद्र ४१/०६ फनन्दहसँ म.म. रामरूद्रसुता पंडित राजपदांकित

म.म. मधुसूदन विद्यानिधि राजपदो वैद्यानाथ म. उमानन्द म. बागीश त्रिदण्डी सन्यासी कारक म.म. रतीशा ४१/०८ भखरौली सकराढ़ी सदुपा. गोविन्द सुत सदु. गदाधर ४१//०२ सदुपाध्याय श्रीकान्त ४१/०४ फनन्दह गोशाई मदन ४१/०८ समौलि पाली परमगुरू पदाँकित म.म. वाचस्पति ४२/०२ फनन्दहसँ गोशाईं सदु. बलदेव सुत गोशांइ जीवनाथ ४२//०१ एकहरासँ कनिकंठाभरण पदांकित वाचस्पति ४२//०४ सोदरपुरसँ ढाका कवि गणपति ४३//०३ वलियास सँ वेणीसुत श्रोत पल्लव धीरू ४४/०१

पालीसँ परमगुरू वाचस्पति सुता म. वेणीनायक म.रघुनाथ म.म. पा. नरहरि ४५//०४ माण्डरसँ यदुनाथ म.म. उ. पद्मापति परहर सकराढ़ी सँ म.म.उ. रामभद्र सुता म. भवदेव म.म. ज्योति. यदुनाथ कविन्द्र पदों म.म. रघुनाथ ४६/०१ रांगोर भंगतिया राजन ४७//०९ करमहा वैष्णव केशव ४९/०२ खण्डबला पौलन्द्र मणि ४९//०७ मंगरौनी पाली पाँ मोहन ५०//०३ पाँ धनेश ३१/०५ माण्डर शंकरसुत म.म. सुत जगन्नाथ ३१/०६ सोदरपुरसँ खोतर सुत म.म. माधव सुता म. भगीरथ म. रमापति ५२/०९ मंगरौनी पाली पाँ धनेश ५२//०१ सरिसव सँ पौवार ५२//०५

सरिसवसँ पाँ भवदेव ५२//०७ सरिसव सँ डीङरसुत पाँ केशव ५३/१० दरिहरासँ बसाउन सुत म. जगन्नाथ ५३//०४ अलयसँ माधवसुत म. राघव ५३//०८ बेलउँच सँ वंशमणि सुतकविकालीदास ५४//०६ वलियाससँ कविशेखर चन्द्रनाथ ५५/०२ कुजौलीसँ म.म. गोपीनाथ म.म. रघुनाथ ५५//०३

माड़नी वलियास पंडित राज पदांकित रघुनन्दन ५५//०७ सोदरपुरसँ रसमंजरी कारक कविभानुदत्त ५५//०१० बहेराढ़ी सँ भानुकर सुत म. रूचिकर ५७/०३ बहेराढ़ी सँ प्रज्ञाकर सुत दशावधान पदांकित रत्नाकर ५७/०४ बुधवालसँ भवानीनाथ सुत म.म. रघुनाथ ५८/०४ फनन्दह सँ म. लक्ष्मीधर ५८/०७ पालीसँ रतनूसुत पाँ रतिधर ५८//०४ वलियाससँ महो ओहरि ५८/०८ अलयसँ रघुसुत महोपराऊँ सुता ५९/०१ म. पशुपति म. रघुपति सोदरपुरसँ देवेसुत म.शक्तू म. जगतू म. मगतू म. मति. ५९/०६ वलियास सँ विश्वनाथ सुत मिरियाएल यदुनाथ ५९//०४ समौलि पालीसँ म.म. रघुनाथसुता म. रामदेव म.कामदेव

म. महादेव म. रतिदेवा ५९//०७ वलियास मिश्र राघव सुता म. हरि कृष्ण म. राम कृष्णा ६०/०२ वलियास सँ जगदीश सुत कविमणि पदांकित पशुपति ६०/०४ माण्डरसँ नरपति सुत म. जनार्दन ६०//०४

गंगोलीसँ शोरे सुत म. काशी सुत म.म. प्रितिनाथ ६०/०६ बेलउँच जयकृष्ण सुत ज्योति. वाछाप्र. परशुराम ६१/०१ पालीसँ नालूसुत म. रामदेव म. यशोधर धर्माधिकरणिक म.म. नरहरि ६१/०४/५ पबौलीसँ म. वेणी ६१//०८ पालीसँ म.म. नरहरि सुता म.म. माधव २ केशव

२ नारायण म. विष्णु म. श्रीराम ६२//०१/२

पालीसँ माधवसुत म.म.वर्द्धमान ६२//०४ सोदरपुरसँ धनेशपौत्र गोपीनाथसुत सदु. बालकृष्ण ६२//०६ खौआलसँ गुणे सुत म.म. रूचि ६२//०७ पालीसँ कुलपति सुत चतुरकवि पदां. म.म. यदुनन्दन ६३/०६ पण्डुआसँ पाँ लडावन नै. बुद्धिकर सुत पाँ होरेश्वर सुता म.म.उ. महाजन म.म. उ.लान्हिदत्तपुत्र दामोदर

म.म. पुरूपत्तिम ६४/१-२-३

पाँ सदु. हरिदेव- पण्डुमासँ पाँ रतिदेव पाँ रामदेव पाँ रघुदेव ६४/०४ सोदरपुरसँ म.म. जोर ६४/०५ पण्डुआसँ पाँ भगीरथ पाँ हरिश्वर या मथुरेश

पाँ देवकीनन्दन ६४/०७ पण्डुआ पाँ वंशीधर ६४//०१ पनिचोभसँ म.म. जानूसुत म.म. हरिनाथ ६४//०१ पनिचोभ सँ म.म. हरिनाथ सुता म. शिवनाथ म. विश्वनाथ बुद्धिनाथ म. रतिनाथ म.म. दानीनाथ म. काशीनाथ म. देवनाथ६४//०२ पनिचोभसँ म. शिवनाथ सुत कविशेखर पदांकित

शतञ्जीव ६४//०३ विस्पीसँ म.म. जयदत्त सदु. किर्तिदत्त कविकोकिल राजपण्डित म.म. उ. विद्यापति ६४//०५-६ पण्डुआसँ पाँ अच्युत ६५/०१ पण्डुआसँ पाँ वासुदेव पाँ रामकृष्ण ६५//०५ धोसोतसँ गरूड़ध्वज म.म.उ. रघुनन्दन ६५//५

पण्डुआसँ सदुपाध्याय धीतू ६५/०६ सोदरपुरसँ म. रतिपति

६६/०८ दरिहरासँ म.म.उ. गणपति ६६//०४ सोदरपुरसँ हरिखूसुत पाँ रामदेव पाँ रतिदेव पाँ

केशव पाँ कृष्ण ६६//०५ दरिहरासँ बाबू सुत कवि भोरा प्र. हरपति ६७/०२ सकराढ़ीसँ रतिनाथ सुत पाँ अर्जुन पाँ माधव पाँ कांगा ६७/०४ वलियास सँ कविमणि पशुपति सुत महावल काशीनाथ ६७/०८ सरिसवसँ आचार्य बागू ६७//०१ बहेराढ़ी सँ अलंकार सुत पौगोनू ६७//०८ पनिचोभसँ बुद्धिनाथ सुत कवि रामदेव ६८/०१

दिघोयसँ जयदत्त सुत धर्माधिकरणिक भट्टजीवे ६८/०५ दिघोयसँ पार्णागारिक जानू दत्त ६८/०५ सोदरपुरसँ गोनू प्र. हेमाङ्गदसुत ज्यो. उँमापति

वैया भैरवदत्त ६८//२ बेलउँचसँ वासुदेव सुत म.म. रविनाथ ६८//०६ पाँडाअँसँ भगीरथ सुत पाँ जपशिव पाँ पशुपति धीरेश्वर ६९/०३ जमदौली पालीसँ ज्यो. जीवनाथ सुता ज्यो उँमानाथ ज्यो चिकू प्र.

रूपनाथ ज्यो. जीवनाथ ज्यो. श्री कृष्ण ज्यो. श्रीराम ६९//०२ माण्डरसँ प्रसाद शुभंकर ६९/०१ जमदौली पालीसँ ज्यो. श्रीनाथ सुता ज्यो. गुणानन्द ज्यो. लक्ष्मीकांत ज्यो हेमाङ्गद ज्यो. बछरू ६९//०४ ६९//०६ ओइनिसँ महाराज धीरसिंह ७०/०७ माण्डरसँ उधे सुत कवि चिकू ७०//०३ सरिसवसँ सदु. गोविन्द सुता म. बाबू प्र. सुधाकर

पाँ. रामदेव पाँ दामोदर ७१/०९ सरिसव सँ पाँ दामोदर सुत पाँ कविपति ७१//०७ सरिसवसँ विश्वनाथ सुत पाँ जयशिव पालीसँ गोविन्द ७१//०२ पालीसँ चिकूसुत पाँ गोविन्द पण्डुआसँ पाँ मिसर ७१//०२

पण्डुआसँ जनार्दन्सुत म.म. उ. गोपाल पाँ मिसर ७१//०२
पण्डुआसँ पाँ मिसर सुत पाँ श्रीधर पाँ श्रीनाथ ७१//०२ सरिसव सँ पाँ जयशिवसुत पाँ बलभद्र पाँ भैयन ७१//०३ सुरगनसँ म.म.उ. ऊँमापति एसुता म.म. उ. उग्रपति ७२/०३ एसुतो म.म.उ. प्राणपति एसुतौ म.म. तोषपति

एसुतो म.म.उ. विश्वपति ७२/०४ सुरगनसँ आभीसुत कुल क्षेत्रो पार्जक राउराज थामे ७२/०५ सुरगन सँ चातुर्द्धरिक महाराज समर सिंह ७२/०७ सुरगनसँ महोज्योतिर्विद खञ्ज कृष्णदेव रूपराय दौ. हरिदेव ७२/०८ सरिसवसँ पाँ नेनू ७३/०५ पनिचोभसँ राजम प्र. हरपति सुत म. वाचस्पति म. रघु ७४//०३ खौआलसँ कमल सुत म. गुणाकर वैदिक पिताम्बर ७५/०४ वभनियामसँ गोविन्द सुत पौराम ७५/०५ राधेपुरूष लक्ष्मीपाणिसुत म. गोपाल म. श्रीराम क्षेत्र वास्तु पदांकित

म.म. जगन्नाथ ७५/०६

महिषीपाली लक्ष्मीदेव सुत वैया अमृतनाथ ७५//०८ बुधवालसँ रघुसुत म. परान७६/०१ माण्डरसँ म.म.उ. अनिरूद्ध ७६/०८-४०//०३ नरउनसँ परभूसुत सप्रक्रयनाथू प्रचण्ड राय पौखू

अग्निराय पदां. किताङ्गोपी ७६//०४ सरिसवसँ रूचिनाथ सुत म.म.उ. वामदेव ७६//०५ सरिसव सोदरपुरसँ रामचन्द्र सुता म. रघुपति म.रतिपति म. धर्मपाल ७७/०१ सरिसव सोदरपुरसँ म.म. रति पति सुत म.म. रामेश्वर म.म. रमाकान्त सदु. घनश्याम ७७//०६ पालीसँ दामूसुत म. मणिनाथ ७९/०३ पालीसँ नैष्ठिक धरानाथ ७९/०६ खौआलसँ अमरूसुता भाऐं ठो म. दामू म. पाँखू ७९/०७ नरउनसँ सरस्वती राम ७९/०९ नरउनसँ म.म. हरिश्वर अवलम्ब सरस्वती पदां.

म.म.उ. नरेश सुत सरस्वती राम ७९//०२ धकहरासँ भाष्कर सुत म.

शिवदेव ८०/०१ कुजौलीसँ कृष्णादाश सुत कविगंगादाश म.म.

गोविन्द दास ८०/०८ माण्डरसँ रंजनसुत पाँ हराई ८०//०५ सोदरपुरसँ म.म. जयदेव प्र. पसधर सुत म.म. माधव ८१//०८ हरिअम्बसँ भवदेव सुत म. महाजन ८२/०७ हरिअम्बसँ म. महाजन सुत म.म. शिवनाथ ८२/०९ घुसौतसँ म.म. कृष्णानन्द ८२//०५ हरिअम्बसँ बुद्धि श्रुतिधर पदांकित हरिदेव बुद्धि

श्रुतिधर पदां रघु. ८२//१० पालीसँ रमापति सुत पल्ल्वकार पदांकित भवनाथ ८३/०१ खण्डबला सँ पाँ ठ. कमलमणि ८३/०६ दरिहरासँ गोपालसुत वै. जीवनाथ वै. विधू प्र. देवनाथ ८३/०७ दरिहरासँ वै. यदुनाथ ८३//०३ सरिसवसँ मोहनसुत सदु. साहेव पाँ घनश्याम८३//०९ सरिसवसँ सदु साहदेवसुत पाँ भानुदत्त ८३//०११ कटैया पाली पाँ गोविन्द सुत पाँ वदसुत पाँ भगीरथ ८३//१० सल्हवी नरउनसँ हरिसुत कवि कृष्ण ८५/११ माण्डरसँ रति दो सुत म.म. रघुनाथ म. शुभंकर ८५//०३

डुमरा बुधवलासँ गोपीनाथ सुत म.म. घनश्याम ८५//०६ सिंहौलि माण्डरसँ वैदिक विश्वम्भर सुत म. कुलपति म.चतुर्भुज ८६/०२ करमहासँ रामदेव सुत दिवान भोरानाथ ८६/०६ बधवास सरिसव पाँ छोटाई पाँ रघुनाथ पाँ

कमलापति पाँ धरनीधर ८७/०२-४ करमहासँ देवनाथ सुत कवि विद्यापति ८७/०९ सोदरपुरसँ पाँ रतिदेव सुत पाँ मणिपद ८७//०२ वधवास सरिसवसँ पाँ धरिणीधर सुत पाँ शिवरत पाँ मैयन पाँ दिवाकर८७//०५ रैयाम सोदरपुरसँ पाँ शिवदेव ८९/०९ हरिअमसँ अनन्तसुत माँङ रघुपति ९०/०३ कन्होली सोदरपुर भवेश सुत कवि कृष्णा दत्त ९०/०५ भाड़नी वलियास रघुनन्दनसुत अभिनव पंडित राज पदां राय शंकर ९०//०४ पबौलीसँ

जीवनाथ सुत वैया. राम   ९०//०८ नडुआल माण्डर सँ अनिरूद्ध सुत म. हेमकर   ९१/०५ रूचौली करमहासँ नरोत्तम सुत म. उ. नन्दन म.म.

रामेश्वर सदु. हरिश्वर   ९१/०९ म.म. रामेश्वर सुता म.म. गंगादत्त म.म. लक्ष्मीदत्त सुबोध   ९१//०६-७

म.म. लक्ष्मीदत सुता म.म. जगद्धर म.म. श्याम प्र. रूद्रधर ९१//०८
खण्डबलासँ म.म. महेश सुत म.म. महाराज शुभंकर   ९२/०३
म.म. शुभंकर सुत म.म. रघुराम   ९२/०३ पुदे नरउन सँ राय रघुदेव पदां मोहन   ९२/०४ सुल्हनी नरउनसँ महिपाणि सुत सरसकवि कुलपति   ९२/०६ सिंहौलिमाण्डर रूद्र हरपति   ९२//०२
भौर खण्डबलासँ गोपालसुत ज्यो. हेमाङ्गद   ९३/०२ मलियाम नरउन सँ भवदेव सुत सदु. शधर   ९३/०३ कन्होली सोदरपुरसँ स्वयं पाधी यदुनाथ   ९३/०४ माड़रि वलियाससँ सदु वुढ़व   ९३/०८
मंगरौनी पालीसँ यशोधर सुत म.म.सदु. पाँ रमापति ९३//०५ पवौलीसँ चाण सुत कविमोलन   ९४/०२ खांगुड सरिसव सँ पाँ महिपतिसुत पाँ हेमाङ्गद पाँ हिरेश्वर

९४/०६-७

बेहट करमहासँबनाईसुत कविमहिनाथ कवि   ९४//४
कविजयकृष्ण सुत सदु जगन्नाथ ९४//०६

बेहट करमहासँ सदु. जगन्नाथ सुता कवि वेणीदत्त महोदार रमादत्त ९४//०८ दरिहरासँ रघुनाथ सुत म. माधव वैदिक विरेश्वर ९५/०६ खण्डवलासँ म.म. ठ. विश्वम्भर सुत म.म.

विश्वनाथ म.बालकृष्ण   ९५//०९ खण्डवलासँ म.म. ठ. रघुराम म.म. ठ. परशुराम

म.म. शिवराम   ९६/१ दरिहरासँ म. माधव सुत वैदिक

भगीरथ ९६/०९ दरिहरासँ वै. भगीरथ सुता सदु. आनन्द वै. नित्यानन्द दिवान जयानन्द ९६/०१ रजौरा माण्डरसँ भवेश सुत म.म. वामदेव सरिसवसँ रुचिसुत पाँ कारी ९८//०२ दरिहरासँ म.म. बन्धु ९८//०४ दरिहरासँ भिखारीसुत वै. विश्वनाथ १००/०२ विविध विरूदाबलि विराजमान मानो सुत माना प्रतिज्ञापद पाँ. विवेक परशुराम समस्त प्रक्रिया विराजमान महोग्रप्रताप मिथिलालंकर महाराजाधिराज १००//०२ खण्डबलासँ मणिनाथसुत म.म. रूपनाथ कविश्यामनाथ १०१/०९ सरिसवसँ पाँ देवकीनन्दन पाँ उँमाइ १०१//०४ सरिसवसँ पाँ होरील १०२//०५ पालीसँ धौंधेसुत कवि कृष्णपति १०३//०१ दरिहरासँ कीर्तिनाथ सुत वैदिक धननाथ १०३//०३ मलिछाम नरउनसँ भवदेव सुत ज्यो. नरेश सुत

पौराणिक मनबोध १०३//७-८ सरिसवसँ कृष्णपति सुत पाँ लक्ष्मीपति पाँ हरिजीव १०३//०९ सरिसव सँ पाँ हरि श्रीकान्त पाँ बदनू सुत पाँ लक्ष्मी पति १०४/०१ अनलपुर कामहासँ रमानन्दसुत सर्वज्ञान म.म. बालकृष्ण सर्वज्ञ

सरस्वती पदां. म.म. रूचिपति पण्डित राज पदां.

म.म. रतिपति १०४/०२ दरिहरासँ रामसुत वैदिक भगीरथ गण पजियाड़

सोने प्र. रमापति १०४/०७ हरिअमसँ म.म. सचल प्र. भवानीरत वैया म.म. मोहन १०४//०५-६ पुडेनरउनसँ गंगादत्त सुत वैया राधानाथ १०६//०५ परियाम्ब वुधदानसँ मोहन सुत कवि कृष्णानन्द १०७/१०

सरिसवसँ पाँ वावूसुता पाँ हृषिकेश पाँ नारायण

पाँ राधादित्य १०९/०२

सरिसवसँ गोविन्द सुत पाँ गदाधर १०९/०८ नाहस खौआल गोशाँइ

सुता ज्यो. ह्रदयदत्त पाँ.

राम म.ईश्वरदत्त म. नेनमणि १०९//१६ सरिसवसँ भवदेव सुत पाँ लक्ष्मीपति १०९//०८ मंगरौनी पालीसँ भिखूसुत उपाध्याय रमापति पाँ बधाई ११०/०५ मंगरौनी पालीसँ उपा. रमापति सुत पाँ धर्मङ्गद ११०/०६ पाँ धर्माङ्गद सुता पाँ हिरा पाँ मोती पाँ अधारी ११०/०६ पालीसँ पाँ मोती सुत पाँ वेणीमाधव ११०/०८ एकहरासँ माधवसुत सन्यासी काशी ११०//०३ खण्डबलासँ शुभंकर सुत महोग्रप्रताप पुरूषोत्तम ११०//०४ सकराढ़ीसँ नकटू सुत वैदिक चन्दरक्त ११०/१० करमहासँ राघव सुत ज्यो. नीलकंठ १११//०१ पालीसँ गोशाँइ विश्वेवर १११//०२ पबौलीसँ रंजन सुत पाँ हरिसेन ११२/०९ माण्डर सँ मेधापतिसुत वै. च्छपति ज्यो. बतहा ११२//०७ माण्डर सँ वै. अच्छपति सुत वैदिक जीवपति ११२//०८ सोदरपुरसँ म. वाराहनाथ ७८/०१ ११२//०२-०४ नरउन सँ सरसकविकुलपति सुत वाँका उमानाथ ११३//०२ माण्डर सँ विद्यी सुत उपाध्याय काशीनाथ ११३//०५ बेहट करमहा सँ कृष्णानन्द सुत कविधर्मानन्द ११३//०६ पबोलीसँ कृष्णपति सुत सर्वज्ञान गारीद ११४/०९ माण्डरसँ शोभाकर सुत पाँ हियन सुता सदु. भोलानन्द ११४//०१ पाँ. दयानाथ पाँ भवनाथ माण्डरसँ हरिशिव सुत दरोगा ह्दयनन्दन ११५//०४ खण्डवलासँ मिथिलाराज कुलभूषण वाबूतुलापति सिंह ११६/०२ गंगोरा बुधवाल सँ देवकृष्ण सुत म.देवनाथ सुत

म.म. कृष्णदत्त ११८/०६ खण्डवलासँ मिथिलेश्वर नरपति सुत सर्वस्वदाता

वाबू धर्मकर्मदता ११८//०७ बाबू नन्दन सिंह शौर्यार्जुन ठ. ठाकुर सिंह ११८//०८ पुड़ेन नरउनसँ जनार्दन सुत म. लोकनाथ मंगरौली पाली पाँ. हिरा सुत पाँ. मनबोध १२०//०२

खण्डबलासँ जगतसिंह सुत म.म. कृष्णसिंह १२०//०३

कन्हौली सोदरपुर रामेश्वर सुत वैया. परमेश्वर १२१/०१

सरिसवसँ भवानीनाथ सुत पाँ विश्वनाथ १२१/०३ पण्डुआसँ पाँ हरिश्वर सुत पाँ कृष्णपति पाँ

बोध, पाँ कुढ़ाई १२१/०७ सरिसवसँ दशरथ सुत पाँ हेटू सुत पाँ. चाण १२१//०१ वलियाससँ भवेश सुत म.म. सीना तरौनी करमहासँ दुखन सुत ज्यो. कलानाथ १२२/०३

रूपौलि करमहा सँ महोपाध्याय लान्हि १२२//०१ पबौलीसँ शुश्री सुत वैया. मनसरण १२२//०२ सोदरपुरसँ वैदिक होरी सुत वै. कुलमणि वै. वंशमणि १२३/०८ पालीसँ महोजगर्द्धर १२३//०१ सोदरपुरसँ म. जयनाथ १२३//०४ माण्डरसँ गोखूल म.म. उ. चन्द्रकर१२४/०२ सरिसवसँ धर्मपति सुत पाँ कमलनयन १२४//०६ पण्डुआसँ पाँ पशुपति सुता पाँ नन्दीश्वर पाँ

विकूप्र रमानाथ १२४//०७ पाँ नन्दीश्वर सुता पाँ चाण पाँ गरीव पाँ भैया १२४/०८ सकराढ़ी सँ पाँ गोनू १२५/०१ जगौर माण्डर सँ सुभान सुत नवलसाधिपति मातक १२६/०६ ओइनि सँ राज पण्डित कामेश्वर १२७/०६ ओइनि सँ कुमर मतिदर सुत राजा हरिसिंह १२७/०४ दरिहरासँ बलभद्र सुत कवि रामभद्र सुतक कविशंकर १२८/०२३ बलियास सँ धराधर सुत म.म.उ. मिरिदत्त १२८//०२ हरडी सकराढ़ीसँ म.म. हरिहर सुता सदु. नान्द प्र. नन्दीश्वर सदु भद्रेश्वर प्र. भादू सदु. सूपे सदु. चांड़ो १२८//०४ सरिसवसँ म. जयादित्य १२८//०५

सकराढ़ीसँ डालू सुत पाँ कुलपति १२८//०६ हरडीसँ कराढ़ी सँ पाँ वेणी सुत पाँ रामभद्र १२६//०७ हरहरिसँ करादीसँ पाँ नरपति सुत पाँ जगन्नाथ १२८//०७ पाँ रघुनन्दन पाँ कमलनयन सरिसबसँ

म.ब. भैयन १२९/०१ फनन्दहसँ म.म. रतीशसुत म.म. इन्द्रभान १२९/०३

सतलखासँ पुरन्दर सुत म.म. बच्चू. १३०/०१ पबौलीसँ रघुनाथ सुत कविहट्ठी १३०/०३ करमहासँ रतन पतिसुत वैया. हरपति १३०/०६ कटका सोदरपुर सँ अच्युत सुत कवि महिनाथ १३१/०३ सोदरपुरसँ लक्ष्मीनाथ सुत म.म. दामोदर १३१//०१ अलयसँ हचलूसुत म. ज्ञानपति १३१//०१ अनलपुर करमहासँ चित्रधर सुत म. गौरीदत्त वैया. रज्जो पाँ. नेया प्र. हेमनाथ वैयाऋदि पाँ राम १३२//४ खौआलसँ भूषणसुत कवि हेमनाथ १३४/०६ रूचौलिए कटरा सँ कविनन्दन सुतो ज्यो. हरिश्वर १३४/०८ रू. एकहरासँ ज्यो. हरिश्वर सुत म.म. ज्यो. गुणीश्वर म.म. वृन्दावनचन्द्र १३४/९ जमरौली पालीसँ ज्यो. चिकू प्र. रूपनाथ ज्यो. (भूवदानन्द कुमुदानन्द परमानन्द) १३४//०१

ज्यो. कुमुदानन्द सुत ज्यो सोनमणि १३४//०२ ज्यो. सोनमणि ज्यो. मनबोध ज्यो. भैयन कविलाल १३४//०४ करमहासँ हेमकर सुत वैया. रामनाथ १३४/०५ करमहासँ हेमकर सुत वैया. रामनाथ १३४//०५ बहेराढ़ीसँ प्रद्यूम्नसुत सदु. रामेश्वर १३५/०२ पण्डुआसँ पाँ. रतिदेव सुत पाँ हाड़ी १३५/०९ बलियाससँ धराधर सुत वैया. खुशिहाल १३५//०१ पालीसँ ज्यो. परमानन्द १३५/०४ खण्डवलासँ मोहन सुत कविगंगाधर १३६/०४ पण्डुआसँ पाँ श्रीधर १३६/०९ पबौलीसँ कवि जीवनाथ १३६/१० करमहासँ केशव सुत कविन्द्र पदां. रतिदे १३६//०६ दरिहरासँ भगीरथ सुत गिरमिटिया रमाकान्त १३७/१० सरिसवसँ मधुसूदन सुत पाँ. पशुपति १३८//०८ पालीसँ ज्यो. उमानाथ १४०/०२ तोधरा नरउनसँ विश्वनाथ सुत कवि जामू १४०//०८

डी.वी.डी.क तालपत्रपर लिखल मिथिलाक्षर अंक डायरेक्ट्रीक सोझाँक अंकमे अछि। एहि पोथीक मिथिलाक्षर अंकन जाहि दस हजारसँ ऊपर तालपत्र/ बसहा पत्र/ आधुनिक कागजपर लिखल मिथिलाक्षर पञ्जीक ४०० वर्षसँ ऊपर पुरान पाण्डुलिपि मध्य वर्णित साढ़े पन्द्रह सए वर्षक (४५०-२००९ ए.डी.)क जीन मैपिंग वर्णित अछि।डिजिटल इमेजिंगक समस्त फाइल डी.वी.डी. पर एहि पोथीक अनुलग्नक रूपमे मात्र एक हजार भा.रु.मे जिज्ञासु पाठकक लेल http://videha.co.in/pothi.htm पर अलगसँ उपलब्ध अछि। पुस्तकक कारण आवरण देवानन्द प्रसिद्ध छोटी झा पञ्जीकारजीक हस्ताक्षर जे १७६६ केर अछि, केर सेहो प्रयोग भेल अछि आ हुनक पितामह पञ्जीकार रघुदेव झाक लिखल माण्डर मूलक पोथीक प्राचीनतम डिजिटल इमेजिंग सेहो अछि।

पोथीक टंकणक लेल मोहतरमा नाजरीन, मोहतरमा जीनत, श्री प्रदीप आ श्री अजय आ प्रूफ-रीडिंग लेल श्रीमती रचना डोगरा, देवेश वर्मा आ राकेश रंजनकेँ धन्यवाद दैत छियन्हि। एतेक कम समयमे आ मोटा-मोटी अशुद्धि रहित परिणाम बिना हिनका लोकनिक सहयोगक सम्भव नहि छल। डिजिटल इमेजिंगक गुरुतर कार्यमे श्री उमेश कुमार महतो, बहादुरगंज, जिला किशनगंज, केर योगदान शब्दमे करब सम्भव नहि अछि। अन्तिम प्रूफकालमे श्री आशीष चौधरी, गाम चरैया, जिला अररियाक योगदान भेटल।

पाठ-प्रवेश:जीन मैपिंग (४५०-२००९ ए.डी)

शाखा पुस्तक देखबाक अवगति :शाखा पुस्तकमे सभसँ पहिने - वर्णाक्रमसँ अ सँ ऐ धरिक पातमे पत्र पञ्जी अछि। जकर विषय थिक कतेक गोत्र- गोत्रक अधीन कतेक मूल, मूलक विभेद मूलग्राम ओ तकर- ताहि मूलग्रामक अछि पुरुष। खण्ड १ मे शाखाक विस्तार अछि, प्रारम्भ भेल अछि शाण्डिल्य गोत्रक गंगोली मूलसँ आ जकर आदि पुरुष थिकाह गंगाधर। अगिला पीढीमे हुनक एक विवाहक दू संतान

१.वीर झा आ २.नारायण। वीरक सन्तान पर्व पल्ली/ पवौली मूलक बीजी। आ नारायणक संतान आगाँ संकर्षणसँ खण्डवला (खडौरे) मूलक संस्थापक भेलाह। एहिना क्रमे प्रायः प्रत्येक मूलक बीजी पुरुष ठाम-ठाम भेटताह-

यथा पृष्ठ-संख्या १/३- गंगोली बीजी गंगाधर

पृ.सं. १/१२- एकमा वलियारु वीजी धरनीधर

पृ.सं. १/१४- वरुआली मराढ़ वीजी- दिवाकर

पृ.सं.- १/१७- मंगरौनी माण्डर वीजी त्रिनयन भट्ट इत्यादि।

शाखा पुस्तकक मुख्य विशेषता अछि- प्रयोजनक अनुसार विस्तार, पूर्वापरक ज्ञान हेतु अंकनक व्यवस्था कएल गेल अछि।यथा पृष्ठ संख्या- ८३/०६ आ १८१-६

उदाहरण- कमल मणि ठाकुरक विवाहक उल्लेख अछि- हुनका एक बालक- कुलमणि प्रसिद्ध फेकन ठाकुर। कमलमणि ठाकुरक विवाह दरिहरा मूलक रतौली शाखामे अभयनाथ झाक बालक भीखर झाक पुत्रीसँ। आब पढ़निहारकेँ समस्या हेतन्हि जे ई अभयनाथ सुत भीखरक पूर्व परिचय की छन्हि तँ हम देखैत छी जे भीखरक आगाँ मे ३८/५ लिखिकऽ हरिनन्दन झाक पिता रामचन्द्र झा छथि, जिनकर विवाहक उल्लेख ३८ पत्रक पहिल पारमे ५म पंक्ति रामचन्द्र झाक विवाह लिखल छन्हि। रामचन्द्र झाक दू गोट बालक रघुनन्दन आ दोसर हरिनन्दन। ई दुनू भाय खण्डबला मूलक रतिनाथ ठाकुरक दौहित्र छथि। एहि रतिनाथक परिचयक हेतु ३३॥२ अर्थात् पात संख्या ३३क दोसर पृष्ठ पर तेसर पंक्तिमे जीवे छथि खण्डबला मूलक। एहि जीवेकेँ उठाकऽ ३८ पातक पहिल पारक पाँचम पंक्तिमे अनैत छियन्हि। एहि ठाम देखैत छी जे जीवेक बालक छथि रामनाथ आ पाँथू। एहि पाँथूक

बालक छथि रतिनाथ। एहि रतिनाथक विवाह छन्हि महिषी बुधवाल मूलक डालूक पौत्री ओ श्रीदत्तक पुत्रीमे। रतिनाथक विवाहक वर्णन एहि ३८ पातक पहिल पारक आठम पंक्तिमे। अस्तु एहि प्रकारेँ सभटा अंकक सहारासँ परिचय आगाँ बढ़ैत अछि। जाहि ठामसँ उद्धरण लेल जाइत अछि, ताहि ठाम नामक ऊपरमे माथपर (आगाँ) अंक लिखल जाइत अछि। ई अंक थिक, जतऽ नाम लए जएबाक अछि ओहि पातक संख्या ओ पंक्ति जतऽ नाम आनल जाएत अछि। ओहि ठाम नामसँ पहिने जतऽ सँ नाम आनल गेल ओहि पत्रक संख्या ओ पंक्ति।यदि परिचय पूर्ण अछि तऽ नाम अनबाक प्रयोजन नहि, मात्र जतऽ पूर्व परिचय लिखल अछि, ओहि पातक संख्या ओ पंक्तिक अंक मात्र लिखि देल जाइत अछि। जेना ११४ पातक पहिल पृष्ठपर चारिम पंक्तिमे अर्थात् ११४/४ मे वलियास मूलक राव शंकरक विवाहक उल्लेख भेल अछि। हुनक विवाह छल पवौली मूलक प्रितिनाथक कन्यामे। प्रितिनाथक विवाहक वर्णन १०३/२ मे भऽ चुकल अछि। हुनक विवाह छल कुजौली मूलक गोपीनाथक कन्यामे तँ मात्र १०३/०२ लिखि परिचय पूरा कऽ देल गेल, आब जिनका परिचय बुझबाक होएतन्हि तँ ओ १०३/०२ मे जा कऽ देख लेताह, अस्तु।

बहुत ठाम पूर्ण परिचय नहि रहलासँ अंकक उपयोग नहि कएल गेल अछि। एहि प्रकारेँ अंक लिखबाक प्रयोजन सिद्ध होएत अछि।

किछि सांकेतिक शब्द:

दौ- अर्थात् मातामह (नानाक नाम)

सँ- मूलक परिचायक

दौहित्र दौ (द्दौ.) माइक (मायक) नाना मातृ मातामह

सदु.- सदुपाध्याय

म.म.उ.- महामहोपाध्याय

वैया.- वैयाकरण

वै.- वैदिक

ज्यो.- ज्योतिष शास्त्रक ज्ञाता

बीजी- अर्थात् कोनो मूलक प्रारम्भिक ज्ञात पुरुष

छापामे पातक संख्याक हिसाबसँ टंकण आ अंकन भेल, मुदा एतए पातक संख्या तँ अक्षुण्ण रहल मुदा पाँतिक संख्या मे एकाध ऊपर नीचाँ भए गेल।जिज्ञासु पाठक पाँतिक निर्देश जे पातक संख्याक बाद अछि मे एकाध ऊपर देखि अल्प-प्रयत्नसँ अपन जिज्ञासा शान्त कए सकैत छथि।

खण्ड १ : विवरण

पत्र पंजी- खण्ड १ – पृष्ठ १-१४ (मूलग्रामक विभाजन कोन पुरखासँ)

गोत्र पंजी- खण्ड १ पृष्ठ १४-१५ (कतेक गोत्र आ ओकर अन्तर्गत कतेक मूल)

मेघापत्यः खण्ड १ पृष्ठ १७-३३७

दामोदरापत्यः खण्ड १ पृष्ठ ३३८-४५४

महेशापत्यः खण्ड १ पृष्ठ ४५५-६१०

माने गादू- खण्ड १ पृष्ठ ६११-६९०

ठाकुर चन्द्रपति [महादेव (थेघ), भगीरथ (मेघ), दामोदर, महेश- महेश ठाकुरक भाए सभक नामपर अध्याय सभक सिम्बोलिक नामकरण,

सभटा मूल (१६७) क वर्णन।

पत्र-पञ्जी-(मूल ग्रामक विभाजन कोन पुरखासँ तकर विवरण)- ०१-४०

गोत्र-पञ्जी- (कतेक गोत्र आ तकर अन्तर्गत कतेक मूल)- १४-१५

महेश ठाकुरक सभसँ जेठ भाएक नामपर सिम्बोलिक अध्याय-नामकरण- मुदा एतए सभ मूलक विवरण (१७-३३७ मेघापत्य- मेघ ठाकुरक सन्ततिक विवरण)

महेश ठाकुरक पैघ भाएक नामपर दामोदरापत्य (३३८-४५४)

महेश ठाकुरक नामपर महेशापत्य (४५५-६१०)

माने-गादू (माने आ गादू दुनू भाएक सन्तान ६११-६९०)

गंगोली पं. गंगाधर, गंगाधरक दू सन्तान वीर (पर्वपल्ली-पवौली) आ नारायण, नारायणक पुत्र शूलपाणि, शूलपाणिक पुत्र हाले (प्रसिद्ध साँई प्रसिद्ध संकर्षण- खण्डवला ग्रामोपार्जक), संकर्षणक छह पुत्र-भद्रेश्वर,दामोदर, वैकुण्ठ, नीलकण्ठ, श्रीकण्ठ, ध्यानकण्ठ; श्रीकण्ठक छह पुत्र-श्यामकंठ,हरिकंठ,नित्यानन्द,गंगेश्वर, हरदत्त आ हरिकेश।

गंगेश्वरक तीन पुत्र- हल्लेश्वर,चक्रेश्वर आ पक्षीश्वर।

चक्रेश्वरक एक पुत्र-पद्मनाभ।

पद्मनाभक एक पुत्र पुरुषोत्तम।

पुरुषोत्तमक एक पुत्र ज्ञानपति।

ज्ञानपतिक दू पुत्र-उमापति आ सुरपति।

सुरपतिक तीन पुत्र- दूवे(प्रसिद्ध श्रीपति), लाखू, महिपति।

दूवे(प्रसिद्ध श्रीपति)क तीन पुत्र-हरपति,नरपति,चन्द्रपति(प्रसिद्ध चान)।

नरपतिक दू पुत्र-माने आ गादू।

चन्द्रपति(प्रसिद्ध चान)क चारि पुत्र-महादेव प्रसिद्ध थेघ(म.प्र. निवास), भगीरथ प्रसिद्ध मेघ, दामोदर, महेश।

खण्ड २

उपटीप

खण्ड ३

नगराम

मिथिला पञ्जी-विज्ञान प्रोन्नयन संस्थान, पचही हाउस, मिर्जापुर रोड, दरभंगा द्वारा मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थक अतिरिक्त आन जाति मध्य सेहो पञ्जी व्यवस्था लागू कएल जएबाक गप छल (आचार्य भोलानाथ झा, १८.१०.१९८२), मुदा ई संस्थान स्वयं विलीन भऽ गेल। पञ्जीक उद्देश्य जे छल तकर विपरीत ई ब्राह्मण आ कायस्थ समुदायक मध्य आन्तरिक स्तरीकरण आनलक, मिथिलाक लोकतांत्रिक मूल्यमे कमी आनलक, पञ्जीकारक निःस्वार्थ सेवा, सत्यनिष्ठा, आ विश्वासी होएबामे कमी आएल, बिकौआ वर्गक उत्पत्ति भेल आ बाल-विवाहक प्रथा आएल(जकर कारणक पूर्वमे वर्णन भए चुकल अछि), विधवाक संख्यामे अभूतपूर्व वृद्धि भेल आ आइ धरि समाज एहिसँ देखार भऽ रहल अछि कारण विधवा-विवाहक पक्षमे आ बाल-विवाहक विपक्षमे

कोनो समाज-सुधार आन्दोलन मिथिलामे नहि दृष्टिगोचर भेल आ मैत्रेयी सन विदुषीक मिथिलामे उत्पत्ति पुरान गप भऽ गेल।

डा. योगनाथ झा तँ सद्यः "जीनोम मैपिंग: मिथिलाक पंजी प्रबन्ध- ४५० ए.डी.सँ २००९ ए.डी.), २००९ (गजेन्द्र ठाकुर, नागेन्द्र कुमार झा पंजीकार विद्यानन्द झा)" केँ अपना नामेँ "पंजी-प्रबन्ध (वंश परिचय- प्रथमभाग, २०१०)"- नामसँ छपबा लेलन्हि आ ऐ मे हुनका सहयोग भेटलन्हि श्रोत्रिय समाजक संगठन "महाराजा कामेश्वर सिंह सांस्कृतिक विकास मंच"क। ई श्रोत्रिय समाजक संगठन श्री लक्ष्मीनाथ झा, जे श्रोत्रिय छलाह, केर पोथीक चोरिक विरोध कोना करत? हिनका सभकेँ देख कऽ तँ पुरान चोर पंकज पराशर (https://books.google.co.in/books?id=CkJ6EAAAQBAJ&newbks=1&newbks_redir=0&lpg=PR1&pg=PR1#v=onepage&q&f=false) सेहो लजा जाएत। दस बर्खक मेहनति दस मिनटमे चोरि करैबला ई महानुभाव डा. योगनाथ झा उर्फ योगनाथ "सिन्धु" उर्फ सिन्धुनाथ झा ७० बर्खक छथि!!

मूल विवरण:

अथ गोत्र पंजी प्रारभ्यते: मैथिल ब्राह्मण समाज मे गोत्र वंश बोधक थीक। मैथिल ब्राह्मणक गोत्र समस्त पितृ प्रधान ओ प्रत्येक गोत्र अपन-अपन वंशक प्राचीनतम ज्ञात महापुरुषक नाम थीक, अस्तु, गोत्र ओ गोत्रापत्य (अर्थात गोत्रक सन्तान) मध्य रक्त सम्बन्धक सूचना थीक। अर्थात शाण्डिल्य गोत्रधारी शाण्डिल्य मुनिक सन्तान थिकाह ओ भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण भारद्वाजक मुनिक सन्तान थिकाह। एहि प्रकारें आनो गोत्रक हेतु बुझवाक थिक। मिथिलामध्य कुल बीस (20) गोत्रक ब्राह्मण छथि। आगाँ हम गोत्र ओ गोत्रक अन्तर्गत आबऽ वाला मूलक प्राकृतिक उच्चारण तथा लोक भाषा मे मूलक उच्चारित स्वरूपक वर्णन कए रहल छी। एकरा गोत्र पंजी कहल जाइत छैक।

(1) शाण्डिल्य गोत्र-मूल

मौलिक उच्चारण लौकिक उच्चारण

दिर्घोष दिघवे

सरिसव सरिसवे

महुवा महुवे

पर्वपल्ली पवोलिवाड़ या पगोलिवाड़

खण्डवला खड़ौरय

गंगोली गंगोलिवार

यमुगाम यमुगामे

करियन करियने

मोहरी महुरिये

सझूआल सझुआड़य

मड़ार मड़ारै

पण्डोली पण्डुलवाड़

जजिवाल जजिवाड़य

दहिभत दहिभतवार

तिलय तिलयवार

माहव महबे

सिम्मूआल सिम्मूआलय

सिंहाश्रम सेहासमय

सोदरपुर सोदरपुरिये

कड़रिया कड़रिये

अल्लारि अलरिये (अन्हरिये)

होइयार होइयारय

तल्हनपुर तन्नहपुरिये

परिसरा परिसरे

परसण्डा परसण्डे

वीरनाम वीरनामय

उत्तमपुर उत्तमपुरिये

कोदरिया कोदरिये

छतिमन छतिमनय

बरेवा बरबय

मछुआल मछुआलय

गंगोर गंगोरय

भटौर भटोरय

बुधौर बुधोरय

ब्रह्मपुर ब्रह्मपुरिये

कोइयार कोइयारय

करहिवार करहिवारय

गंगुआल गंगुआलय

घोषियाम घोषियामय

छतौनी छतियौनय

भिगुआल भिगुआलय

ननौती ननौतिवार

तपनपुर तपनपुरिये

(2) अथ वत्स गोत्र अन्तर्गत मूल

मौलिक उच्चारण लौकिक उच्चारण

पाली पलिवाड़

हरिअम्ब हरिअम्मय

तिसूरी तिसूरीवार

राउढ़ रउढ़े

टंकवाल टकवाड़य

घुसौत घुसौतय

जजिवाल जजिवाड़य

पहद्दी पोहद्दीवार

जल्लकी जलैवार

भन्दवाल भन्दवालय

कोइयार कोइयारय

करहिवार करहिवारय

ननौर ननौरय

डढ़ार डढ़ारय

करम्महा करमहे

बुधवाल बुधवाड्य

लाही लाही

सौनी सौनीवार

सकौनय सकुनय

फनन्दह फन्नेवार

मोहरी महुरिये

वंठवाल वण्ठवालय

तिसउॅत तिसौतय

बरूआली बरूआड़ी

पण्डोली पण्डुलीवार

बहेराढ़ी बहिरवाड़

बरैवा बरवय

अलय	अड़ैवार

भण्डारिसम	भण्डारिसमय

बभनियाम	बभनियामय

उचति	उचितवार

तपनपुर तपनपुरिये

बिठुआल	बिठुआलय

नरवाल	नरवालय

चित्रपल्ली	चित्रपलिये

जरहटिया	जरहटिये

रतवाल	रतवालय

ब्रह्मपुरा ब्रह्मपुरिये

सरौनी	सरौनी

(3) अथ काश्यप गोत्रक अन्तर्गत मूल

मौलिक उच्चारण लौकिक उच्चारण

ओइनी	ओइनवार

खौआल खौवाड़य

संकराढ़ीसकड़िवार

जगति	जगतिवार

दरिहरा दरिहरे या दलिहरे

माण्डर मड़रय

बलियास बलियासय

पचाउट पचाउटे या पचौटे

कटाई कटैवाड़

सतलखा सतलखे

पण्डुआ पडुए

मालिछ मालिछ

मेरन्दी मेरण्दी

भदुआलभदुआलय

पकलिया पकड़िये

बुधवाल बुधवाड़े

पिभूया पिभूया

मौरी मौरिये

भूतहरी भूतहरी

छादन छाजन

विस्फी विषयवार

थरिया थरिये

दोस्ती दोस्तीवाड़

भरेहा भरहे

कुसुम्बाल कुसमाड़य

नरवाल नरवाले

लगुरदह लगुरदहे

(4) अथ सावर्ण गोत्रान्तर्गत मूल

मौलिक उच्चारण लौकिक उच्चारण

सोन्दपुर सोन्दपुरिये

पनिचोभ पनिचोभे

बरेबा बरबय

नन्दोर ननोरय

मेरन्दी मेरन्दीवार

(5) अथ पराशर गोत्रान्तर्गत मूल

मौलिक उच्चारण लौकिक उच्चारण

नरउन नरौनय

सुरगन सुरगनय सुगरगनै (अपभ्रंश)

सकुरी सकुरिवार

सुइरी सुइरी

सम्मूआल सम्भुआलय

पिहवाल पिहवाड़ै

नदाम नदामय

महेशारि महेशारि

सकरहोन सकरहोनय

सोइनी सोइनी

तिलय तिलयवाड़

बरैवा बरवय

(6) अथ भारद्वाज गोत्रान्तर्गत मूल

मौलिक उच्चारण लौकिक उच्चारण

एकहरा एकहरे

विल्वपंचक बेलौंचे

देयाम देयामय

कलिगाम कलिगामे

भूतहरी भूतहरिये

गोढ़ार गोढ़ारय

गोधूलि गोधोली

(7) अथ कात्यायन गोत्रान्तर्गत मूल

मौलिक उच्चारण लौकिक उच्चारण

कुंजोली कुजिलवाड़

ननौती ननौतिवार

जल्लकी जलैवार

वतिगाम वतिगामय

(8) अथ कौशिक गोत्रान्तर्गत मूल

मौलिक उच्चारण लौकिक उच्चारण

निखूति निखूतिवार

(9) अथ गर्ग गोत्रान्तर्गत मूल

मौलिक उच्चारण लौकिक उच्चारण

वसहा वसहे

वसाम वसामय

ब्रह्मपुरा ब्रह्मपुरिये

सुरौर सुरौरय

बुधौर बुधोरय

उरौर उरौरय

(10) अथ गौतम गोत्रान्तर्गत मूल

मौलिक उच्चारण लौकिक उच्चारण

ब्रह्मपुर ब्रह्मपुरिये

उत्तिमपुर उतिमपुरिये

कोइयार कोइयारय

(11) अथ जातुकर्ण गोत्रान्तर्गत मूल

मौलिक उच्चारण लौकिक उच्चारण

देवहार देवहारे

कटाई कटैवार

परसण्डा परसण्डे

(12) अथ कौण्डिल्य गोत्रान्तर्गत मूल

मौलिक उच्चारण लौकिक उच्चारण

एकहरा एकहरे

परौन परौन

परसण्डा परसण्डे

(13) अथ विष्णुवृद्धि गोत्रान्तर्गत मूल

मौलिक उच्चारण लौकिक उच्चारण

वुसवन बुसवड़े

(14) अथ उपमन्यु गोत्र

(15) कपिल गोत्र

(16) वशिष्ठ गोत्र

(17) अथ मौद्गल्य गोत्रान्तर्गत मूल

मौलिक उच्चारण लौकिक उच्चारण

रतवाल रतवाड़े

मालिछ मालिछ

दिर्घोष दिघवे

कपिंजल कपिंजल

जल्लकी जलैवार

(18) अथ कृष्णात्रेय गोत्रान्तर्गत मूल

मौलिक उच्चारण लौकिक उच्चारण

लोहना लोहना

बुसवन भूसवड़े

पदौनी पदौनी

(19) अथ अलाम्बुकाक्ष गोत्रान्तर्गत मूल

मौलिक उच्चारण लौकिक उच्चारण

वसाम वसामय

कटाई कटैवार

ब्रह्मपुरा ब्रह्मपुरिये

(20) तण्डि गोत्र

कटाइ कटैवाड़

परसण्डापरसण्डे

मूलग्राम विवरण

प्रत्येक मूलक कतिपय मूलग्राम होइत छैक यथा-सोदरपुर मूल मे

सोदरपुरिये सरिसव सोदरपुर तेतरिहार

सोदरपुर मानी सोदरपुर सिमरवाड़

सोदरपुर दिगउन्ध सोदरपुर जगौर

सोदरपुर कटका सोदरपुर सुन्दर

सोदरपुर रैयाम सोदरपुर महिया

सोदरपुर हसौली सोदरपुर पचही

सोदरपुर हाटी

उपरोक्त सोदरपुर मूलक व्यवहार प्रत्येक मूलग्रामक संगे होएतैक। मूलक अर्थ भेल ओ प्राचीनतम ग्राम जतऽ कोनो मूलक प्राचीनतम पुरुषा वा बीजी पुरुष वास करैत छलाह। जखन हम सोदरपुर मूलक चर्चा करब तऽ समस्त सोदरपुर मूलक सभ उपशाखाक बीजी पुरुष एकहि होएताह। एहि मूलक प्राचीनता लगभग 15 सय वर्षक अछि।

बादक काल मे पंजीकार लोकनि एकहि मूलक विभिन्न शाखाक नामकरण लगभग 13म, 14म, 15म शताब्दीक समयक ग्रामक आधार पर कएलैन्हि अर्थात सोदरपुर मूलक जे ब्राह्मण उपरोक्त शताब्दी मे सरिसव, मानी, दिगउन्ध, कटका, रैयाम, हसौली इत्यादि ग्राम मे बसल छलाह तनिक सबहक मूल संगे एहि मूलग्राम सँ चिन्हल जाए लगलैन्हि। पंजी प्रबन्धक उद्देश्य कखनहु छोट-पैघ दर्शाएब नहि छल। परंच जखन खण्डवला कुलक शासन 16म शताब्दी मे मिथिला मे आएल एहि तरहक राज्यादेश होइत गेल ओ राज्यादेश सँ पंजीकार लोकनि कें बाध्य कएलैन्हि जे मूलक श्रेणियन कए उच्चता ओ न्यूनताक बोध कराओल जाए। उदाहरण स्वरूप खण्डवला मूलक प्रधान पुरुष म0म0उ0 शंकर्षण प्रसिद्ध साँई ठाकुर स्वयं थरिया मूलक कान्हक दौहित्र छलाह। परंच बादक काल मे ओ थरिया मूल छोट बुझल गोल। बुधवाल मूल जे एक उच्च मूल बुझल-मानल जाइछ तनिकर प्रारम्भिक पुरुषा लोकनि मे वामनक पुत्र पुरास्त, कौशल, दूबे हिरूक मातामह सुइरी मूलक प्रज्ञाकर छलखिन्ह जे सुइरी मूल वर्तमान मे छोट बुझल जाइत अछि से सभ खण्डवला (खड़ौरय)क प्रभावे। मूलतः वंशक उच्चता वा न्यूनताक आधार कर्म संस्कार ओ समाजक हेतु कएल गेल कोनो वंश द्वारा शास्त्रीय योगदान अछि। जाहि सँ मिथिला समृद्ध होएत रहल। शास्त्रीय रचना जतैक कार्णाट वंशीय शासन ओ ओइनवार वंशक शासनकाल मे मिथिला मे भेल से परवर्ती शासनकाल मे नहि भऽ सकल। अस्तु, जे से। पुनः मूल विषय पर अबैत छी।

उपरोक्त तरहें आनो मूल कें मूलग्राम जोड़ि सम्बोधित होएब शुरू भेल यथा- माण्डर (मड़रय) रजौरा, मड़रय सिहौलि, मड़रय, कनसम, पलिवाड़ मंगरौनी, पलिवाड़ हाटी इत्यादि कटाइ सँ कटैवार अन्हड़ा, कटैवार, मलंगिया इत्यादि। एहिना सभ मूल कें बुझल जएबाक चाही। मूलक दू खण्ड मिलाकें बाजल जाएत अछि। तात्पर्य भेल प्राचीन ओ अर्वाचीन ग्राम। नीचां हम किछु मूलक ओ विवरण दऽ रहल छी। कोनो मूलक जे भिन्न-भिन्न शाखा भेल से मूल बीजी सँ कतैक नीचां आबि

कोन व्यक्ति सँ कोन शाखा फूटल अर्थात मूलग्रामक विभाजन कोन पुरुषा सँ। एहि विवरण कें पत्र पंजी कहल जाइत छैक।

मूल:- खण्डवला (खड़ौरय) मूलक विभिन्न मूलग्रामक वासी आदिपुरुष: ठक्कुर हराई सन्तति भखराँइ, सोमेश्वरापत्य बुसवन, कछरा। ठ0 अनन्त, हरि। सन्तति लखनौर, भोगीश्वरापत्य गोपाल सन्तति-हरड़ी। गदाधरापत्य-पौराम, रत्नाकरापत्य तेतरिया, हड़री। ठक्कुर दूबे सन्तति भौर। लाखू-महिपति सन्तति बेहट, यमुगाम सोन्दपुर, सरपरब कुरहनी। डीह खण्डवला शुभदत्तापत्य देशुआल। झामू सन्तति-रैयाम गुरदी। वास्तु वागु हिरू सन्तति-द्यौरी। गोपालापत्य-गढ़। देवे सन्तति चनुआरी। पक्षधरापत्य-तेतरिया। दिनकरापत्य-पौराम ब्रह्मपुर, बथयी बिहारी, उमथ, गोराढ़ी। साधु सन्तति बथयी। लक्ष्मीपति सन्तति-खरशा। गणेश्वरापत्य-गुलदी। हल्लेश्वरापत्य- बेलारी। जीवेश्वरापत्य- अलय। सोमकंठ- सरपरब। रवि सन्तति-गौर ब्रह्मपुर। जयकर सन्तति-सजनी। भासे-डीह। देवश्वरापत्य-देशुआल। पक्षीश्वरापत्य-यमुगाम। गिरीश्वरापत्य- देशआल। विन्ध्येश्वरापत्य- बैकुण्ठपुर खुट्टी शितिकण्ठ सन्तति। रत्नेश्वरापत्य-गुलदी। एते खण्डवला मूलग्राम।

अथ गंगोली मूल (गंगुलवार) मूल ग्राम-गोत्रापत्य वासी: म0म0उ0 सुपट सन्तति गोम-कटमा वासी। होरे सन्तति-विस्फी, हारू सन्तति देशुआल। हरि सन्तति डुमरा। दिवाकरापत्य-दिगौन। गौरीश्वर सन्तति जगन्नाथापत्य-धर्मपुर। कुमर गंगोली वासी। कमलपाणि सन्तति-बैगनी, बड़गाम। डालू-सन्तति सकुरी। गयन सन्तति खरसौनी-एते गंगोली ग्राम।

अथ पर्वपल्ली (पवौलीवाड़) मूल- गोत्रापत्य मूलग्राम वासी: रवि सन्तति- बिरौली। उदयकर सन्तति-सपता, देशुआल महिपति सन्तति-कोशीपार डुमराही। हरिपाणि सन्तति-गोधनपुर। लक्ष्मीदत्तापत्य-गोनोली। नारू सन्तति-भतौनी, डहुवा। रूद सन्तति-बछौनी। रूद सुत पाठक भीम सन्तति-मिरडोआ। जागू सन्तति-रयपुरा। विशो सन्तति-चणौर। वासु गौरी सन्तति-महरैल। केशव, गोविन्द, दामादेरापत्य-राजे।

शिवदत्तापत्य-बढ़ियाम। गोगे सन्तति-सहुड़ी। यशोधरापत्य-मैयाम। दामू सन्तति-अस्माँ या अम्मा। पुण्याकरापत्य -पैकटोल। प्रतिहस्त उदयि-धेनु। मधुकर, रत्नकर, प्रभाकर, विभाकरापत्य-जगति।

अथ सोदरपुर मूल गोत्रापत्य मूलग्राम वासी: ग्रहेश्वरापत्य-सोदरपुरिये धउल। रूद्रेश्वरापत्य सोदरपुरिये वीरपुर। धीरेश्वरापत्य सोदरपुरिये सुन्दर। विश्वेश्वरापत्य-भवे, माधव सन्तति-सोदरपुरिये हसौली। रामापत्य- सोदरपुर रमौली। वाटू सन्तति-सोदरपुरिये बड़साम। रूचि, वासुदेव सन्तति-सोदरपुरिये कुसौली। जटाधरापत्य- सोदरपुरिये पचही। गयनापत्य-सोदरपुरिये रोहाड़ एवं बहेड़ा। रति, हरि सन्तति-सोदरपुर हाटी। वास्तु सन्तति-सोदरपुरिये तेतरिहार। रूपे सन्तति-सोदरपुरिये सिमरवाड़। वसाउनापत्य-सोदरपुर कन्होली। कामेश्वरापत्य सुरेश्वरापत्य रामनाथपत्य- सोदरपुरिये भौआल। कान्हापत्य सोदरपुरिये सुखेत। त्रिपुरे सन्तति सोदरपुर अकडीहा। रतिनाथापत्य-डालू सोदरपुरिये कटका। वाटू सुत हलधर श्रीधर-सोदरपुर केउँटगामा। सुधाधरापत्य-सोदरपुरिये गौर। म0म0उ0 रविनाथ सुत म0म0उ0 जीवनाथापत्य-सोदरपुर दिगोन। म0म0उ0 रविनाथ सुत महामहो भवनाथ प्रसिद्ध अयाची सुता म0म0उ0 शंकर महो महादेव महो भासे महो दाशे सन्तति सोदरपुर सरिसव। भवनाथ प्र0 अयाची सन्तति शम्भुनाथ रूद्रनाथापत्य- सोदरपुरिये वाली। म0म0उ0 देवनाथापत्य- सोदरपुर दिगौन (दिगउन्ध) रघुनाथापत्य- सोदरपुरिये रैयाम। जोर सन्तति सोदरपुरिये बिठौली, मिसरौली। म0म0उ0 गोपीनाथपत्य- सोदरपुर मानी, जगौर। म0म0उ0 जीवेश्वर सुत गणपति हरदत्त-सोदरपुर महिया। लोकनाथापत्य-सोदरपुर मझियाम, खोरि। हरदत्त-माधवापत्य-सोदरपुरिये रोहाड़। सुहथरि (सुन्दर) देव सन्तति-सोदरपुरिये महिया।

अथ गंगोर मूल गोत्रापत्य मूलग्राम वासी: वीनू वासू सन्तति-गंगोरे भौआल कुरूम। केशवापत्य-गंगोरे अहियारी, पौनद। सनाथ सन्तति-गंगोरे बिरनी। भोरे सन्तति गंगोरे महिन्द्रपुर। बिठू सन्तति गंगोरे बैंकक।

अथ पाली (पलिवाड़) मूल गोत्रापत्य मूलग्राम: बीजी-हलधर सन्तति-पलिवाड़ वलाइनि। म0म0उ0 उॅमापति सन्तति-पलिवाड़ समौली, वारी, जरहटिया। रूपनाथ सन्तति गिरपति, पशुपति-पलिवाड़ समौली। नरहरि सन्तति रघुपति सन्तति-पलिवाड़ समौली। देवधरापत्य-पलिवाड़ कछरा, द्यौरी। दिवाकरापत्य-पलिवाड़ द्यौरी, मोहरी, सकुरी, कटैया। घोटक रवि सन्तति-पलिवाड़ कटैया। ग्रहेश्वरापत्य-पलिवाड़ कछरा। रामकरापत्य- पलिवाड़ मालय। नितिकरापत्य, राजमतिश्वरापत्य-सिम्मुनाम। कान्हापत्य- पलिवाड़ पण्डोली। विरमिश्रापत्‌य-पलिवाड़ ततैल। रामदत्त सुत केशव सन्तति कान्ह- पलिवाड़ हाटी। महाई सन्तति-पलिवाड़ फूलदाहा। माधवापत्य-पलिवाड़ दिवड़ा। दूवे सन्तति-पलिवाड़ बेहटा। नरसिंहापत्य- पलिवाड़ हरिपुर। मुरारी सन्तति-पलिवाड़ मुराजपुर। भोगीश्वर, राजेश्वरपत्य, पुरे सन्तति-पलिवाड़ अलय। वंशधरापत्य- पलिवाड़ अलय। गोविन्दापत्य पलिवाड़ रैयाम। किठो सन्तति-पलिवाड़ कठड़ा। किठो, राम, वाटू सन्तति-पलिवाड़ नंगवाल। प्रभाकरापत्य-पलिवाड़ पर्जूआरि शशिधरापत्य, हरि सन्तति-पलिवाड़ खागी। नादू सुत छिताई सन्तति-पलिवाड़ पर्जुआरि। हिताई सन्तति विरूपाक्षापत्य-पलिवाड़ बैकुण्ठपुर। हारू सन्तति-पलिवाड़ नैकन्धा। कविराज सन्तति- पलिवाड़ मछेटा। सिंहेश्वरापत्य मित्रकरापत्य- पलिवाड़ ननौर, राजखण्ड पाली। जयकरापत्य-पलिवाड़ कुसमाल, पिण्डारूछ, वारहता रतहास पाली-कछरा पाली तपनपुर पाली। माधवापत्य, गौरीश्वरापत्य, गणपति, गांगू सन्तति-पलिवाड़ अहियारी। यशु सन्तति-पलिवाड़ कुरूम। वागू प्र0 वागीश्वर सन्तति-पलिवाड़ रोहाल, कटैया। गोविन्दापत्य इचलू सुत दिवाकरापत्य पलिवाड़ सुदय। प्रतिहस्त होराई सन्तति-पलिवाड़ अहियारि। रूद्रेश्वरापत्य-पलिवाड़ भड़गाम। वाटू सन्तति-पलिवाड़ सन्दला हरि परली पाली विषानन्दापत्य-पलिवाड़ ब्रह्मपुर। जलकौर पाली थेतनि सन्तति। चन्दोत पाली दुर्गादित्यपत्य-पलिवाड़ महिषी। देवादित्यापत्य-पलिवाड़ महिषी, बिहार समेत। रतनाकर प्र0 रतनू सन्तति-पलिवाड़ महिषी यशारि। धोधनि सन्तति-पलिवाड़ यशारि। विशो श्रीकर

शुचिकरापत्य-पलिवाड़ पुरोही। जीवे सन्तति पलिवाड़ तिमौनी। वाढ़न सन्तति-पलिवाड़ आसी। सुधाधरापत्य मांगु सन्तति-पलिवाड़ मौनी। भवदत्तापत्य-पलिवाड़ पुरोही। शुभंकरापत्य-पलिवाड़ जमदौली। पाँचू सन्तति-पलिवाड़ परसौनी, जरहटिया, सकुरी। कुसुमाकर सन्तति पलिवाड़ जमदौली। जटाधरापत्य-पलिवाड़ सकुरी। जीवेश्वरापत्य-पलिवाड़ सकुरी। बुद्धिधरापत्य-पलिवाड़ ततैल। कान्हापत्य इन सन्तति-पलिवाड़ सकुरी, अलई। मुरारी सन्तति रामापत्य-पलिवाड़ महिन्द्रवाड़। विशो सन्तति रूद्रेश्वरापत्य- पलिवाड़ कोलहट्टा। गणेश्वर नन्दीश्वरापत्य- पलिवाड़ महिन्द्रवाड़। गोविन्दापत्य-पलिवाड़ हरिपुर। विरेश्वर नरसिंहापत्य-श्रीधरापत्य- पलिवाड़ राढ़ी। गुणीश्वरापत्य-पलिवाड़ कोइलख। ग्रहेश्वरापत्य-पलिवाड़ चहुरा। गोपालापत्य हरिपाणि सन्तति-पलिवाड़ समैया। वाछे सन्तति-होरेश्वर मतीश्वर- पलिवाड़ मंगरौनी। वाटू सन्तति-पलिवाड़ कटौना। यशु सन्तति, रातू सन्तति-पलिवाड़ सकुरी। गणपति, भीगव सन्तति-पलिवाड़ पचाढ़ी। गुणाकरापत्य-पलिवाड़ वरहेता, सोन्दवाड़। पुरादित्यापत्य-पलिवाड़ मृगस्थली। एते पल्ली (पाली ग्राम)।

अथ हरिअम मूल अन्तर्गत मूलग्राम बीजी: लाखू सन्तति हरिअम्बे रखवारी। केशव, दामू प्र0 दामोदर सन्तति-हरिअम्बे मंगरौना। मांगू, नरसिंहापत्य-हारू सन्तति, हरिअम्बे शिवा। नरहरि सन्तति हरिअम्बे बलिराजपुर। चाण, दिनू सन्तति-हरिअम्बे कटमा। परमू, लाखू सन्तति हरिअम्बे आहिल। रति गुणे सन्तति-हरिअम्बे कटमा माधव सुत रति सन्तति-हरिअम्बे भच्छी। एते हरिअम्ब ग्राम।

अथ टंकवाल (टकवाड़े) मूल अन्तर्गत मूल ग्राम बीजी: कविराज लक्ष्मीपाणि सन्तति-टकवाड़े नीमा। सुरेश्वरापत्य, दामोदरापत्य-टकवाड़े पटनियाँ, गंगोली। रविशर्म्म लक्ष्मीशर्म्म-टकवाड़े ब्रह्मपुर। पतरू शिरू सन्तति-टकवाड़े- पटनियाँ, पोखरौनी, भौर, सकुरी। माधवापत्य-टकवाड़े सकुरी। जागे सन्तति टकवाड़े रतनपुरा। महाई सन्तति टकवाड़े परिहार। देवदत्तापत्य-टकवाड़े पिलखवाड़। रविदत्तापत्य-टकवाड़े

बहेड़ा। पाँखू सन्तति- टकवाड़े श्रीखण्ड। वसन्त रविकरादि-टकवाड़े श्रीखण्ड। हरि सन्तति टकवाड़े श्रीखण्ड। सुपन, सारू सन्तति-टकवाड़े नरघोघ। हराई शुचिकर, प्रीतिकरापत्य-टकवाड़े अकुसी हरिब्रह्म सन्तति-टकवाड़े पौराम। दामोदरापत्य-टकवाड़े बेहटा। उँमापति सन्तति-टकवाड़े ततैल। एते टकवाल ग्राम।

अथ घुसौत मूल अन्तर्गत मूलग्राम बीजी: रति, कान्हापत्य-घुसौते पचही। रूचिकरापत्य-घुसौते नगवाड़। रूद सन्तति-घुसौते यमुथरि। रूचिकरापत्य घुसौते-गन्धराइनि। गणपति सन्तति-घुसौत घनिसमा। कृष्णपति सन्तति घुसौते खजुरी। पृथ्वीधरापत्य-घुसौते सकुरी। रूद्रचन्द्र सन्तति-घुसौते डीह एते घुसौत ग्रामाः।

अथ करम्बहा (करमहा) मूल अन्तर्गत मूलग्राम बीजी: इन्द्रनाथापत्य-करमहे कोइलख। सौरीनाथापत्य-करमहे दिगही। रामशर्मापत्य-करमहे ब्रह्मपुर। रतिकरापत्य- करमहे मझियाम बुद्धिकरैव। बुद्धिकर सन्तति कान्हापत्य-करमहे ककरौड़। हचलू सन्तति करमहे कनपोखरि। गणेश्वरापत्य-करमहे केउरहम। लान्हि सन्तति-करमहे गुरदी। सादू सन्तति-करमहे ककरौल। मांगू सन्तति सोन-करमहे कोइलख, मछेटा समेत। मधुकापत्य-करमहे दोलमानपुर। लान्हि सन्तति गोढ़ि करमहे रौतानवासी। सदुपाध्याय रूचि सन्तति हरदत्तापत्य-करमहे धनकौली। नितिकरापत्य-करमहे वघाँत। नोने सन्तति करमहे बेला। सदु0 उपा0 गिरिश्वर सन्तति नरसिंहापत्य-करमहे नरूआड़। श्री वत्स सन्तति करमहे बेहट। सदु0उपा0 केशव सन्तति करमहे श्रीखण्ड। महो0 बराह सन्तति-करमहे तरौनी। रामापत्य-करमहे तरौनी। कान्ह श्रीधर सन्तति-तरौनी। रूघुदत्त रूचिदत्त सन्तति-करमहे रूचौली। सदु0उपा0 माधवापत्य-करमहे मझौरा। सदु0उपा0 रामापत्य, गुणीश्वरापत्य-करमहे झंझारपुर। सदु0उपा0 भवेश्वरापत्य-करमहे अनलपुर। हरिवंशापत्य-करमहे मुजोनियाँ। शिववंशापत्य-करमहे रोहाड़। धूर्तराज म0म0उ0 गोनू सन्तति-करमहे पिण्डोखरि। एते करमहा मूल।

अथ बुधवाल मूल अन्तर्गत मूलग्राम बीजी: रविकरापत्य-बुधवाले

खड़रख सुरसर समेत। सुपे सन्तति-बुधवाड़े ब्रह्मपुर। राम, चाण सन्तति-बुधवाड़े मझियाम। ढ़ोढ़े सन्तति-बुधवाले बेलसाम। डगरू सन्तति-बुधवाड़े सतलखा। कान्हापत्य- बुधवाले बेलसाम। दूवे, हरिकर हरिनाथ, दामोदरापत्य-बुधवाले सकुरी। बुद्धिकर सन्तति-बुधवाले सकुरी। डालू सन्तति-बुधवाड़े ब्रह्मपुर। राम दिनू सन्तति- बुधवाड़े सुन्दरवाल। गंगादित्य सन्तति-विक्रम -सेरी। सदुपाध्याय भानु सुत गणेश्वरापत्य- बुधवाड़े परियाम। गुणीश्वरापत्य-बुधवाड़े उजान। कोने सन्तति-बुधवाड़े पिलखा। गंगेश्वरापत्य-बुधवाड़े मलिछाम। रूचिकर रतिकर सन्तति बुधवाड़े गंगोरा। महेश्वर सन्तति-बुधवाड़े फरहरा। गौरीश्वर सन्तति- मदिनपुर। विशो सुधाकर सन्तति-बुधवाड़े डुमरी। सूर्यकर सन्तति-बुधवाड़े सिउँरी। ग्रहेश्वरापत्य-बुधवाड़े महिषी। भोगीश्वर सन्तति-बुधवाड़े चिलकौली। वासू, बोधराम, उदयकर बुधवाड़े आरी। पाँथे-बुधवाड़े मुठौली। कान्हापत्य-बुधवाड़े बुधवाल। जगन्नाथापत्य-बुधवाड़े सिंघिया। एते बुधवाल ग्राम।

अथ सकौना मूल अन्तर्गत मूलग्राम बीजी: वाटन सन्तति-सकौना सिंघिया। हरिश्वरापत्य-सकौना दिबड़ा। सोमेश्वरापत्य- बघाँत बानू सन्तति-सकौना डीहा। रति, गोपाल, दिनपति-सकौना तरौनी। रूद सन्तति जगन्नाथपुर। गुणे महिपति-सरिरभ। शुचिनाथापत्य-सकौना परसौ ग्राम। भासे सन्तति सकौना ततैल। एते सकौना मूल।

अथ तिसउँत मूलग्राम बीजी: पण्डित सुपाई सन्तति-तरौनी। रघुपति सन्तति- तिसउँत पतौना। जीउँसर सन्तति-कुआ। एते तिसउँत ग्राम।

अथ बभनियाम मूल अन्तर्गत मूलग्राम बीजी: जयकरापत्य सुधाकरापत्य- कड़राइनि, मुराजपुर। गोनन सन्तति- बभनियाम कटमा, गंगोली, बैंकक समेत। किठो सन्तति बभनियामे कटमा। साठू सन्तति-विसाढ़ी दोलमानपुर। रूद सन्तति- गंगोली। कुशल गुनिया सन्तति-बभनियामे भटगामा जालय। एते बभनियाम ग्राम।

अथ फनन्दह मूल अन्तर्गत मूलग्राम बीजी: श्री करापत्य बथैया।

कुसुमाकर मधुकर, किठो सन्तति-फनन्दह विट्ठो, ब्रह्मपुर। हाठू, चाण सन्तति-फनन्दह बसौनी, ब्रह्मपुर। सुखानन्द, गुणे सन्तति-फनन्दह गांग, सकुरी मतीश्वर, पाँखू सन्तति-फनन्दह चोप्ता। शंकर सन्तति-फनन्दह खयरा। गोंढ़ि सन्तति- फनन्दह खनाम। महेश्वर सन्तति-डीहा। सोम गोम माधव केशव सन्तति-फनन्दह भटगामा। बिरेश्वरापत्य-फनन्दह सिंघवाड़ सिहुवार। लक्ष्मी सन्तति-फनन्दह सकुरी। भवाई रूद सन्तति-फनन्दह वोड़वाड़ी भदुआल, दरिहरा, मुजौना समेत। एते फनन्दह ग्राम।

अथ अलय (अलयवाड़) मूल अन्तर्गत मूलग्राम बीजी: शंकरापत्य-अलय गोधनपुर सिंघिया समेत। श्री करापत्य अलय इजरा। हेलू सन्तति-अलयवाड़ सुखेत। मिश्र हरि देवधरापत्य-अलयवाड़ सिंघिया। वासू सन्तति-अलयवाड़ जरहटिया, वाढ़ वासी। रविशर्म्म सन्तति-अलयवाड़ जरहटिया। धारू सन्तति-बेहटा। सिरू सन्तति-अलयवाड़ धर्मडीहा, कादिपुरा। गोविन्द सन्तति-अलयवाड़ बेहटा। महो गदाधर सन्तति-अलयवाड़ उसरौली। सोमदत्त सन्तति-उसरौली। परभू, बुद्धिकर सन्तति- अलयवाड़ बैगनी। रत्नधर सन्तति-अलयवाड़ भट्टपुरा। शिवदत्त सन्तति-अलयवाड़ अजन्ता। मिश्र सुधाधरापत्य, विश्वेश्वर मतीश्वर- अलयवाड़ उसरौली। लक्ष्मीधरापत्य हलधर सन्तति, गंगाधरापत्य-अलयवाड़ यमुगाम। शशिधर, रघु, जादू, जीवेश्वर सन्तति-अलयवाड़ अलय। मिश्र लाखू सन्तति अलयवाड़-भूड़ी। गणेश्वर सन्तति अलयवाड़ परमगढ़। सिधू सन्तति-अलयवाड़ बीरवन। दोर्दण्ड सन्तति-अलयवाड़ लोआम। जसाई सन्तति-अलयवाड़ डीहा। रूद सन्तति-अलयवाड़ खड़हर। रमाई सन्तति-अलयवाड़ राजे वासी। वेद सन्तति-अलयवाड़ मलंगिया, नान्यपुर, अलइ, सिमरी, रहुवा समेत गंगुआल बाथै राजपुर वासी। एते अलयी मूलग्राम।

अथ खौआल मूल अन्तर्गत मूलग्राम बीजी: श्रीकरापत्य-खौआड़े महनौरा। रतिकर, सुधाकर, हरिकर, चन्द्रकर, रूचिकरापत्या-खौआड़े महुवा। महिन्द्रपुर। स्थितिकरापत्य-खौआड़े महिन्द्रवाड़ दिवाकरापत्य-

खौआड़े कोवोली। बाछे, ढ़ोढ़े वेणी सन्तति-खौआड़े रहुवा। उॅमापति सन्तति-खौआड़े नाहस। विश्वानाथापत्य- खौआड़े आहिल। बुद्धिनाथ रूचिनाथापत्य- खौआड़े खड़ीक। रघुनाथापत्य-खौआड़े द्वारम या दड़िमा। विष्णु सन्तति द्वारम। साधुकरापत्य-खौआड़े द्वारम। नारायण प्र0 नोने जगन्नाथापत्य-खौआड़े बुसवन राम मुरारी शुक सन्तति-खौआड़े पण्डोली। वाढ़ू सन्तति-ब्रह्मपुर, तिरहट मोण्डु। हरानन्द सन्तति-खौआड़े अहियारी। भवादित्यापत्य- खौआड़े नाहस, देशुआल। भवे सन्तति- धर्मकरापत्य-देशुआल। डालू सन्तति-खौआड़े दड़िमा। दामोदरापत्य-तरहट ब्रह्मपुर। राजनापत्य-खौआड़े यमुआन। प्रीतिकरापत्य- खौआड़े पचाडीह (पचाढ़ी) पतौना खौआल दिवाकरापत्य-खौआड़े धुधुआ। भवादित्यापत्य-खौआड़े ककरौड़ खंगरैठा समेत। बैद्यनाथ प्रजाकारक रघुनाथ कामदेवापत्य-मौनी, परसौनी। गोपालापत्य, कृष्णापत्य-कुमरबेलई। शशिधरापत्य, नरसिंहापत्य, दामोदरापत्य-बोड़बाड़ी, कोकडीह। नयादित्यापत्य-खौआड़े बिजोली। द्वारि सन्तति जयादित्यपत्य-खौआड़े सुखेत, सर्वसीमा। शुचिकरापत्य, जिवेश्वरापत्य- खौआड़े दिगौन। आङू सन्तति रघुनाथापत्य- खौआड़े मुराजपुर, ब्रह्मपुर। भवे सन्तति-खौआड़े भिट्ठी सतेढ़ बेहटा। दूवे सन्तति ब्रह्मपुर हेलू रविकर सन्तति-सतेढ़। प्रसाद मधुकर सन्तति, गंगादित्यपत्य-खौआड़े बेहटा। दिवाकरापत्य-खौआड़े पिथनपुरा। गंगेश्वरापत्य-खौआड़े कुरमा, लोहपुर। लम्बोदर सन्तति-कुरूमा। नादू सन्तति दिपनपुरा। राजपण्डित सह कुरूमा रामकर सन्तति भिट्ठी खंगरैठा। आंगनि सन्तति खौआड़े सौराठ। मति, गहाई, केउॅट सन्तति-खौआड़े सिमरवाड़-एते खौआल ग्राम।

अथ संकराढ़ी (सकड़िवाड़) मूल अन्तर्गत मूलग्राम बीजी: प्रत्येक मूलग्राम संगे मूल जोड़ि कें देखल जाए। एहि तरहें पूर्व लिखल मूल ओ बादक लिखल मूल देखब जाहि सँ हम लेखकीय सुविधा पाबि सकी ओ पुनरूक्ति दोष नहि हो।

महामहो कारू सन्तति-जगद्धर, गोविन्द-सकड़िवाड़ सकुरी। प्रीतिकर

सन्तति-कदिगामा। शुभे सन्तति-अलय। महामहो हरिहरापत्य-सुन्दरौली, गोपालपुर। जयादित्यापत्य-भलुनी, सराबय। परमेश्वर सन्तति-सकड़िवाड़ नेयाम। सदुपा0 सुपे सन्तति-हरड़ी। रामधरापत्य-अलय। हरिशर्म्म सन्तति-सिधम मुरहद्दी। रेकोरा सकराढ़ी- होरे चाँड़ो सकड़िवाड़ परहट। सोम-गोम शक्तिरायपुर। हरिश्वर-सकराढ़ी वासी। जीवेश्वरापत्य-बेला। उधगाँव। गयन-द्वारिकादि सन्तति-सकड़िवाड़ हरड़ी। धनेश्वर सन्तति-कनाइन, मझियाम, लोहना समेत। लाखू सन्तति-कनाइन। चाण सन्तति-रतिश्वर छामू वासी। रामकर, कृष्णकर सन्तति-थूगामा वासी। भोगे सन्तति शंकर गुदे-दिबड़ा। दूवे सन्तति-जरहटिया। देवे, गोंढ़े-रहड़ा। गोढ़न, चाण-सरिसव वासी। पुरोहित गोपाल सन्तति-सारू बरूआर। सखवाड़। श्रीकर सन्तति-पैकटोल। गौरीशंकर सन्तति-तेकुना। मिश्र भगव सन्तति-पुरामनिहरा। चक्रेश्वर सन्तति हरि- सकड़वाड़ दहुरा, कठहड़ा वासी। देहरि, सोम सन्तति-सकड़िवाड़ ततैल। सान्हि सन्तति- गोधनपुर। रताई देवे सन्तति कादिकापुर गोना सकराढ़ी-चितिकरापत्य। आंगा वासी मझियाम समेत। बुधौरा सकराढ़ी, दूवा सकराढ़ी वरगामा सकराढ़ी। एते संकरवाड़ मूलग्राम।

अथ दरिहरा मूल अन्तर्गत मूलग्राम बीजी: त्रिपुरारी सन्तति-दरिहरे सिंहाश्रम। हरिकर, बुद्धिकर रूपनादि सन्तति दरिहरा विजनपुर। यशस्पति गणपति सन्तति भड़ेली दरिहरा। गुणपति सन्तति-दरिहरा पठौंगी। विद्यापति पुण्डरीक-दरिहरा मछदी। केशव सन्तति-दरिहरा अमरावती। सिरू सन्तति-दरिहरा कुरूम। सोने सन्तति-दरिहरा भौआल। शिव सन्तति-दरिहरा यमुगाम। गुणाकर, पὺकर सन्तति-दरिहरा मधुकरपट्टो। प्रज्ञाकरापत्य कुसुमाकर-दरिहरा बड़गाम। मित्रकरापत्य- दरिहरा जरहटिया। प्रसाद गौरीश्वरापत्य- दरिहरा भरौड़ा, सन्दवाल समेत। दिवाकरापत्य-दरिहरा अलय। दिनकरापत्य- दरिहरा सोनतौला। रतिशर्म्मापत्य-दरिहरा सकुरी। भवशर्मापत्य-दरिहरा ब्रह्मपुर। धराधर-जटाधरापत्य-दरिहरा ब्रह्मपुर। शशिधरापत्य-दरिहरा पनिहारी। बाबू, गोग सन्तति-दरिहरा तरहट। गोविन्द, कान्ह सन्तति-

दरिहरे पचही। नारू सन्तति-दरिहरे यशराजपुर। वाढ़ू सन्तति-दरिहरे ब्रह्मपुर। इन्द्रपति सन्तति-दरिहरे हरिनगर। आग्नेय। झोंट पाली दरिहरा सिमरी सॅ कोइलख। विश्वनाथापत्य-दरिहरा महिसान कोइलख समेत। विधुपति सन्तति-तत्रैव। होरे सन्तति डढ़ार वासी। गांगू सन्तति-दरिहरा कछरा। रघुपति सन्तति-दरिहरा कठड़ा। कान्ह सन्तति-दरिहरा कटैया। जाटू सन्तति- दरिहरा हदहरा। कृष्णपति गुणीश्वर सन्तति- दरिहरा फूलमती। सुन्दर गांगू तत्रैव। मतीश्वरापत्य सुन्दर अलयी समेत। सुरपति-दरिहरा अलयी, गोलहटी समेत। गिरीश्वरापत्य-दरिहरे उड़िसम। पण्डोली दरिहरा हरिकर सन्तति-दरिहरा सिंहौली। शंकर प्रसिद्ध गोंढ़े सन्तति-दरिहरा नवहथ। कान्हापत्य-दरिहरा नवहथ। पामो सन्तति-दरिहरा चिलकौरी। भादू सन्तति-दरिहरा ततैल। तेतरिया सिमराकनसम। गोंढ़ि सन्तति-दरिहरा बढ़ियाम। सुपन सन्तति- दरिहरा गांगू भिट्ठी। विशौ सन्तति तत्रैव। हिम सावे सन्तति-दरिहरा दिघिया। धीरेश्वर सन्तति-दरिहरा तारडीह। जलकौर दरिहरा- मिश्र कान्हा सन्तति-दरिहरे मतौना। गंगेश्वर सन्तति मिश्र दुर्गादित्यापत्य-दरिहरा चदुआल। देवधरापत्य-दरिहरा कुड़मा। अग्निहोत्रिक म0म0उ0 हरि सन्तति-दरिहरे नेतवाड़। नारू सुत रूचि सन्तति-दरिहरे महुआन। विभाकरापत्य-दरिहरे सिंघिया। प्रभाकर सुत युधे सन्तति-दरिहरा परसा। नोने सन्तति-दरिहरे जगुआल। नारू सुत वाढ़ू प्रभृतयः-दरिहरा अन्दोली। गोंढ़ि सन्तति-दरिहरा धनकौली। मिश्र हरि सुत चण्डेश्वर-चण्डग्राम (चण्डगामा)। नारायण सन्तति-दरिहरे नुने। मिश्र मतिकरा सन्तति- दरिहरा बधोली। धामू सन्तति-दरिहरा पौआरी। शूलपाणि सन्तति-दरिहरे रतौली। नीलकंठ सन्तति-दरिहरा पोखरिया। रूपन सन्तति-दरिहरे रतौली। खाँतर सन्तति- दरिहरे बड़गाम। वासू सन्तति-दरिहरे वासी। विरेश्वर प्र0 मुनी दिवाकरापत्य-दरिहरे राजनपुरा सरिसव समेत। गुणाकर सन्तति- दरिहरे सिठिवाल। हरिकर-दरिहरे जरहटिया ततैल समेत। ब्रह्मेश्वरापत्य रत्नाकरापत्य- दरिहरे पंचारी। विश्वरूप सन्तति-दरिहरे पनिहारी। शूलपाणि भ्राता नीलकंठ सन्तति- दरिहरे वो (चे0) थरिया। रूपन सुत भोगे गिरी-रतौली। यवेश्वर-दरिहरा जरहटिया।

ब्रह्मेश्वर तत्रैव। एते दरिहरा ग्राम।

अथ माण्डर (मड़रे) मूल अन्तर्गत मूलाग्राम बीजी: गढ़माण्डर कामेश्वरापत्य जीवे सन्तति-मड़रैवथमा। महत्तकजोर सन्तति-मड़रै बघाँत। सदु उपा0 भवादित्यापत्य-मड़रै कनाइन, मुठौली समेत। दिवाकरापत्य-मड़रै जोंकी, मटिझमना समेत। हरदत्त सन्तति म0 खनतिया। गुणाकर जयकर तत्रैव। माधवापत्य-म0 अरड़िया। रति, डालू सन्तति-मड़रै भौआल, दोलमानपुर, बेंगुडीहा समेत। खांतू ठाकुर सर्वाइ केउॅट सन्तति- म0 भौआल। गदाई सन्तति-म0 दोलमानपुर। केशवापत्य-मड़रै असमाँ। कान्हापत्य-मड़रै असमाँ। सुपे विभू सन्तति-कटमा। विभू भानुकर सन्तति-मड़रै पिलखा। कविराज शुभकरापत्य-मड़रै कटमा। बागीश्वरापत्य- भड़रै महिषी गांगे। रूपधरापत्य-मड़रै मंगरौनी। रविदत्तापत्य विशो-मड़रै देउरी। हरिकर सन्तति-मड़रै विजहरा। खाँतू सन्तति-म0 जरहटिया। हरि सन्तति-मड़रै मंगरौना। होरे सन्तति मड़रै केउॅटगामा। सुधाकर सन्तति-मड़रै वारी। प्रसाद शुभंकर सन्तति-मड़रै मंगरौनी। पशुपति सन्तति गुणपति-मड़रै ओकी। म0 शिवपति महो इन्द्रपति सन्तति-मड़रै रजौरा। कृष्णपति सन्तति-मड़रै पतौनी। रघुपति सन्तति-मड़रै जगौर। प्रज्ञाकर सन्तति-मड़रै अमरावती। छीतर सन्तति-मड़रै जगौर। आंगनि सन्तति कुलपति-मड़रै कटैया। नरपति सन्तति-मड़रै दहुला (दहौरा)। रविपति सन्तति-मड़रै कटका। महादेव सन्तति-मड़रै श्रीखण्ड (सिरखड़िया)। रतिपति सन्तति-माण्डर (मड़रै) सिंहौली। दूवे सन्तति मड़रै दुवौली पाँखू सन्तति-मड़रै बिठुआल। धनपति सन्तति-माण्डर (मड़रै) सरहद। विधुपति सन्तति मड़रै पतनुका। सुरपति, रतन सन्तति-मड़रै कनसम। सोम सन्तति-मड़रै बेहटा। भवै महेश सन्तति-मड़रै कटैया। गुणीश्वरापत्य-मड़रै कटाई। पिताम्बरापत्य- मड़रै जजुआल। देवनाथापत्य मिश्र नन्दी सन्तति-माण्डर बेहटा। जीवेश्वरापत्य-मड़रै उराम, सिंगोई ननौरा दुगाई, तेतरिहार, नगाई- कोइलख। बागीश्वरापत्य-मड़रै सकुरी। रूचिकरापत्य शिरू-मड़रै जरहटिया, सकुरी। लक्ष्मीकान्तापत्य-म0 त्रिपुरौली। हरिकान्तापत्य-मड़रै दहिला। उमाकान्तापत्य -म0 ब्रह्मपुर। सुगन्ध

सन्तति-मड़रै कनसी। महेश्वरापत्य-मड़रै मझौली। गुणेमिश्रापत्य थुवे-मड़रै खड़िका। सौरिमिश्रापत्य-म0 ब्रह्मपुर। गयन मिश्र वीर मिश्रापत्य-मड़रै वारी, सकुरी। हरिशर्म्मापत्य सुधाकरादि- मड़रै मृगस्थली। थेघ मिश्रापत्य-म0 अन्दोली। सुरेश्वरापत्य ग्रहेश्वरापत्य-मड़रै कटउना। हरि मिश्रापत्य-मड़रै कटउना। ऋषि मिश्रापत्य-मड़रै बेलौंचा(जा)। यति मिश्रापत्य-म0 कटउना। कीर्ति मिश्रापत्य मतीश्वरापत्य-म0 गोआरी। गिरीश्वरापत्य- मड़रै मिसरौली। होरे मिश्रापत्य-म0 खयरा। बाछे मिश्रापत्य-मड़रै हर्षोली। हेलन, नरदेव- मड़रै नैषधिया। शिवाई सन्तति-मड़रै बलिया, रघयपुरा। सर्वानन्द, दलवय सन्तति-म0 सकुरी, असगन्धी। चन्द्रकरापत्य-म0 कोवड़ा। कुलधर, रामकरापत्य-मड़रै दिप्ती, वेतावाड़ी। चोथू-मोथू सन्तति-मड़रै परिहारपुर गोआरी समेत। गोपाल सज्जन सन्तति-मड़रै ब्रह्मपुर, जगतपुर। मित्रकरापत्य, रूपनापत्य-मड़रै महिषी, सकुरी। सुथवय सन्तति-मड़रै कनपोखरि, जहरौनी(ली) रतिधर, शुभे कनपोखरि, तरौनी। हरि सन्तति-मड़रै निकासी, यमुगाम। एते माण्डर (मड़रै) मूलग्रामाः।

अथ बलियास मूल अन्तर्गत मूलग्राम बीजी: भिखे, चुन्नी, नितिकरापत्य- बलियासम जालय। दुबे-सन्तति-बलियास सकुरी। सुरानन्द सन्तति-बलियास बैकक। रति सन्तति-बलियास खड़का। शिवादित्यापत्य-बलियास मुराजपुर, ओगाही, यमुथरि। शुभकरापत्य-बलियास ततैल, कुमरौनी नन्दी सन्तति-बलियास भौआल, अलय सतलखा। सुधाकरापत्य-बलियास जरहटिया। रामशर्मापत्य जाटू-बलियास घरौरा। केशव सन्तति-बलियास यमसम। शक्ति, श्रीधर सन्तति नारायण-बलियास सिमरी, जालय, खड़का। महनू सन्तति-बलियास माड़रि। शिरू सन्तति-बलियास विसाढ़ी। रूद्रादित्यापत्य-बलियास बिठौली। रूचि सन्तति उदयकरापत्य-बलियामय नरसाम। एते बलियास ग्राम।

अथ सतलखा मूल अन्तर्गत मूलग्राम बीजी: गुणाकर सन्तति-सतलखे डोकहर। विभू सन्तति भाष्करापत्य दिवाकरापत्य- सतलखा सतौली।

चन्द्रकरापत्य-सतलखा कजौली। शंकरापत्य सतलखे सतालखा। लोहटापत्य, नन्दीश्वरापत्य, जीवेश्वरापत्य- सतलखा कछरा। एते सतलखा मूलग्राम।

अथ एकहरा मूल अन्तर्गत मूलाग्राम बीजी: श्रीकर सन्तति-एकहरे तोड़नय। जादू सन्तति-एकहरा सरहद। शुभे सन्तति-एकहरा मैनी। सोन सन्तति-एकहरा मण्डनपुरा। लक्ष्मीकरापत्य-एकहरा संग्राम। रूद्र सन्तति-एकहरा आसी। गढ़कू सन्तति- एकहरा कसरउढ़। वाटू सन्तति-एकहरा सिंघाड़ी। थीते सन्तति-एकहरा खड़का मिते सन्तति-एकहरा कन्हौली। गणपति सन्तति- एकहरा पतौना। जाने सन्तति-एकहरा ओड़ा। कोचे सन्तति-एकहरा रूचौली। शुचिकरापत्य-एकहरा मुराजपुर। धाम सन्तति-एकहरा नरौछ, जमालपुर। चित्रेश्वरापत्य-एकहरा नरौछ। एते एकहरा मूलग्राम।

अथ विल्वपंचक (बेलउँच) मूल अन्तर्गत मूलग्राम बीजी: धर्मादित्यापत्य- बेलउँचे सिसौनी। रामदत्त हरदत्त नोनादित्या सन्तति-बेलउॅच रतिपाड़। सुधे सन्तति-बेलउॅच सुदय। शीरू सन्तति-बेलउॅच द्वारम। गयादित्यापत्य- बेलउॅच ओगही। महादित्य सन्तति-बेलउॅच कर्मपुर, बछौनी समेत। जीवादित्य सन्तति-बेलउॅच उजान। रूद्रादित्य सन्तति-बेलउॅच दिप, सुदय। सर्वादित्य सन्तति-बेलउॅच तरियाड़ी। देवादित्य सन्तति -बेलउॅच ब्रह्मपुर। रत्नादित्य सन्तति-बेलउॅच काको। मित्रादित्यापत्य-नारू सन्तति- बेलउॅच काको। बासू सन्तति-बेलउॅच देवरिया। प्राणादित्यपत्य-बेलउॅच हरि गयन सन्तति-बेलउॅच कन्होली। सुपे सन्तति- बेलउॅच कोलहट्टा। रूद्रादित्यापत्य-बेलउॅच ओझोली। केउटूँ सन्तति-बेलउॅच सकुरी। महथू सन्तति-बेलउॅच सकुरी। चावे सन्तति- बेलउॅच सतलखा। गढ़बेलउॅच नोने विभू सन्तति-बेलउॅच सिंघिया। सुपन सन्तति-बेलउॅच कुनौली। कौशिक सन्तति- बेलउॅच कुसौली। लक्ष्मीपाणि सन्तति-बेलउॅच सुशारी। पाँथू सन्तति-बेलउॅच देयरही। एते बेलउॅच मूलग्राम।

अथ नरउन मूल अन्तर्गत मूलग्राम बीजी: बेलमोहन नरउन जटाधरापत्य

मदनपुर। रातू सन्तति-नरउन करियन। गर्वेश्वरापत्य-नरउन सिंघिया। डालू सन्तति- रूचिकर नरउन मलिछाम। चन्द्रकर तुने सन्तति-नरउन सुल्हनी। विशो सन्तति- नरउन त्रिपुरौली। हेलू सन्तति-नरउन भखरौली। दिवाकरापत्य-नरउन सुरसर, कवई। दिनकरापत्य-नरउन पुड़े। खाँतू कोने-नरउन वत्सवाल। शक्तिरायपुर नरउन- दामोदरापत्य-नरउन जरहटिया। मुरारी सन्तति-नरउन तेघरा। योगीश्वरापत्य-नरउन ओझोली कसियाम। जगद्धरापत्य-नरउन वोड़ियाल। चक्रेश्वरापत्य-नरउन शक्तिरायपुर। नोने सन्तति-नरउन मलंगिया, करहिया, पचरूखी। होरे सन्तति-नरउन नयगामा भखरौली समेत। एते नरउन मूलग्राम।

अथ पनिचोभ मूल अन्तर्गत मूलग्राम बीजी: मधुकरापत्य पनिचोभ तरौनी, झौवा, पद्मपुर समेत। शिवपति गुणीश्वरापत्य- पनिचोभ सुल्हनी। विशो रातू प्र0 रत्नाकर सन्तति-पनिचोभ अमौ (सौ)नी। भवेश्वरापत्य- पनिचोभ मैलाम। जोन सन्तति-पनिचोभ आहिल। यशु अदितू सन्तति-पनिचोभ आहिल। बाबू पाठकादि-पनिचोभ मैलाम, कटउना, विस्फी समेत। कामेश्वरापत्य- पनिचोभ पौनी, गन्दियाल। देहरि सन्तति- पनिचोभ कनौड़ी, तरौनी। लान्हू सन्तति- पनिचोभ उल्लू। जगन्नाथापत्य हरदत्त- पनिचोभ खड़का, बगड़ा, बयना समेत। आंगनि सुत पद्मादित्यापत्य-पनिचोभ मंगनी, श्रीखण्ड, महालठी, लोही, चकरहद, कर्णमान, तनकी समेत। हरिनाथापत्य-पनिचोभ मखनाहा, कंजोली समेत। चण्डेश्वरापत्य हरिवंश सुत रत्नाकरापत्य-पनिचोभ बथैया। चक्रेश्वरापत्य -पनिचोभ कुरसौ। वाटू सन्तति-पनिचोभ चक्रहद सिउली वासी। बिरपुर पनिचोभ रातू सन्तति-पनिचोभ सुन्दरवाल। हारू सन्तति- पनिचोभ करियन। वास्त सन्तति-पनिचोभ भिट्ठी। महेश्वरापत्य-पनिचोभ देशुआल। दिनकर, मधुकरापत्य-पनिचोभ जरहटिया। रामेश्वर सन्तति चन्द्रकरापत्य-पनिचोभ अलदाश। वीर सन्तति केशवापत्य-भटौर, शहजादपुर, बलिया समेत। वासुदेव सन्तति-पनिचोभ ददरी। सोने सन्तति-पनिचोभ ब्रह्मोली। धरादित्य प्रसाद धराई सन्तति- पनिचोभ अमरावती। रत्नाकर प्र0 रातू सन्तति- पनिचोभ

करहिया, उसरौली, आदित्यडीह। हरिश्वरापत्य-पनिचोभ डीहा। सोमेश्वरापत्य- पनिचोभ बघाँत, डीहा। रघु सन्तति-पनिचोभ रभिपुर डीहा। रवि गोपाल सन्तति-पनिचोभ तरौनी। हरिशर्म्मापत्य-पनिचोभ महुवा। वाटनापत्य-पनिचोभ तरौनी, बैगनी। रूचिशर्मा जगन्नाथापत्य-पनिचोभ मटिरम। शुचिनाथापत्य-पनिचोभ ततैल। शशिधर सन्तति-पनिचोभ ब्रह्मपुर, नेहरा। भवनाथापत्य -पनिचोभ पुरुषौली। देवादित्यापत्य-पनिचोभ पुरुषौली। एते पनिचोभ ग्राम।

अथ कुजौली मूल अन्तर्गत मूलाग्राम बीजी: गोपाल सन्तति हरिहर, यशोधर- कुजिलवाड़ बेहटा। सूपन, नाथू, पाँथू लक्ष्मीकर सन्तति-कुजिलवाड़ भखरौली। जीवे जोर सन्तति कुजिलवाड़ मलंगिया। मेधाकर सन्तति -बनकुजौली। रातू सन्तति-कुजिलवाड़ सिझुनाथ कन्धराइन। सुरपति सन्तति- कुजिलवाड़ बड़साम। गणपति सन्तति-कुजिलवाड़ दिगउन। लक्ष्मीपति-कुजिलवाड़ महिन्द्रवाड़। चन्द्रेश्वर, हरि-कुजिलवाड़ दिगओन। सोने सन्तति-कुजिलवाड़ लोआम, महोखरि। विष्णुकर सन्तति-कुजिलवाड़ परसौनी। रूपन सन्तति-कुजिलवाड़ कन्धराइन। सोंसे सन्तति-कुजिलवाड़ लोआम। राजू सन्तति-सुधाकर-कुजिलवाड़ सरावय। लक्ष्मीकर सुत प्रज्ञाकर अमृतकर- कुजिलवाड़ बेजौली। देवादित्यापत्य- कुजिलवाड़ दिसौड़ी। चन्द्रकरापत्य-कुजिलवाड़ खयरा। गिरिपति सन्तति- कुजिलवाड़ चन्द्रदिया। विधुकर सन्तति- कुजिलवाड़ मंगरौनी। हरिकर तत्रैव। सोम सन्तति-कुजिलवाड़ कथहर। गांगू सन्तति- कुजिलवाड़ थाहर। शशिकर सन्तति-कुजिलवाड़ डुमरा, लहना। प्रीतिकर सन्तति- कुजिलवाड़ बेल्हवाड़। वेद सन्तति-कुजिलवाड़ डीह कुजौली। विरेश्वर सन्तति-कुजिलवाड़ रूदनिगाम। भवे सन्तति-कुजिलवाड़ बैकक, मल्दडीहा। परान सन्तति-कुजिलवाड़ नेयाम। एते कुजौली मूलग्राम।

उपरोक्त प्रकारें बुझल जाए जे कोनहु मूलक उपशाखा मूलक बीजी सँ कतैक नीचां आबि पृथक भेल ओ भिन्न-भिन्न मूलक तत्कालीन शाखा कोन ग्राम मे वास कए रहल छलाह। एहि सँ कोनहुं गामक प्राचीनताक

बोध होइत अछि। मूलक नामकरण मात्र मिथिलेक ग्रामक आधार पर नहिं अछि। एहि मे मध्य भारतक गाम सभ सेहो चर्चित अछि। यथा खण्डवला = खण्डवावाला = खड़ोरय। खण्डवला मूलक प्राचीन संज्ञा गंगोली (गंगुलवार) थीक। परंच जखन म0म0उ0 शंकर्षण ठाकुर अपन शिक्षणशाला खण्डवा प्रान्त सम्प्रति मध्य प्रदेश मे पा्रंभ कएलैन्हि तँ ओ स्वयं आ हुनक संतति लोकनि दीर्घकाल धरि ओतहि वास कएल ओ एखनहु हुनकर किछु अपत्यापत्य लोकनि ओतहि ठाकुर आस्पद सँ चिन्हल जाइत छथि। परंच शंकर्षण ठाकुरक आठम पीढ़ी मे ठ0 सुरपति मिथिला मध्य आबि बसलाह। ओ हुनक सन्तान खण्डवला (खड़ौरय) मूलक घोषित भेलाह। एहि तरहें बहुत मूलक इतिहास अछि। मूलग्रामक रूप मे मधुबनी, सीतामढ़ी, बैशाली, दरभंगा, मुजफ्फरपुर, सहरसा, सुपौल, मुंगेर, प्राचीन पूर्णियाक कतिपय गाँव चर्चित अछि। एकर अतिरिक्त परवर्तीकाल मे जखन भिन्न-भिन्न मूल ओ भिन्न-भिन्न मूलग्रामक बीच उच्चता-न्यूनताक विचार प्रसारित कएल गेल तँ एक नवशब्द डेरा सेहो चर्चा मे आएल, जे अमुक-अमुक मूल ओ अमुक-अमुक मूलग्राम मे किछु कथित विशिष्ट घरक उल्लेख कए तकरा श्रेष्ठ डेरा कहल गेल। बिना कोनो बौद्धिक आधारक सहयोग लेने। मिथिला मे गोलैसी (गुट) शब्द व्यवहार मे आएल अछि। छोट-छोट तात्कालिक व्यवहारक मौखिक उल्लेख कए कहय जाए लागल जे अमुक-अमुक डेरा तकर पालन करइत छथि तँ ओ श्रेष्ठ भेलाह ओ बांकी ओहि वंशक न्यून कहल जाए लगलाह ओ स्थिति जातीय एकताक हेतु विनाशक सिद्ध भेल। तत्कालीन समाज किछु अदुरन्देशी अव्यावहारिक विद्वानक मुखापेक्षी भए दिग्भ्रमित होएत रहल, तकर अवशेष एखनहु गाम-गाम मे देखना जाइछ। पंजी प्रबन्धक उद्देश्य से नहिं छल आ एहनो सोच पंजी प्रबन्धक नहिं छल जे एकर उपयोग समाज कें बाँटवा लेल कएल जाए, अपितु, व्यापक ओ महती अभिज्ञान जोगौने आबि रहल अछि पंजीक पुस्तक ओ वंशक परिचयक रक्षक संवर्द्धक ओ उन्नायक थिकाह आंगुर पर गिनल जाए वाला पंजीकार। पंजीक पुस्तक मे उल्लेख कएल जाइत अछि- आनुवंशीक इतिहास, समय-समय पर

कएल गेल स्थान परिवर्त्तनक, वंशक शैक्षणिक स्थितिक, वंश मे आएल गुण-दोषक। प्रत्येक नारी ओ पुरुषक विवाहक। समय-समय पर प्रचलित शैक्षणिक उपाधि ओ सभसँ महत्त्वपूर्ण बात जे पुरुष प्रधान समाज मे नारीक नामोल्लेख विस्मृत भए जाएत अछि से पंजी प्रबन्ध पीढ़ी सँ पीढ़ी धरि नारी नामक उल्लेख कएने जाइत अछि। नारी नामक चर्च करइत मोन पड़ैत छथि परम बिदुषी धर्मशास्त्रक व्याख्यात्री अलौकिक प्रतिभासम्पन्न ओ ओजस्वी वक्तृताक अधिकारिणी ठकुराइन लखिमा। ठकुराइन कहने हुनका ठाकुर आस्पदधारी नहिं बुझि एहि अर्थ मे लेल जाए जे शास्त्रोक्त वचन उचित समय पर युक्ति-युक्त कहबाक प्रतिभा जनिका मे हो से महिला। आ 13म, 14म शताब्दी अर्थात् हुनकर जीवनकाल (महाराज हरिसिंहदेवक शासनकाल) मे सेहो कहल जाइल छल। पंजी प्रबन्ध ओ पंजीकार रूपी संस्थाक गठन मे हुनकर यथेष्ट योगदान छलैन्हि। कुमारिल भट्टक (सातम शताब्दी) समय मे प्रचलित पंजी प्रबंधक पूर्व स्वरूप समूह लेख्य प्रथाक जखन ह्रास भए रहल छल आ परिचयक अभाव मे अनेकों विवाह मनु याज्ञवल्क्यक निर्देशक विरूद्ध भेल तऽ धर्मपालनक चिन्ता ब्राह्मण मध्य पसरल। विवाह कोन कान्या सँ करी आ कोन कान्या सँ निषेध हो एहि लेल वंश परिचयक आवश्यकता छल। समाजक विद्वत वर्ग चिन्तन कए सकैत छी जे 13म, 14म शताब्दी मे भारतक शासक वंश मे जे परिवर्त्तन आएल से छल सनातन बिरोधी शासक वंश। समस्त हिन्दू जनता धर्मरक्षाक चिन्ता मे त्राहिमाम कए रहल छल पूरा समाज विश्रृंखल भऽ रहल छल। सनातन धर्मावलम्बी यत्र तत्र पलायन कऽ रहल छलाह। मिथिलाक महान शासक ओइनिवार वंशक महाराज शिवसिंहक शासन सँ पूर्वहिक वार्ता थीक, जे बिदूषी लखिमा प्राचीन पूर्णियाक श्रीपुर परगन्नाक दरिहरा मूलक मताओन शाखाक रति मिश्रक पुत्री अलयवाड़ बैगनी मूलक म0म0 रामेश्वर जे बनैली राजवंशक पूर्व पुरुषा छलाह तनिक धर्मपरायणा पत्नी पंजीक वर्त्तमान स्वरूप मे अनवा मे वैचारिक ओ सक्रिय सहयोग प्रदान कएलैन्हि ओ पण्डुआ महिन्द्रपुर मूलक सदुपाध्याय गुणाकर जे हमर

उन्नीसम पीढ़ीक पुरुषा रहैथि आ स्वेच्छया आनुवंशिक रूपें ब्राह्मणादि वर्गक परिचय संग्रहण मे लागल छलाह तिनकर अन्वेषण कए महाराज हरिसिंहदेव (कार्णाट वंश) सँ राज्यादेश कराए पंजीकार नियुक्त करवौलन्हि से एकटा भिन्ने इतिहास थीक। तकर सविस्तार चर्चा हम अपन आन पुस्तक मे करब।

पंजी प्रबन्ध भारत वर्ष भरि मे मिथिलाक गौरव पताका थीक। प्रमाणस्वरूप हम कहि सकैत छी जे महर्षि मनु महर्षि याज्ञवल्क्य, शातातप, लिखित, शंख नारद प्रभृति धर्मविचारक लोकनि जे जनकल्याणक हेतु श्रेष्ठतम श्रृष्टि पर विचार कएलैन्हि चिन्तन कएलैन्हि आ एहि निष्कर्ष पर पहुँचलाह जे विवाहक हेतु युग्मक चयन कोन रूपें हो तकर निर्देश कएलैन्हि से अग्रलिखित अछि-

प्रथम निर्देश ''मातृतः पंचमी त्यक्त्वा पितृतः सप्तमी त्यजेत्।'' (परवर्तीकाल मे भजेत्) अर्थात कोनो कन्या जाहि व्यक्ति सँ पाँचम पीढ़ी धरि पड़ैत हो से व्यक्ति वरक मातृ पक्ष मे नहिं पबैत हो तथा जाहि व्यक्ति सँ सातम पिढ़ी धरि पड़ैत हो से बरक पितृ पक्षक व्यक्ति नहिं। परंच एकर बाध मे ई वचन राखल गेल जे वरक मातृ पक्ष आ पितृ पक्षक सीमा अनन्त नहिं हो ताहि हेतु वचन आएल-''पंचमात् सप्तमात् उर्ध्वं मातृतः पितृतस्तथा। सपिण्डता निवर्तेत सर्व वर्णेष्वयं विधिः।'' अर्थात वरक मातृ सपिण्डता पाँच पीढ़ी धरि ओ पितृ सपिण्डता सात पीढ़ी धरि।

एहि तरहें हम देखैत छी जे असपिण्डा कन्या विवाहक हेतु अनुमोदित होइत छथि। जीवविज्ञान मे गुण सूत्रक सिद्धान्त ;ज्ीमवतल व िब्ीतवउवेवउेद्ध एहि रूपक अछि।

द्वितीय निर्देश: कन्या-वरक गोत्र एक नहिं हो अर्थात समगोत्र नहिं हो।

तृतीय निर्देश: कन्या-वरक प्रवर एक नहिं हो अर्थात समान गुरुकुलक शिष्य वर्ग मे नहिं पड़ैत हो। तँय वत्स गोत्र ओ सावर्ण गोत्र मध्य विवाह

सम्बन्ध निषेध होइत अछि। कारण दूनूक प्रवर एकहि थिकाह।

चतुर्थ निर्देश: काष्ठ मातुल (कठ मामक) सन्तान नहिं हो। अर्थात वरक विमाताक (सतमायक) भायक सन्तान कन्या नहिं हो।

पाँचम निर्देश दोहराओल गेल अछि जे मातृ सपिण्ड मे कन्या नहिं हो, से जखने मातृ सपिण्ड विचार प्रथम निर्देश मे भऽ गेल तऽ ई नियम अनुपयुक्त अछि। परवर्तीकाल मे किछु आन-आन कारण सँ पंजीकार मुखापेक्षी भए अनुचित व्याख्या दए चलवैत रहलाह जे मातृ सपिण्ड सात पिढ़ी धरि, एहन वचन धर्मशास्त्र मे कतहु नहिं अछि। पंचमात् उर्ध्व मातृ सपिण्डताक निवृतिक सूचना स्पष्ट प्राप्त अछि।

उपरोक्त सभटा निर्देश समस्त ब्राह्मण (पंच गौड़ $ पंच द्रविड़) लेल छल। एहि हेतु पिढ़ीक गणना ओ मातृ पक्ष ओ पितृ पक्षक विवाहक विवरण प्राप्त होएब आवश्यक। एहि कार्य मे मात्र मैथिल ब्राह्मण सक्षम भेलाह ओ अद्यावधि पालन कए रहल छथि सहस्त्र वर्ष व्यतीत भेल। लिखित रूपें कोनो जातिगत व्यवस्था आन कोनो समाज मे एतेक सुदीर्घकाल सँ नहिं प्राप्त होएत अछि-सरिपहुँ ई गौरवक विषय थीक सबंधित समाज एहि इतिहास कें वर्त्तमानक संगे भविष्यहुक हेतु सुरक्षित ओ संवर्द्धित करवाक चेष्टा करथु। अवसर उपलब्ध अछि, भावी पीढ़ी इतिहास नष्ट करवाक कलंक नहिं लगाबथि। आब तऽ परिचय संग्रह करवाक हेतु अनेक माध्यम उपलब्ध अछि।

अन्य दोसर प्रकरण: जेना पूर्वहिं कहि अएलहुँ आ इतिहासप्रेमी समाज एहि तथ्य सँ अनभिज्ञ नहिं होएताह जे तेरहम शताब्दीक उपरान्त मिथिला मे सनातन धर्मावलम्बी समाज पर उत्तरोत्तर प्रताड़ना बढ़िते गेल आ वलात धर्मान्तरण समाज कें घोर निराशा मे धकेल देलक। ब्राह्मणक मूल प्रकृति थीक धर्म शास्त्रक चिन्तन करब ओ भावी पिढ़ीक हेतु धार्मिक वाङ्मयक विस्तारण करब। पुनर्लिपिकरण कार्य बाधित होबऽ लागल। कोनहु प्रकारक राजकीय संरक्षण विद्वत वर्ग कें नहिं रहि गेलेन्हि तँय ओ लोकनि केन्द्रीय मिथिला कें त्यागि मिथिलाक परिधि मे

यत्र-तत्र, वर्त्तमान उत्तराखण्ड राज्यक गढ़वाल क्षेत्र मे, मध्य भारतक क्षेत्र मे, राजपूताना मे, ब्रज क्षेत्र मे, बंग प्रान्त मे, उत्कल मे पसरि गेलाह। एखनहुँ किछु प्रतिष्ठित मूलक पूर्व मे गढ़वालक गढ़ उपसर्ग युक्त अछि। यथा गढ़ खण्डवला, गढ़ माण्डर, गढ़ घुसौत, गढ़ बेलउँच इत्यादि। एहि प्रकारें अठाहरम शताब्दीक उत्तरार्द्ध धरि मैथिल ब्राह्मणक पुनर्वासन भिन्न-भिन्न क्षेत्र मे होइते रहल। तहि काल मे अर्थात सोलहम-सतरहम शताब्दी मे बहुत राश ब्राह्मण, पूर्णिया परिसरक प्रतापी राजा सुरगन लोआम राजवंशक संस्थापक महाराज समर सिंह ओ हुनक उत्तराधिकारीक शासनकाल मे हुनक सहयोग पाबि प्राचीन पूर्णिया जिला मे आबि बसलाह। परंच ताहि सँ पहिनहु सँ एहि ठाम मैथिल ब्राह्मण छलाह जेना महाराज समर सिंह स्वयं हुनक मातृकुल तिलयवार मूलक, नरौन मूलक, बेलमोहन शाखा, रउढ़े वारी, कुजिलवाड़ नेयाम आदि।

कुलीन ब्राह्मणक जे पैंतीस गोट मूल चर्चित अछि से सभ एहि काल मे पूर्णिया प्रान्त मे आबि बसलाह, तखन जे ग्राम सँ प्रसिद्धि पाओल ताहि मे रशाढ़, धर्मडीहा, पद्मपुर, सौरिया, कालशर, गुणमति-यज्ञपल्ली (जगैली), चणका, डिहिया, निखरैल, दाँती, ब्राह्मणगाँव (बभनगाँव), भारीडीह, नेपड़ा, मेढ़ोल, पहुँसरा, रमै, सतघरा, रहुआ, सिंघिया, चिकनी, बनैली आदि। छिटफूट रूपें पुरान ग्राम यथा- सुखसेना, चुनापुर, काझी, रघुनाथपुर, हेमनगर, बहोरा, सरसी वर्तमान अररिया जिलाक प्रवाहा (परवाहा), रमै, सहबाजपुर, भद्रेश्वर, बीरबन, स्तम्भगढ़ (खम्भगढ़), खमगड़ा, जमुआ, श्रीपुर प्रान्तक सतघरा जे सब पुनः पुनर्वासित भए जहानपुर बसाओल बरदबट्टा-भटवाड़, फूलवाड़ी, मदनपुर ग्राम पुरान वासीक संगे सहवासी भेलाह। अररिया जिलाक सुलतानपुर परगना मे लगभग पचासेक गाम अछि जे सम्प्रति सघन ब्राह्मण आबादी वाला क्षेत्र अछि आ एहि ठामक ब्राह्मण सनातन धर्मक पोषक, श्रमजीवी विद्वानक सम्मान कएनिहार आ कौटुम्बिक आत्मियता सँ परिपूर्ण। परंच एखन हम सहर्ष चर्चा करब श्रीपुर प्रगन्नाक जहानपुर गामक।

श्रीपुर प्रगन्ना ओ तकर मुख्य ग्राम सतघरा जहानपुर अति ऊर्जावान, पुरुषार्थ सँ परिपूर्ण रचनात्मक अवसरवादिता मे निपुण लेकिन संस्कृति रक्षक सनातन धर्मक प्रति अत्यन्त स्नेह ओ भक्ति। सक्रियताक संगे सामाजिक कार्य मे योगदान देवऽ वाला। एहि सुचर्चित सुप्रतिष्ठित गाँव पर एकटा विस्तृत आलेख विद्वान शिक्षक श्रीयुत् महिनारायण बाबू सँ प्राप्त भेल से एहि ठाम उद्धृत करब उचित- प्राचीन पूर्णिया जिला सँ 1990 ई0 मे पृथक भए एकटा नव जिला बनल-अररिया जिला (नामकरणक इतिहास अछि जे जखन अंग्रेजी शासन छल ताहिकाल मे वर्त्तमान अररिया, खड़हिया बस्ती छल। पूर्णिया जिलाक अंगक रूप मे अंग्रेज शासक लोकनि एहि क्षेत्र कें-आर0 एरिया अर्थात् रूरल एरिया अर्थात् ग्रामीण क्षेत्र संबोधित कएलक। सैह आर0 एरिया परवर्तीकाल मे अररिया कहौलक) बनल। एहि अररिया सँ पच्चीस किलोमीटर पूर्व दिशा मे एकटा ग्राम अछि-जहानपुर। एहि गामक मातृ गाम थिक एकर अव्यवहित (सटल) पश्चिमोत्तरक गाम सतघरा जतऽ पनिचोभ झौवा, खण्डवला एकमा मूलक लोक सोलहम शताब्दीक प्रारम्भे सँ अवस्थित भऽ गेल छलाह। पनिचोभ झौवा मूलक निकाई-रकाई झा दु भाय ओ खण्डवला एकमा मूलक हरिदेव ठाकुर ओ गोविन्द ठाकुर दूनू भाय प्रेमपूर्वक वास कए रहल छलाह। ई दूनू घर परम पुरुषार्थी ब्राह्मणक छल। परंच हिनका लोकनिक तेसर पीढ़ी अबैत-अबैत वास परिवर्त्तन भए गेल ओ शास्त्रानुसार पूर्वाभिमुख भए जहानपुर गाम बसौलैन्हि निकाइक पौत्र उमानाथ प्र0 भक्त ओ प्रपौत्र जमीन्दार ठाकुर सिंह आओर खण्डवला एकमा मूलक भैयाराम ठाकुर। ई दूनू जन (व्यक्ति) गाम कें खूब सजौलन्हि। सभ वर्णक चिन्ता कए गाम मध्य बसौलैन्हि। गामक चतुर्दिक मे यवनाधिक्यता छल परंच ई दूनू घर सौमनस्यताक भावनाक प्रचार-प्रसार मे लागल रहलाह तँय कोनो प्रकारक धार्मिक मनोमालिन्यता नहिं प्रस्फुटित भेल। उत्तरोत्तर गामक विकास होएत रहल। दूर-नातिदूर गामक रक्षक सेहो रहल जहानपुर गाम। क्रमशः आन-आन मूलक लोक सभ सेहो आबि बसलाह एहि गाम मे हिनका लोकनिक स्नेह ओ सौजन्यता पाबिकें। ताहि मे खौआल सिमरवाड़

मूल, दरिहरा रतौली मूल ओ जजिवाल भड़गाम मूल।

भैयाराम ठाकुर प्रसिद्ध भैया ठाकुरक खुनाओल वृहदाकार पोखरि एखनहुँ विद्यमान अछि जे ताहि दिन मे अर्थात अठारहम शताब्दीक पूर्वार्द्ध मे एहि गामक सभ जन कें जलक आपूर्ति करबैत छल। परंच उचित देख-रेखक अभाव मे सुखायल नोर वाला आँखि भऽ गेल अछि ई पुरुषाक जलदायिनी पोखरि। एना तऽ होइते छैक, अस्तु आगाँ बढ़ी-

एहि गामक शक्तिदायिनी, प्रेरणादायिनी थिकीह श्रीश्रीश्री 108 दशभुजा भगवती ओ अष्ट भुजा दुर्गा। 1708 ई0 मे एहि गाम मे विष्णु, नरसिंह, राधा-कृष्ण ओ भगवती दुर्गाक विग्रहक स्थापना करायल जे पूर्वोक्त भक्त-प्रवर लोकनि कें स्वप्न मे दर्शन दए स्थान निर्देशित करैलखिन्ह जतऽ खुदाई कएला सँ विग्रह (प्रतिमा) प्राप्त भेलैन्हि। ओ भक्तिभाव सँ तकर स्थापना कएल गेल। ताहि दिन सँ गाम मे पूर्वहुँ सँ बेसी उत्साहक संचार होमय लागल। परवर्ती काल मे अर्थात उन्नीसम-बीसम शताब्दी मे एहि गाम मे गज-अश्वक व्यापार प्रारम्भ भेल तँ एहि गामक जमीन्दार लोकनि दुर्गा पूजाक अवसर पर बेल नौती ओ बेल तोड़ी अश्व-गज कें सजा कें एकटा महिमामय, बैभवमय वातावरण मे भगवतीक आराधना करथि। किछु रूपान्तरित रूपें एखनहुँ ओ भक्तिभाव एहि ग्रामवासीक मध्य देखल जाइत अछि। एखनहु स्व0 बलभद्र ठाकुरक सन्तति लोकनि समस्त गामक सहयोग पाबि एहि पूजा कें सोत्साह सम्पन्न करैत छथि भक्तिभाव सँ। एहि गामक अति प्राचीन घर पनिचोभ झौवा परिवार एक अप्रतिम विद्वान, राजनेता, कुशल वक्ता, सामाजिक संगठनकर्त्ता ओ स्वतंत्र भारतवर्षक बिहार राज्यक विधान सभा हेतु एक यशस्वी विधायक पं॰ पुण्यानन्द झाक रूप मे प्रदान कएलक जे ईमानदारीक हेतु सतत् एक मापदण्ड बनल रहताह। हुनकहि वंशक सकल मोहन झा जे प्रतिभा सँ दैदीप्यमान कएलैन्हि जहानपुर गाम कें परन्तु देवात् अल्पायु भेलाह। पं0 पुण्यानन्द झा प्राचीन पूर्णिया जिलाक प्रथमतः स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्तकर्त्ता मे सँ एक छलाह। हुनक साहित्यिक अवदान मैथिली साहित्यकार समाजक

हेतु विशिष्ट चर्चाक विषय रहल अछि। जमीन्दारी प्रथाक काल मे जे थोड़-बहुत ब्राह्मण जमीन्दार एहि क्षेत्र मे छलाह ताहि मे स्व0 गिरानन्द ठाकुर अत्यन्त न्यायनिष्ठ, समाज हितैषी ओ पुरुष पुंगव सिद्ध भेलाह। गामक मर्यादा ओ भरि गामक शुभेच्छा मे अपन समस्त जीवन बिताओल। अपन कुटुम्बक संग-संग भरिगामक कुटुम्ब कें अपनहिं कुटुम्ब बुझि सत्कार करथि। स्व0 गिरानन्द ठाकुर अंग्रेजी, फारसीक कुशल ज्ञाता छलाह। एहि गामक दरिहरा रतौली मूलक राशमोहन झा ऑनरेरी मजिस्ट्रेट भेलाह। ओ अपन उदारता एवं सरलताक हेतु चिरस्मरणीय रहताह। एहि परोपट्टा मे जतैक स्वतंत्रता सेनानी भेलाह ताहि मे सबसँ अधिक जहानपुर गामक सपूत राष्ट्रक हेतु अपन जीवन समर्पित कएलैन्हि ताहि मे अग्रगण्य छलाह स्व0 पं0 बलभद्र ठाकुर, स्व0 पं0 रामसुन्दर ठाकुर, स्व0 पं0 सुरेन्द्र मोहन ठाकुर, स्व0 पं0 गोखूलानन्द ठाकुर एवं स्व0 पं0 सूर्यमोहन ठाकुर हिनका लोकनिक अवदान कें श्रीपुर परगन्ना कोना बिसरि सकत। एहि गामक स्व0 शिवनारायण ठाकुर (भू0पू0 मुखिया), स्व0 पं0 विनेशदत्त ठाकुर (संगीत मर्मज्ञ), स्व0 ब्रजनन्दन ठाकुर (सरपंच), स्व0 हरिनन्दन ठाकुर (समयोचित वार्त्ताक धनी), स्व0 शिवशंकर झा (युनियन बोर्डक अध्यक्ष), स्व0 देवनारायण झा (प्राकृतिक चिकित्साक पक्षधर) एहि तरहें अनेक स्वनामधन्य नागरिक भेलाह जे जहानपुरक श्रीवृद्धि कएलैन्हि। ओ गामक यशोगाथा चहुँदिश पहुँचाओल।

सम्प्रति एहि गामक नवयुवक देश-देशान्तर मे पसरि गामक प्रतिष्ठाक चिन्ता करैत छथि। ओ गाम कें एकताक सूत्र मे बन्हने छथि। जे हृदय कें आह्लादित करैत अछि। सेवा निवृत दीर्घकालीन मुखिया सिंहौलि माण्डर मूलक श्रोत्रिय वंशावतंश श्रीयुत् हरिश्चन्द्र झा, प्रसिद्ध बेचन झाक पंचायतक राजनैतिक विकाशक चेतना जागृत करबाक सतत चेष्टा ओ समाजक निःस्वार्थ सेवा सरिपहुँ हुनका नेता बनबैत अछि। एखनहु श्री बेचन बाबू गामक विकासक चेष्टा मे निमग्न रहैत छथि। श्रीयुत पोलो झाक ग्रामक विकाश मे चिरस्मरणीय योगदान श्रीयुत् वासुकीनाथ ठाकुरक (राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त) अवदात अध्यापकीय

योगदान। अन्ततः चि0 श्रीयुत् अविनाश प्र0 गुड्डू ओ प्रभाकर ठाकुरक युवा नेतृत्व गामक विकाश मे अद्वितीय योगदान श्लाघनीय अछि।

एहि श्रीपुर प्रगन्नाक एकटा छोटछीन गाम चोपड़ा बखारी। ई गाम सौ वर्ष पूर्व जतैक बृहत छल ततैक आई नहिं अछि। लेकिन सभ सुसंस्कृत अतिथिप्रेमी पूर्वहुँ मे एहि गामक खण्डवला बेहट मूल परिवार जे तिरहुत सँ पद्मपुर कटिहार बसल छलाह। विद्वानक वंश मानल जाईत अछि। आ एखनहु शिक्षाक प्रति मात्र झुकाव। एहि ठाम महादेव दिग्धी, असुरा, तुलसिया, अन्धासूर इत्यादि गाँव अछि। जाहि मे असुरा सभ सँ बेसी पुरान ओ सघन आबादी वाला क्षेत्र परन्तु कनकई नदी सँ आक्रान्त। एहिठाम पूर्णिया जिलाक पूर्वोत्तर भूभाग जे परगन्ना आसजा (आसंगा शुद्धरूप शब्दकोषीय अर्थ जतऽ लोक अनुरक्त भऽ जाए, नीक साहचर्य पाबए, संयोग सम्मिलनक अवसर प्राप्त हो बन्हा कऽ रहि जाए, चिपकि जाए, अनुरागाधिक्य हो इत्यादि) परगन्ना अछि जाहि मे बेगमपुर, एकम्बा, विष्णपुर, असर्ना, सकमा, भवानीपुर ओ उफरौल ग्राम अछि ताहि मे विष्णुपुर ग्राम सर्वोत्तम-एहि गाम मे मूलतः दू मूलक ब्राह्मण छथि-हरिअम्ब अहिल आ खौआड़े कुरमा। खौआड़े कुरमा मूलक राजबनैलीक मित्रनाथ झा फारसीवेत्ता, तहसीलदार ओ परम पुरुषार्थी व्यक्तित्व वाला छलाह। एखनहु हिनकर सन्तति लोकनि नीक सामाजिक सरोकार वाला आ संस्कृति पोषक छथि। वर्त्तमान मे एहि वंशक नवयुवक सब उत्तम शिक्षा पाबि नीक-नीक पद प्राप्त कएने छथि, ओ संस्कृति रक्षा मे उत्साहपूर्वक सहयोग करैत छथि। श्री नवीन बाबू समाजक सभ सँ पैघ हितैषी। हरिअम्ब आहिल मूलक झुकाव बीसम शताब्दी मे शिक्षक प्रति अभूतपूर्व रूपें बढ़लैन्हि। लाल मिश्रक चारि पुत्र मे सर्वश्रेष्ठ श्रीमान् सदावर्ती गुणानन्द, पùानन्द, तीर्थानन्द ओ गजानन्द मिश्र परिवारक प्रतिष्ठा बढ़ौलैन्हि। गुणानन्द मिश्र समाज हितैषिताक संगे आधुनिक शिक्षाक प्रचार-प्रसार हेतु विभिन्न विद्यालयक स्थापना कएलैन्हि ओ विपत्काल मे समाजक सहयोग कएलैन्हि। हिनक पुत्रद्वय श्री नागेश्वर मिश्र (एम0ए0) ओ प्रो0 डॉ0 लक्ष्मीश्वर मिश्र (सेवा निवृत उपाचार्य) सदाशयताक उच्च मापदण्ड

बनौने छथि। स्व0 पं0 तीर्थानन्द मिश्रक ज्येष्ठ पुत्र योग्यतम विद्वान पूर्णिया महाविद्यालयक स्थापना कएनिहार, प्राचार्य, मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगाक संस्थापक कुलपति अत्युच्च कोटिक शोधपरक लेखक आ बिहार सरकारक आर्थिक सलाहकार भेलाह। पूर्णिया परिसरक आर्थिक इतिहासक मूल गवेषक छलाह। हिनक ज्येष्ठ पुत्र डॉ0 प्रो0 रत्नेश्वर मिश्र अपन विद्वता मे अपन पिताक मान रखनिहार छथि। दीर्घकाल धरि मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगाक स्नातकोत्तर इतिहास विभागक प्रधान रहलाह। परंच साम्प्रतिक सरकारक संकीर्ण विचारक कारणें उच्च पद नहिं पाबि सकलाह। एखनहु भारतक इतिहासकारक मध्य अग्रगण्य विद्वान मानल जाईत छथि। भारतीय इतिहास कांग्रेसक सम्मानित सदस्य।

हवेली (नशिरा परगन्ना): हवेली प्रगन्नाक ब्राह्मण जे सांस्कृतिक रूपें नशिराक (नेति शिरा अर्थात् जिनका सँ श्रेष्ठ दोसर नहिं हो) ब्राह्मण सम्मानपूर्वक कहल जाइत छलाह से सभ बड़ सूक्ष्म आचार-विचारवाला। एहि क्षेत्र मे श्रोत्रिय ब्राह्मण लोकनि दीर्घकाल धरि वास कएलैन्हि। सुरगन लोआम राजवंशक छत्रछाया पाबि। कालान्तर मं श्रोत्रिय लोकनि खण्डवला वंशक शासक महाराज माधव सिंहक शासनकालक समय सँ (1760 ईस्वीक उपरान्त) तिरहुत वापस होबऽ लगलाह। परंच नशिराक गरिमा बनल रहल। मध्यकाल मे जे ब्राह्मण मिथिला सँ बंगालक प्रवास पर छलाह ताहि मे किछु परिवार बंगाल मे बेर-बेर पड़ऽ वाला अकाल ओ दुर्भिक्षक कारणें नशिरा आबि बसलाह। एहि मे एकटा वैयाकरणीय वंश अछि गंगोलीवार दिगौन मूलक राय परिवार। एहि राय आस्पदक (उपाधि) इतिहास थीक बंगाल प्रवास। सम्प्रति एहि वंशक लोक अरिहाना (सोनाली-कटिहार) मे रहल छथि। शिक्षाक प्रति झुकाव वो मानवीय सदाशयता सँ परिपूर्ण कुल अछि ई राय परिवार। परन्तु वर्तमान मे नशिरा परगन्नाक अधिकांश गाम सुप्त बुझा रहल अछि।

सौरिया, कालसर, पद्मपुर, भारीडीह, बभनगाम आदि गाम लुप्त भऽ

गेल। सौरिया जे सुरगन लोआम राजवंशक राजधानी छल तकर आब ब्राह्मण गामक रूप मे चर्चो नहिं अछि। सौरिया आ ऋगा नदीक कछेर पर भारीडीह मे एकहिं रूपक प्राचीन शिव मन्दिर अछि। सोलहम सँ अठारहम शताब्दी धरि जे यावनी अत्याचार सँ पीड़ित समाज छल अपन समक्ष मन्दिर ओ देवमूर्तिक भंजन देखी रहल छल प्रतिकार करबाक कोनहुटा मार्ग दृष्टिगोचर नहिं होएत छलैक। तखन सनातन प्रेमी लोक निर्गूण पंथ अपनौलक ताहि मे नाथ सम्प्रदायक चलन बढ़लैक। ओ लोकनि निर्गुण गबैत टोलीक-टोली मिथिला सँ बंगाल प्रवास पर जाए लगलाह नशिरा प्रगन्नाक अनेक ग्राम कदवा, भड़री, गोपीनगर इत्यादि तकर साक्ष्य अछि। भड़री सँ पूब दिश गोपीनगर गामक सन्निकटहिं मानीकनाथ नदी प्रकट भेल छलीह। एहि गामक दुर्दान्त जमीन्दारक विनाशक हेतु। एहि जमीन्दार वंशक नाश कए ओ नदी विलुप्त भेलीह आ गाम श्रापित भेल। एहि प्रकारक अनेक सत्य घटनाक कथा एहि क्षेत्र मे सुनल जाईत अछि। मैथिली भाषाक प्रथम शब्दकोषक रचनाकार ज्योतिरीश्वर ठाकुर नशिरहि बसैत छलाह।

धर्मपुर (धरमपुर) परगन्ना: पूर्णिया, अररिया ओ कटिहार जिलाक पश्चिमी भाग धरमपुर प्रान्त या परगन्ना बुझल जाईत अछि। मध्यकाल मे एहि क्षेत्र पर खण्डवला मूलक मिथिलेश ओ सुरगन लोआम मूलक पहुँसराधीस पूर्णियाक राजाक शासन छल। मिथिलेश राजा राघव सिंहक समय मे हुनकहि राजस्व अधिकारी वीरू कुरमी अपन एकटा किला बनौलक वीरनगर किला आओर राज के राजस्व पठौनाई बन्द कए देलक। ओकरा विरूद्ध सेना पठाओल गेल। ओहि युद्ध मे वीरूक बेटा मारल गेल आ स्वयं वीरू पराजित भेल। ओकरा संबंध मे एकटा कहावत एहि क्षेत्र मे प्रचलित अछि जे निम्नांकित अछि-

''वीरनगर वीर शाहक बसै कौशिका तीर।

का पति राखे कौशिका का राखे रघुवीर।।''

तत्कालीन पूर्णियाक कलक्टर बुकाननक पूर्णिया रिपोर्ट मे वर्णित अछि

जे वीरूक धृष्टतापूर्ण क्रिया-कलापक समाचार सुनि सरमस्त अलीखाँक सेनापतित्व मे दिल्ली सँ सेना पठाओल गेल। कौशीकीक तट पर युद्ध भेल। पहिल बेर तँ सेना हारल मुदा दोसर प्रयास मे महाराज दरभंगा राघव सिंहक मदति सँ वीरू पराजित भेल। महाराज राघव सिंहक नेतृत्व समस्त धर्मपुर परगन्ना पर भेलैन्हि परंच बाद मे नाथपुर ओ गोराढ़ी तालुका हुनका सँ लए पूर्णियाक सुरगन लोआम वंशक राजाक अधीन कए देल गेल। एहि क्षेत्र मे बनमनखी सँ सटले पश्चिम मे जानकीनगर परिसर मे महन्थ रामदाशक आध्यात्मिक शासन छल, जे बड़ प्रखर ओ सनातनक रक्षक छलाह। ओ यवनक विरूद्ध सनतान प्रेमी मे उत्साह भरैत छलाह। सिद्ध साधनाक बलें ओ सिंहक सवारी करैत दूरस्थ प्रान्त धरि यात्रा करथि। म्लेच्छ यवनक प्रताड़ना सँ ओ सनातन प्रेमीक उद्धार करैत छलाह। हुनक शिष्य परम्परा मे महन्थ राघवदाश सेहो प्रशस्त ओ उल्लेखनीय व्यक्तित्व भेलाह। एहि धर्मपुर प्रगन्नाक रशाढ़ ग्राम अपन आढ़्यताक हेतु प्रशस्त छल। काशी सँ शिक्षा प्राप्त विद्वान एहि ठाम आबि शास्त्रार्थ करथि ओ सम्मान पाबथि। एहि मे म0म0उ0 हरिश्वर मिश्र सर्वोपरि छलाह। एहि परिसर मे धमदाहा (धर्मडीहा) ग्राम अत्यन्त उच्च कोटिक विद्वत सन्तति पाबि आह्लादित छल। एहि मे म0म0उ0 चित्रपति झा, म0म0उ0 श्याम सुन्दर ठाकुर सारस्वत परम्पराक ध्वजवाहक छलाह। परन्तु एक पंजीकारक रूप मे दायित्व निर्वहन करैत हमर अपन मत एहि क्षेत्रक प्रति निराशाजनक बनल अछि। ई क्षेत्र एखन संस्कृति विमुख भए रहल अछि। येन-केन प्रकारेण अर्थोपार्जनक अतिरिक्त आओर कोनो गतिविधिक उच्च संस्कृतिक वाहकक रूप मे दृष्टिगोचर नहि भए रहल अछि। निष्कर्षतः कहि सकैत छी जे पूर्वक गरिमाक क्षरण भए रहल अछि। ईश्वर सँ प्रार्थना जे एहि परिसर मे बसऽ बला नागरिक अपन पूर्व गौरवपूर्ण इतिहासक रक्षा करथि। धर्मपुर प्रान्त मूलतः विष्णुक उपसनाक क्षेत्र रहल अछि तैंय एहि प्रान्त मे नृसिंह, राम ठाकुर, कृष्णक स्थानक अधिकता अछि। अस्तु, भगवान विष्णु एहि क्षेत्रक धार्मिक भावनाक विकास करथु से एहि रूपक प्रार्थना हम पंजीकार विद्यानन्द प्रसिद्ध

मोहनजी करबद्ध भए ईश्वर सँ कए रहल छियैन्हि।

अन्ततः सभसँ आवश्यक वार्ताक उल्लेख परमावश्यक अछि जे एहि आनुवंशिक इतिहासक सार्व जनकी करणक सभटा श्रेय छैन्हि मेहथ झंझारपुर वासी सम्प्रति वसन्त कुंज दिल्ली वासी पनिचोभ बीरपुर वंशावतंस अभियंता स्व0 कृपानन्द ठाकुरक सुपुत्र भगीरथावतार श्रीयुत गजेन्द्र ठाकुरजीक। श्री गजेन्द्र बाबू अपन अद्विितीय इच्छाशक्ति, कर्मनिष्ठा ओ मिथिलाक संस्कृति ओ इतिहास रक्षणक गुरूत्तर दायित्व कें सोत्साह ग्रहण करैत अपन सर्वस्व झोंकि एहि मिथिलाक गौरवपूर्ण इतिहास कें संसारक समक्ष प्रस्तुत कए रहल छथि। इुनकहि सत्प्रेरण ओ सहलेखकीय प्रयास सँ मैथिल ब्राह्मण समाजक समक्ष प्रस्तुत भऽ रहल अछि ई जीनोम मैपिंगक (मिथिलाक पंजी प्रबंध) द्वितीय भाग।

पारिभाषिक शब्दावली

एहि पुस्तकक पाठकक सुविधार्थ किछु दिशानिर्देश:-

आनुवंशिक इतिहास लिखबाक जे पुरान परिपाटी अछि ताहि सँ इतर ढ़ंगे पुस्तक लिखब दुरूह छल तँय, बिन परम्परा भंग कएने पुस्तकक लिप्यंतरण ओ संवर्द्धन कएल। सामान्य जन जे पंजी शास्त्र सँ अनभिज्ञ छथि तनिका एहि पुस्तक सँ अपन-अपन वंशक ज्ञान प्राप्त होइन्ह ताहि हेतु व्याख्या प्रस्तुत कए रहल छी-

सं या सँ (संभूत) अर्थात् प्रथमतः कोनहु वंशक सभसँ प्राचीन गाम जे मूल कहौलक। वाक्य मे जाहि शब्दक आगाँ सँ या सं भेटत ओ शब्द मूल थीक। मूलक दूखण्ड अछि-मूल ओ मूलग्राम। यथा-सोदरपुर सरिसव, दरिहरा राजनपुरा, माण्डर या मड़रै सिंहौलि, खण्डवला या खड़ौरे एकमा पण्डुए महिन्द्रपुर, नरौने या नरउनय शक्तिरायपुर। एहि सब मे क्रमशः सोदरपुर, दरिहरा, माण्डर या मड़रै, खण्डवला या खड़ौरे, पण्डुए नरौने मूल भेल। आओर सरिसव, राजनपुरा, सिंहौली, एकमा,

महिन्द्रपुर, शक्तिरायपुर मूलग्राम थिक। परन्तु जतय कतहुँ सरिसवे खांगुड़ भेटत ओहि ठाम सरिसवे मूल कहाओत आओर खांगुड़ वा छादन, सकरी मूलग्राम कहाओत सरिसव मूलक हेतु। एहिना सभ मूलक संग बुझवाक थिक। पंजीकार लोकनि अपन पुस्तक मे मूलग्राम पूर्वहि लिखैत छथि आओर मूल बाद मे जखन कि बाँकी लोक मूल पहिने बजैत छथि आ मूलग्राम बाद मे एहि मे कोनो दोष नहिं। एहि पुस्तक मे दोनों तरहक प्रयोग भेटत।

वाक्य व्याख्या: उदाहरण स्वरूप आसंगा (आसजा) प्रान्तक हरिअम्ब आहिल मूलक एक वंश विष्णुपुर गाम मे बसैत छथि। एहि मे चर्चा मे आएल अछि जे मिश्र लाल प्र0 डोमन सुता गुणानन्द, तीर्थानन्द, पùानन्द, गजानन्दाः लोहना सकराढ़ी सँ जुड़ाओन सुत दयानाथ दौ सरिसव सोदरपुर सँ दयानन्द दु दौ। यज्ञवती पुत्र सुताच। आउ, एकर व्याख्या देखी-हरिअम्ब मूल थिक, आहिल मूलग्राम, लाल मिश्र एहि हरिअम्ब आहिल मूलक एक व्यक्ति जे डोमन मिश्र सँ लोक मे प्रसिद्ध छलाह तँय हेतु लाल प्र0 (प्रसिद्ध) डोमन लिखल गेल। प्र0 प्रसिद्धताक द्योतक थिक। लाल प्र0 डोमन कें चारि बालक (पुत्र) तँय 'सुता' लिखल अछि, एक पुत्र रहने 'सुत', दूई पुत्र रहने 'सुतौ' आ तीन या तीन सँ अधिक मे 'सुता'। अस्तु एतऽ लाल सुता लिखल आगाँ चारू पुत्रक नाम अछि। ताहि सँ आगाँ लिखल अछि। लोहना सकराढ़ी सँ अर्थात् लोहना मूलग्राम भेल ओ सकराढ़ी (सकड़िवाड़) मूल थिक। एहि मूलक जुड़ाओन झाक बालक दयानाथ झाक पुत्री मे लाल प्र0 डोमनक विवाह अस्तु हुनक चारू बालक दयानाथ झाक दौहित्र (नाती) भेलाह तँय दौ। दौहित्रक संक्षिप्त रूप लिखल अछि। ताहि सँ आँगा लिखल अछि सरिसव सोदरपुर सँ श्यामनाथ 'दु दौ'। अर्थात् श्यामनाथक पुत्री मे दयानाथक विवाह अस्तु बुझबाक थिक जे श्यामनाथक दौहित्री मे लाल मिश्रक विवाह तनिक पुत्र चारू भाय अर्थात् दौहित्री पुत्र तँय श्यामनाथक आगाँ 'दु दौ' लिखल भेटत। आगाँ बढ़ी-यज्ञवती लाल मिश्रक धर्मपत्नी छलखिन्ह तँय लिखल जे यज्ञवती पुत्र अर्थात् गुणानन्दादि चारि भाय। सुताच अर्थात् यज्ञवतीक पुत्री परंच हुनका

पुत्री नहिं छलखिन्ह तँय सुताक आगाँ किछु नहिं लिखल अछि।

द्रष्टव्य-अपवाद: कतहु-कतहु सुताक आगाँ नाम नहिं अर्थात् सुताक रूप जे नाम अछि तनिका बालक नहिं। अर्थात् जनिका एकहुटा पुत्र नहिं ततहु सुता लिखल जाईत अछि।

आब आगाँ बढ़ी: श्रीमान् गुणानन्द सुतौ नागेश्वर लक्ष्मीश्वरौ मल्हनी देशे परशरमा वासी सरिसव सोदरपुर सँ डोमन सुत दामोदर दौ सतौली सतलखा सँ रघुनाथ दु दौ। सुताच गंगा कौशिल्या यमनिकाकें। एहि ठाम गुणानन्द मिश्रक धर्मपत्नीक नाम नहिं लिखल अछि। परंच सुताच अर्थात् हुनक तीनटा पुत्रीक नाम अछि। आओर हुनका लोकनिक विवाहक उल्लेख अछि जे आद्या नाहर वासी नरसाम बलियास सँ अनन्त सुत परमानन्द पत्नी। ए सुतौ मनबोध भगवानदेवौ। एहिठाम 'आद्या'क अर्थ थीक प्रथम पुत्री गंगा जनिक विवाह नाहर गामक बलियास मूलक नरसाम मूलग्रामक अनन्तक पुत्र परमानन्द सँ जाहि परमानन्दक दु बालक मनबोध ओ भगवानदेव एहि तरहें बाँकी पुत्री कें विवाहक उल्लेख अछि।

आगाँ बढ़ेत छी: श्रीमान् नागेश्वर सुत प्रदीप कुमार प्र0 मोहनजी सुखैत खौआल सँ पिलखवाड़ (तिरहुत) वासी म0म0उ0 चुम्बे सुत पिताम्बर दौ भट्टसिम्मरि वासी नगवाड़ घोसोत सँ गुंजेश्वर दु दौ। पन्ना पुत्र सुतेच बच्चू दाय ....।

एहि मे श्री नागेश्वर (एमए, प्रधानाध्यापक उच्च विद्यालय)क पुत्र भेलखिन्ह प्रदीप कुमार प्र0 मोहनजी ओ पत्नी भेलखिन्ह पन्ना दाय जे तिरहुत प्रान्तक खौआल सुखेत मूलक महामहोपाध्याय चुम्बे झाक पौत्री ओ पिताम्बर झाक पुत्री छलीह तथा भट्टसिम्मरि गामक घुसौत मूलक नगवाड़ मूलग्रामक गुंजेश्वर ठाकुरक दौहित्री (नतिनी) छलीह। हमरा बुझने एतेक व्याख्या पर्याप्त अछि उपरोक्त वाक्यक। कोनहु-कोनहु मूल मे एकनामा वंशावली लिखल अछि कतिपय कारण सँ।

'आद्या'क अर्थ प्रथम, 'अपरा'क अर्थ तकर बादक इ क्रम सन्तानक उल्लेख समाप्ति धरि चलत। किछु ठाम अपरा नहिं लिखि नामहिं लिखल अछि।

उपाधि सभक चर्चा सेहो आएल अछि एहि मे म0म0उ0 अर्थात् महामहोपाध्याय। सदु उ0 सदुपाध्याय, वैया0 अर्थात् पाणिनीय व्याकरणक विद्वान वैयाकरण, ज्यो0 अर्थात् ज्योतिर्विद ज्योतिषशास्त्रक विद्वान एहि तरहें आगमाचार्यक अर्थात् तंत्र विद्याक श्रेष्ठ ज्ञाता, तर्क पंचानन अर्थात् तर्कशास्त्रक समस्त आयामक ज्ञाता इत्यादि एहि तरहें बहुत राश राजकीय पदक सूचक शब्दावली अर्थात शान्ति विग्रहिक, पार्णागारिक, वार्तिक नैवन्धिक, महामहत्तक, सप्रक्रय महा सामन्ताधिपति, भाण्डागारिक, स्थानान्तरिक, मुद्राहस्तक, राजवल्लभ, धर्माध्यक्षक, धर्माधिकरणिक, प्रतिहस्त, करियादार इत्यादि व्यवहार मे आएल अछि पाँजिक पुस्तक मे से सभटा अनुसंधानक विषय थिक। कोनहु व्यक्तिक एकाधिक विवाह रहला सन्ताँ प्रथम विवाहक उल्लेखनोपरान्त द्वितीय विवाहक उल्लेख मे व्यक्तिक नामक पूर्व सेहो अपरा लिखल भेटत-तात्पर्य हुनक दोसर वा तेसर विवाह।

धरमपुर, श्रीपुर, नशिरा (हवेली), आसंगा (आसजा), सुलतानपुर, सूर्यापुर, मल्हनी, निशंखुड़ (निशंकपुर), हराउत, छई, कवखण्ड, काकयोनि इत्यादि परगन्नाक उल्लेख भौगोलिक दृष्टि सँ कएल गेल अछि जे कोन गाम, कोन क्षेत्र मे अवस्थित अछि। ई परगन्ना सभ देशक आजादीक पूर्व देशक नाम सँ सेहो बुझल जाइत छल। तँय धरमपुर देशे सुलतानपुर देशे पुस्तक मे लिखल भेटत।

पंजी प्रबंधक पृष्ठभूमि

आर्यावर्त्तक (आदर देवाक योग्य) सर्वोत्कृष्ट स्वरूप मिथिला अपन निस्तुकी वा ठोस ;ब्वदपितउ वत ैवसपकद्ध विचारक हेतु दुनियाँ भरि मे सुख्यात रहल अछि। एहि ठामक जीवन दर्शन धर्मप्राण लोकक हेतु

मार्गदर्शक सिद्ध होएत आएल अछि। गूढ़ धर्मशास्त्रीय वचनक व्याख्याक हेतु मिथिलाक व्यवहार प्रमाण बनल-धर्मस्य निर्णयो ज्ञेयो मिथिलाव्यवहारतः। समस्त शास्त्रीय परम्पराक पालन समयानुसार संस्कारित कए संशोधित ओ संवर्द्धित कए मिथिला भारतीय सनातन धर्मी समाज कें युगोचित मार्गदर्शन करवा मे समर्थ रहल अछि। मानवजीवनक विकास यात्रा मे पुंसवन संस्कार सँ लऽ कें मृत्योपरान्त सम्पादित संस्कार सभ पर सनातन धर्मग्रन्थ ओ स्मृतिग्रन्थादिसम मे जे निर्देश प्राप्त अछि ताहि मे मिथिलाक विद्वानक अद्वितीय योगदान अछि। सर्वोपरि विवाहक प्रसंग मे किएक तँ विवाह आओर परिवार, मानव जाति मे आत्म संरक्षण, वंशवृद्धि आओर जातीय जीवनक निरंतरता कें सुरक्षित रखबाक सर्वप्रमुख साधन थीक। अनित्य मनुष्य एहि माध्यमें अमरता प्राप्त करैछ। ब्रह्मपुराण मे कहल गेल अछि-

''अमृते नामरा देवाः पुत्रेण ब्राह्मणादयः ब्रह्म0पु0 104/9, ऋग्वेद मे पुत्र द्वारा अमृतत्व प्राप्तिक उल्लेख अछि-प्रजाभिरग्ने अमृतत्वश्याम-मि0तै0 सं0-1-4-46-1 इत्यादि। विवाहक माध्यमें मनुष्य सन्तान प्राप्त कऽ कें अपनाकें विस्तारित करैत अछि ओ संगहिं अमरता सेहो। एहि हेतुएँ संस्कृत मे बच्चाकें संतति सन्तान तनय इत्यादि कहल जाईत अछि। ई सभटा शब्द विस्तारवाची तनु धातु सँ बनल अछि। सन्तानक रूप मे पिताक पुनर्जन्म होईत छैक। एक दिश जँ मनुष्य कें अवश्यम्भावी मृत्युक दुख छैक तँ दोसर दिश इहो सन्तोष रहैत छैक जे सन्तान द्वारा ओ अनन्त काल तक जीवित रहत। एहि हेतुएँ विवाह कें समाजक केन्द्रीय सत्ता मानल गेल छैक। अस्तु, एतेक जे महत्वपूर्ण कार्य विवाह, जाहि पर श्रृष्टि टिकल अछि से कोन रूपें कएल जाए, कोन कन्या सँ विवाह कए सन्तान प्राप्त करी, ताहि पर याज्ञवल्क्यादि ऋषिगण जे अपन मिमांशा विभिन्न स्मृति ग्रन्थ सभ मे प्रस्तुत कएने छथि तकर सर्वतोभावेन पालन मिथिलहि टा मे संभव भए सकल अछि।

विवाहक प्रसंग ऋषि लोकनिक द्वारा देल गेल निषेध-विधेय वचन अछि

से निम्नोक्त अछि-(1) वर-कन्या स्वजाति हो (2) समान गोत्र ओ प्रवरक नहि हो (3) कन्या जाहि-जाहि पूर्वज सँ छठम स्थान धरि हो से वरक पितृ पक्षक सपिण्ड नहिं हो ततः पर कन्या जाहि-जाहि पूर्वज सँ पाँचम स्थान धरि हो से वरक मातृ पक्षक सपिण्ड नहिं हो अर्थात् असपिण्डा कन्या सँ विवाह करी सपिण्डताक परिधि निर्धारित अछि। ''पंचमात् सप्तमात् उर्ध्वं मातृतः पितृतस्तथा सपिण्डता निवर्त्तेत सर्ववर्णेष्वयं विधि''। एकरा दोसर रूपें बुझक हो तँ निम्नोक्त व्याख्या देखू- मातृतः पंचमी त्यक्त्वा पितृतः सप्तमी भजेत् (पूर्वकाल मे त्यजेत्)। वरक दूटा कुल होइत अछि पितृकुल ओ मातृकुल। पिता-पितामहादिक पितृकुल ओ मातृकुल वरक हेतु पितृकुल भेल-एहि मे जँ कोनो पितृपक्षक सपिण्ड पूर्वज सँ कन्या छठम स्थान धरिक अभ्यन्तर छथि वा मातृपक्षक सपिण्ड पूर्वज सँ कन्या पाँचम स्थान धरिक अभ्यन्तर छथि तँ ओहि कन्या सँ वरक वैवाहिक अधिकार नहिं। मूलार्थ अछि सपिण्डता निवृति- असपिण्डाकन्या विवाहार्थ अनुमोदित कएल गेल छथि। सपिण्डताक सीमा स्मृति सँ निर्धारित कएल गेल अछि। वरक पितृ पक्ष मे सात पीढ़ी धरि एकर अतिरिक्त आन कोनो दोसर प्रकारक सपिण्डताक चर्चा स्मृति ग्रन्थादि मे नहिं अछि। (4) कन्या-वरक कठमामक (विमाता अर्थात् सतमाय) सन्तान नहि हो। (5) वरक मातामह तथा पितामहक सन्तान कन्या नहिं हो (6) ज्येष्ठ कें अविवाहित रहला पर विवाह नहिं करबाक घोषणाक बादे छोटक विवाह हो (7) जीवित पत्नीक सोदर बहिन सँ विवाह नहिं हो। जीव विज्ञानक गुणसूत्रक ;ब्ीतवउवेवउेद्ध सिद्धान्त आ धर्मशास्त्रक सपिण्डता मे एहि सन्दर्भ मं एकवाक्यता अछि। अस्तु, विवाहक हेतु उपरोक्त निषेध ओ विधेय विज्ञान सम्मत अछि। वर्तमान जीवविज्ञान एवं आनुवंशिकी सिद्ध करैछ जे ''जीन'' अपन समस्त गुण-दोषक संगे कुल परंपरा मे अग्रसर होइत रहैछ। सातम (संशोधित छठम) ओ पाँचम पीढ़ीक बाद समस्त गुणसूत्रताक निवारण होइत छैक।

एहि सभ निर्देशक एक मात्र उद्येश्य अछि उत्तरोत्तर गुणवत्ता सँ परिपूर्ण सन्तान प्राप्त हो जे संसारक श्रीवृद्धि मे अपन सर्वश्रेष्ठ क्षमता लगा

सकथि। वस्तुतः ई संसार ईश्वरक एक प्रयोगशाला थीक। जतऽ प्रत्येक चिन्तनशील समाज अपन सुचिन्तित सुविचारित सिद्धान्त कें व्यावहारिक रूप देबा लेल उत्कंठित रहैत अछि। अस्तु एहि सब सिद्धान्तक व्यावहारिक परीक्षण तखनहिं संभव जखन सपिण्डताक ज्ञान प्राप्तिक हेतु वर ओ कन्याक यावतो परिचय उपलब्ध हो तँय वंश परम्पराक इतिहास राखब परमावश्यक रामायण, महाभारत, वायुपुराणादि ग्रन्थ मे हम देखैत छी जे विभिन्न वंशक वंशावली अत्यन्त प्रयासपूर्वक लिखल गेल अछि। रामायण मे मर्यादा पुरुषोत्तम राम ओ जगज्जननी सीताक विवाहक प्रसंग मे हुनका लोकनिक कुलक वर्णन क्रमशः वशिष्ठ ओ सांकाश्याक राजा कुशध्वज कएने छथि।

प्रदाने हि मुनिश्रेष्ठ कुलं निरवशेषतः।

वक्तव्यं कुलजातेन तन्निबोधमहामते।। बाल्मीकी रामायण- 1/7/12

ताहि सँ आगाँ बढ़ी तँ इशाक सातम् शताब्दी मे विद्यमान कुमारिल भट्टक रचित तंत्रवार्तिक मे विवाह संबंध मे प्रवृति-निवृति तय करबाक आधार रूप मे समूह लेख्यक परम्पराक संकेत प्राप्त होईछ-

विशिष्टे नैव हि प्रयत्नेन महाकुलीनाः परिरक्षन्ति आत्मानम। अनेनैव हि हेतुना राजाभिर्ब्राह्मणैश्च स्वपितृ पितामहादिपारम्पर्याविस्मरर्णार्थं समूह लेख्यानि प्रवर्तितानि। तथा च प्रति कुलं गुणदोषस्मरणात्तदनुरूपाः प्रवृति निवृत्तयो दृश्यन्ते।। तन्त्रवार्तिक-1-11-21

अर्थ: ओहि समय मे ब्राह्मण ओ क्षत्रीय लोकनि अपन-अपन पिता-पितामहादिक परम्पराक स्मरण रखवाक हेतु ओ विवाहक अवसर पर विभिन्न कुलक गुण-दोषक विचार कए नवीन संबंधक हेतु सम्मुख वा विमुख होएबाक लेल प्रयासपूर्वक वंश परिचय ''समूह लेख्य''क रूप मे रखैत छलाह। ई ''समूह लेख्य'' कुलक मान्यजन रखैत छलाह आ बेर पड़ला पर उपस्थित करैत छलाह। शताधिक वर्ष धरि एहिना चलैत रहल। परंच जेना कि पूर्वहिं लिखल अछि म्लेच्छ यवनक उत्पीड़न सँ

जखन समाज छिन्न-भिन्न होमय लागल। एकहि कुलक भिन्न-भिन्न शाखा देश-देशान्तर मे पलायन करैत गेलाह तखन ''समूह लेख्यक'' परम्परा सेहो विनष्ट भऽ गेल। बहुतो विवाह शास्त्र विरूद्ध होईत रहल। कतहुँ त्राण नहिं। समाज क्लेश मे निमग्न छल, एहि दुःकालक एकटा घटनाक चर्चा करब अनुचित नहिं। तेरहम श्ताब्दीक उत्तरार्द्ध मे जखन मिथिला मे कार्णाट वंशक शासन छल तऽ महाराज हरिसिंहदेवक राज्य सभाक धर्माध्यक्षक पद पर धर्मशास्त्रक प्रसिद्ध विद्वान हरिनाथ उपाध्याय पदासीन छलाह। दुर्योग सँ समुचित परिचयक अभाव मे हुनक विवाह गंगोर मूलक नयनाथक कान्या सँ अनधिकार मे भऽ गेलैन्हि आ विवाहोपरान्त शीघ्रे बूढ़-पुराणक मूँह सँ जे विवाहक अवसर पर विलम्ब सँ उपस्थित भेल छलाह तनिका सँ एहि दुर्घटनाक ज्ञान भेलैन्हि। सन्तप्त हृदय सँ ओ पत्नी कें अपन वृद्ध माताकें आश्रय मे राखि राजधानी चलि अएलाह। पत्नीकें सेहो एहि दुर्घटनाक ज्ञान भेलैन्हि। वर्त्तमान जीवनकें निस्सार बुझि शिवाराधना मे लागि गेलीह। प्रतिदिन गामक एकटा शिव मन्दिर मे पूजाक हेतु जाथि आ वृद्ध सासुक सेवा करथि। एहि मे जीवन बीतऽ लगलैन्हि। दीर्घकाल बीति गेल। एक बेर वर्षाक समय मे पूजाक हेतु मन्दिर गेलीह। पूजोपरान्त जे गाम दिशि विदा भेलीह तऽ वर्षा प्रारंभ भए गेलैक ओ ठमकि गेलीह। तखनहि एक हरवाहा वर्षा सँ बचवाक हेतु मन्दिर मे आएल। वर्षा रूकि गेला पर दूनू गोटे एकहिं बेर मन्दिर सँ प्रस्थान कएलैन्हि। ताहि स्थितिक लांछन लगाए गामक किछु अवण्ड युवक द्वारा पण्डितजी कें एहि मिथ्या कलंकक सूचना देल गेलैन्हि। ई सुनि पण्डिताईन अत्यन्त व्यथित भए गेलीह ओ तकर निवारणार्थ राज दरबार गेलीह आ अपनाकें निष्कलंक सिद्ध करबाक प्रार्थना राज सभा सँ कएलैन्हि। ताहि दिनक जे प्रायश्चित्तक विधान छल ताहि मे प्रथम प्रयासें ओ दोषी सिद्ध भेलीह। परंच ओ तऽ परम पवित्र छलीह, मात्र स्वजना विवाहक चलैत जे दोष हुनका मे व्याप्त छलैन्हि ताहि दोषें ओ प्रायश्चित्ति भेल छलीह। पुनश्च ओ अपन समस्या ओहि समयक सर्वश्रेष्ठ विदुषी धर्मशास्त्रक मर्मज्ञा लखिमा ठकुराइनक (ई लखिमा श्रीपुर प्रगन्नाक

फूलसरा ग्रामक दरिहरा मताओन मूलक मिमांशक रति मिश्रक आत्मजा छलीह ओ अलयवार मूलक महामहोपाध्याय रामेश्वरक धर्मपत्नी छलीह) शरणागत भए अपना समस्या रखलैन्हि। ओ हिनक जीवनक पूर्वापर घटना जानि प्रायश्चित्तक मंत्र ''नाहं चाण्डाल स्वजना गामी'' कें बदलि ''पतिर्भिन्ना नाहं चाण्डाल स्वजनागामी'' कए देलखिन्ह। एहि बेर ओ निर्दोषी सिद्ध भेलीह।

उपरोक्त घटना सँ प्रभावित भए महाराज हरिसिंहदेव अपन राज्यक विद्वान ब्राह्मण लोकनि कें आमंत्रित कए हुनका लोकनिकें एहि लेल प्रेरित कएलखिन्ह जे पूर्वक समूह लेख्यक परम्पराक विनष्ट भेला सँ जे धर्मक लोप भऽ रहल अछि तकर समाधान ताकथि। ब्राह्मण लोकनि दीर्घकाल धरि एहि पर कार्य कए एहि निष्कर्ष पर पहुँचलाह जे समस्त ब्राह्मण, क्षत्रीय ओ कर्ण कायस्थ समाजक वंशी परिचयक संग्रहणक ओ संरक्षणक दायित्व समाजक योग्यतम व्यक्तिकें देल जाए। ओ व्यक्ति धर्मशास्त्रज्ञ होथि ओ समाजक धर्मक रक्षाक हेतु तत्पर रहथि। विवाहक अवसर पर हुनकहिं सँ स्वस्ति पाबि ब्राह्मणादि वर्ग विवाह करिथ। परिचयक पुस्तक पंजी कहौलक ओ परिचय रखनिहार व्यक्ति पंजीकारक संज्ञा सँ विभूषित भेलाह। पहिल पंजीकार पण्डुआ ततैल (महिन्द्रपुर) मूलक सदुपाध्याय गुणाकर भेलाह जनिक परिचय एहि पुस्तकक लेखकक पूर्वजक परिचयक सन्दर्भ मे आएल छैन्हि। कालान्तर मे हुनक अनेक, शिष्योपशिष्य भेलैन्हि। पूर्व मे पंजीकारक सहयोगक हेतु गामे-गाम परिचेता सेहो होएत छलाह। जकर स्वरूप हैवनिधरि देखबा मे अबैत छल। महाराज हरिसिंहदेवक सभा मे जे पंजीकारक दायित्व सदुपाध्याय गुणाकर कें भेटल छलैन्हि ताहि सन्दर्भक श्लोक निन्मोक्त अछि:

नन्देन्दु शुन्यं शशि शाकवर्षे (1019)।

तत्छ्रावणस्यधवले मुनितिथ्यधस्तात्।।

स्वाती शनैश्चरदिने सुपुजित लग्ने।

श्री नान्यदेव नृपतिर्व्यदधीत वास्तं।।1।।

शास्तानान्यपतिर्वभूव नृपतिः

श्री गंगदेवोनृपतत्सूनून्नरसिंह देव

विजयी श्री शक्तिसिंह तत्सुतः

तत् सूनू खलु रामसिंह विजयी

भूपालवन्तः सुतो जातः श्री हरिसिंहदेव नृपतिः

कार्णाट चूड़ामणिः।।2।।

श्रीमन्तं गुणवन्तमुत्तमकुलस्नाया विशुद्धाशयं

संजातानु गवेषणोत्सुक तयात्सर्वानु व्यक्तिर्क्षमं।

चातुर्यश्चतुराननश्च प्रतिनिधि कृत्वाच्चतुर्द्धामिमां पंचादित्य कुलान्विता विवजया दित्ये ददौ पंजिकाम्।।3।।

भूपालावनि मौलि रत्न मुकुटालंकार हिरांकुर ज्योत्सो ज्वाल यटाल भाल शशिभिः लिलंच चंचल मुखः। शोभा भाजि गुणाकरे गुणवतां मानन्द कन्दोदरे। दृष्टवासभां हरिसिंहदेव नृपतिः पाणौददौ पंजिकाम्।।4।।

दृष्टवासभां श्री हरिसिंहदेव विचार्यचित्ते गुणिने सहिष्णौ, गुणाकरे मैथिलवंशे जाते पंजी ददौ धर्म विवेचणार्थम।।5।।

वालाÙियुग्म शशि सम्मित शाकवर्षे

पौषस्य शुक्ल नवमी रवि सूनूवारे

त्यक्त्वा सुपट्टन पुरी हरिसिंहदेवो

दुर्देव देव सित पथोरथे गिरी विवेशः।।6।।

मूल पञ्जी पोथी (दुनू भाग)

जीनोम मैपिंग (४५० ए.डी.सँ २००९ ए.डी.)--मिथिलाक पञ्जी प्रबन्ध

जीनियोलोजिकल मैपिंग (४५० ए.डी.सँ २००९ ए.डी.)--मिथिलाक पञ्जी प्रबन्ध -भाग-२

पञ्जी खण्ड-१

जीनियोलोजिकल मैपिंग
जीनोम मैपिंग
पञ्जी खण्ड-२
जीनियोलोजिकल मैपिंग
जीनोम मैपिंग

जीनियोलोजिकल मैपिंग डी.वी.डी.
जीनियोलोजिकल मैपिंग डी.वी.डी.
PANJI 1 DVD
PANJI 2 DVD
PANJI 3 DVD
PANJI 4 DVD
PANJI 5 DVD
PANJI 6 DVD
PANJI 7 DVD

PANJI 8 DVD
PANJI 9 DVD
PANJI 10 DVD
PANJI 11 DVD
PANJI 12 DVD
PANJI 13 DVD
PANJI 14 DVD
PANJI 15 DVD
PANJI 16 DVD
PANJI 17 DVD

पंजी (११००० मूल मिथिलाक्षर ताड़पत्र १७ टा पी.डी.एफ. फाइलमे)

दूषण पंजी
मोदानन्द झा शाखा पञ्जी
मंडार- मरड़े कश्यप-प्राचीन
प्राचीन पंजी (लेमीनेट कएल)
उतेढ़ पंजी
पनिचोभे बीरपुर
दरभंगा राज आदेश उतेढ आदि
छोटी झा पुस्तक निर्देशिका
पत्र पंजी
मूलग्राम पंजी

मूलग्राम परगना हिसाबे पंजी

मूल पंजी-२

मूल पंजी-३

मूल पंजी-४

मूल पंजी-५

मूल पंजी-६

मूल पंजी-७

देखू

http://videha.co.in/pothi.htm

अपन सुझाव आ योगदान ई-पत्र द्वारा ggajendra@gmail.com पर पठाउ।

৩/ ১৭০

পুত্র সুতমানীকঃ মাকেলাপি চিরিন্নাত রামচিমি কতঃ সিবো তন্দ্বর্তো । মভরম্মম্ভ মধুকর তনয়ঃ মথুরেশ নামা [illegible] শ্রীমাধবেকেঃ
মানি নিমান্দ্ভিতনয়া [illegible] ন্যু বটী এতেম ঘত্তব্রতময়া ভীহ [illegible] হুচিনাপ্ত জামন্দ্বানভিবাম
[illegible] সকলা সমুদ্র । এতেম্যা স্বর্ণ জাতে [illegible] । কাস্ত্রী [illegible] নামা [illegible]
মতা [illegible] পাত্তি [illegible] । পৃথ্বি পতি [illegible] জাতা [illegible] বুদ্ধিঃ । [illegible]
[illegible] মহাপা [illegible] । তেমিক [illegible] । তস্যাঃ [illegible] নামা [illegible] । জাতি
[illegible] ॥ [illegible] ভারেগ্যা [illegible] । [illegible] ॥

সবালন বিজ্ঞা । [illegible] রামমা সোদরা । তত্ত্বূর্তা হরিহরঃ প্রাণা [illegible] । [illegible]
বাঁকরা ॥ [illegible] প্রাপ্ত [illegible] । [illegible] রামবাম [illegible] দাবী ॥ [illegible]
[illegible] । গ্রামী [illegible] । প্রাণো [illegible] হরিহরতনয় প্রগুত [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] । [illegible] প্রবাস
মালে [illegible] ॥ [illegible] যজ্ঞোপবিত [illegible] । [illegible] রাম্মপ্রবাহ ।
[illegible] শ্রীরাধা [illegible] । তদনু [illegible] রামবাম [illegible] । [illegible]
[illegible] কৃত । [illegible]

4 — 172

শত্রুপক্ষী সমূহতো দুঃশীদীনস্তুণথাপসায় । [illegible] সমস্তলক্ষ্মী [illegible] ॥ [illegible] ।
সমস্তাহি যাবন বৎসরী বিধবা [illegible] । [illegible] । [illegible] ॥ [illegible]
বস্ত্রী বাৎসল্যাৎ প্রযত্নতঃ ॥ ততঃ [illegible] । [illegible] ॥ [illegible] । শ্রুত্বা
[illegible] বিগলৎকেশান্ । তস্যা [illegible] ॥ [illegible] । [illegible]
[illegible] হরিধিনাম [illegible] ॥ কতিচিৎ [illegible] । [illegible] । [illegible]
বিপ্রাঃ [illegible] ॥ তস্মাৎ [illegible] । [illegible] । [illegible]
তস্মাৎ [illegible] [illegible]

শ্রীমতী দেবমালোক্তাবী শ্রুত্বা [illegible] সমস্তুতি [illegible] বহুলাবতী নাম্নী [illegible] গ্রামাতে । গোবিন্দতনয়
বন্দ্যোবাবড়ী গ্রাম [illegible] । এস্থলঃ [illegible] । [illegible] মিহলো গ্রামবাসিনী । [illegible] বিধবা
যথাশালা নড়বড় গ্রাম । তত্তনয়ঃ শ্রীমান [illegible] । [illegible] তস্যাঃ পুত্রাঃ [illegible]
[illegible] । [illegible] ॥ [illegible] । তস্যাঃ
[illegible] ॥ [illegible] । [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

১২৩

তিন

সমেকানকে হংকেরশ্মি প্রাপ্তাপন: [illegible] । [illegible] গোপি [illegible] মধ্যে [illegible] ॥ অব্যাথ গণকী গ্রাম মধ্যে [illegible]
বিরাছিল । তদ্বাড়োমাপত্তিনা পাইলী [illegible] গ্রাম [illegible] পাঠক : পরে । [illegible] ॥ [illegible] মাদর
লশাণপরং । [illegible] ॥ [illegible] পাইলী তবান ॥ [illegible]
[illegible] । [illegible] ॥ [illegible]
লাউবান ॥ এতস্যা: [illegible] । একাকা দিন [illegible] গ্রাম [illegible]
[illegible] । [illegible] ॥ পাইলাজ [illegible]
গ্রামীণ: [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] কেরবান গ্রাম [illegible] । [illegible] কন্যা মধ্যে
নিপুনরূকালহ্রস্ব ॥ [illegible] ॥ [illegible] লিখন [illegible]

চার

দিনমধ্যে [illegible] । [illegible] গ্রাম [illegible] । [illegible]
[illegible] । [illegible] । [illegible]
তস্যা । [illegible] । তস্যা: [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] । [illegible]
[illegible] । [illegible] । [illegible]
মহাশয় । তস্যা [illegible] । [illegible] । তস্যা: [illegible]
[illegible]

১২৪

দত্তচন্দ্রকাহলোদ্ভবো নোহ[illegible] পরীতি ॥ তয়া [illegible] গন্ধমাননীবাসিনী ॥ পদ্মপাণি [illegible] তিস্রো [illegible] সমাশ্রয়ঃ ॥
তস্যাদয়কর: প্রথম রাজ্ঞিচন্দ্রাঃ প্রজাগতাঃ ॥ [illegible] পঞ্চসুত: [illegible] ॥ [illegible] সবলোক [illegible] ॥
অনন্ত সন্ততি: [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] গোপী [illegible]
মাতৃহাল্লেতো ॥ এতস্যা [illegible] গ্রাম [illegible] ॥
শুভ তিথি [illegible] বিবাহিতা ॥ [illegible] ॥ [illegible] স্মৃতে ॥

ওঁ নমঃ [illegible] পাতু ॥ [illegible] হিমশালা [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] যমার্থবিশাল
[illegible] ॥ [illegible] সহমুক্ত [illegible] হস্তি: ॥ মগধ [illegible]
শ্রীরাম: [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] কামিনী
কামকোহলশী ॥ [illegible] ॥ [illegible] বিভিন্ন [illegible] ॥
[illegible] ॥ [illegible] দত্তা [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

125

নিষ্ঠকেরস্যাপি পিয়ারোজকাশ্যপেনদ্বিঃ পাঠকেজীরশর্ম্মাঃ । গঙ্গাহেদখো উত্তমযো বনাত্তো মাহাদবাকান দত্তিবঃ ।। গতিপ্রাণিনেত্রমম ।।
পণ্ডিতরাজদত্তিনযাবিবিরা [illegible]শ্বর । পহিলীজপাকন্যা দহিহোত্রাসীনস্দ্রুশ ।। কাথিকোম মহাতিষ্ঠা তৈনীর্তিশ্রীজগ্মনা থেস্তুতমদ্ধ
পাসপোসবনু ডয়াত নামযোমাহিঃ ।। নিকগ্রা শ্রী ত্রিপ্রহে স্থির্ণ বতিরিম শ্রী মঙ্গরাইভি ভবমঁঠাকা মিশ্রা প্রারমিরমিষ্ঠ দেশাহ
মারতকি । এরস্তুরি প্রিগ্রাম বাহিকেকামপীতীত: । ঙপায়েমস্তুতমস্য: শ্রুহতপঙ্কগনাঠমী । রপ্রুতবংশারহব্যাপণ্ডুপানীশ্বহশ্ব্ৰজা ।।
খোঁবাউগ্রামমিশ্রিত শ্রীহরোধর্মমক্ষীগা: এস্তুত: স্রপন: প্রাপ্ত: স্মুতাদ্ভিমানাহত: । মিমরী মস্তুবেলৌভী হেদেত্রেমাপ্তমচ তস্ত্রতা
সোনাবী রামী সস্বপীয়াপ্পাদনা: । দুজাস্মৃতস্রুতশ্যাপি যবলো পহগো পিঠ ।। তিঁমত পাত মস্বস্তুত. তম্মগাহত্রিকোরোবহে ।।

গ্রন্থকামসখাতস্কৃতিঃ । ধোনি হঞ্চেবায় রাজ্যপাত্রিতঃ ।। তস্বধী মিব বিবাহ হেনন. তস্ত্রগায় বনিতাশ্রুপাদ্দ । ঋত যাজ্ঞোপবীতস্তুত
স্নেতীহন্ত সন্তুক: । রপ্তমৈত্র ধনদ্বী দ্বিজকন্যা সম্ভরবান ।। তাস্যাদয়ে কহ: স্বর্ফ হামনশ্মীকরা: প্রতস্মৃত গথ্যভসাহীম
স্ত্রিবাহিতা । তস্কাহে গমস্তেম স্নাত: মাহনদীবাকাহী: ।। ধন্যা ভত্তিহিমিম গ্রাম তস্মুত্তে বামদীরাকারে: । তক্ত বাহ্যবধুরা
নন্দা বড়াকোবাহ্নিনিহিত: । ধনহুম্মোক্ষতাশোক পত[illegible]প্রোনা । গ্রামরাশীনা: ।। স্মুতাপথন্তি যন্ত্রিস্য তস্ত্রাপ্যায় গ্রহকৃত । ওঁদেবী
বাস্ত্রী শ্রুণতস্যা: স্মতাশ নামাবহো: মাভী[illegible]   বিবাহিতা ।। হিমভিমিশ্বস্তুতস্যা: মোদবৈতী সামন্তুতী ।।

শ্রীবন্নী

২২৬

মহাশুভানন্দ বিহরা পালি স্থোমান পালি মহাশুভানন্দ বিহরাজজি হান করম্হা মাণ্ডব্য কহা মাবিসর মণ্ডর করম্হা মাদাবর

টুন মনমথ দাম্ হরিকুমাথা জান নাপান হরিনাথ পশুপাতি পাণ্ডু হরবন্ধু বিহারীজিন কার্ত্তিক হরবন্ধু

রাম্ভ পাপা শ্রীনাথ হতিধর দশরথ পাপা লক্ষ্মীপতি জয়দেব

হরিবপালি চীন্দ্র রামচন্দ্র প্রতিমন্থু

হরিনাথ পরমানন্দ গোপাল

ধানপতি ইন্দুপতি /২৬

মহীসী

২২৭

কৃর্ত্তান মহতাখোলা মোদকপুর পানী তনিয়াম পানী করহাঁ রূপনীবোলমল্লি বাধী পানী অরিজেও বরিয়ান পরোনী হরিবাঁ পানী

রাম্ভ রতনু রুচি নাথূ রুদ্র বিশ্বনাথ মরন ওহরি হরীশ্বর ভোন রাতনাত নতাই জানু রহুনাথ বালকৃষ্ণ

রামচন্দ্র জয়দত্ত হরিনাথ মতাব ধর্ম্মে মহপী ধনু রমাকান্ত

নকড় রুচিনাথ লান্ডু হরী দারিকা

রমনী রামশ্রী রুদ্র /২৮

রানলাপান

মহীশ্রা:

মহীপতি

সোদরপুর বনিয়াম গঙ্গাধরকমাইক মহিমহ নাথকমাইক কানিগাম গাজাকমাইক কমলনগ্রা বীকচী

মতিকর ডমরু নাথু নন্দীশ্বর কাত্তিগোকাদু

ভীম গঙ্গাধর রিষ্যা গাজো

নাথ নতীগাছে

১২৭১২

অনাথকালি জনাৰ্দন মাধাৰাম ভজন

কটোজী গাঙ্গোথান নামগাতৰ্জ্জন শিবদত্ত

আনপাতি পাতুকিও বিতাৰ

কৃষ্ণনাথ

/মোদকম্বর গোপীনাথ গঙ্গাধর মাতাঙ্গোপাল জানকী কামিনী জগন্নাথ

২২৮ বিশ্বেশ্বর কৃষ্ণকান্ত হরিহর গদাধর বসু নরেশ্বর

কুমার হলধর দামোদর রামু নরসিংহ

কবিতা

২০৮৪

ধারবদাগী ২১

মাত্তর কবর্ষ্যহাল্লোঋানজীরকমাহকিরেনখেতে পানী পাঙহীরমহা নিছতী
নডাগাঙ বস্তু মীত্র মীতাদিল মধির চান্দ খাঁজা মত্তনমাঁহ পাসী
ত্রাবাজ পীর জীরে কেমু লাপা ডর দাম
মধুসুদনখতা
১৬৭১

ধারবন্দাপ

কাশীনী মাণ্ডব নবাগ্রানিমাণ্ডব ডবাদিনকমাহক ত্রবান নিশ্চতি

জীব শ্রীচিকর শমি ডবাদিন নারায়ন মণ্ডলমাঠ

মহাজ শমি জীবু গনপতি ভাব

নীলানাথ ঘুতা

দাগী

৪৭

৭৭১।৩

রাসী

বয়ান

মাহাথ

মাথ জমী

১০

বস্তু নিবাস বেনতোর কবে ইং শেখ মাহিক দাবিতা জনরান মিলা ৩াং হারী স্ববান

স্থান খত্তক মীর পারক মজকুর মহেশ আঙ্কুর জমী

পুকুর কথা সদর

১২।৬

গা নত্রা

২৫

তফুলমধ্যে রত্ন নিবাস রাসিস্থান ফলদহে বিরাহুলাল কেওবাম বতি কমাবিক সহ্যয়াত

বরি নোচন খবাবং মুক্তাবিং বাজু বান্ধু দাড়ি

মীনকেতুর কচি ইংনে ফুলপাতি কাঁকই বতি বাম

বতিকা

ধয়

শ্রীরঘুনাথ

আদরব্রত কুম্ভরাম পরৌনী ভলে শ্যাম মোনোহ মাহেক বেনাভোত পানী পাওহী বনহা নিবতি

গোবিন্দ জীবনাথ ভানু হোর সীতাদির মাধব চান্দ খাজো মদনমাঁচ দাশী

গান্দু উমাপতি হবপতি মোহন কেষ্ণ গোপী ভর দাম

শীশভায়

১২৭।১

৪৮

শ্রীহরবদাগী

হৃদবিহঙ্গ স্তবরাজ লোচন উদ্ধবদাস
হরি মণি মানপাতি ভক্তি মাধব বালক মাণিক পনিরাউ পঞ্চহী বনহা নিত্যানন্দ
গোবিন্দ কিঙ্করপাতি জগন্নাথ রঘু রতন গোপাল চান্দ খাঁজো মদনমাধু দামী
প্রকৃষ্ট মমতা রামা মহীপাতি ভব দাম
৩৩।৫

মাঘড
বয

পাড়ুয়া হরিপুর নবাবোন কনন্দাই কেয়ারমাহক বিহিনার কেওঁইবাম বতিকমাহক মূর্খান
জানু নন্দন নোলে ভান্ড বাড়ু পাগু দক্ষিণ
পাতোন দুর্জন মবাবী কেয়ার কেউঁন্ত বতি বাম
যত্নবতা

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

কেশবাদ
মাধৌ

৪১

মহিন্দ্রাদ
দানী
ভাহ
নাথু
জয়োধিব
১২৫।২

নাথুকমাহেক সঙ্কীনী দশিছা দানী — কেশবাদ ভাবমত
কবন্তীহা
সঙ্কীধিব দাসিংহ জয়দত্ত কুমাঝিব
চদাধিব মীহ দাংপাদ কিহ্নুতি

পাথম
প্রাধান

২১

ক্ষোদনাথর দবিহবাশজোনী পারাৗী যাবৌনা ডীহ দবিহবাশজোনী পাথপাতিবাবলিনা
জোতানাথ যবমব মুবাবী হবিহব ক্ষাব নাহেশ্বর পবম
হাউ রীব জালা মনিধব মাধব হোবে
জীবিস্থত
৮১।।

রাত্রিনী — পানী পারোনী হরনকমাইক মাওত পানী করিমমা কেতুবাম পাল্লীনী

হরি রাণা মরাডামমবে ডাকত মাধাপতি রাত্রিনী —

পাটি হরন ডাকত ইথী বরি চান্দ

বিধরা শ্রবাকিস্মতা

৮৬ ১১৯।১

হাতাখোর

হরিশ্চন্দ্র লাহড়ীর কর্তৃত্বাধীন জমিনী লোকনাথ ভৌমিকের খবান হাতাখোর
নবহরি রাম হরিকর সর্বাকর দেওর উর্দ্ধ রক্ষিতে দেবদাস মিত্রসিংহ
ভূর্ব ভীম মীর হস্তিকর মহেশর সমির্ব লোচন রাম
স্বাবীমতা
১২৩।।২

পাণ্ডিমহদ্য কবর্য্যহা মাবিলহ রত্নাগিতকমা জয়রাম নীতিকণ্ঠক মাহক প্যহদী মতীশ্বরমাতা ধাঁধাপাত

নন্দঠাকুরী মাল্লীশ্বর মাঙ্কী লাহিন্দ কীর্ত্তিরাম মতীশ্বর

বাম বনেমালি ঐন্দ্রী নিতিকণ্ঠ ধূর্জ্জটী

৪৪ হরিকরযাত

১২৪।২

পাণ্ডিতজ্ঞ
সতঠাকুর

মোদনাবর পানী মোদনাধর দধি হিত খণ্ডন কৈরান লোখান ত্রুধ্যস্থান পঞ্চহৈছি বাহু মাতাঠাঁ তেজ্যেত
নাম নরপতি যেহ্য শ্রীক অর্থম রাজ্য প্রভু যদুনাথ বাবু
রাজ্যদেব তথি জন্মোধর নাথন শ্রীলে শ্রাগু পাঁথে মাজ্ঞি
শ্রীপতিযশ
৭৫১।।৭

থরনীদোলতি
জীহা

২১৪

ফজৌবী লোক্তাল ত্থালোত মাক্কীনী ডাবেকমাথক নদাম থরনীদোলতি
মাপান বমা পাতি বরিকব চাণ্ডো খনচুয় জীহাঁ
ইথারম্মীন হা হৈব রুদ্ধ ডাবে
নাথয়খতো
১০২৫৭

ঘরনী লৌনতি
জীহো

পারৌনী একহবা দ্বিজাতি লোককের পানী মতনখা মক্তীনী তাবেকমাহক নকাম লৌনতি জীহো
তাবদত স্বরপাতি লোনে পাক্ষু দুব দিয়াকর তাক ধনঞ্জয়
স্বর্ণাপাতি নতীনীনাথ লোবর বাদ হবিকর কাশীশ্বর মক্তীশ্বর
কথাবৃত্তা হরিহর
১২৬।।৭

৮২

নীতিক্ষ
মাগবতনয়া
ধীনা
৬৪৮
৯৮

সহিমাদ শ্যামোত সক্ষৌর বনহা সপ্তুরবসন্তুতি
মাঙ্ক্তি বতিকানু হায় ধর্ষাকা
বনেশ্যানি মুলকেও রবিক্ষর
বক্ষুপালিয়ণা

দমিহ্না মোদরধর দবিহ্না শ্যামোত তেবহোতা নবরাদ বতিকমাধ্বক
ডোকা মাক্তৈ শ্যাঁচ দামোদা নাঙ্খ্র লোনাকী নাজাতি
মহীনাক্ষ্য মাদাৰ্থ নবপতি হবি বতি ক্রিয়াস
জন্মাক্তো
লোভিকক্ষ্মপ্রিকবক্ষ্যা হংসনু

শ্রীহরি

যবনী দোনতি
জাঁহা

মহিন্দরাড
আদরত্তর দেওয়ান পানী নাম্ রুকমাইকা আঙ্গাথী জানকোমাইকে নাম / ভৈরব মান্দুর সানী হরিহর। রঘুবাথী জামনী মাশ্রত
বল্লুপতি নারিন্দ নাথ জাব মন্জয়
রতিপতি বিদ্যা জগ্যাধর গঙ্গাধর
বনডভয়তা
রেবতা॥১

ঝাঁদ বাবী লোচনে শুচনে
মহেশ ভীম রাঘু অনন্ত শুচনে রাম বারেশ্বর
নারায়নকান্ত
অকোল নারিন্দ মাথুর
মানে

মুখবিরকমাইকে যদুনন্দন
মানী হরবনী
হরিকৃষ্ণ দিগ্যায় জীবন্দ
বৈনজুরি নারায়ণ
গঙ্গানাথজী
গঙ্গাধর মহতী

জানকি

মোকাবত সাকিমান হরিহর কমাকি মোকাম দেবিপুর পানিতাড় বাঁশো তিনতা ত্রিপুরা অকালী গ্রাম পালকর

বাস্তুর স্বাক্ষর নাবু থাকে বতন কালীয়ান চাপাতি গোপ দেবদত্ত দেবনাথ

দেবনাথ বানেপাতি হরিহর দুব রাম রামকর সাহেব রিহু তোতি

জদুনাথ ৫৭।

শ্রী৪৭

জানকি
দেবনাথ 215

কৃষ্ণরাম গোপাল জগজীবন মাধব গোহরি জ্ঞানদা বিদ্যাপতি [illegible]
চণ্ডী নরু জীবন দেবাদিত্য নসীর ভূপতি গোপাল দাস ঈশ্বর জগন্নাথ
মাধ মোদন হরদেব
সুবলাপতিঘুঘা হরবল্লভ খেও বাঁধু বিদ্যাপতি বিদ্যাপতি দাস
৪৫।৪

জানকি
দেবদাস

পাৰোনী কৃষ্ণরাম রনিত্যানন্দ জীৱামকমাংকরন্তুনিত্যানন্দ মতাসেন ইঙ্গিরান তিনতা বিদ্যাপতিকমাইকি পীতাম্বর গোবৰ্দ্ধন
সভাপতি পবান গৌর
লাথে নারায়ন জীরাম
বতিপতিদ্বাতা
২৭৭২

লোব যবনু দামোদর উপাধি
মনস্থ হরপতি ডর
বিদ্যাপতি

শোনে হযদত
যোগে
দেবদাস

জানিক

দেরজাম

খোদাবখর পানী খবাল দবিহবা জীরকু মাহক তিনটা নাথুমাহক পোগাল মোদিম্বর

নাথন জাল বারি জীরি জীপতি পোতি হাদত

জনার্দ্দন রাই বাবরআটি শ্রমক নাথু

ততক্কিজন্মতা

১০২৬

গাছি দেয়াত

চাঁন্ড্রা

শ্রী২৮

মাজর রুস্তুম হাল লেখিন সোদাম্বর রজুনি গ্রাম শঙ্করবাটী পান্ডুহী মাবোনী দবিহল জমাদার কাহদী
নতাউ বস্তু মিতকর মাওর মাহেলার দুনী খবাডা মখবাডা
হাবাডা দীর জীরে উত্থোবন হোকে নীলনাথ কীর্তিরাম মটীশ্বর
মধুসূদনস্য
শ্রী১৭

ইতি কস্য
মতীশ্বরমাতা মাল্ডোয়াতা

পশ্চিমসদসাত
টাঁপো

সাতর খড়ৌরনা দৌহিত্র বহেরাঢী কন্নৌল জালয় মতিকরমাহিকব্রহ্মদত্ত সহদী বাইমাতা মাণ্ডোত্তা
চন্দ্রপতি দীর্ঘ ভর ৰবাই হরিহর বতিষর মাহেশ্বর বাই
নাহি সুনাকরমাই লোনে বতি মতিকর
জীবন্মৃতা
৭৭।৩

শ্ৰীসন্ধ্যা
ত্ৰিপুৰকণ্ঠ

শ্ৰীকৃষ্ণচন্দ্ৰমাণ্ডৰ বিশ্বনাথ কমাৰ কৰিলেক নন্দাম জয় কৰ কমাইক
অক্ষেন খাঁক
দিৱাকৰ বিশ্বনাথ
বস্তুধন ১০৪।৭

হাক কান্ত মণ্ডল্যা
শ্ৰীলাল জয়কৰ ত্ৰিপুৰক

হৰিসিংহ জাতি বহুবাধী শ্ৰীহৰিলাম সাবোনী ধৰ্ম্মদত্ত
গান্ধী মাধৱ বৰাহ খাঁন জাগু
কথাৰ দিৱাকৰ জগন্নাথ হৰিচন্দ্ৰ
নৰহৰি বিশ্বাত

শ্ৰীবাজ
বাজী
কডী
মানিকী

শ্ৰী৩৭

২।।

শ্রীকৃষ্ণ

ধর্মধর

আনন্দ

গোপাল মধু

ত্রিলোচন হৃদয়রাম দ্বারিকা প্রতাপ গোবিন্দ বৃন্দাবন আনন্দ / গোবর্দ্ধন বনমালী মহেশ্বর রামমোহন গোকুলানন্দ রাম

মহেশ জীবধর সাধুচরণ জগন্নাথ রামচন্দ্র বৈদ্য / শ্রীহরি গোপাল মাধব শ্রীহরি কানাই

হরি মহাদেব হরিহর / দয়ানন্দ হরিহর রাম রাম জয়কর

শ্রীকান্ত দিবাকর / মাধবচন্দ্র

১৩৩৮

জয়কৃষ্ণ মহলানবী

হরিদাস

মহলানবী

হরিদাস

তেনিক | একহবা মঙ্কবাহী—ডুহ্লনম্বগ হাবান তাহলমনুতি
পাতাই | মহাড়া মতিকর বধি ডাকর
 | বতন্থু মনপাতি মীত্র ধর্ম্মকর
ডাইড | মানখতা

ভেংউ
১৩।২।১৫

মাড়নহ্যা

হৃদ্বিকর ২।০ সোদরথ্য মাতৃৰ হৰিমস্তু দেৱনাথৰ মাতৃকাংক্তোৰ গুনপতি মাতৃক নন্দাম মাড়নহ্যা

পশুপতি জীবোধৰ ভোমী গুনপতি কাহ্ন হৃদ্বিকর

শ্ৰীহৰি দাম্ভ দেৱনাথ জীৱ

২২৪।৭ হৰিনাথমাতা

রাত্রিনী— ২৫ কল্যাহা গোদাম্বর মাণ্ডব রামুনকমাহক রাওনরনিবাস গোনাবী চানী রামা মাসা কুড়ইরাম পাবর্তী—

গোবিন্দ বেনী গোষ্ঠ নানা মানপাতি কদ মামই ভারিব মানপাতি

রিধরা গোনে জগন্নাথ রামুন ভক্তি দিনপাতি ভূঁয়া চরু চান্দ

কেদারনাথ ধ্যাজ ১৮১ ॥ হূঁ

শ্রীহং

মীতলখা
দুঃখিকেঠ

হৃষিরাম গোবৰ্দ্ধন ইস্কিরাম নন্দরাম কাশীরাম মতকম্মা
মাথ পক্ষপতি মনপতি কালামনুতি দুঃখিত
গোবিন্দ হরিহর চাঁদ বৃন্দাবন
যদুনন্দনদাস হরবন্ধু

কন্যায়া মধুসূদন স্মরনড় ভোগ হেতি মীভবঃ
কন্তিত্তপিবিনিত রানন্দে বৰ্দ্ধন ভো নেড়ে মৌতি
পীশ্রুতাঃ তস্যাওর বড়ুবন্ধু যতিমনী নামা পাতি
দৈবতঃ পাপ্তি কান্দা ভোজ ত্রোণী যবতি
তেঁৗখন্ডুকী বয়ী ॥

সন্মোহিনী
সবসম্প্রদায়

শ্রী২৮

আদকথনসকলরাগীজহ্নন্দনকমোহক জানয় স কোনী মাত তোনা রা লেকমোহক
শান্তি মাধব
সুকৃষ্ণ যদুনন্দন
জয়ানন্দ গজগাহ

শ্রীদর্শন মান্তু নাক
জনার্দন রামধন রায়

গত ডীহ
অনতা
মাহবাব হরিহরা সন্মোহিনী
জনাতা নারদীয় সবসম্প্রদায়

শ্রীহরি
গংকালীনী
পবমত্রাস্থান

২৫৮

শোদবরত রেনাশ্রোত [illegible] নাদ্দী শ্রীমনসা নারায়ন মাহিক দবিহিবা পবমত্রাস্থান পথ পাতিতা

কাশী ভরনাথ রাম উমারা নক্ষেত্রশ্বর
শুনী হরী মহারা নারায়ন
ঠাকুর লোব লোব
২৭৭১৮

কোম্পানি

মোহানা

শ্রী২৮/

খতরনা মৌজা নন্দহর নিজাম রাজবাটী মা৬৫

যবপতি কোলে হরিনাথ দিবাকর রবাহ মাসাঠ

ছার মোলে হরিনাথ সুধাকর জগন্নাথ স্থিতি

কান্দহর্তা

৩৬২।৩

কোম্বারুপানী

কোতয়ালী

মোহানা

পরোনী শ্রীযোতদবিহরা খাঁ সাহেব রাজবাটী মাজ্জিক মাহক মাণ্ডত
ফিরদর সমবর নন্দন শ্রীমন্ত মামত
ফপাদর জীয়াজ খাঁ ফদ শিবতি
রাঘাদের ঘতা
১৩৭২

রাজপুত্র ২০৭ হরিশ্চন্দ্র রানিত্মাস গোবিন্দমাণিক নবাবখান মতলব্যারীভুমাহেকমবান ত্রিনাথী ডীহ পানী

শ্যাম রাম দবিড়বা মুখরী

পুডী রাম্মাদের নারিন্দ কাহ ডাার দেনা কাম জানন্দ গবেষর কারন নারায়ন

উর্বে রীড়

মানিকী জ্যানীবাতা বস্তু বিদ্যানিধি লাহে ডানী

ইশ্বেজার

বজকথবন্দু

খতরনা ভুইরাম ভুইরাম খাঁক মাহক মাণ্ডব ইকীরানরাননিয়াম ব্ৰম্মা ঘ্ৰণ লম্বদী কৌণ্ডণ্যা হারি বজকথবন্দু

মহেশ্বর গণপতি খাঁক কৃত্তিকর কথার কেয়ার মাল্তি থাকু ভালু বাম

লাভীন লোণা ভবানীনাথ ভরনাথ বরিদত লাগান মান্তি নবসিংহ

মাধবখাতা

ভীহুহ ২৫২।।৮

সুবচনী

ভাবানাক্ষী

শ্রী২১/

ঘুঙরনা ক্রবষ্যা নবাম ত্রেচোগ মালোনী পূর্বাত
জ্ঞানপতি গান্ধেশ্বর নাটীজভ্রাদিহ ধীর ভট্টাকুমান সুবচনী
খবপতি ভাধন খবর্গা জাগা গঙ্গ
চুকেছয়া
৪।।২

পরম ব্রাহ্মণ

২০৬

ছুৎরান শোভাশান রেনাগোনে তীনসা ধীর করমাইকি অনতা মত্তুকমাইকি দাউহেন

গত ... উহ

পাবান বাহু বস্তু হুলো জমাই

খবাধী বতন অনন্ত খাব বস্তু নক্ষেত্র পরম ব্রাহ্মণ

অনন্তমতা নাবি হোত

উ: ৭॥৫

পরমব্রাহ্মণ

শ্রী২০

রিহা　　　　　　　　　　　　　　　　গঙ্গা ডীহ

গোপনাথ ব্রহ্মচারী গোবর্দ্ধন কালিকা দুহিতা যদুনাথ কমলাকান্ত পাণি রতিনাথ আশ্রিতা দুহিতা　পরমব্রাহ্মণ

ডাকব উমাপতি [illegible] কণ্ঠ রতিকণ্ঠ　　মানপতি　　মহেশ [illegible]

যদুনাথ পরমানন্দ নাথ হরিনাথ যদুনাথ　　রতি　　জীবন হোত

জ্যোতিষ্চন্দ্রনাথ

পরমব্রাহ্মণ

২০৫

মট ১১১

কৃষ্ণরাম মাণ্ডর ঢেকীকমাহক জানয়কজৌনী মাতাবোনারা কমাহক মতাদাদা পরমব্রাহ্মণ

বতি জীমনি   সাগু মাঝি   নাহু   জীমাসবাহিন

গোবিন্দ ঢেকী   প্রজাপতি বামর্ধন   রাঢ়ি   লোহা

ব্রাহ্মণগত

গত ঙীহ

পরমশ্রাশ্রয়ন শ্রীমোত গোপাল কাজোলী লাইক মাহিক মতাওলানা রামেলিক মাহিক ষ্যনত দাখিল হইল পরমশ্রাশ্রয়ন

কেদার লাথী রামধন মাহ জমাতান কোঁয়র

ফটি মাধব লাথী রাত্রে হোব

(১৫২১)

তবককখান

১২৮১।৬

কর্ম্মকার ৭০ হী কর্ম্ম

কোদবাৰ লক্ষীবাদী মাধৱকমাইকে পানী মাণ্ডৰ দলদই পাকানিয়া খনতা খনমইন

পাৰ্থু মাধব হৰপাতি দিনকৰ কোৱে লিখি এক্সতা পবান

পৰবন্ধু যদুনাথ খনক খাৰে হাকৰ শীবক হিস্যা

ভবানন্দ সুতা

সংগ।।হ

লেবহা
ভবরে

ডী২৫

পাঞ্জা হরিকিশ্ন রুহনক মাঝি মাঙব রাজ্বাধী সতনম্বা পাঞ্জহী মনরা মাঙন জানয সিলাসম

চিতা নিশান

জাই নন্দন মাহেয রবাহ ডাকে জত্তপানিনা নেগ্ধবসারে কীর্ত্তিবন দাণ্ডসবার

শ্লাবাণান কুহন বস্তু দীনু শোনে বতিগানি মাধবর স্ববাধী মুনস্তব

শ্রীরাজ্ঞানাথ মতা

তবহা
আখরি

৮৫

শ্রীনন্দন করঞ্চাহা পাড়ঠ খনতা · শ্রীচন্দ্রকোমাইক জানয় মিহাসম
গদাধর রামনাথ কপার দিনকর প্রবাধী কীর্ত্তিচন্দ্র পাণ্ডেশ্বর
বিদ্যা মহেশ জগা হরিকৃষ্ণ চান্দ মৃনধর
হেমন্ত মাতা
২৬৭।৷৬

নরবন্দী কাথা

যাদব জয়সিংহ

৬।২৭

শ্রীচব পানী শিয়াল পাবীনী বনিয়াদ বান্দীনী নরবন্দী শ্যাডাক দহিতত
পারপতি ঘবাধী যন্ত্রপাতি ভুপাল হর রবদত
যন্ত্রপাতি পাত্থ হার নরদত পাতী শ্যামদত্ত ডাপাতি রাখদেব
শ্রী ফেনয়াতা
১৩৭।। ৯

যাজব ২০।
বহেঙ্গ

খতরনা দবিহৃদ কুবরান কোদুবপুণ ঠকবর ফমাহ ঠকদবিহ্নাকনন্দহ ফজোনী পাকনিশ্যা মনডা পানিতোড
২ দ্যানাদব জীব মান ভৈরব গুলে মহ্য থীহ ডালে দীবে হাব
৩ বিশ্বমুব যামদেব গনপাতি ঠকবর বাহ কাহ্নি মুলে ডাব
সাংকিপ যতা ২ ইঙ্গা।

ভরস্থান —

১৩০৫

৩।২৬।

কোদলপুর ভূবধান জাতি নবস্থান ভাবক[illegible] ভরস্থান

গদাধর ধাড় লোনি ভাব আদিত

[illegible] রামনাথ মীরচন্দ বতি ভাম

ভাবমতী

২৪০।।২

ভড়খান ১০০

আদৰষৰ
ডাকৰ
ৰঘুনাথ
আথুলেৰখাত

বহুবাদী আদৰাষৰ ঠাকুনিআ
উমাপতি খেত্ৰ কণ্ঠ
পৰমানন্দ নাধু হৰিনাথ

ত্ৰিগাহ
দইহ্‌বা ৰঘুনাথকমাৰ কাল্যাণী ৰতিকমাৰ পাৰ্বতী চান্দকমাৰ হুকদেনন্দহ
ষষ্ঠীধৰ গঙ্গাৰাম নৰসিংহ
ৰঘুনাথ ৰতি চান্দ ৰিকে মনুতি

দিঃ কাদিৰা হস্বখান
দাৰগা ঠাকুৰ মাৰ্স ভড়খান

উদ্ধবান
মাঝা

শোকরম্মত সাং নগর কৃষ্ণনিবাসনী শ্রীং রত্নগার মনীয়াটী তাং জমাহিক রামবাটী উদ্যান
গদাধর কান্তী বিষ্ণুপতি ত্রিং [illegible] বস্তুপতি দাস্তী সোম হরিকেশ
শ্রুক্রানন্দ রামচন্দ্র মালে দাস উমাপতি হংলেশ্বর হোব

ডা২৫৭/ ◆ হরিকেশ্যমত ২৭৯।৮

ভক্তমাল সাঙ্গ ১৭৭ রসিকমাল মন্দাকিনী রতিমান কমলাবতী আহ্লাদ কোমাল তিলকচাঁদ ভক্তমাল

বস্তু বস্তু চাঁদ দামোদর ধনেশ্বর আদিত

১২০৩ রামনাথ রামদেব দশরথ রায় ঘোষ ভাব

মহাবিশ্বাস

ভট্টমান
সা স্থা

১৭৪

মোদবল্লভ কবসিংহ মাধব জাহিকুমারিকা পানিজেড় মন্দস্থা ভট্টমান
মদাধর বামনাথ কেদার
শ্রীগো মহেশ জগাই বৈদ্যনাথ সিদ্ধিদাস স্বভা
হামবল্লভ হরিদাস জগাই তিলক রামদাস

ভগবান স্বর্ণ পার্বতী মদনমা জগন্নাথ কলাইক শ্যামচাঁদ ভৈরবচাঁদ স্বর্গলোকমায়ে গোপ্তাডী ভগবান

মাঘ্য জাই ভবদেব রামনাথ বৃন্দাবন ঠাকুর নবকিশোর আদিত

মাধব নবমী জগন্নাথ রতন্ সর্প জগন্নাথ ভাম

ভা২৮ ভীমসেন ১০৯৫।।৩

চাম্পা
থরলী

১৫২৩

মাতঙ্গ পদ্মী পালোনী পাকানিয়া তিনাধীকে বলে বাকো ভাণ্ডার
কাষ্ঠপতি পন্ডির ঘাটি মাছদত্ত হরিকর চন্দ্রকোষ্ঠ থাতী চাম্পা
মাল্লপতি গনপতি রাজা গাঙ্গী দিবাকর রাম
দামোদর ভৈরব

শ্যামা
মাতঙ্গ কোদণ্ড হরিহর নারী জয়েশ্বর
শ্যামা বৈদ্য পতিপতি বর্দ্ধন রত্নেশ্বর জয়েশ্বর শ্রীরাম
মাঙ্গা হরি হরিনাথ রাম মালুতি
কোভিন গোবিন্দ তিনতী
মাতৃ হরি
হরিহর মাহেক
মাধু

বজকপাবস্যাব

১৫২

সোদনপুর হরিষ উদাসর পাপ্যু কমা হক ঋক্ষীনস্যক মানেক মাহেক সহছলো
ডার হীদৃ খাঁহি পকলিক্যা
বস্তুপাতি রমাকোন পাপ্যু মানে
বতিপাতিস্থান নসমীখিন
১২৭।৫

রজকপাবস্যাব

মাডন হরিষর্য উদনস্যর পাপ্যু কমা হক
বস্তুপাতি হীদৃ খাঁহি পকলিক্যা
পাটি রমাকোন পাপ্যু মানে
হীরস্যতৌ নসমীখিন
মানেক মাহেক
সবকৃলো
বজকপাবস্যাব

২/৪৯

চন্দ্রিকাবীনী   সোদরপুর ভবানীকমাহেক পানীমাণ্ডব পঠহী স্বাক্ষরকমাহেক মাণ্ডব   লেখা

উমাপতি   মহাভামাঝি বতি   মাঝি

লেখা   রামকান্ত   ১৩০৫॥৩ সাবহ বতি স্বাক্ষর

ভবানী

অনতি
বিনতি

হরিসিংহ গুনবোধ দেবনাথক মাতৃক অজৌনী রুক্মাবতী উপনয়ন জনহন্ত

ডাব বান্ধ — নাথু শালা নবাসিংহ জানয
সুবাধী দেবনাথ — মনিবর মাথ বতিকর ধুধু
ছিন্দ্যতা — সুমান্ত

ডা১২৫ ◆ ১২৫৯৷৷৩

হাটিনীকদমাতি

১০৬

দবিহবা পালী বামদত্তক মাঙ্কি মাণ্ডব দিঘোয় স্থবেশ্বক বিবাহ বজাকক কন্যা বজাককারাহকাতিক কন্যা

সালেশ্বব ডাবব দুব স্থবেশ্বব

সিদ্ধেশ্বব বামদত্ত স্থলো

বংপানস্থতো দহ ১৩

বজাকপাবস্মাথা

হস্তিনী
চন্দ্রমতি

মহিতা অস্যৈহ্য পার্বতী জ্যেতানতুঃখেকমাইক মাণ্ডব হীত্রুকমাইকে দিওয়োব স্বরেশ্বরকারি বাহ বজককারি বাহ
পাত্র জাব বংশিত্ত দ্যোত হীত্র স্বরেশ্বর বজককৈকন্যা চন্দ্রমতিকে কন্যা
শ্রীবি ভুবনাথ সাহু উত্থ ভাবকর
বামাদেবপতি বামকর
ডীর১/ ১৩৫১।৪

বজক দাবল্যা

কৰতমৌনী
গান্ধীনী
পাণ্ডেকৰম

হৰিধৰ্ম দ্বাবিংশ্যা কলন্দাহ কৰকমৌনীগান্ধীনী
মাথী ভৰদ্বাৰ্জি ভীম
গান্ধু ৰুদ্ৰমাল নবাকীহ
কেদাৰকাৰ্তা

ভী২০৭ ◆ ৪৩॥৭

কৰক
মাধুকৰ
পাণ্ড
কৰক

পানী তাৰন্দা
দামকৰ সূৰ্যকৰ কলন্দাহ
ৰুদ্ৰাদিহ হৰাদিহ ভীম
ৰবাদিহ
নবাসিহ

কঁৰতমৌনী
গান্ধীনী
পাণ্ডেকৰম
মাধুকৰ

চম্পিকাব
হিরুপ্পা

১৩৫

হরিরাম মল্লিকাদী পানী মাত্তব ফনন্দহ পাকানিমা অনন্তাশ্বিরনমহুন হীকথা
মীক বতিপতি হবপাতি দিনকব ন্নাবে স্থিথি একর্তা তাবানি
মাব অসাক্তোম অমবব মধে হিবর মীক
নাবায়নম্মতা ১০৩।।৫

শ্রীহর্ষ

তিমতত মাধ্য

১৩৭

তৌলিক
দেরাজ

২
৫।

খতরনা তিমতত জীবেশ্বর কমাহিক পাণ্ডলী খজরী মুদিবাটী —
মাহিপতি জীবেশ্বর রাঘদের পানিকোড় চান্দ
কান্হ নন্দন মগান গনপতি
রিভূতাতিস্মতা

তৌলিক দেরাজ

ঠাম্মিকাবত ⊙ শোদকস্যঠ শ্রীযুত বিশ্বনাথকোমাইকফনদহ শোনেকমাহফতকনিশ্যা মনতা রেনমহল হিবংশ্যা

হিবংশ্য খ্যেন শীকং হিবং লিখি শ্রত পবান

শ্রী২৪৭ দিবাকর বিশ্বনাথ শোমন শ্রীকং

বস্যুখত ১০৪৮৭

নগাবী

১৯৩

লাগাডো

আদকাখ্য আন্সাও মাওস্ত জানযডাবেহা পরৌনীমাওস লাক্কহিনি
মনিখ্যঠ বত্নূ জীয়ন্ত জীবং [illegible] জীব আজীনি পারিকা
বাম ডরাজাকন্যান বলা মাস স্ববমব হবক্কত কালমাতি তাহ
কন্টিলেরহ্মা

১৯১৫

নাটকী
নাগারগী

ভীম/ ◆ ১৩৯।।১

হরিবংশ দরিদ্রতা কৃষ্ণরাল মক্ষিবাধী রম্বেবাধী দরিদ্রতা কৃষ্ণরাল মাডতন নাহিকমাহ
ভাম দাকে বস্তু মহাচর্য দীনূ ভীম রমাদিহ কম্বু
রাধাদেব রথীদাপ নাথর মানিধা বস্তু ডাহ্রা জাব নাহি
রথীন্দরম্বাগ

নাটকিনী
পাত্রিমতা
কনযাতি
বরে

নাগরী
নাগাড়া

ভা ৭৮/

১৩১৬৯২

আদ্যপর্ব্ব কবীন্দ্র একত্র অইখানে রেনখো মাধব কবহনি তাকলিখা খানতান বরান লোবহিনী
মনিহর রঘুনাথ রাম জাউ দীনু দেবাদিন্দ্র চুনীলাল ডাইবর মোনে ছদ হত কানপতি
রাম হরিনাথ গনপতি পবান শেখ গাঁথ্য দিনু নীহ হরবক্ষ জগন্নাথ বাই
রামদেরস্বজ

নগাধী — ১৫ শ্রীদামোদর বেন ... কালী গাঙ্গুলী ... মাডর লাগিহানি
কাশী দেবনাথ গোবিন্দ রাম উদাস হরিনাথ কনপতি
শুনী [illegible] চোর মহারাজ নারায়ণ দেবূ বাই
লাগাডা পুরুষোত্তম
২০৩২৬

হস্তিনি
কুদমতি

১৩। শ্রীমান রাজবাদীমাধবরাইকমাঙ্কি দিত্তায় খাবেথকরিরাহ বজকক[illegible]রিরাহ
মাথুকর শান্তি বিদু খাবেথ বজকককন্যা কুদমতিকিকন্যা
ডীকর ভোজে ডীথকর
বিডাকরবস্থান

১২১৬

বজকক
চবনাবা

সাক্ষী
রাজেশ্বর
হস্তাক্ষর
শ্রী১৫ ১২।৩

শ্রীমান রত্নকান্ত মাতব্বর কোনা দিলাম সাক্ষী
মাতব্বর শান্তি শ্রীযুক্ত ... মাহির রাজেশ্বর
ঠাকুর ...
লিখিতং

হাড়িনী কোদরপুর মাস্তরাপ জৌনি বিষ্ণুবীগুদিক মাহিক খড়রনা উত্তরদত মাধিক পানি ব্যামিত্যাম জগন্নাথ ঘোষ বিবাহে

রুদমতি জায় গিরি কান্হ খাঁজা গিরদত মহাশয় জগন্নাথ রুদমতি কন্যা

মাদু মালো হরপতি মুদী পুত্রদত গোড়

শ্রী ৩৩/ ৪০১৭ বিয়ৌ

শ্রীকৃষ্ণ
হাউলি . 190
বংশমতী

শ্রীহ
নবাবোন মাভত জন্মনীতী খরীদ্দ করনা গুডদত মাইক পানী — খামীগ্রাম জগন্নাথ কবিরাজ

নরহর

মধুকর গঙ্গাদাস বীর খাঁজা মিরদত মতীশ্বর জগন্নাথ বংশমতি কন্যা

হরিকর দিনকর গুডদত লাউ

হু নেত্রতা

১০২॥৪

৺শ্রীকাবিনী

মোকাম মনড়া মাড়ব নবাখান পানিকাড় ধুড়না পাটিকা মাফিক দাখিলা ব্রহ্ম মবং কাতো
গাছিং শাহি খাজনা মাল ইস্তাগাতি বানাকর মহিনার মাহ্নি মাহ্ধ
নাহিন্দ শ্রীনাথ রাম্বাদের জাই রমাগাতী মুহাতি গাদ্দি লেখা
লেখা ১৭০৯ পত্তুযাম মাজ

ভা০৪

চর্মবিন্যাস
লেখা 1869

ঊহ

কোদবপুর ভরানী মাহক পানী মাণ্ডব পত্‌হী মকোলা মন্দবাহী ভুবনা স্থপতি মাহক ভাবিহ্ম বুন্দাবন লেখা
রমাঝোল মহাড়া মাঝি বতি রূপেন নারায়ন বন্দ্যোকর মতিকর মাঝি
পশুপতি ১২৩॥২ মাধব বতি শ্যামল দুর রামকর স্থপতি
রাবস্থাতি
ভরানী

চন্দ্রিকাবিনী
শ্রীদসমাঙ্গিজক
রন্নভা

(৪) একহরা মাডব রসুনিক্রাম বাদ্যাকারকমাহক শ্রীদন
কোর নাত্রী বহলাকর গাজিয়া
মহাডা ডরাজা গাহেমর
১৬১ বতনু খাজা জীরে
২৪

ভান্তি নি
আমলা
ভী৩২

উবাধী
মোদনখণ্ড মহেন্দ্রবাধী কল্যান মাহিকজানয় খড়রনা বিভাকরক মাহিক মহেন্দ্রবাধী জানয় খড়রনা ভরন্তানকাচকার
হলধর নারিন্দ নিমিত্তাতি নাহি নরসিংহ জয়ধর্ম্ম নরদেহ দামু রাম মহেন্দ্রবাধী
ধীরু কল্যান মধ্ব বিভাকর ভাস্কর বিশ্বেশ্বর শর্ম্ম জানাধী
৭৭।।২ শ্রীনাথ সুতা

নরবন্দী মামা
জারক

সোদামা গাসী সোদক্ষয় জারকমাতিক শ্রীপাল পারোনী বনিয়াস সন্ধী নী — নরবন্দী
কৃসাত্তোব বসুপতি রাট্টু বসুপতি হৃপাল হরি রবদত কোতাম্মার দহীভত
পাত্তপতি সিনাগা গীর হর দেবদত্ত গঙ্গী সোমদত্ত জীপতি রাঘুদেব
৬০৭ নরহরিদাস

শ্রী১২

শ্রীকর্ম্মা

১৩২

গোদাধর হরিরাম মাধব গোবিন্দরাম হরি খগেনা শুদ্ধহরিকান্ত রাধারাম মাস্কোলী কোতোয়াল দাহিতে

নরবল্লী

গঙ্গার রেনী গোবর্দ্ধন গৌহরি দুর্গা রঘুদত্ত উমাপতি রাঘবেন্দ্র

গোবিন্দ জগন্নাথ রাম শুদ্ধহরি পার্ব্বতী গোবিন্দ

রঘুনন্দন ৭০১২

জাগা/

শ্ৰীশ্ৰী একহৰা জাপাতি সোদৰখণ্ড বান্দকমা হক মৌনতা মাড়ৰ মোবান পৰহী পাকানিয়া মিৰ্নাম
জাগ্ৰদত্ত পাতি লোনে পান্থ বলেশ্বৰ নাগ ভোগেশ্বৰ বাপু জয়পাতি দুৰ
পাতি নথীনাথ হোৱৰ বান্দ ভৰদ্বৈত নৰসিংহ মুল্য দাম
কেথাৰ ১৫৩।।৭
ওয়ন

১৬

সাকিমর কবন্দোঁ ভক্তবাটী বাহুরমাহক আদকার্য অনন্তা মাত্র প্রবান পাথ দিপাকক্ষিপ্র সিদ্ধ নাম করন্দোঁ

মোনি নবদ্বীপ বেনী ভোব বানেশ্বর নাগাড়া রামধন কান্ত জয়পতি হরে

শ্রীনাথ মতি বাস্তর পাঁচু ভরদ্বত নবসিংহ মৃগা রাম

ঐকপানি ১৩৭॥৯

৩য়াত

৩ শ্রীশ্রী হরনপদত দীপিকাগানামাণ্ড সর্ভাসনী বন্ধ্য রসমূকনী সোমাকাঁ কুঁচিঞাঁ মহস্য পাবীন
রী লো নারভমাত্র বহুনী স্বাক্ষর:

শ্রী১০

185

মাধব গোবর্দ্ধন মনতা মাধব খবাস [illegible] [illegible] মিননাথ
রতিপতি ন্দরে বানেশ্বর নারায়ণ [illegible] কাহ্ন জয়পতি [illegible]
চন্দ্রপতি গৌরাঙ্গ ভরত নরসিংহ চাঁপা রাম
লাখিরাজ

২৭।।১

গ্রী২

হবিঅখী উদনম্মমাভব পাওহী করহী বাওতে নহতা
মাঙ্কি পাক্ষ ঘ্ববমত ক্ষিতি খদির দগিহবা ক্টোতা ওদী
কেয়র পাগু হবি মাতর নঠি উকাবিখা
দাক্ষখাত ৬৫॥২

184

মোদনাথ কর্কটীহা মাতঙ্গবঙ্গনর্তা হরিকরমাহুক
গদাধর রামনাথ কেথার দিনকর
বিদ্যা মহেশ জগাই হরিকর
হরমর্মতা ৬৭।।৩

ভাঁড়া
দারিহরা নীমাই [illegible] দেহা পাণ্ডালী
নরসিংহ দামোদর রঘুরাম মতিরিন্দ
কেথার বাঁশপাতী লোটি লিখি

(৪৩)

হরিসিংহ দাবিহুবা কৃষ্ণরাম মল্লবাটী মনিপক্ষমাহক পানিকোড় হবিকরমাহক শান্তর জয়রাম নীমা স্বপ্নবী সাদত্তা

নাম দাস বস্তু মহাত্তা বস্তুকর রামানন্দ বস্তুপতি দাস্তাদর পাচুরাম ধরবিন্দ

রাখাদর লক্ষ্মীদাস মাধব মনিষ হবিকর শ্রীধর বরিয়াশ্মী নীতি লিপি

লক্ষ্মীদর ১৯৯॥৪

৩খান

শ্রী ৫

শ্রীদেবদত্ত পাণী মাণ্ডর পচহী মাফল কমা ইক মাণ্ডর গাঙ্গৈ কমা ইক / সদহা

রমাকান্ত মহাজা মাণ্ডি রামাবন্দি কান্হ সবাহিন্দ

উমাপতি মাধব রতি মাঝেন গাঙ্গৈ নিয়

রাজেশ্বর ২২৩॥৩ হরিকর

182

গোবর্দ্ধন মাধব হরিশ্চন্দ্র মাধব বসুক মাহেশ হরিরাম মতাবান উমাপতি মাহেশ শ্যামদাস

পশুপতি যদোবর্দ্ধন গোপী নন্দন রাম ভীম অনিরুদ্ধ

শ্রীহরি কাশী দেবনাথ বসু নাথু উমাপতি নিধি

হরিনাথ ১২৫১।৭ শ্রীকৃ

এসতা

সর্ব্বেশ্বর কবকণ্ঠা বক্রিবাটী পালিতোড় হরিবাসাদিক মাতঙ্গ উদয় রামনিসা শম্বরী গদহা

লোনী নবহরি রেনী হরিতে রামীশ্বর বস্তুপতি দামোদর পাণ্ডুরাম নরহরিন্দ

ভীনাথ মতি বাস্তব মহত্ত্বহরগেণ শ্রীচন্দ্র বারিধর্ম্মী লোহি নিধি

কৃষ্ণপানিধৃতা

৩৭/ ২৩৭॥২

১৪১

স্নান দধিহরা পঞ্চমী শ্রীকৃষ্ণ মাধক কোবতা শান্তিক মাধক মহাপাতেনী
বতি শ্রীশ্রী রত্নাকর কাহ্ন ভবানি
শারিন্দ রাম শ্রীকৃ শান্তি হবিকা
দাম্বৃস্মণ ১০৩।৪

শ্রী ৬।

কোদণ্ডধর মহনন্দা রত্নপতি রাম মাধব জয়রাম শশী বাঘী পানী মহেশ
গদাধর কাশী শ্রীপতি বিদ্যাপতি ভূপতি ফাণ্ডা দেবশর্ম্মা অরবিন্দ
বুদ্ধু রামানন্দ রামচন্দ্র মানে দাস বন্ধু উমাপতি হলধর কাহ্ন লিখি
হৃষিকেশ ১২২।।৫
এক্ষত্রা

শ্ৰীকৃষ্ণ
সংকীৰ্ত্তন

আদ্যন্ত ইস্কীৰান সঙ্কীৰ্ত্তনকমাত্বিক স্তব্যাসে জ্ঞানযোগ মাত্বক নীমাৰ্ত্তস্কীৰান পাবাৰ্ত্তকমাত্বিকত্মৰ্মী শাদহা পাৰ্ত্তৌনী

ৰীতি জয়দেৱ সুনগতি বৰ্হিমান পৰস্তুৰাম অৰবিন্দ

উহৰি সঙ্কীৰ্ত্তন ১৪১৭।২ জ্ঞানযোগ পাবাৰ্ত্ত লোৰি নিধি

ৰাজৰত্মতা মূপান

শ্ৰীত

180

কোদাম্বর মাধুর রন্ধ বোলোমাল ব্যোমিংজ্ঞান রাণাক্ক মাহক মহাপাত্তৌনী

হাউ অকীকর মহীধর দামোদর বান্ধীনি মুরারিন্দ

নাগুর্ন পাতাইং খুষ্টহ্ন হৃদ ৭৫২ বালো নাহি

জনার্দ্দন ১০২॥৫ বান্দ

ওয়্য

ঐ ৩২২

শ্রীহর্ষ

179

কর্ত্তাহো গোদাবরী দবিহরা মতাপতি মাণিক্য স্রোত দবিহবা পানি — রামকুমার [illegible] রাম

মার্গ বিদ্যাপতি মল্লিক ধাক্ক কেরই ছোবাগ বান্ধ

হুকমু রামেশ্বর মতাপতি সংবাদ ডঁবোবর্ন বান্ধ রাম সুন্দরবর

সংবাদ বাস্তব

এগুতা

শ্রীরামঃ

ষষ্ঠী — বাবাজের

গোপালকৃষ্ণ দরিদ্রা পার্বতী রামকমাধক নবরত্ন

হরিনাথ [illegible] গোবর্ধ [illegible]

দুর্গে বান্দ বাম দেবধন

শ্রী৪/

১২১৪ ভাদ্রেশ্বত

শ্রীকৃষ্ণ

সাহিমর রামিস্যাম মজ্জীওং মাহাক মরিমর মহ্ন দহীম নিতোভ করি হুবা আনীয়াও বাস্তা এক নববান

ভবনাথ নমকর নাথু সাঁদি কান্হ হেম্ব লোবাঙা বাঁন্দ

কমলনয়ন মজ্জীবর রিয়া সারা ফদ চান্দ রাম দেবর

শ্রীহ

কীসাভগাত ১২৫ ।।১

শ্রীহরি

জ্বৰান পৰ্বোনী — সূতনক্ষা জগন্নাথমাণিক্যোনোত ৰত্নমাণিক্যদ বিহ্বল ক্রান্তি মাধব রামমাণিক নবরান
জাড়ু ভীম কমলনাথ উদ্যান হেরম্ব পানী — চাঁদ
মাধব নক্ষমী জগন্নাথ বর্মু চাঁদ হোবড়া দেবধন
ভীমসুতা যাম

শ্রীহর্দ্দী

১৫৫

জোদবপুর রানিগ্রাম শন্দীধরকমাইকমবিকর মহিবাটী পানিতোড দহিহরা মণ্ডিস্থারব রামকমাহদবাণ্ডাম্বর

মতিকর ডমরু সাধু গান্দি কান্দি হরি পানী নবরান

ভীম শন্দীধর বিশ্বে লোগো রুদ্র গান্দ হরি চান্দ

১৭৪।৮ রাম দেবধর

শ্রী৫ সাথমত ১৭৪।২

মহানসথা

শ্রী ১

ধৰ্ম্মঠাকুর

ভগভাহঙ্ক্রোজ

কমকোবা দিগোয

শ্রীধুদ্দের স্থত নালা

ব্রহ্মভীমামস্থর

মনিচুমরবাজেবাণী

মাধবস্থত নৃথাথর

কৃষ্ণাখরব্যায় নিধুতী

নানায় মনি হয়ঞ্চ

ঠিকপীতানিবেড

জয়দেবস্থত [illegible]ঘাটী

ভাজীবানউদনাথর

হরিনন্দনস্থতজীবনন্দাদাতা

নামিবাদ্যে

বামমথর

খাদেতমঙ্কিমাটী

ভবানদের স্থত জনিরজীবাতাধরি

কারবা

শ্রীখান মগুকরাতেথবি

ময়রীস্মাবতিনিবাম

রনতেজাল ক্ষেমানরীমা

জনৈনী মোদরাত্র

উত্তুন মিড

একহরা

গানিরমিড

বক্ষা

মান্ডর

ক্ষিরবামদাতা

176

মতাবে মাহির থিকা হইবার মনপানী কে তুহিকাম যদি দেয়ানন্দাকে মন্দলী মন্দলী বিজুকে
তহপুনা থিক মস্কবাহী মমাপ্সাবাকে হরপাতি খুবাবাকী খুবাখোষ বন্দুবাহী গোন হযাপহকী
তহতৈনুনান যবুবাখোনাকে গতিমতি বাখা হাবু গাহকে বাবু থামেযাব নকী হই হকহাঁড়া বিপ্রক
হাকানাড়ি থিককাব ধুম কা নানীবানাৎ রেনহত তুমযী থাকী মে কহ হল কাতনখা জকবারাপ
হিকে হযহনাকী থিক কোহন্দী নোবাক দাম কহ কনযাম হমকে বানি খাম তিব কু তি খাদি
বকহত প্রিহকাম কমন কুলন কাকী তননাহ বিবু তভখামমযুবেক

করবমত মঙ্গল যপা। শ্রী৩মতা: যিবকব মাঘি কবমন্ত্র বি কবী: ক্ষেত্রমণ্ডলতাতী বা: যোগাদ: ৩মাঙ্গি কথা। [illegible]: শ্রী [illegible]: পৌষ্য দেৱ
দহর্তা মঙ্গলা: শ্রীমত: মর্ণ্ণি বসন্তী: যাহ: পদাধ বক্তাক্ষ আনন্দ পাশে ৩মাতা: ক্রিয়া: মতাৎ শুভাকো মর্ম্মক্ষী যদি: প্রতুত
নামুনাশা কর্ণা যাত: আ। যাকাশ। শ্রী৩মাতা: ভ কীর্ত্তি হেনাবে বাদ্যী: মতাথত তেঁবা: পশী মীদাবেশক্ষ কাশপালী ৰ
ত বাঁইয়াবাৰ কাশ্রী পাপা। পানী তীৰ্থ মান্ধ হর্বীদতপা কশ্রী৩মাতা: দাপসীক্ষ: মাপাপ্ৰ শ্ৰীমাথু। শ্রাদ্ধ পত্ৰিক;

২৮

স্বমস্তু ॥ সর্ব্বঃ শ্রীহর্ষস্তো মাতবস্তু দুঃখ বোমাতলাঃ। তস্মাদ্ধি বোতগিল্য ক্রদপরানিতাদি নোপা
নিতাস্ত্রনপবিলোব্যাঃ। তাঃ পাবিনিতাঃ সর্ক্কিব কাবিনে স্তুপা প্রাপশ্রিক বেচাদেকাঃ এতেন সপক্ষে মা
তন্ত্রীহর্ষপ্রীত শ্রেণী সবিবা হ্রোত পক্ষি ব শ্রিত স্যা। সপক্ষে মাতর্ভুগিনীপহিনযানেন দোষঃ প্রাপ
কাতারতি ॥

সঙ্কীবার্ত পালী সুখবান রনিম্বাকাপ গৌরী সঙ্কীবার্ত ধনয়ী দহিহবা বহ বায়ী মাণ্ডব মাধব টিলী [illegible] দহিহ

গোস্বামী [illegible] বাহু রুদ্রতী চিন্তামণি রামাদং বহু বহু প্রভু দাস [illegible]

লক্ষ্মণ মনমোহী কমান মনখিৱী তরণীর দনাই

চতুর্ভুজ হাতী বন্ধু

রাম [illegible]নাথ বেনমোহ কমস্কী [illegible]

নবী

শ্রীজয়রাম গোলোক বলহা গোপাল রঘুনাথ উৱী

দেবান রাম হীরা

[illegible] কৃষ্ণরাম গৌরী

[illegible] মাতঙ্গী রঘুদেব

দেবকীনন্দন

[illegible]

[illegible] দাধবস্তুধী [illegible] মামাস্থেতঃ। তস্মাদ্বিরক্তিকাম্যকাং প্রজনবা মা মোক্ষেতি ঠাধী দা [illegible]

[illegible] বিবাহিতা। কুড়ি [illegible] তেন মাত্র তি [illegible] বিশ্বরা। ৷৷ [illegible] ইস্ম: শ্রীমানপ্রত

[illegible] হালৈ [illegible] তদ্দৈকল্পপতি:।

[illegible] শ্রীজো [illegible] নমো হরিশ্চন্দ্র [illegible] নলিন: ৷৷

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] 265

278

রাম [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥

272

সঙ্কৈবাদীনি প্রতিষ্ঠানক্ষত্রে উমাপতি উমাপতিস্তত্র অনন্তাদি ধর্মাস্তত্ত্বাদি
পালি এতাঃ সর্ব্বশিল্পকর্মনন্দনরবর্ণযজ্ঞকা ববর্জ্জতাষ্ট হীনাম্পীতমন্দনম্বাচ
কর্কিইনপালিংখা সঙ্কৈবাদীনি প্রতিষ্ঠানক্ষত্রাণি লোপন্তম্মীলাহ পঞ্চাশিত্তে রেখা
মস্তুকোণান্তঃ [illegible] তিষ্ঠস্বামীলীবামী ॥

[illegible] শ্রী [illegible] শ্রী [illegible] শ্রী [illegible]
[illegible] শ্রী [illegible]
[illegible]
[illegible] শ্রী [illegible]
[illegible] শ্রী [illegible] শ্রী [illegible]
[illegible] শ্রী [illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ।।২২।। [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

27

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

সাং বেনী স বহু বি প র লী ৎ স্ম তে ল স, হ্য বুবঁ, স হ্য ব ব স্ম তো যা কা কঁ, বাজ স্য তো
[illegible] নন্দ: সবি সর সী ব [illegible] না য দ্বে [illegible] যা লা লী কি ব্র স [illegible] য ভী পা [illegible] মা জো ॥
॥ ২৩ [illegible] ন বি স ন্দ স্য ত য: যা লে [illegible] র র ত্তি [illegible] অ স্ব কা: গো [illegible]
স [illegible] সান্য ন কঠ স্মতো তু লা দিঃ ২ কৃতা স [illegible] বা ড়ি সী [illegible] জি বা দি
[illegible] স্মো ন স্রী দ স্থা ঈ ॥ [illegible] বা লী নী দ্ধ ব্ব [illegible] হী [illegible] হি দ ব ং যা যা [illegible]: স স্ম তা [illegible]
[illegible] য ভী লা সা [illegible] লা [illegible] তা লী [illegible] লা [illegible] স্মা [illegible] সা লা বি

[illegible] ॥ ৫ ॥ [illegible] শ্রী [illegible]

[illegible] শ্রী শিব দেব্যা । শ্রী [illegible]

[illegible] শ্রী [illegible]

[illegible]

[illegible] শ্রী [illegible]

[illegible] ॥ ৫ ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible] । শ্রীধরকবি [illegible] কমলনয়না দে[illegible]

[illegible] । ৩১ । [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] কবিবর [illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

272

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ३४ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible] ।। সে হরি [illegible]

[illegible] অমৃত সতো: [illegible]

[illegible] মাধব [illegible]

[illegible]

[illegible] রবি [illegible]

[illegible]

[illegible] ।। ৩১ ।। [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] श्रीकाली [illegible] आस [illegible] कालीदेव [illegible]

[illegible] स्वाहा [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] स्वाहा [illegible] स्वाहा [illegible]

[illegible] मल्लकु: [illegible] कला थकुर लाहि [illegible] नल [illegible] धर्म [illegible]
[illegible] हदुर्दु [illegible] हि [illegible] भिक्षाया [illegible] श्री
[illegible] हरि [illegible] ॥ ८ ॥
[illegible]
[illegible]

स्वस्ति श्रीवागमतो। थ्ये श्रीकर्णिकार [illegible] ॥ स्वस्ति सम्वत ८ [illegible] राथे कुन्हु। श्री [illegible]
श्री [illegible] श्रीहत [illegible] कुन्हु। श्री [illegible]
[illegible] हरनको [illegible] रक्त [illegible] श्री [illegible]
[illegible] श्री [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] हरिदत्त [illegible] कुन्हु [illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible] যা সকল ॥ [illegible] নধর [illegible]

[illegible] হরিবলা ॥ হরা ও নমো [illegible] কহা ॥ হর ও ন [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] তি মহি [illegible] তি ওঁ মাত [illegible] ঃ [illegible] নধনী কর [illegible]

[illegible] দিন [illegible] নধনী কর [illegible] কিলে ঃ কি [illegible] ঃ তিন [illegible]

[illegible] ঃ ৮ ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

266

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ২ ।। ৩ ।। ৩ ।।

শ্রী

পরম বিশ্বস্ত স্বগুণ নিষ্ঠাবান দেবশর্মা [illegible] কল্যাণবরেষু। [illegible]
[illegible] জ্যোতির্ময়ী [illegible] ।। তথা
[illegible] [illegible] [illegible] ।। [illegible]
[illegible] [illegible] সম্বাদ [illegible] ।। [illegible]
বিদায় শ্রী [illegible] । [illegible]
[illegible] ।। [illegible]
[illegible] । [illegible]
[illegible] ।। [illegible]
[illegible] । [illegible]
[illegible] ।। ৭ ।।

লৈশ্রনরী খেৎচাদৌ লৌরী পথোঙ্কে পথওরর্ষ্কয়তী তেমেৎশঙ্কি তেরাশ্রৌ খেম্বো
লৌতি: এম্রচ[illegible]প্রতী কুথরানবী বহাযীপান্নী

ओइनवार-राजवंश (सुगौना शाखा)

राजपण्डित कामेश्वर-रामेश्वर-हर्षण (हरिषेण)-त्रिपुरे-तेवारी-सलखन-गौड़

शिवाइ

कुमर प्रभाकर

राजा रत्नाकर

कुमर मतिकर

राजा हरिसिंह

राजा रामचन्द्र

राजा 'प्रतापनारायण' जगदीश

महाराज कीर्त्तिनारायण

महाराज रुद्रनारायण

महाराज लक्ष्मीनारायण

राजा रूपनारायण

राजा फतहनारायण, — बाबू जगन्नारायण

राजा गिरिधरनारायण — बाबू दोर्दण्डनारायण

राजा श्रीधरनारायण — बाबू वैकुण्ठनारायण, प्र० कन्हैयानारायण

बाबू तेजधरनारायण — बाबू खोजेन्द्रनारायण

बाबू इन्द्रनारायण — बाबू श्रीमन्तनारायण — बाबू बोधनारायण

बाबू श्रीटेकधरनारायण, बाबू श्रीहेमधरनारायण

बाबू श्रीदोलधरनारायण, बाबू श्रीशेषधरनारायण, बाबू श्रीईशधरनारायण

बाबू श्रीबदरीनारायण, बाबू श्रीयोगधरनारायण, बाबू श्रीइन्दुधरनारायण, बाबू श्रीपद्मधरनारायण, बाबू श्रीशेखरनारायण

विशेष—जिनके नाम के साथ 'श्री' का प्रयोग हुआ है, वे अभी जीवित हैं।

১৭১

হৈকান্তরী শ্রীগোপালনৈ মঙ্গীরামসম্ভবঃ । মধুতিতা শ্রীমদীবাবাপানীমকা চাক্ষুহিধাত ॥ নাথপ্রতুবন গ্রাম [illegible] ততঃ তস্যাত্মা
গেত্রপ্রজোঽস্মিপনস্তুময়ুতম: । তন্যতন্তেস্মতো বিক্রো দীক্ষোবাহ্মক্ষমাহিতকা ॥ [illegible] ॥ এবছ্য মঙ্গ
কাহিনী কান্ত্ব্রতাসা শিস্রতী [illegible] কঃ ক [illegible] হমবেলোবাক্রপতিতঃ । মন্ত্রলোব্রা কিন্দিত্রাতস্মাধা মংশ্রুমঃ শ্রাদেশ [illegible]
তস্য গোপাল ভুরাতুাকো তনয়োবাস্তোপ্রধানতঃ মতুঃ ॥ কাতিরহিনীতা তি স্মস্মিক [illegible] রেতাংশোণক্তা । নাত মমাগাত পাতের
ববহাক্ষোনমীরবিহিতা ॥ তস্যাঃ শ্রাত রিমকাহেতুবদস্যতাস্মে । বজাপিহতি মকাহে জ্বাকঃ প্রবাসাত । [illegible] ত্রমিণ গমাল
যক্তনীকান্তরৈমদুন [illegible] ॥ মাতুর্গ্রামসম্ভূত মাধবেন্দ্রপাষিতঃ শ্রুহাই [illegible] । গিরচন্দ্র হুডকে
[illegible] মা লাহস্যা শ্রুতজাত । ত্রাতেষী মত্রুতিবুদ্ধা বাহলোয়াপ্রধানতঃ । শ্রীমস্থাপুরেস্মবাস [illegible] প্রাপ্যহিমেলায়া । ২

প্রাপ্তঃ কোপি মতেলোশ্বরঃ শ্রমধুহকাহঃ প্রজাতোমি পুঃ ॥ আনাথ মমাবিরাম নিরপাবাশ্রীপাদ [illegible] প্রাপ্তাতত্তুনযব
নাম্নাশ্রবাতিহঃ । শ্রীজলকীগ্রামসম্ভূতাবে দহৗধনহিনবীরা [illegible] । ত [illegible] তস্য শ্রুত [illegible]
শ্রাবাতো মতধাত মদন্দপ্রভূ [illegible] প্রাক্ত চ্যুতনন্দনামা [illegible] গ্রামবিখ্যাত [illegible] । [illegible] মমার [illegible]
বস্মুকিরাহকোহপ্রীয়া [illegible] প্রেরণ্য মিবাহ [illegible] প্রসূননঃ । তস্যাম [illegible] তমাকী । তস্মী [illegible]
মহিব লোকভয়াতো [illegible] ॥ [illegible] গ্রাম [illegible]
নো [illegible] লমঃ শ্রুতাশাঙ্কীক । দহাস্মণ্ডবিরাহিত [illegible] । তস্মাৎ [illegible] মধ্বু [illegible]

